भारत-भूमि और लोग

# दक्षिण भारत के मंदिर

ऐस नं 24635
71-2

के. आर. श्रीनिवासन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

लेखक (जन्म 1910) ने साल 1935 से 11 साल तक पूर्व पुदुक-कोट्टई स्टेट म्यूज़ियम में क्यूरेटर के तौर पर काम किया।

1946 में के. आर. श्रीनिवासन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में शामिल हुए और 22 वर्षों तक पुरातत्व के उप महानिदेशक, पुरातत्व विद्यालय के निदेशक और स्मारकों के निदेशक जैसे विभिन्न पदों पर कार्य किया।

उनकी स्पेशलाइज़ेशन वाली फील्ड्स में से एक टेम्पल आर्किटेक्चर, स्कल्पचर और आइकॉनोग्राफी थी। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया के टेम्पल सर्वे प्रोजेक्ट (दक्षिणी क्षेत्र) को ऑर्गनाइज़ करने के बाद, उन्होंने दक्षिण भारत और दक्कन के मंदिरों का सिस्टमैटिक आर्किटेक्चरल सर्वे किया और 1963 में 'पल्लवों के गुफा मंदिर' पर अपनी पहली किताब निकाली।

उन्हें 1949 में बुराबुदर और दूसरे जावा मंदिरों के आर्किटेक्चर की स्टडी करने के लिए एक कल्चरल मिशन पर बिडोनेशिया भेजा गया था।

वह तमिल एनसाइक्लोपीडिया में योगदान देते हैं और मद्रास यूनिवर्सिटी के तहत स्पेशल एंडोमेंट लेक्चर भी दे चुके हैं।

अभी वे आर्कियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ़ साउथ इंडिया, मद्रास के चेयरमैन हैं।

भारत-भूमि और लोग

71-2

दक्षिण भारत के मंदिर

MABT T.N. Jaganathannner.

के. आर. श्रीनिवासन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नई दिल्ली

फरवरी 1972 (मई 1893)

के. आर. श्रीनिवासन, 1971

7.50 रुपये

भारत में मुख्य स्टॉकिस्ट

इंडिया बुक हाउस

बॉम्बे-1

कलकत्ता-16

नई दिल्ली-1

मद्रास-2

बैंगलोर-9

हैदराबाद-20

पटना

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, ए-5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16 द्वारा प्रकाशित तथा वकील एंड संस प्राइवेट लिमिटेड, बॉम्बे-1 में मुद्रित

# प्रस्तावना

मंदिर भारतीय आर्किटेक्चर का सबसे खास और खास स्मारक है और भारतीय संस्कृति के छोटे-छोटे मूल्यों को बहुत अच्छे से दिखाता है। पहले के मंदिर सादे घेरे या छत वाले या बिना छत वाले प्लेटफॉर्म जैसे सादे ढांचे होते थे। मंदिर के ढांचे को मूर्ति पूजा की पक्की स्थापना और उसके साथ होने वाले रीति-रिवाजों के विकास के बाद बनाया गया, जिसे सही मायने में बनने में समय लगा। उत्तर, दक्षिण और भारत के दूसरे हिस्सों के बीच आर्किटेक्चर के अलग-अलग रूप बाद में विकसित हुए और पांचवीं सदी के बाद ही इन इलाकों को अपने-अपने विकास के रास्ते पर चलते हुए देखा गया।

इस सीरीज़ में हम पहले ही उत्तर भारत के मंदिरों के बारे में एक किताब पब्लिश कर चुके हैं, जिसे श्री कृष्ण देव ने लिखा है। यह किताब दक्षिण भारत के मंदिरों के बारे में है। इसे श्री के. आर. श्रीनिवासन ने लिखा है, जो भारतीय कला और आर्किटेक्चर के जाने-माने जानकार और एक्सपर्ट हैं, और आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया के रिटायर्ड डायरेक्टर हैं। उन्होंने दक्षिण भारत में मंदिरों के अलग-अलग तरह के आर्किटेक्चर के विकास को साफ़ और छोटे तरीके से बताया है। किताब में दिए गए चित्र दक्षिण भारतीय आर्किटेक्चर में मौजूद अलग-अलग स्टैंडर्ड टाइप की साफ़ तस्वीर दिखाते हैं। उम्मीद है कि यह किताब, उत्तर भारत के मंदिरों पर एक किताब के साथ, आम लोगों के लिए हमारे मंदिरों और आर्किटेक्चरल पैटर्न के विकास के बारे में जानकारी बढ़ाने में एक कीमती चीज़ होगी, जो हमारे सांस्कृतिक विकास से बहुत करीब से जुड़े हुए हैं।

बी. वी. केसकर

नई दिल्ली

12 नवंबर, 1971

टी.एन.ओलिगोनाथन

अंतर्वस्तु

पृष्ठ

वी

प्रस्तावना

अध्याय

I. प्रस्तावना 1

II शुरुआत - प्रारंभिक मंदिर 7

III प्रारंभिक शैल वास्तुकला 26

चतुर्थ बाद की शैल वास्तुकला 34

V स्थापत्य मूर्तिकला 83

VI संरचनात्मक पत्थर मंदिर-प्रारंभिक चरण 111

VII संरचनात्मक पत्थर मंदिर-मध्य चरण 138

आठवीं संरचनात्मक पत्थर मंदिर-बाद का चरण 166

IX अन्य मंदिर प्रकार 174

भारतीय स्थापत्य शब्दावली 191

अनुक्रमणिका 199

चित्रों की सूची

थाली

काला और सफेद

सामने वाला पृष्ठ 32

1. अमरावती-स्तूप स्लैब 33

2. महाबलीपुरम-धर्मराज रथ 48

3. एलोरा-कैलासा विमान सुपरस्ट्रक्चर 49

4. महाबलीपुरम-शोर टेंपल
7. नर्त्तामलाई-विजयालय कोलिस्वरम 64

5. कांचीपुरम-वैकुंठ पेरुमल मंदिर 65

6. तिरुवलीश्वरम-वलीश्वर मंदिर 80

8. श्रवणबेलगोला-चामुंडराय बस्ती 81

9. कांबदहल्ली पंचकुता बस्ती 81

10. नंदी-भोग नंदीश्वर मंदिर 96

11. बादामी-मलेगत्ति शिवालय  97

12. पट्टडक्कल-मल्लिकार्जुन मंदिर  112

13. तंजावुर-बृहदीश्वर विमान  113

14. दारासुरम-ऐरावतेश्वर विमान  128

15. चिदंबरम-नटराज टेंपल  129

16. लक्कुंडी-काशी विश्वेश्वर मंदिर  144

17. तिरुवन्नामलाई-अरुणाचल टेंपल मैं 145

18. हम्पी-विट्ठल टेंपल 160

19. वेल्लोर-जलकंठेश्वर मंदिर 161

20. श्रीरंगम-रंगनाथ टेंपल 176

21. श्रीविलिपुत्तूर-वतपत्रसायी टेंपल मैं  177

22. तंजावुर-सुब्रह्मण्य टेंपल  184

23. इक्केरी-अघोरेश्वर मंदिर  185

24. आलमपुर-विश्व ब्रह्मा टेंपल  185

25. त्रिचूर-वडक्कुन्नाथर मंदिर

महाबलीपुरम - अर्जुन की तपस्या  152

ई कांचीपुरम-कैलाशनाथ टेंपल  153

III बेलूर-चेन्नाकेशव मंदिर  153

IV पालमपेट, एपी-रामप्पा मंदिर 168

वी रामेश्वरम-रामनाथस्वामी टेंपल  169

VI वेल्लोर किला-जलकंठेश्वर मंदिर

शिववाद

तिरुचिरापालम-

टी.एन.ओल ओलागनाथन..... 1. लगनाथन.

अध्याय 1

परिचय

एक धार्मिक संस्था और पूजा की जगह के तौर पर, भारत में मंदिर का एक पुराना इतिहास रहा है। एक ऐसी जगह के तौर पर जिसमें किसी भगवान या पूजा, परिक्रमा, पूजा और पूजा की कोई दूसरी चीज़ होती है, सब-कॉन्टिनेंट के अलग-अलग हिस्सों में इसका अलग-अलग तरह से विकास हुआ है। यह लोकल ज़रूरतों और धार्मिक ज़रूरतों के हिसाब से था और बेशक, विचारों और सोच के लेन-देन पर भी निर्भर करता था। हालांकि असल में मंदिरों और उनमें होने वाली पूजा की बेसिक चीज़ें ज़्यादातर वैदिक और पौराणिक सोर्स से ली गई हैं, लेकिन सदियों के दौरान उत्तर भारत में महान भारतीय धर्मों के सेंटर से बड़े इलाकों में फैलने के दौरान उन्होंने अलग-अलग स्टाइल और पैटर्न अपना लिए। ईसाई धर्म से पहले के समय में जैन और बौद्ध धर्म के प्रोटेस्टेंट पंथों के उदय और कहानियों, पंथों, देवी-देवताओं के रूपों, रीति-रिवाजों वगैरह के अपने वर्शन बनने की वजह से, उन्होंने मंदिर के रूप और उसकी चीज़ों को अपनी खास पूजा और उसकी महिमा के हिसाब से किसी न किसी तरह से बदला, क्योंकि असल में मंदिर का रूप और लेआउट, पूजा की जाने वाली चीज़ और उसकी पूजा के लिए अपनाए गए तरीके पर निर्भर करता था। तीनों पंथ देसी थे, विदेशी नहीं, इसलिए उन्हें अपने मंदिरों का मूल रूप अपनी जन्मभूमि के अलावा कहीं और से नहीं लेना पड़ा। तीनों ने, आम भारतीय प्लान और ऊंचाई, और बनाने के देसी सिद्धांतों और तकनीकों को बनाए रखते हुए, अपने रूपों में सही बदलाव करके और स्ट्रक्चर की आम बनावट और कंटेंट में अपने-अपने पंथों की समझ की खासियतों पर ज़ोर देकर अपनी धार्मिक खासियतें दिखानी पड़ीं।

बनाने वाले या कारीगर - स्टापाटिस और सिल्पिन - जो कारीगरों के एक ही गिल्ड से जुड़े थे, उनके सिद्धांत एक जैसे थे।

उन्होंने  डिजाइन और बनाने के तरीके तय किए और पुजारियों के साथ मिलकर काम किया, जो रस्मों, पूजा की चीज़ों के नेचर और उनकी पूजा के तरीकों को जानते थे। उन्होंने मिलकर मंदिरों के रूप तय किए, जिसमें ऐसे बदलाव किए गए जो उनके हिसाब से सही थे, साथ ही मुख्य देवताओं की खासियतें तय कीं और बनावट की सजावट आइकॉनिक और दूसरी मूर्तियों से की। नतीजतन, शास्त्रों में बताए गए वास्तु, शिल्प और आगम टेक्स्ट और कैनन विकसित हुए। मंदिर बनाने और उसमें पूजा करने के लिए जो कुछ भी जाना जाता था और ज़रूरी था, उसे कोड में लिख दिया गया। इस तरह भारतीय सोच के लिए देसी आर्किटेक्चर असल में और ज़रूरी तौर पर भारतीय ही रहता है। इसे उन हिस्सों में नहीं बांटा जा सकता जिन्हें आमतौर पर 'हिंदू', 'जैन', या 'बौद्ध' आर्किटेक्चर बनाने की कोशिश की जाती है।

संगठित धर्म, हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म, अपने विकास के शुरुआती दौर में, अपनी ज़िंदादिली की वजह से, पहाड़ों और जंगलों की विंध्य की दीवार को पार करके दक्षिणी प्रायद्वीप में फैल गए। वे लगातार लहरों की तरह दक्षिण के धर्मों में मिल गए, जिनकी अपनी संस्कृति, सामाजिक पैटर्न, परंपराएं और धार्मिक मान्यताएं थीं, और ऐसी भाषा की तो बात ही छोड़ दें जो हर दूसरी चीज़ से अलग होकर अपना साहित्य बना सके। इन संपर्कों को मौर्य विजयों से और बढ़ावा मिला, जो मैसूर पठार की उत्तरी सीमाओं तक पहुँच गईं, जिसके आगे बौद्ध धर्म के महान संरक्षक अशोक ने दूर दक्षिण के मज़बूत, स्थिर और संगठित राज्यों को अपनी स्थानीय संस्कृति के साथ पहचाना। उन्होंने उन्हें सीमा पार के दोस्ताना पड़ोसियों की तरह माना, जिनके बीच वह अपने दक्षिणी एडमिनिस्ट्रेटर के ज़रिए अपना संदेश फैला सकते थे।

गया के पास अशोक ने बौद्धों के चैत्य और विहारों की जीवित चट्टानों को काटकर बनाने और उनकी खुदाई की परंपरा शुरू की थी। इसे जल्द ही दक्कन और पश्चिमी भारत के ट्रैप रॉक इलाकों में अपनाया गया। इससे आज के समय के ईंट और लकड़ी के ओरिजिनल के कुछ हिस्से फिर से दिखने लगे, जो जल्दी खराब होने की वजह से खराब हो गए थे।

}



उनके बनने का ताना-बाना समय के साथ नहीं बचा। पत्थर के पक्के तरीके से आर्किटेक्चर और मूर्तिकला के इस रूप को दिखाने की कला, जिसे पहले बौद्धों ने, फिर हिंदुओं और जैनों ने अपनाया, ने इन स्मारकों को सदियों तक टिकाए रखा और हमें इस बात का काफी अच्छा अंदाज़ा दिया कि उस समय का धार्मिक आर्किटेक्चर और मूर्तिकला आम तौर पर कैसी थी। पूर्वी आंध्र और उत्तरी कर्नाटक इलाकों में ईंट से बने स्तूप और चैत्य, जो असल में मंदिर हैं, भी इसलिए बचे रहे क्योंकि उनकी सुरक्षा के लिए पत्थर का इस्तेमाल किया गया और नक्काशी की गई, पत्थर की रेलिंग का तो कहना ही क्या, जो अपनी जोड़ने की चीज़ों और

फिक्सचर में पूरी तरह से लकड़ी के काम की नकल करती थीं। इन मामलों में यह नहीं कहा जा सकता कि पत्थर असल में ईंट से बने थे। ये स्तूप और चैत्य उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत के अपने जैसे स्तूपों के मुकाबले अपनी अलग क्षेत्रीय पहचान दिखाते हैं।

छठी और सातवीं सदी A.D. से, दक्षिण के हिंदुओं और जैनियों ने भी पत्थर के माध्यम को अपनाया, और चट्टानों को काटकर गुफा-मंदिर खोदना, या चट्टानों को काटकर एक ही पत्थर के मंदिर बनाना शुरू किया, और आखिरकार उन्हें पत्थर से बनाना शुरू कर दिया। हमारे पास ऐसे पत्थर के मंदिरों की एक लंबी सीरीज़ है जो एक के बाद एक बनाए गए और पिछली तेरह सदियों से बिना रुके फैले हुए हैं, जो पूरे पेनिनसुला में हज़ारों की संख्या में मौजूद हैं, और ज़्यादातर दूर दक्षिण में जहाँ उनमें से ज़्यादातर अभी भी इस्तेमाल में हैं। भारत के इस हिस्से में विदेशी हमलों और गड़बड़ी से तुलनात्मक आज़ादी और राज्यों और समाज की तुलनात्मक मज़बूती कुछ वजहें थीं। यहाँ तक कि शुरुआती हिंदू और जैन मंदिर भी दक्षिण के तीन बड़े साम्राज्यों - चालुक्य, पल्लव और पांड्य - के शासकों के शाही संरक्षण में बने, साथ ही बीच में पड़ने वाले छोटे राज्यों के भी। इस भावना को जल्द ही अमीर लोगों, व्यापारिक कंपनियों और खेती के व्यापार और उस समय फलने-फूलने वाले कारीगरों के समूहों ने अपना लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण के हर गाँव और कस्बे में छोटे-बड़े मंदिरों की एक श्रृंखला बन गई, जिसे इस प्रकार कहा जाने लगा

4

दक्षिण भारत के मंदिर

मंदिरों की ज़मीन---- मंदिरों को उनके अपने साफ़ और डिटेल्ड शिलालेखों से डॉक्यूमेंट किया गया था, जो फिर से हज़ारों की संख्या में थे। चोल काल (9वीं-10वीं सदी) के मंदिर, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और एजुकेशनल सभी तरह से ग्रामीण और शहरी जीवन का केंद्र बन गए और इस तरह कपड़े, आर्किटेक्चर, मूर्तिकला और दूसरी कलाओं में सबसे अच्छी चीज़ों का भंडार बन गए।

बौद्ध धर्म जल्द ही लगभग पूरी तरह से खत्म हो गया, हिंदू मंदिर ज़्यादा और जैन मंदिर कुछ कम हावी रहे। बेशक, इस इलाके में अपने विकास और ग्रोथ के समय में तीनों के बीच विचारों और इस्तेमाल का एक नैचुरल लेन-देन होता रहा था, जो असल में देसी था। उदाहरण के लिए, बुद्ध को हिंदू धर्म में विष्णु के दस अवतारों में से नौवें अवतार के तौर पर अपनाया गया, कृष्ण की जगह, जिन्हें विष्णु का पूरा रूप माना जाने लगा।

इसका सबूत महाबलीपुरम के शुरुआती गुफा-मंदिरों में से एक में सातवीं सदी A.D. के पल्लव शिलालेख से मिलता है। फिर, बौद्ध तांत्रिक रस्में हिंदू पूजा के तरीकों में शामिल हो गईं। जैन लोगों ने तब तक मदुरै में अपने संघ बना लिए थे, और उससे भी पहले दिगंबर धर्म का उनका पंथ मुख्य रूप से मैसूर के श्रवण-बेलगोला में केंद्रित था, जिसके सहयोगी और ब्रांच

गुच्छ थे - जो आंध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल तक फैल गए। शैव संतों (नयनमार) और वैष्णव संतों (अलवार) के तहत हिंदू धर्म में एक बड़ा पुनरुत्थान हुआ, जिन्हें जल्द ही देवता बना दिया गया और वे देवताओं के समूह और त्योहारों के रीति-रिवाजों और कैलेंडर का हिस्सा बन गए। महान दार्शनिक और शिक्षक शंकर ने भी लोकप्रिय हिंदू पंथों शन्माता और उससे जुड़ी पूजा के मॉडल में सुधार किया। ऐसे बैकग्राउंड के साथ मंदिरों का विकास और संगठित मंदिर पूजा सचमुच अद्भुत हो गई।

दक्षिणी मंदिर अपने विशिष्ट स्तरित विमान मंदिरों, बड़े और छोटे, उनके अक्षीय और परिधीय मंडप सहायक जंक्शन, जो सपाट छत वाले हॉल हैं, और ऊंचे गोपुर प्रवेश द्वार के साथ उत्तरी मंदिरों के मुकाबले अपने आप में एक अलग वर्ग बनाते हैं



प्रसाद मंदिर अपने घुमावदार सुपरस्ट्रक्चर, सबसे ऊपर आमलक और ऊपर उठी हुई मंज़िल वाली छतों वाले मंडपों के साथ। ईंट और लकड़ी से बने अलग-अलग प्लान और ऊंचाई वाले विमान का रूप सातवीं सदी से पहले ही दक्षिण में बन चुका था, यह महाबलीपुरम के तथाकथित रथों और सबसे पुराने पत्थर के स्ट्रक्चर वाले विमानों में दिखाई गई पहली मोनो-लिथिक रेप्लिका से साफ़ पता चलता है। मंडप के रूप भी गुफा-मंदिर के टाइप से साफ़ दिखते हैं, जबकि गोपुर अपने सबसे आसान रूप में शुरुआती मंदिर यूनिट में भी मिलते हैं। वे पत्थर में अपने आप नहीं बन सकते थे।

हिंद महासागर में पूरब के इलाकों के साथ समुद्री संपर्क, जो राजनीतिक बढ़त के मकसद से ज़्यादा व्यापार और बाहर से आने-जाने से जुड़े थे, इसलिए शांतिपूर्ण थे और इसके नतीजे में कॉलोनी बनाने वालों के बाहर से आने-जाने ने इन ज़मीनों के धर्म, संस्कृति, कला और आर्किटेक्चर को आज के ज़माने में बहुत मदद की। कहा जा सकता है कि दक्षिण भारतीय मंदिर आर्किटेक्चर, मूर्तिकला और मूर्तियों का इसमें बहुत बड़ा हाथ रहा है। असल में, यह कहा जा सकता है कि धर्म, कला और आर्किटेक्चर के क्षेत्र में कई सबसे बड़ी कामयाबियाँ दक्षिण भारत में बड़े धर्मों के सेंटर से आगे के इलाकों में भी मिलती हैं - जैसे तंजावुर और मदुरै, और जावा और कंबोडिया जैसी दूसरी जगहों पर।

इस तरह भारत के मंदिरों की स्टडी की एक इंटीग्रेटेड स्कीम में, दक्षिणी मंदिरों की अलग से स्टडी करना ज़रूरी है ताकि न सिर्फ़ उनकी शुरुआत और समय और जगह के साथ अलग-अलग रीजनल स्टाइल में उनके डेवलपमेंट के तरीके को समझा जा सके, बल्कि दो महान परंपराओं, उत्तरी और दक्षिणी, की समानताओं और अंतरों और आपसी असर को भी समझा जा सके। अगले पेजों में दक्षिण के मंदिरों को आउटलाइन में दिखाने की कोशिश की गई है। क्योंकि भारतीय मंदिरों के डिस्क्रिप्शन में अक्सर इस्तेमाल होने वाले यूरोपियन क्लासिकल

ओरिजिन के सबसे आसान आर्किटेक्चरल और आर्ट टर्म्स भी काफ़ी नहीं हैं और हमेशा सही नहीं होते, इसलिए वास्तु और शिल्पा मैनुअल में इस्तेमाल किए गए सबसे ज़रूरी हिस्सों के लिए आम संस्कृत ओरिजिन के भारतीय टेक्निकल टर्म्स का बहुत कम इस्तेमाल किया गया है।



बनाया गया। दक्षिण के मंदिर जाने वाले ज़्यादातर शब्दों को न सिर्फ़ आगे के विवरण में समझाया गया है, बल्कि आखिर में एक ग्लॉसरी में भी इकट्ठा किया गया है, ताकि आखिर में उनका ज़्यादा सही इस्तेमाल किया जा सके।

## अध्याय II

## प्रारंभिक मंदिर

सुपर-ह्यूमन मानी जाने वाली चीज़ों या चीज़ों की पूजा करने का पंथ, एक खास तरीके से और खास जगहों पर, बहुत पुराने समय से ही इंसानियत की पहचान रहा है। ऐसी प्रथाओं का शुरुआती रूप सिर्फ़ साहित्यिक सबूतों, परंपराओं और उन चीज़ों से ही पता चल सकता है जो सदियों से हमारे पास आई हैं। पुराने तमिलकम में जीवन और संगठित पूजा की एक साफ़ तस्वीर मिलती है, जो पेनिनसुला के सबसे दक्षिणी हिस्से में तमिलों का देश है, जिसमें अब केरल भी शामिल है। यह तमिल में मौजूद सबसे पुराने साहित्य से मिलता है, जो ईसाई युग की शुरुआत से ही है, अगर उससे पहले नहीं तो। इस विशाल साहित्य का मौजूदा हिस्सा अपने आप में पहले की और आज की परंपराओं को दिखाता है, जिनमें से कई आज भी मौजूद हैं। इसका असली सबूत अलग-अलग तरह और आकार के कई मेगालिथिक स्मारक हैं जो आज भी बचे हुए हैं। ये स्मारक, जो अंत्येष्टि या कब्र जैसे हैं, दक्षिण में मौजूद शुरुआती स्मारकों का अब तक का सबसे बड़ा ग्रुप हैं और विंध्य के दक्षिण में पूरे इलाके में बहुत फैले हुए हैं। ये स्मारक, जिनकी खासियत बड़े पत्थरों का जुड़ाव है, अपने कैरेक्टर और कंटेंट से एक बहुत विकसित मटेरियल कल्चर को दिखाते हैं, जैसा कि संगम युग और बाद के शुरुआती तमिल लिटरेचर में मिले कई रेफरेंस से भी पता चलता है। यहाँ मरे हुए लोगों के सम्मान में बनाए गए स्मारकों, जैसे कि नादुकल या 'पत्थर लगाना', को बनाने और पूजा करने के साथ-साथ उनके साथ होने वाले रीति-रिवाजों का ज़िक्र है। यह कल्चर, जिसकी शुरुआत

पहली हज़ार साल ईसा पूर्व के बीच में हुई थी, अगर उससे पहले नहीं, तो दक्षिण में पहली हज़ार साल ईस्वी के बीच तक चली और उसके बाद सदियों तक कुछ बदले हुए या सीमित रूप में जारी रही।

इसी साहित्य में हमें दूसरे देवताओं की झलक भी मिलती है।

8

दक्षिण भारत के मंदिर

और आम लोग जिन आत्माओं की पूजा करते थे, साथ ही उनके धार्मिक रीति-रिवाज भी, शायद ब्राह्मण धर्म (जिसे ज़्यादा आसानी से हिंदू धर्म कहा जाता है), जैन धर्म और बौद्ध धर्म जैसे बड़े धर्म बदलने वाले धर्मों के आने से बहुत पहले से ही आम थे, और एक और ज़रूरी धर्म, आजीविकों का तो ज़िक्र ही नहीं। लोकल देवताओं की पूजा और पेड़ों, नदियों और पहाड़ों में रहने वाली आत्माओं की पूजा, या गाँवों, शहरों, चौराहों, समुद्र तटों, और नदी के बंदरगाहों या घाटों, झीलों और तालाबों के रखवालों की पूजा असल में उत्तर भारत (यक्ष, भूत और देवता) में मिलने वाली पूजा जैसी ही थी, जहाँ हमें एक क्लासिक उदाहरण मिलता है कि शिशु बुद्ध को जन्म के तुरंत बाद यक्ष शाक्य वर्धन के मंदिर में ले जाया गया था।

हाइपेथ्रल मंदिर

पेड़ों की पूजा आत्माओं और देवताओं के निवास के तौर पर एक समय बहुत पॉपुलर थी। ये आत्माएं कई पेड़ों से जुड़ी थीं, जैसे अल (बरगद), अरासु (पीपल), इराट्टी (ज़िज़िफ़स या जुजुबे), इलांजी, कदंब, पाला (जैक), वाकाई (अल्बिज़िया), वन्नी (प्रोसोपिस), वेल्ली (वुड-एप्पल), वेम्बू (नीम), वेंगई (प्टेरोकार्पस), वगैरह। कदंब के पेड़ को मुरुगन (कार्तिकेय) का निवास माना जाता है, और अल (बरगद) को शिव का। सबसे पुरानी तमिल रचनाओं में से एक, अहनानुरु में पूजा में बरगद के पेड़ के बारे में बताया गया है जो ईंटों के घेरे से घिरा होता था और जिस पर चढ़ावा चढ़ाया जाता था। यह एक पेड़-मंदिर या वृक्ष-चैत्य का उदाहरण लगता है जो खास तौर पर बौद्ध नहीं था। तमिल महाकाव्य शिलप्पादिकारम, जो समय के हिसाब से कुछ बाद का काम है, उसमें पोदी-मनरम, या बोधि-वृक्ष के मंदिर का ज़िक्र है, जो बौद्ध धर्म से जुड़ा एक वृक्ष-चैत्य है जिसे बौद्ध साहित्य में बोधि-घर (बोधि-गृह) कहा गया है। ये सभी हाइपेथ्रल मंदिरों की एक कैटेगरी बनाते हैं, यानी मंदिर।

खुली हवा में और पूजा की चीज़ के ऊपर छत नहीं होती। आर्कियोलॉजिकल सबूतों से यह साफ़ है कि पेड़-पूजा की यह सोच बहुत पुरानी है, जो हड़प्पा सभ्यता से चली आ रही है।

1 खुले मंदिर, बिना छत के।
शुरुआत - प्रारंभिक मंदिर

9

दक्षिण की तरह ही उत्तर भारत में भी शुरुआती बौद्ध ग्रंथों में बुद्ध से भी पहले उनके होने का ज़िक्र मिलता है। बौद्ध साहित्य में ऐसे पेड़-मंदिर, चाहे मंदिर के ढांचे के साथ हों या बिना, और खास तौर पर बौद्ध धर्म से जुड़े न हों, उन्हें रुक्का-चैत्य (वृक्ष-चैत्य या चैत्य-वृक्ष) या पेड़-मंदिर कहा जाता है, जबकि बोधि-वृक्ष के आस-पास के वे मंदिर जो बौद्धों के लिए पवित्र हो गए थे, उन्हें बोधि-घर कहा जाता है। उरुवेला में बोधि वृक्ष को बौद्ध समय से भी पहले पवित्र माना जाता था, क्योंकि यह एक देवता या दिव्य प्राणी (यक्ष?) का निवास स्थान था, जिन्हें प्रसाद चढ़ाया जाता था और जिनसे शादी और प्रजनन क्षमता के वरदान मांगे जाते थे। दूसरे पवित्र पेड़ों की पूजा या आदर भी ऐसा ही था, जैसे फूल और माला चढ़ाना, खुशबूदार पानी से नहलाना या शुद्ध करना, उनके बेस के चारों ओर साफ़ रेत बिछाना या उनके तनों के चारों ओर चबूतरे (वरम) या दूसरी छत वाली गैलरी बनाना ताकि ऊपर बताए गए दूसरे काम और रस्में की जा सकें। कभी-कभी रेलिंग या घेरे की दीवारें भी बनाई जाती थीं और उन्हें झंडों, झंडियों और छतरियों से सजाया जाता था।

क्योंकि पवित्र पेड़ के चारों ओर कंस्ट्रक्शन का मकसद न सिर्फ इज्ज़त देना था, बल्कि पूजा के रीति-रिवाजों की ज़रूरतों को भी पूरा करना था, इसलिए अलग-अलग प्लान में इसने खास आर्किटेक्चरल आकार लिए। यह नॉर्थ और साउथ इंडियन बौद्ध जगहों पर बोधि-घरों की उभरी हुई मूर्तियों से साफ है, जो दूसरी सदी BC से भी पुरानी हैं। बोधि-घर को हमेशा एक ऊँची गैलरी के रूप में दिखाया जाता है, खुली या छत वाली, जो बोधि-वृक्ष और उसके नीचे वज्रासन के ठीक चारों ओर होती है, और जिसमें बंद पवित्र जगह, बोधि-मंड में पक्के तौर पर बने हुए दरवाज़े होते हैं। अशोकवदन में, सम्राट अशोक के बारे में कहा गया है कि उन्होंने अपनी मन्नत पूरी करने के लिए, बोधगया में मशहूर बोधि-वृक्ष के चारों ओर बनाए गए घेरे (वरम) पर चढ़कर एक हज़ार बर्तनों से खुशबूदार पानी डाला था। साउथ इंडिया में बोधि-घर के दो अमरावती वर्शन में से, एक सही-सलामत है, हालांकि ठीक से बचा हुआ नहीं है, और दूसरा टूटा-फूटा है। पहला, प्लान में असल में चौकोर है,



हर एक-दूसरे को काटते हुए कोने पर किनारों के सिरे थोड़े आगे तक फैले हुए हैं, इसमें ज़मीन के लेवल से ऊपर एक बहुत ऊँची दूसरी मंज़िल या गैलरी है। इसे शायद आसान बनाया गया था, जैसा कि दूसरे उदाहरणों में भी होना चाहिए, सीढ़ियों की सही जगह से बनी हुई जो उभरी हुई आकृतियों में नहीं दिखतीं। प्लान के हिसाब से इसके चारों कोनों पर आठ-आठ खंभों के चार सेट होंगे, हर सेट के चार खंभे हर असली कोने पर होंगे, जबकि चार और खंभे कोनों के सामने दो जोड़ों में हर सेट से पहले रखे गए हैं। दूसरी अमरावती उभरी तीन मंज़िला और

प्लान में गोल है। इसमें भी ज़मीन के नीचे ऊँचे खंभे हैं, जो ऊपर की दो मंज़िलों को सहारा देते हैं। वैशाली का मशहूर बहुपुत्र चैत्य, जो बुद्ध की वैशाली की कई यात्राओं के दौरान उनकी पसंदीदा जगहों में से एक था, अमरावती के एक खंभे[1] के एक हिस्से पर दिखाया गया है, ताकि बुद्ध की उस जगह की आखिरी यात्रा के नैरेटिव चित्रण में वैशाली को दिखाया जा सके, हालाँकि उस समय वे इस चैत्य में नहीं रुके थे। सीन के इस हिस्से में तीन पेड़ हैं, जिनमें से दो के बेस रेलिंग से घिरे हैं। सबसे खास पेड़ दाईं ओर है, जिसके चारों ओर रेलिंग है, और उसमें दो भक्त पूजा करते हुए दिखाए गए हैं, एक हाथ जोड़े हुए है और दूसरा पेड़ की ओर एक बच्चा पकड़े हुए है। इसके नीचे एक लिखावट भी है, जिसे "वैशाली का बहु-पुत्र-चैत्य" कहा गया है। यह एक पेड़-चैत्य का रेंडरिंग होगा जिसमें एक साधारण रेलिंग है जो इसकी पुरानी पहचान बताती है, क्योंकि यह स्टील और लिखावट अशोक के बाद के समय की हैं। बुद्धघोष के अनुसार, यह कई शाखाओं वाला पेड़ था जहाँ लोग बेटों के लिए प्रार्थना करते थे। इसलिए यह दिखाना सही है कि एक वरदान के लिए प्रार्थना कर रहा है, और दूसरा, वरदान पाकर, शुक्रगुजार होकर उसे पेश कर रहा है और आगे भी आशीर्वाद चाहता है।2

1 प्राचीन भारत, संख्या 20 और 21, पृ. 168-177.

अरसु (पीपल) का पेड़, जिसे अक्सर नदी के किनारे, तालाब के बांधों पर, या दूसरी पवित्र जगहों पर वेम्बू (नीम) के साथ लगाया जाता है, आज भी संतान चाहने वालों के लिए पूजा और घूमने की चीज़ है, और यह अश्वत्तनारायण-प्रदक्षिणा, जैसा कि इसे कहा जाता है, सोमवार को फायदेमंद माना जाता है जो अमावस्या के दिन भी होते हैं। अरसु को विष्णु-नारायण या जनार्दन और पितरों, या गुज़रे हुए पितरों के लिए भी पवित्र माना जाता है, जिनका आशीर्वाद अच्छी संतान के लिए मांगा जाता है।

11

प्रारंभिक मंदिर

आसान शब्दों में कहें तो, पूजा की मुख्य चीज़ के चारों ओर बोधि-घर की बनावटें, पूजा की चीज़ को रखने वाले छत वाले मंदिर की बनावटों या विमानों के चारों ओर क्लोइस्टर गैलरी (या दालान) से पहले होती हैं, जो अक्सर एक से ज़्यादा मंज़िल के होते हैं। इन क्लोइस्टर गैलरी को तमिल शिलालेखों और टेक्स्ट में मालिकाई (मलिका) के तौर पर बताया गया है, साथ ही मंदिर आर्किटेक्चर पर शिल्पा और आगम लिटरेचर में भी। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि जहाँ शुरुआती उदाहरण हाइपेथ्रल मंदिरों के चारों ओर होते हैं जो छत से ढके नहीं होते, वहीं बाद के मालिकाई छत वाले मंदिरों या विमानों के चारों ओर होते हैं जिनमें पूजा की चीज़ या देवता होते हैं।

दक्षिण भारत में, खासकर तमिल देश में, हिंदू पंथों की संगठित मंदिर पूजा के बढ़ने के बाद भी, पेड़ों की पूजा का बहुत पुराना और गहरा पंथ जारी रहा। यह धार्मिक जगहों, या स्थलों, को खास पेड़ों, स्थलवृक्षों, और किसी खास पानी के रास्ते, नदी, झील या तालाब, तीर्थ के

साथ जोड़कर देखा जा सकता है। किसी ज़रूरी तीर्थस्थल को आज भी स्थल, या तीर्थ कहा जाता है, और एक पवित्र जगह में मूर्ति, या भगवान के सिर के साथ स्थल, पेड़ और तीर्थ का कॉम्बिनेशन होना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, चिदंबरम में स्थल-वृक्ष तिलई (एक्विलारिया) है, जम्बूकेश्वरम (तिरुचिरापल्ली के पास) में जम्बू, कांची में एकाम्रनाथ में अमरा, और मदुरै में कदंब। ऐसे कई उदाहरण हैं, और वे ज़्यादातर शैव से जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, शुरुआती तमिल कामों में खास पेड़ों, जैसे कवल मरम (टोटम पेड़) को राजाओं और राज करने वाले सरदारों से जोड़ा गया है। उदाहरण के लिए, पनाई, अट्टी और वेम्बू, क्रमशः चेर, चोल और पांड्या राजाओं के निशान थे।

बौद्धों द्वारा शुरू किया गया दूसरा हाइपेथ्रल मंदिर स्तूप था, जिसे अक्सर महा-चैत्य कहा जाता था। दक्षिण में आने से पहले, स्तूप जो एक कम गोल ठोस गुंबद या अंडा के रूप में शुरू हुआ था, वह एक ऐसे स्तूप में बदल गया जहाँ अंडा एक अलग बेलनाकार ड्रम, मेधी के ऊपर बना होता था। मेधी, ऊपर वाले अंडा से बड़े डायमीटर का होने के कारण, एक संकरा रास्ता देता था।





परिक्रमा मार्ग, प्रदक्षिणा, जिसके किनारे पर अक्सर ज़मीन पर बने रेलिंग के अलावा ऊँचे लेवल पर एक नीची रेलिंग होती थी। रेलिंग सीधे पैनल या स्लैब से बनी होती थी, जो कुछ दूरी पर लगे सीधे खंभों के बीच लगे होते थे। मेधी को अक्सर चारों दिशाओं में छोटे प्लेटफॉर्म के आकार में ऑफसेट के रूप में बनाया जाता था, स्तूप के आसान मामलों में चढ़ावा रखने के लिए अयाक प्लेटफॉर्म। दूसरे मामलों में, आने-जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थीं। कुछ दूसरे मामलों में, अयाक प्लेटफॉर्म के बाहरी किनारों पर पाँच ऊँचे खंभों का एक सेट लगा होता था। इन्हें अयाक-पिलर कहा जाता था। अंडा के ऊपर प्लान के हिसाब से हर्मिका स्क्वायर होता है और इसमें एक छत्र (छत्र) या उनकी एक सीरीज़ (छत्रावली) होती है। पूरा स्ट्रक्चर अक्सर चारों तरफ सादे खुले स्थानों वाली रेलिंग से घिरा होता है, न कि सांची की तरह बड़े तोरण वाले दरवाज़े। ईंटों से बने स्तूप में अंडा, मेधी और आयाक प्लेटफॉर्म थे। पहले के और आसान उदाहरणों में, इन पर सिर्फ़ प्लास्टर किया गया है, और अंडा के चारों ओर एक बड़ी गोल माला है जिसे प्लास्टर से सजाया गया है। कृष्णा घाटी और आस-पास के इलाकों में, उन्हें लोकल चूना पत्थर के तराशे हुए स्लैब की एक सीरीज़ से ढका गया था - मार्बल जैसा नरम पलनाड चूना पत्थर - जिसे पतले और बड़े स्लैब में निकाला जा सकता है और आसानी से तराशा जा सकता है।

रेलिंग भी उसी मटीरियल की थी और उसी तरह से नक्काशी की गई थी। नक्काशी में बुद्ध के बारे में अलग-अलग कहानियों के सीन और उनकी जीवन-कहानी के अलावा दूसरी सजावटी और सजावटी मूर्तियां और डिज़ाइन भी हैं।

पहले के बड़े और छोटे स्तूप ठोस और कभी-कभी बड़े होते थे, बाकी आधे-खोखले थे और उनमें ईंटों के अंदरूनी स्ट्रक्चरल डिज़ाइन के बदलाव थे, जैसे कि स्पोक वाला पहिया, स्वास्तिक, गोलों के अंदर चौकोर, वगैरह, और बीच की जगहें मलबे से भरी हुई थीं। ये सभी तरीके ईंटों को बचाने और साथ ही स्ट्रक्चर की मज़बूती और स्थिरता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए थे, जिसे बड़े गोलार्ध और चूना पत्थर के स्लैब के आवरण का वज़न भी सहना था। इन अलग स्तूपों या महा-चैत्यों में अवशेष ताबूत रखे हुए थे, जिनमें टुकड़े-टुकड़े रखे हुए थे।



बुद्ध या किसी दूसरे महान गुरु के अवशेषों के कुछ हिस्से, सही तरीके से छिपाकर अंदर सील कर दिए गए थे।

अमरावती में टूटे-फूटे महा-चैत्य की नींव अशोक के समय में रखी गई थी। बाद में इसे बड़ा किया गया और पत्थर की रेलिंग के साथ नक्काशीदार और नक्काशीदार चूना पत्थर के स्लैब से घेरा गया। यहां शुरुआती दौर में, भट्टिप्रोलू, जग्गय्यापेटा और गरिकापाडु के स्तूपों की तरह, अकेले अयाका प्लेटफॉर्म पर बाकी ड्रम के मुकाबले पत्थर के आवरण में ज़्यादा बारीकी से नक्काशी की गई थी। यह इस बात से मेल खाता था कि अयाका एक्सटेंशन भक्तों द्वारा फूल, दीपक और प्रसाद रखने के लिए वेदियों के तौर पर काम करते थे। ड्रम में कमोबेश सादे स्लैब थे जिन पर बहुत कम नक्काशी थी, सिवाय शायद किनारों पर कम उभरे हुए पिलस्टर के। इन पिलस्टरों पर घंटी के आकार के कैपिटल पर जानवरों की आकृतियां थीं। इसके अलावा बुद्ध के प्रतीकों के दोनों ओर भक्तों की आकृतियां थीं। बाद के रेनोवेशन के दौरान भी मूर्तिकारों ने अयाका-प्लेटफॉर्म पर ज़्यादा ध्यान दिया, जैसा कि दूसरी जगहों के स्तूपों के मामले में होता है। मेधी के ऊपर परिक्रमा मार्ग के पैरापेट स्लैब के अंदर के हिस्से नागार्जुनकोंडा, जग्गय्यापेटा, घंटाशाला और पेड्डा-गंजम के महा-चैत्यों की तरह बारीक नक्काशी वाले थे। इन स्लैब को बाहरी घेरे पर कुछ दूरी पर रखे गए खंभों के बीच में लगाया गया था, जिसके ऊपर एक मोल्डेड कोपिंग थी। 200 B.C. से पहले की पत्थर की रेलिंग को भी पुनर्निर्माण के दौरान बड़ा किया गया था और यह 150 और 200 A.D. के बीच अपने अंतिम वास्तुशिल्प और सजावटी रूप में सामने आई। इसके बाद स्तूप की सजावट का आखिरी चरण आया, जब बेसल हिस्सों के कई पहले के नक्काशीदार केसिंग स्लैब को उलट दिया गया और उनके पहले बिना नक्काशी वाले अंदर के हिस्सों को काटकर कुछ बेहतरीन मूर्तियों से ढक दिया गया। यह 200 से 250 A.D. के समय में किया गया था।

नागार्जुनकोंडा का बड़ा महा-चैत्य, जो इक्ष्वाकु काल की शुरुआत में बना था, बिना आवरण वाले स्तूपों की कैटेगरी में आता है। इसकी ईंटों पर ज़्यादातर प्लास्टर किया गया है, और अंडा

को प्लास्टर की एक बड़ी माला से सजाया गया है। लेकिन अमरावती स्तूप के उलट, जो



मज़बूती से बने इस स्तूप में एक बीच का खंभा था जिसमें आठ रेडियल दीवारें थीं जो एक बाहरी गोल दीवार से मिलती थीं, जिससे यह अपने हब, तीलियों और तने के साथ एक गाड़ी के पहिये जैसा दिखता था। एक दूसरी गाढ़ी बाहरी दीवार थी जिसके और अंदर की गोल दीवार के बीच रेडियल दीवारों के और उभार थे, ये दो गोल दीवारें एक-एक करके अंडा और मेधी का बेस बनाती थीं, जबकि अंदर की क्रॉस-दीवारें जिनके बीच भराव था, ज़रूरी स्ट्रक्चरल सपोर्ट देती थीं। शायद इसमें एक बाहरी गोल रेलिंग भी थी। इस इलाके के कई दूसरे स्तूपों में मूर्तियों के साथ पत्थर के आवरण थे और उनमें भी हमेशा पत्थर की रेलिंग होती थी। अयाक प्लेटफॉर्म, हालांकि आमतौर पर इस इलाके के स्तूपों में देखे जाते हैं, रामतीर्थम और सलिहुंडम के स्तूपों में नहीं दिखते, जबकि वे शंकरम में चट्टान को काटकर बनाए गए स्तूप के सिर्फ़ एक तरफ दिखते हैं।

इस मामले में यह ध्यान देने वाली बात है कि अमरावती स्तूप में नीचे की तरफ़ अस्थि-कलश मिले हैं, वहीं नागार्जुनकोंडा की जगह पर लगभग उसी समय के मेगालिथिक स्मारकों वाले स्तूपों का प्रचलन दिखा है। मेगालिथिक जगहों और स्तूप वाली जगहों के ऐसे जुड़ाव दक्कन, आंध्र और उत्तरी मैसूर इलाकों में बहुत सारे हैं, जो मोटे तौर पर मौर्य साम्राज्य के दक्षिणी इलाकों और उन इलाकों से मेल खाते हैं जहाँ बौद्ध धर्म और दूसरे उत्तरी धर्मों का ज़्यादा असर था। शायद इसी वजह से स्तूप की पूजा और आदर का पंथ शुरू हुआ, जो असल में कंटेंट और जुड़ाव दोनों में ही अंतिम संस्कार जैसा है। इस इलाके में यह आसानी से अपनाया जा सकता था जहाँ पहले मेगालिथिक परंपरा थी। इसी वजह से, इसलिए, कोई यह मान सकता है कि पत्थर, जो कई सदियों तक मुख्य रूप से मरे हुओं और मरे हुओं के पंथ से जुड़ा था, इन खास तौर पर ईंट से बने स्तूपों को बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता था, या तो सुरक्षा के लिए या चारों ओर से घेरे या रेलिंग के तौर पर, और उन खंभों में जो अलग से खड़े थे या स्ट्रक्चरल सपोर्ट थे। हालांकि, ईंट बनाने की बहुत ज़्यादा डेवलप्ड तकनीक के उलट, पत्थर में स्ट्रक्चरल पैटर्न बेसिक थे और सिंपल केसिंग या जोड़ने से आगे नहीं बढ़े, जैसे कि रेलिंग और रेलिंग में, क्रॉस-पीस या टेनन वाले स्लैब में।

}

मोर्टिस्ड अपराइट्स तक। यह लकड़ी के काम की पूरी नकल थी, पत्थर में बढ़ईगीरी का एक सिमुलेशन। असली पत्थर का निर्माण जिसमें डिज़ाइन के स्ट्रक्चरल सिद्धांत, सपोर्ट कोर्सिंग और जॉइंट्स का टूटना, थ्रस्ट और लोड का काउंटरएक्शन शामिल था, अभी तक डेवलप नहीं हुआ था।

मौर्य साम्राज्य के सबसे दक्षिणी इलाकों से आगे, एकदम दक्षिण में, जहाँ अशोक के शिलालेखों के अनुसार, चेर, पांड्य, चोल और सत्यपुत्र के तमिल राज्य फले-फूले, वहाँ बौद्ध स्तूपों की लगभग कमी है। लेकिन उस समय के साहित्य में बौद्ध धर्म के साथ-साथ उत्तर के तीन दूसरे धर्मों, खासकर हिंदू धर्म और जैन धर्म का भी ज़िक्र है, जिनकी इस इलाके में ज़्यादा मज़बूत पकड़ थी। आजीविकों के बारे में पहली सदी के आखिर में भी सुना जाता है और शायद वे जैन धर्म में मिल गए, जो ज़्यादातर दिगंबर था, और जिसकी दक्षिणी मैसूर या कन्नड़ इलाके में भी मज़बूत पकड़ थी।

मेगालिथिक पंथ पॉपुलर था और अंत्येष्टि स्मारकों की पूजा और आदर के बारे में अक्सर बताया गया है, खासकर नाडुकल या पत्थर बनाना (मेनहेइर या मेगालिथ) जिसमें ताड़ी और जानवरों की बलि, दीये जलाना, और ढेर सारे उबले चावल (पेरुमचोरू या पवदाई) चढ़ाना शामिल था। किताबों के सबूतों के मुताबिक, माना जाता था कि मरे हुए लोग खुद पत्थर बन जाते थे जिनमें दिव्य गुण आ जाते थे। एक पत्थर हीरो, योद्धा, राजा या कोई आम इंसान भी हो सकता था। जो औरतें अपने पति की मौत पर खुद को जला देती थीं, उस समय जब पवित्रता और वफ़ादारी का पंथ तेज़ी से फैल रहा था, उन्हें सती पत्थरों के रूप में यादगार चीज़ें दी जाती थीं, जिन्हें बाद में लिखावट में तोरू या मसतिक्कल (महा-सती-काल) कहा गया। ऐसे यादगार या सती पत्थर, जो दूसरी-तीसरी सदी A.D. के हैं, आंध्र की जगहों, खासकर नागार्जुनकोंडा में, लिखावट और नक्काशी के साथ मिलते हैं, और उन्हें छाया-खबा या छाया-खंबा कहा जाता है। ये कन्नड़ देश में और चौथी सदी के बाद से तमिल देश के आस-पास के इलाकों में भी आम हैं। शुरुआती तमिल कामों में बताया गया है

16

दक्षिण भारत के मंदिर

कई मामलों में ऐसा पत्थर का ढांचा या नादुकल होता था, जिस पर गेरू रंग और ब्रश से, उस मरे हुए इंसान का नाम और उसकी कहानियाँ लिखी होती थीं, जिसे वह दिखाता था। पूजा की यह चीज़ एक घेरे से घिरी होती थी, और सामने एक भाला और ढाल रखी जाती थी, और खाना और ताड़ी चढ़ाई जाती थी। हाइपेथ्रल मंदिर का यह उदाहरण कोयंबटूर ज़िले में रंगासामी चोटी पर एक ऐसे ही पुराने निर्माण से दिखता है, जिसमें एक मेनहेर या सीधा पत्थर होता है, जिसके सामने एक त्रिशूल या त्रिशूल लगा होता है और वह मलबे की दीवार से घिरा

होता है।

पूजा की जगह के तौर पर मंदिर – पोदियिल या मनरम, या मुररम – में पूजा की चीज़ें अक्सर गांव में किसी खास पेड़ के नीचे सिर्फ़ टीले या प्लेटफॉर्म – मेदाई – होती थीं। कभी-कभी वे पत्थर के स्लैब के तीन-तीन टुकड़े होते थे जिन्हें दो खंभों – टेरी – पर रखा जाता था, जो आज भी कुछ दूर-दराज के इलाकों में मौजूद हैं। कुछ प्लेटफॉर्म पर एक खंभा, या कंडू होता था, जो उनके ऊपर देवता की मूर्ति को दिखाता था। इन मंदिरों को कंडुदाई-प-पोदियिल कहा जाता है, जिसका मतलब है पूजा की आम जगह जहाँ कंडू लगाया जाता है। शुरुआती तमिल किताबों में कुछ छोटी-छोटी बातों से हमें पता चलता है कि कंडू, देवता के रहने की जगह के तौर पर, एक खंभों वाले हॉल, या पोदियिल में, एक प्लेटफॉर्म पर खड़ा था, जिसे जवान औरतें नहाने के घाट में डुबकी लगाने के बाद, कंडू के पास हमेशा जलने वाला दीया जलाकर साफ़ करती थीं और पानी और गोबर से लीपती थीं। हमें यह भी बताया गया है कि बहुत से लोग यहाँ चढ़ावा या बलि चढ़ाकर पूजा करने आते थे।

तमिल महाकाव्य, मणिमेकलाई में बौद्धों की पूजा की चीज़ के तौर पर बुद्ध-पितिकई या धर्म-पितिकई का ज़िक्र किया गया है। इसके छोटे से ब्यौरे से ऐसा लगता है कि यह एक गोल पद्म पीठ, या कमल की पंखुड़ियों का फैला हुआ आसन था, जो एक चौकोर चबूतरे पर लगा था, जिसका बेस भी कमल की पंखुड़ियों जैसा था, और साफ़ तौर पर पूरा हिस्सा ईंटों का बना था। कावेरी नदी के मुहाने पर पुराने चोल बंदरगाह शहर कावेरी-प-पट्टिनम की हाल ही में हुई खुदाई से, पूजा की चीज़ के तौर पर गुरु के बुद्ध-पद, तिरुवादी (या पुण्य-पद) का एक अकेला उदाहरण मिला है। यह लगभग चौथी सदी A.D. का पालनाद चूना पत्थर का एक नक्काशीदार स्लैब है और

}



शायद यह ईंट के प्लेटफॉर्म का सबसे ऊपरी हिस्सा था। शायद इसे शुरू में पूजा के लिए किसी मंदिर में लगाया गया था। इन दो उदाहरणों से पता चलता है कि तमिल देश में पूजा की चीज़ों के तौर पर स्तूप न होने पर, बुद्ध-पिटिका और बुद्ध-पद की पूजा तब तक की जाती थी जब तक कि पत्थर या दूसरी चीज़ों में बुद्ध के आइकॉनिक रूप बहुत बाद में नहीं आ गए।

## छत वाले मंदिर

जहां छत वाले स्ट्रक्चर ऐसे प्लेटफॉर्म, धार्मिक चीज़ों, निशानों या मशहूर चीज़ों को दिखाते हुए बनाए गए थे, वहां उन्होंने बनाने के प्लान और स्टाइल में दुनियावी इमारतों की नकल की। फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि मंदिर ज़्यादा पक्के मटीरियल से बने थे, जैसे ईंट और लकड़ी, जिन्हें

प्लास्टर, प्लास्टर, नक्काशी और पेंटिंग से ज़्यादा अच्छे से सजाया गया था, और आम लोगों के मिट्टी और घास-फूस की दीवारों वाले छोटे-मोटे घरों के मुकाबले अक्सर बड़े साइज़ के होते थे।

इनमें से कोई भी मंदिर तमिल ज़मीन पर नहीं बचा है, हालांकि तमिल संगम क्लासिक्स में इन साधारण या मंज़िला बनावटों की काफ़ी तस्वीरें हैं। उदाहरण के लिए, एक में ऊँची ईंट की दीवारों और लकड़ी के बीम वाले एक मंदिर के बारे में बताया गया है, जिसके अंदर, पिछली दीवार पर, देवता या कदवुल की पेंट की हुई तस्वीर थी जिसकी पूजा की जाती थी, जिससे पता चलता है कि यह या तो एक म्यूरल पेंटिंग थी या प्लास्टर की मूर्ति, या कभी-कभी नक्काशीदार लकड़ी की पट्टिका थी जो उस समय के ज़्यादा आधुनिक मंदिरों में पूजा की मुख्य चीज़ होती थी। ऐसे मंदिर या पूजा की जगहें, जो ज़्यादातर ईंट और लकड़ी की बनी होती थीं, संगम की रचनाओं में कोट्टम, नगरम, कोयिल और पल्ली के नाम से अलग-अलग तरह से बताई गई हैं। साफ़ है कि ये नाम अलग-अलग प्लान और बनाने के स्टाइल को दिखाते हैं। महाकाव्य मणिमेकलाई में ईंट से बने और शानदार एंट्रेंस या गोपुर वाले मंदिरों का ज़िक्र है। इनमें से कुछ मंदिर मंज़िला मदम थे, और इनमें यादगार पूजा की जगहें भी शामिल थीं। ऐसे यादगार पूजा की जगहें बनाने का रिवाज़, जिन्हें तमिल में पल्ली-प-पदाई कहा जाता है, नौवीं और दसवीं सदी में भी जारी रहा।





A.D., जैसा कि तमिल और कन्नड़ शिलालेखों से पता चलता है।

दूर दक्षिण के पुराने तमिल देश में, जैसा कि इसके शुरुआती साहित्य से भी पता चलता है, अलग-अलग देवताओं को देश के अलग-अलग इलाकों, यानी पहाड़ी, जंगली या देहाती, नदी या खेती वाले, रेगिस्तान या सूखे इलाकों, और समुद्र के किनारे के इलाकों पर राज करते हुए दिखाया गया है। ऐसे देवता थे सेयोन, मायोन, वेंडन, वालियॉन, कोर्रावई या कडुकल। इसके अलावा, और भी छोटे देवता थे। ईसाई युग से पहले और बाद की सदियों में वैदिक हिंदुओं, जैनियों, आजीविकों और उत्तर के बौद्धों जैसे तेज़ी से बदलते धर्मों ने दक्षिण के सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक आधार पर पक्का और अहम असर डाला। यह मौर्यों के राजनीतिक नक्शे के फैलाव के साथ भी मेल खाता था, जिसकी सीमाओं से परे दक्षिण में संगठित राज्यों के तहत एक मज़बूत देसी कोर, एक कामयाब संस्कृति, भाषा और तेज़ी से बढ़ता साहित्य बना हुआ था। आने वाले लोगों ने धर्म और रीति-रिवाजों के बारे में अपने विचारों को बेहतर ढंग से समझाने के लिए लोकल भाषाओं को बढ़ाना सही समझा और तमिल भाषा के साहित्य और ग्रामर को बढ़ाने में खुद भी बड़ा हिस्सा लेकर सक्रिय रूप से योगदान दिया। संगम कवियों में कई ब्राह्मण या जैन थे। कुछ समय बाद कन्नड़ भाषा के साथ भी ऐसा ही हुआ। इस तरह, इस असर के कारण आने वाली धार्मिक संस्कृतियों ने अलग-अलग लेवल पर नए विचारों और आइडिया को लाया और उनमें शामिल किया, साथ ही बहुत सी लोकल चीज़ों को भी

अपनाया। भारत की संस्कृति और धर्मों के ऐसे असर के कारण सीलोन, बर्मा, थाईलैंड, कंबोडिया और इंडोनेशिया जैसे सुदूर पूर्व के देशों में जो हुआ, जिससे देवी-देवताओं और कहानियों, मूर्तियों और रीति-रिवाजों के लोकल बदले हुए वर्शन का एक मेल बना, वह कमोबेश यहाँ भी हुआ। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म, खासकर तमिल देश में, जिसमें केरल का ज़्यादातर हिस्सा भी शामिल था, लोकल देवी-देवताओं और कॉन्सेप्ट को अपने देवताओं और रीति-रिवाजों में शामिल करके, या उन्हें अपने कई देवताओं से जोड़कर, अलग-अलग तरह का बन गया। लोकल मायोन की पहचान कृष्ण या विष्णु से की जाती थी,





बलभद्र के साथ वलियॉन, दुर्गा के साथ कोर्रावई, कार्तिकेय के साथ सेयोन या मुरुगन और इंद्र के साथ वेंडन। संगम और संगम के बाद की कविताएँ, जो लगभग सातवीं सदी तक फैली हुई हैं, इन देवताओं को समर्पित मंदिरों - कोट्टम, नगरम और कोयल के बारे में बताती हैं, इसके अलावा शिव, इंद्र के पर्वत - ऐरावत, और उनके वज्र, दिव्य वरदान वृक्ष, कल्पतरु, सूर्य और चंद्रमा के मंदिर भी हैं। आगमिक पूजा के धीमे विकास की शुरुआत भी यहीं मिलती है। स्थानीय जैन धर्म, जो मुख्य रूप से और लंबे समय तक दिगंबर था, और बौद्ध धर्म के मामले में भी ऐसा ही, लेकिन बहुत कम हद तक, असर हुआ। शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, श्री, दुर्गा और दूसरे देवताओं के आइकॉनिक रूप भी विकसित हुए। असल में, इस सिंथेसिस का नतीजा यह हुआ कि अगली पांच सदियों (आठवीं और तेरहवीं के बीच) में सही ग्रोथ के बाद, दक्षिण ने भारत की साझी विरासत में अनोखे रूपों और कॉन्सेप्ट्स का योगदान दिया, जैसे, नटराज और दक्षिणामूर्ति के रूप में शिव का रूप और कॉन्सेप्ट, ललिता के रूप में देवी, नयनमार और अलवार-शैव और वैष्णव संतों का भक्ति पंथ, और शंकर, रामानुज और माधव के अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत के महान दर्शन। यही बात बाद के समय में जैन धर्म और बौद्ध धर्म में दक्षिण के योगदान के बारे में भी कही जा सकती है।

इन देवताओं के, जो ज़्यादातर लकड़ी पर पेंट किए गए थे या खुदे हुए थे, या ईंट और लकड़ी के उनके मंदिरों के, सुदूर दक्षिण में कोई निशान नहीं बचा है। ऐसा इसलिए था क्योंकि जिस कपड़े से वे बने थे, वह जल्दी खराब हो जाता था।

पेनिनसुला का उत्तरी आधा हिस्सा जिसमें दक्कन और आंध्र और कन्नड़ इलाके शामिल हैं, यानी मोटे तौर पर वे हिस्से जो मौर्य साम्राज्य के अंदर आते थे, उन्होंने स्वाभाविक रूप से दूसरों की तुलना में गहरी संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं (प्राकृत और संस्कृत) को ज़्यादा अपनाया। इसका नतीजा यह हुआ कि इसके देसी साहित्य का विकास देर से हुआ, जिससे शुरुआती समय की पूरी तरह से स्थानीय परंपराओं और मान्यताओं के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं मिलती है। लेकिन धार्मिक रूपों और पूजा की जगहों को दिखाने वाले कई समकालीन भौतिक अवशेष मौजूद हैं और सामने आए हैं।

दक्षिण भारत के मंदिर

जैसा कि नॉर्थ इंडिया में, हाल की खुदाई में हुआ है। हालांकि बौद्ध अवशेष ज़्यादा हैं, नागार्जुनकोंडा में हाल की खुदाई से पता चला है कि हिंदू मंदिर भी साथ-साथ थे, जो शैव, वैष्णव और दूसरे पंथों की लोकप्रियता दिखाते हैं। इन अवशेषों से यह भी पता चलता है कि मंदिरों या पूजा स्थलों का प्लान, डिज़ाइन और बनाने का तरीका एक जैसा था, चाहे वे किसी भी पंथ के हों। पंथ का अंतर सिर्फ़ उन देवताओं या चीज़ों से पता चलता था जिन्हें पूजा के लिए रखा जाता था और उनके सही निशान या दूसरी प्लास्टिक की चीज़ें जो ऐसे मंदिरों की सजावट का काम करती थीं। ऐसा लगता है कि जैन धर्म के लोग कन्नड़, तमिल और केरल इलाकों में ज़्यादा घुले-मिले थे। उनके प्लान में, उनके धार्मिक ढांचे, खासकर उनके मंदिर, हिंदुओं के मंदिरों से ज़्यादा अलग नहीं थे, यह बात सदियों से आज तक बनी हुई है। इन इलाकों में बौद्ध मंदिरों के निशान शायद कम थे, जो अब मिट गए हैं, हालांकि बाद के समय की बुद्ध की कई मूर्तियां साउथ इंडिया के अलग-अलग हिस्सों में मिली हैं। अगर उनके मंदिर बच जाते, तो वे भी उस समय के हिंदू या जैन मंदिरों से ज़्यादा अलग नहीं होते।

आर्किटेक्चर के हिसाब से, ये साधारण मंदिर, जो आज के सेक्युलर घरों की नकल थे, चौकोर, आयताकार, गोल, अंडाकार और ऊपरी तरफ़ के थे, कभी-कभी षट्कोणीय या अष्टकोणीय होते थे, और लकड़ी या ईंट से बने होते थे। ऐसे धार्मिक और सेक्युलर ढाँचे ईसा से ठीक पहले और बाद की सदियों की शुरुआती बेस-रिलीफ मूर्तियों में दिखाए गए हैं; जैसे, उत्तर में बरहुत और सांची और दक्षिण में अमरावती और नागार्जुनकोंडा और दूसरी जगहें। उन्हें पहले ही पेड़ों के मंदिरों या वृक्ष चैत्यों, बौद्ध-स्तूपों और बोधि-मंदिरों (तमिल में पोडी-मनरम) के रूप में प्लान के तौर पर दिखाया गया है।

चौकोर इमारतों की छतें एक बिंदु (कूट) पर मिलती हैं, गोलाकार या अष्टकोणीय इमारतों की छतें भी इसी तरह गुंबददार (कूट) होती हैं, आयताकार इमारतों की छतें गुंबद जैसी या गाड़ी के ऊपर के हिस्से जैसी (साला) या कभी-कभी त्रिकोणीय छतें (सभा) होती हैं, जैसा कि सीतामढ़ी और सोन में है।



भंडार, और अंडाकार मूर्तियों में उल्टे कील के आकार की छतें होती हैं जिनमें एक लंबा रिज और कई फिनियल (जिन्हें साला भी कहा जाता है) होते हैं। इनमें से कई उभरी हुई मूर्तियों में ऊपरी किनारों वाली संरचनाओं का सामने का दृश्य देखा जा सकता है।

मौजूदा साहित्यिक विवरणों से, उभरी हुई मूर्तियों की फिर से बनाई गई मूर्तियों से, और खुदाई से मिले कुछ अवशेषों (जैसे, बैराट में गोल मंदिर, नागार्जुनकोंडा और सालिहुंडम में दूसरे

मंदिर, और आंध्र और पश्चिमी दक्कन में चेजेरला और टेर में खड़े मंदिर) से, कोई यह अंदाज़ा लगा सकता है कि इन ईंट और लकड़ी के ढांचों की छतें या तो उनके खंभों पर टिकी थीं, बीच की जगहों को स्क्रीन की दीवारों से ढका गया था, या वे पूरी तरह से अपनी दीवारों पर खड़ी थीं और खंभे, अगर कोई थे, तो बाहर से सिर्फ़ सजावटी खंभों के तौर पर दिखाए गए थे। अक्सर ईंट की दीवार में खंभों का एक अंदरूनी सिस्टम होता था जो उनके पास खड़े होते थे ताकि सुपरस्ट्रक्चर और छत के बीम और लकड़ी के काम के लिए और सहारा मिल सके। पूरा ढाँचा अक्सर एक ठोस चिनाई वाले प्लेटफॉर्म या अधीश-थान पर बनाया जाता था।

एप्सिडल गुंटुपल्ले चैत्य (दूसरी सदी A.D.), पूरी तरह से ईंटों से बना है। एंट्रेंस में ईंटों के चौखट हैं जिनमें लकड़ी का दरवाज़ा फिट किया गया था। छत साफ़ तौर पर कोर्बेल्ड ईंटों से बनी एक तिजोरी थी, जिस पर प्लास्टर किया गया था और शायद उसी प्लान के पहले के रॉक-कट चैत्य की तरह अंदर लकड़ी की पसलियां और क्रॉस पीस भी बनाए गए थे। विजयवाड़ा के पास विद्याधरपुरम के पास देखे गए एक और चैत्य के अवशेष भी इसी तरह के हैं। सलीहुंडम (श्रीका-कुलम ज़िला, आंध्र प्रदेश) में खुदाई से एक थोड़ा बेहतर सुरक्षित स्तूप-मंदिर या स्तूप-चैत्य मिला है, जहाँ पूजा की मुख्य चीज़ स्तूप का रूप थी। गोल चैत्य ईंटों से बना है। बड़ी दीवार का बेस ऊपर की ओर उठा हुआ है और सामने आने के लिए एक पतला वेस्टिबुल है, जो बाद के मंदिरों के अंतराल जैसा दिखता है। वहाँ उसी आकार के कई छोटे मंदिर भी मौजूद हैं।

नागार्जुनकोंडा और आंध्र के दूसरे बौद्ध स्थलों में ईंट-





बने हुए चैत्य मंदिर विहार या मठों से जुड़े होते हैं, जहाँ वे अक्सर मुख्य विहार के एंट्रेंस के पीछे रास्ते के दोनों ओर ऊपर की ओर बने स्ट्रक्चर के रूप में पाए जाते हैं, या बड़े स्तूपों या महा-चैत्यों के सामने जोड़ों में पाए जाते हैं, जो खुद खुले या हाइपेथ्रल मंदिर थे, जो एक-दूसरे के सामने होते थे। अक्सर उनमें से एक में स्तूप होता है और उसे स्तूप-चैत्य कहा जाता है। दूसरे में बुद्ध के पैर या बाद में बनी मूर्तियाँ होती हैं, और उसे बुद्ध-चैत्य के नाम से जाना जाता है। अलग-अलग ऊपर की ओर बने चैत्य या मंदिर, उस तरह के सबसे पहले, नागार्जुनकोंडा में भी देखे गए थे। नागार्जुनकोंडा में एक गोल स्ट्रक्चर भी देखा गया है, जिसमें शायद बुद्ध की मूर्ति थी। कुछ दूसरे मामलों में मंदिरों का प्लान चौकोर होता है।

नागार्जुनकोंडा में खुदाई से इक्ष्वाकु राजाओं (तीसरी और चौथी सदी A.D.) के बड़े गैर-बौद्ध मंदिर कॉम्प्लेक्स भी मिले हैं जो शिव, विष्णु, कार्तिकेय और देवसेना को समर्पित हैं। इनमें ज़्यादातर चार कोनों वाले या अर्द्धगोलाकार गर्भगृह (पवित्र स्थान) हैं जो एक ऊँचे चबूतरे पर बने हैं, जिसके सामने एक बड़ा खंभों वाला मंडप है, मंडप के आगे एक ऊँचा चबूतरा है जो एक रंग मंडप को दिखाता है, और अक्सर मंडप के चारों ओर एक घूमने वाला आंगन होता है।

पूरा हिस्सा एक ईंट की दीवार से घिरा हुआ है, जिसका एंट्रेंस सामने की तरफ (पूरब या पश्चिम) गोपुर पैटर्न पर है, और दक्षिण और उत्तर की तरफ आसान एक्स्ट्रा एंट्रेंस हैं। मंडप के खंभे पलनाड लाइमस्टोन से बने थे, जो सेक्शन में रेक्टेंगुलर थे, शाफ्ट की बीच की ऊँचाई से ऊपर एक पॉइंट से कुछ लंबाई तक कोनों पर चम्फर किए हुए थे, और फिर एक रेक्टेंगुलर सेक्शन के टॉप पर खत्म होते थे। ऊपर लकड़ी के बीम फिट करने के लिए एक चौड़ा रेक्टेंगुलर कट बनाया गया है, जो ज़्यादातर लंबाई में थे। बीम के ऊपर, लोकल वेन शिस्ट स्लैब, जिन्हें माचेरला स्लैब कहा जाता है, बिछाए गए थे, और यह छत शायद ईंट-गारे की छत से ढकी हुई थी। एप्सिडल मंदिर, कभी-कभी जोड़ों में, पूरी तरह से ईंटों से बने होते हैं। केवल कभी-कभी, जैसे पुष्पभद्रस्वामी मंदिर में, ऊपरी ढांचे को एप्स के सीधे किनारों के अंदर लगे चूना पत्थर के खंभों की एक पैरेलल लाइन से सपोर्ट मिलता है, जिसमें ऐसे ही खंभे सेमी-





पीछे के घुमावदार सिरे पर गोला, खंभों के समानांतर किनारों पर लंबी बीम और पीछे के खंभों पर छोटी घुमावदार बीम थीं। खंभों के बीच की जगहों को दीवार से घेर दिया गया था। मंदिरों के सामने अक्सर एक आयताकार अर्ध-मंडप होता है जो मंदिर और खंभों वाले महा-मंडप के बीच होता है। कुछ मामलों में महा-मंडप को अक्सर एक या ज़्यादा खांचों से बगल में बढ़ाया जाता है और, कुछ मामलों में, महा-मंडप के तीन तरफ कोर्ट को घेरने वाली दीवारों के अंदर खंभों वाले मठ (मलिकाई या मालिका) होते थे। मंदिर परिसरों में एक ही मुख्य मंदिर होता है या कभी-कभी एक से ज़्यादा मुख्य मंदिर होते हैं। अकेले मंदिर आयताकार, चौकोर या ऊपरी हिस्से के आकार के होते हैं। कई मंदिरों के मामलों में, कुछ उदाहरण ऐसे हैं जिनमें दो मंदिर हैं, दोनों ऊपरी हिस्से के आकार के हैं, और कुछ में आयताकार और ऊपरी हिस्से के आकार के दोनों मंदिर हैं। ऐसा नहीं लगता कि मंदिरों की दीवारों पर ज़्यादा मूर्तियां बनी हैं। मंडपों की छतें सपाट थीं, लेकिन मंदिरों का ऊपरी ढांचा, खासकर ऊपरी हिस्से वाले, गजपृष्ठ थे, यानी हाथी के पिछले हिस्से जैसे दिखते थे। यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि चौकोर और आयताकार मंदिर विमान के आकार के थे या नहीं, जिनमें दक्षिण के बाद के विमानों जैसा खास मंज़िल का ऊपरी ढांचा था। इस बड़ी जगह के बचे हुए हिस्सों से कोई भी बौद्ध और गैर-बौद्ध तरह के आर्किटेक्चरल ट्रेडिशन के बीच काफी समानता देख सकता है।

कार्तिकेयस्वामी मंदिर में पूरब की ओर ईंटों से बना एक चौकोर मंदिर था, जिसके सामने ईंटों का एक बंद, चौकोर अर्ध-मंडप था।

इसके लंबे एक्सिस उत्तर-दक्षिण से पहले एक बंद महा-मंडप था जिसमें हर लाइन में पाँच-पाँच खंभों की छह लाइनें थीं। पुष्पभद्र मंदिर के उत्तर में कार्तिकेय के एक और मंदिर में एक रेक्टेंगुलर बंद मंडप था, जिसके बीच में पिछली दीवार के पास एक चौकोर पेडस्टल था, और हर कोने पर एक खंभा था। इससे खंभों वाले मंडप का पता चलता था।

पुष्पभद्रस्वामी मंदिर में जो मूर्ति है, जिसका नाम ध्वजस्तंभ पर लिखे शिलालेख में 'महादेव पुष्पभद्रस्वामी' लिखा है, वह एक ऊपरी गर्भगृह में रखी हुई थी।

शिलालेख के अनुसार अष्टभुजस्वामी का चिह्न-

24

दक्षिण भारत के मंदिर

इसकी स्थापना की तारीख 278 A.D. है। यह लकड़ी का बना था, आठ भुजाओं वाला था, और इसे पत्थर के एक चबूतरे पर स्थापित किया गया था जिस पर लिखा था। उसी जगह पर मिले एक शंख पर भी यही नाम लिखा है। मंदिर में दो पवित्र जगहें थीं, एक आयताकार और दूसरी ऊपरी, हर एक के सामने एक खंभों वाला मंडप था जो पीछे बड़े साइज़ के अलग मंडप से अलग था, और इसमें एक ध्वजस्तंभ था जिसके ऊपर विष्णु का चक्र बना था।

नदी के किनारे और पुराने फेरी घाट के पास, पुतलागुडेम गांव के पास, पूरब की ओर बना मंदिर कॉम्प्लेक्स दिलचस्प है, क्योंकि खंभों वाले महा-मंडप के दक्षिण और उत्तर की तरफ आंगन में परिवार मंदिरों के बेसमेंट मिले थे, जो सभी ईंटों से बने थे और जिनके ऊपर पतले पत्थर के स्लैब थे, जो चौकोर, गोल और आठ कोनों वाले प्लान वाले दूसरे मंदिरों के फर्श बनाते थे।

अच्छी बात ये है कि इस समय के दो मंदिर, जो असल में बौद्ध धर्म को मानने और बाद में हिंदू धर्म अपनाने के थे, आज भी पूरी तरह से मौजूद हैं। ये हैं पश्चिमी दक्कन में टेर का त्रिविक्रम मंदिर और तटीय आंध्र में चेजेरला का कपोतेश्वर मंदिर। दोनों का समय 600 A.D. से पहले का है, लेकिन 300 A.D. से पहले का नहीं। स्टाइल और आर्किटेक्चर के नज़रिए से देखा जाए तो इन दोनों में से कपोतेश्वर मंदिर पहले का हो सकता है। बड़ी ईंटों से बने इस चैत्य की दीवार पर कोई बाहरी पिलस्टर के निशान नहीं हैं, सिवाय सामने के दो सिरों के जो असली नहीं हैं। अंदर से पत्थर के स्लैब की छत दस पत्थर के खंभों के सिस्टम पर टिकी है, जिनमें से हर एक में पांच-पांच खंभे एप्सिडल स्ट्रक्चर के सीधे किनारों पर लगे हैं और मोटे पत्थर के बीम से फैले हुए हैं, नागार्जुनकोंडा स्ट्रक्चर के उलट जिनमें लकड़ी के बीम थे, इस तरह कंस्ट्रक्शन में पत्थर के इस्तेमाल में तरक्की का पता चलता है और इस तरह यह बाद की तारीख का संकेत देता है। गुंबददार ईंटों के शिखर को अंदर से या तो ईंटों या पत्थर के खंभों से सहारा दिया गया है और शायद, छत के स्लैब के बीच में भराई से भी। कॉर्निस मोल्डिंग (कपोता) और क्लेरेस्टोरी जैसा ग्रीवा, साथ ही शिखर का कुंद रिज पीछे की ओर ढलान दिखाता है।

टेर मंदिर में अब त्रिविक्रम की मूर्ति है, जो और भी बहुत कुछ दिखाती है

प्रारंभिक मंदिर

एडवांस्ड फीचर्स। यह पूरी तरह से ईंटों से बना है, बिना अंदर के पिलर या छत के स्लैब के, और शिखर रिज काफी हॉरिज़ॉन्टल है। बाहर से दीवार की सतह पर उभरे हुए कैपिटल कंपोनेंट्स वाले पिलस्टर्स से उभार है। अंदर से वॉल्ट चारों तरफ से ईंटों के काम के एक के बाद एक कोर्स को कोरबेलिंग-इन करके बनाया गया है, जिससे धीरे-धीरे गैप कम होता जाता है और आखिर में यह ऊपर से बंद हो जाता है। इस तरीके को भारतीय शिल्पा की भाषा में कदलिका करना कहा जाता है। तेर चैत्य के शिखर के सामने के सिरे पर बार्ज-बोर्ड और बार्ज-प्लेट दिखती है, जिसमें चार पिलस्टर्स पर एक बीच का आड़ा सपोर्ट है, और एक बीच में लाइट-ओपनिंग है, ये सभी लकड़ी के ओरिजिनल की नकल में हैं, जबकि चेजेरला शिखर का अगला हिस्सा एक मंदिर की उभार दिखाता है। इन मामलों में ये एलोरा में विश्वकर्मा और मामल्लपुरम में नकुल-सहदेव रथ के शिखर के अगले हिस्से के मोटिफ्स के करीब हैं।

## अध्याय III

## प्रारंभिक शैल वास्तुकला

### चट्टान काटकर बनाए गए गुफा मंदिर - लयाना (बौद्ध)

शुरुआती समय के ज़्यादातर ईंट और लकड़ी के आर्किटेक्चर के साथ-साथ, अशोक के समय एक मूवमेंट शुरू हुआ, जिसके नतीजे में कई मंदिर और दूसरे धार्मिक स्थल जीवित चट्टानों में खोदे गए। ज़्यादा पक्के मटीरियल से बने होने के कारण, ये आज तक बचे हुए हैं। क्योंकि वे उस समय के ईंट और लकड़ी के स्ट्रक्चर की पक्की नकल हैं, जो उनके मॉडल के तौर पर काम करते थे, इसलिए उन्होंने, कम से कम अपने सामने और अंदर के हिस्सों में, उस समय के सभी आर्किटेक्चरल डिटेल्स को दोहराया, जिससे हमें यह अंदाज़ा लगाने में मदद मिली कि उस समय के मंदिरों और पूजा की जगहों के सामने और अंदर का हिस्सा कैसा था। चट्टान में

जिसे लयाना कहते हैं, उसे खोदने और स्ट्रक्चरल उदाहरणों की थोड़ी या पूरी नकल बनाने के इस फेज़ को आर्किटेक्चर नहीं कहा जा सकता, जिसका मतलब असल में पार्ट्स को बनाकर कंस्ट्रक्शन करना है। उन्हें सिर्फ़ बड़े पैमाने पर स्कल्पचर माना जा सकता है, जिसे ज़्यादा आसानी से 'रॉक-आर्किटेक्चर', या 'आर्किटेक्चरल-स्कल्प्चर' कहा जा सकता है। रॉक-आर्किटेक्चर का दौर अशोक के समय से लगभग एक हज़ार साल से भी ज़्यादा समय तक चला, और यह भारत के अलग-अलग हिस्सों में फैला हुआ है, जिनमें से सबसे नया दसवीं सदी के आखिर का है। अशोक और उनके पोते दशरथ ने बहुत सख़्त लोकल चट्टान (क्वार्ट्ज़ोज़-नाइस) में जो सबसे पुरानी गुफाएँ खोदी थीं, वे बराबर में हैं।

और गया के पास नागार्जुनी पहाड़ियाँ। वे आजीविकों को समर्पित थीं।

इस ग्रुप के सबसे ज़रूरी उदाहरण सुदामा (न्याग्रोधा) और लोमस ऋषि गुफाएँ हैं। ये दोनों गुफाएँ बरहुत रिलीफ में सुधम्म देव सभा के प्लान को हूबहू दिखाती हैं। गुफाओं की यह सीरीज़ दिखाती है कि इस तरह के सबसे आसान रूप



मंदिरों में सिर्फ़ एक गोल कमरा या पूजा की जगह होती थी, जैसा कि गुंटुपल्ले में है (नीचे देखें); पूजा करने वालों के बैठने के लिए बाद में बरामदा या मंडप बनाया गया था। रॉक आर्किटेक्चर का यह तरीका अगली सदी में मुख्य रूप से पश्चिमी भारत या पश्चिमी दक्कन की पहाड़ियों की नरम ट्रैप संरचनाओं में बदल गया, जहाँ 200 B.C. और 200 A.D. के बीच, कई बौद्ध खुदाई की गई थी। इनमें चैत्य हॉल शामिल हैं, जो असल में मंदिर या पूजा की जगहें थीं, जिनकी पूजा की चीज़ बुद्ध को दिखाने वाला एक स्तूप था, और विहार, या मठ, जिनमें से हर एक में कई कमरे होते थे जो एक बड़े सेंट्रल असेंबली-हॉल में खुलते थे। ऐसे उदाहरण पूना और नासिक के आस-पास, और अजंता और औरंगाबाद में मिलते हैं। इस इलाके को इसलिए चुना गया क्योंकि गया जैसे सख्त ग्रेनाइट या नीस की तुलना में नरम ट्रैप चट्टानों पर काम करना ज़्यादा आसान था। आंध्र के उत्तरी तटीय जिलों और उड़ीसा के दक्षिणी जिलों में पूर्वी घाट की नरम चट्टानों में भी ऐसी पूजा की जगहें खोदी गई थीं, जैसे गुंटुपल्ले और सन-करम में, जो कट-इन और कट-आउट दोनों तरह से बनी थीं, उड़ीसा में खंडगिरी और उदयगिरी की जैन गुफाएँ इसके उदाहरण हैं। इनमें साल्सेट में कोंडिवटे की बौद्ध गुफा, पूना के पास जुन्नार में तुलजा गुफा और आंध्र में गुंटुपल्ले की गुफा की तुलना गया के पास सुदामा और लोमस ऋषि की गुफाओं से की जा सकती है।

गुंटुपल्ले में चट्टानों को काटकर बनाया गया चैत्य, समय के हिसाब से गया गुफाओं से ज़्यादा दूर नहीं है। यह एक गोल झोपड़ी का पत्थर का रूप है, जिसकी छत छप्पर या शीट मेटल की बनी हुई है और गुंबद जैसी है। यह लकड़ी के एक फ्रेम पर टिकी हुई है जो उलटी टोकरी जैसा दिखता है। इसके बीच में पूजा की जगह के तौर पर एक पत्थर का स्तूप है, चारों ओर घूमने का रास्ता है, और इसके दरवाज़े के सामने एक बरामदा है।

एंट्रेंस को फ्रेम करने वाले पोर्च में पत्थर पर लकड़ी के काम की वैसी ही नकल दिखती है, जिसमें लिंटेल के ऊपर तोरण आर्च भी शामिल है।

कोंडिवटे में बौद्ध गुफा मंदिर इसी तरह के डिजाइन का है जहां गोलाकार मंदिर या गर्भगृह एक ठोस स्तूप द्वारा व्याप्त है, जो मंदिर के भीतर चारों ओर केवल एक संकीर्ण परिक्रमा मार्ग या प्रदक्षिणा छोड़ता है और एक आयताकार के अंत में स्थित है



हॉल या मंडप, जिसकी छत मंदिर की तरह ही सपाट है। जुन्नार में तुलजा गुफा भी गोल चैत्य के मॉडल पर बनी एक खुदाई है। मुख्य छत का गुंबद गोल दीवार पर नहीं, बल्कि बारह सादे अष्टकोणीय खंभों के एक घेरे पर टिका है - जैसा कि दूसरे उदाहरणों में एक केंद्रीय स्तूप को घेरे हुए है, दोनों एक गोल गलियारे, या प्रदक्षिणा से घिरे हैं, जो आधा गुंबद वाला है।[1] बरहुत में सुधम्म देव सभा का गोल गर्भगृह उसी मॉडल का एक बेस-रिलीफ रूप है।

दूसरे चैत्य ज़्यादातर प्लान में अर्द्धगोलाकार होते हैं, जिनमें एक लंबा आयताकार हॉल होता है जो एक गुफा जैसा होता है, जो दूर के सिरे पर एक अर्द्धगोलाकार में खत्म होता है, जिसके दोनों तरफ अक्सर दो पतले गलियारे होते हैं, हर गलियारा गुफा से खंभों की एक लाइन से अलग होता है और अर्द्धगोलाकार के चारों ओर एक चक्कर लगाने वाले रास्ते के रूप में एक स्तूप के चारों ओर फैला होता है, जो चट्टान से बना होता है और अर्द्धगोलाकार के बीच में होता है। सामने का दरवाज़ा एक बड़ी दहलीज़ है जिसके ऊपर एक मेहराबदार खिड़की होती है। हॉल के सामने, सामने की ओर खंभों वाला एक आड़ा बरामदा अक्सर काटा जाता है। जिन स्ट्रक्चर के बाद ऐसी खुदाई की गई थी, वे असल में अर्द्धगोलाकार मंदिर थे। ऐसा अर्द्धगोलाकार या चापा आकार शायद एक गोल मंदिर और एक आयताकार असेंबली-हॉल के एक साथ आने से बना था, जो शुरू में एक-दूसरे से अलग थे जैसा कि पहले बताए गए उदाहरणों में है।

दक्कन में अजंता में, 30 खुदाई में से छह, जिनमें दो चैत्य हॉल (नंबर 9 और 10) और चार विहार (नंबर 8, 12, 13 और 30) हैं, शुरुआती ग्रुप के हैं, और भाजा, कार्ले, कोंडाने, पिथलकोरा, नासिक, कन्हेरी, वगैरह में कुछ बौद्ध खुदाई जैसी ही हैं। ये दूसरी सदी B.C. और दूसरी सदी A.D. के बीच के समय की हैं। बाकी चौथी सदी A.D. के बाद के समय की हैं। इनकी खुदाई वाकाटक के समय में हुई थी, ज़्यादातर 450 और 600 A.D. के बीच। आखिरी खुदाई लगभग 650 A.D. में हुई थी। हालांकि, आम तौर पर काम, और खासकर सजावट, के समय तक जारी रही।

1 जयपुर के पास बैराट में खुदाई में इसी तरह के स्ट्रक्चर वाला एक मंदिर मिला है।

राष्ट्रकूटों ने आठवीं-नौवीं शताब्दी ई. में

शुरुआती चैत्य बड़े, ऊपर की ओर झुके हुए, बड़े आकार के होते हैं, जिनके एंट्रेंस के ऊपर घोड़े की नाल के आकार की खिड़कियाँ होती हैं, और अंदर का हिस्सा खंभों की दो लाइनों से एक सेंट्रल नेव और साइड में बने गलियारों में बंटा होता है। गलियारे, एप्स के चारों ओर एक सर्कमब्युला-टोरी रास्ते की तरह चलते रहते थे। एप्स वाले हिस्से में, चट्टान से बना एक स्तूप पूजा की जगह था। गलियारों की छतें या तो सपाट होती थीं या गुंबददार, पूरी छत लकड़ी के कंस्ट्रक्शन के हिसाब से बनी होती थी।

विहार स्टाइलर हॉल थे, जिनकी तीन साइड की दीवारों में कई साधुओं के कमरे खोदे गए थे, और हॉल के सामने एक या ज़्यादा मेन दरवाज़े थे।

दूसरे फेज़ के रॉक आर्किटेक्चर में दो अर्द्धगोलाकार चैत्य (19 और 26) हैं। यह पहले वाले टाइप जैसा ही है, लेकिन इसमें स्तूप के सामने अर्द्धगोलाकार बुद्ध की मूर्ति खास तौर पर खड़ी है, जो स्तूप के ड्रम से निकली नासिका या मेहराब के नीचे है। इससे पता चलता है कि स्तूप का आकार खुद एक गोल मंदिर जैसा था जिसकी छत गुंबद जैसी थी, और सामने सुखानासिका के आकार का एक निकला हुआ गुंबददार प्रवेश द्वार था, जो बाद के समय के वेसर टाइप के मंदिरों जैसा था। विहार, अधूरे या टूटे हुए (3, 5, 14, 23, 24, 28 और 29) को छोड़कर, उनमें मठों और मंदिरों की खासियतें मिली हुई हैं, जिनमें बाद वाला पहलू ज़्यादा खास हो गया है। इस तरह, पत्थर के ये घर, या पहाड़ी घर, जिन्हें गुफा 26 में 450 और 525 A.D. के बीच के एक शिलालेख में शैलगृह कहा गया है, विहार चैत्य बन जाएंगे, अगर हम चैत्य शब्द की तुलना पूजा की किसी चीज़ वाले मंदिर से करें, जिसे देवकुल, आयतन, विमान, धाम, मंदिर, वगैरह भी कहा जाता है। असल में, विहार 16 में 475 और 500 A.D. के बीच के एक शिलालेख में इसे चैत्य मंदिर कहा गया है।

इन विहारों में आम तौर पर एक बाहरी बरामदा या पोर्च होता है, जो मंदिर परिसर के मुख-मंडप या अग्र-मंडप के अनुरूप होता है, एक स्तंभों वाला हॉल (कभी-कभी अस्तबल वाला), जो मंदिर परिसर के मुख-मंडप या अग्र-मंडप के अनुरूप होता है

1 इनकी तुलना नालंदा के ईंट से बने एक जैसे और छोटे स्तूपों से की जा सकती है।

महा-मंडप जिसके पीछे एक मंदिर या गर्भगृह होता है, अक्सर एक अर्ध-मंडप, या मंदिर और मुख्य हॉल के बीच में एक आड़ा-तिरछा आयताकार आगे का कमरा होता है। जब हॉल में बीच के नैव और साइड में गलियारों के पैटर्न के बजाय खंभे होते हैं, तो चार या उससे ज़्यादा खंभों से घिरे एक सेंट्रल स्क्वायर का अरेंजमेंट, जिसमें बाकी खंभे एक बाहरी सीरीज़ बनाते हैं, चालुक्य नवरंगों के मॉडल या उनके अंदाज़े पर आधारित एक रंग-मंडप का सुझाव देगा। महा-मंडप या हॉल की साइड की दीवारों में और कभी-कभी पिछली दीवारों में भी पुरोहित भिक्षुओं के लिए क्यूबिकल सेल काटे जाते हैं। ये रेगुलर मठों - चट्टान काटकर और ईंटों से बने - की तुलना में कम संख्या में होते हैं, जिससे पता चलता है कि उनका इस्तेमाल सिर्फ़ ऊँचे रैंक के भिक्षुओं तक, या मुख्य चैत्य में असली पूजा से सीधे जुड़े पुरोहितों तक ही सीमित था। अक्सर हॉल की पिछली दीवार पर मुख्य चैत्य के दोनों तरफ़ और भी चैत्य या कोठरियाँ होती हैं, और सामने के बरामदे या अग्र-मंडप की साइड की दीवारों में भी। यहाँ तक कि दो मंज़िला खुदाई (गुफा 6) का भी लगभग वही प्लान है। पवित्र जगह में बुद्ध की एक बड़ी मूर्ति है, जिसके साथ अक्सर अर्ध-मंडप में दूसरी मूर्तियाँ होती हैं। गुफा 27 के मामले में, अर्ध-मंडप को महा-मंडप में आगे बढ़ाया गया है। एक के पीछे एक मंडपों की व्यवस्था, जिसके पीछे एक या ज़्यादा मंदिर कोठरियाँ हैं, नागार्जुनकोंडा में इक्ष्वाकु काल के ईंट के मंदिर कॉम्प्लेक्स में पाए जाने वाले पैटर्न पर है, जो अजंता में इन बाद की खुदाई से पहले हुए थे।

ऐसे एक्सियल ग्रुप का सबसे पिछला हिस्सा, जिसमें आयताकार एंटी-चैंबर और उसके पीछे चौकोर पवित्र जगह होती है, कभी-कभी थोड़ा अंदर की ओर बढ़ा हुआ होता है। यह ज़्यादातर चालुक्य, पल्लव, पांड्या और दक्षिण भारत के दूसरे राजवंशों के हिंदू और जैन रॉक-कट गुफा मंदिरों में प्लान के तौर पर दोहराया गया है, जिन्होंने छठी से दसवीं सदी के पहले आधे हिस्से तक, या उससे भी बाद में, जैसे एलोरा में, रॉक-कट आर्किटेक्चर जारी रखा। कुछ मामलों में, जैसे अजंता के उदाहरणों में, गुफा-मंदिर में एक बड़ा और लगभग चौकोर मंडप होता है, जो पीछे पवित्र जगह वाले हॉल जैसा होता है।



आड़ा आयताकार अर्ध-मंडप हटाया जा रहा है। ऐसे एक्सियल अरेंजमेंट वाले मंदिर कॉम्प्लेक्स में, पवित्र जगह में पिरामिड जैसा सुपरस्ट्रक्चर नहीं दिखता। इन गुफा मंदिरों, जिनमें चैत्य-मंदिर भी शामिल हैं, को मंडप-मंदिर भी कहा जा सकता है, जैसा कि बाद के शिलालेखों में है। मुख्य मंदिर के दोनों ओर एक लाइन में, सामने एक कॉमिमोन मंडप के साथ, साइड में मंदिरों की खुदाई एक लाइन का विस्तार है, जबकि दूसरी लाइन साइड की दीवारों में और मंदिरों की खुदाई होगी, जिसमें सभी मंदिर एक कॉमन हॉल या बरामदे में खुलेंगे, जैसा कि अक्सर अजंता विहारों के बरामदों या पहले के कमरों में पाया जाता है। दोनों तरीके चालुक्य, पल्लव, पांड्य और दक्षिण के दूसरे उस समय के राजवंशों के गुफा मंदिरों में विकसित पाए जाते हैं।

एलोरा की बौद्ध रॉक आर्किटेक्चर (कुल बारह खुदाई में) पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर केंद्रित है,

और औरंगाबाद की खुदाई भी इस सीरीज़ के आखिर को दिखाती है, और वे पश्चिमी भारत की पुरानी परंपराओं को जारी रखती हैं।

एलोरा बौद्ध समूह तीन उप-समूहों में आता है, सबसे प्राचीन गुफाएं 1, 2, 3 और 5 हैं, जो लगभग चौथी शताब्दी ईस्वी की हैं। गुफाएं 4 और 6 से 10 को छठी-सातवीं शताब्दी ईस्वी की माना जा सकता है। गुफाएं 11 और 12, जो अद्वितीय हैं, सातवीं शताब्दी ईस्वी की हैं। इसके विपरीत पहली श्रृंखला की गुफा 1 सरल है और शायद एक प्रयोगात्मक उत्खनन है। गुफा 2 और 3 मूलतः एक दूसरे के समान हैं। इनमें एक बरामदा या अग्र-मंडप है, जिसके पीछे एक दरवाजा है जो खंभों वाले हॉल और एक अर्ध-मंडप की ओर जाता है। गुफा 2 के महा-मंडप में दोनों ओर पार्श्व दीर्घाएँ हैं, गुफा 3 में वे नहीं हैं। दोनों के पीछे मंदिर कक्षों में एक बैठे हुए बुद्ध हैं। गुफा 3 के मंडप की साइड की दीवारों पर मठ के कमरे हैं।

गुफा 6, एक मंज़िला खुदाई में सबसे बड़ी है, इसमें एक बरामदा और खंभों वाला एक हॉल है जिसकी दीवारों पर 22 कमरे हैं। खंभों वाले महा-मंडप के पीछे एक आड़ा एंटी-चैंबर या अर्ध-कक्ष है।





मंडप, जिसके पीछे बुद्ध का मंदिर है।

गुफा 4 दो मंज़िला है। ग्राउंड फ़्लोर पर एक हॉल, एक एंटे-चैंबर और पीछे एक मंदिर है, मंदिर के दोनों तरफ़ और हॉल की साइड की दीवारों पर और भी कमरे हैं। ऊपरी मंज़िल टूटी-फूटी है और सिर्फ़ एक प्रदक्षिणा-पाठ और दो कमरे ही मौजूद हैं। गुफा 8 में फिर से एक बड़ा हॉल है जिसमें उत्तरी दीवार पर तीन साधु-कोठरियाँ हैं। पीछे का मंदिर, जो पूरी तरह से कटा हुआ है, उसमें एक प्रदक्षिणा-पाठ और सामने एक एंटे-चैंबर है। इसमें बैठे हुए बुद्ध हैं। प्रदक्षिणा-पाठ की उत्तरी दीवार पर मठों के कमरे हैं।

गुफा 6 में हमेशा की तरह एक बरामदा और पीछे एक हॉल है, जिसके दक्षिण में छह कमरों वाला एक साइड वाला हॉल है। मेन हॉल के पीछे एक एंटी-चैंबर और मंदिर है। गुफा 7 में बरामदे के पीछे एक हॉल है जिसमें चार बीच के खंभे हैं और इसकी तीन साइड की दीवारों पर बारह अधूरे कमरे हैं। पीछे का बीच का मंदिर एक तरफ प्रज्ञापारमिता से घिरा है और इसका दरवाज़ा ढाला हुआ है, जिससे पता चलता है कि यह मेन मंदिर है।

गुफा 9, सच कहें तो, एक लंबा हॉल या मंडप है, जिसमें आगे की तरफ़ एक खास मूर्ति है - जो गुफा 10 की एक खराब नकल है। पिछली दीवार चार पिलस्टर से तीन हिस्सों में बंटी हुई है, बीच वाले हिस्से में बैठे हुए बुद्ध की एक मूर्ति है जो एक मंदिर जैसा दिखता है, जबकि बगल वाले हिस्सों में सेवक रहते हैं।

गुफा 10 (विश्वकर्मा) अजंता के चैत्य जैसा ही एक बड़ा चैत्य है, जिसमें खंभे, गलियारे और मेहराब के सामने बालकनी हैं। खंभे सादे हैं और मूर्तियां कम हैं। एप्स में एक स्तूप है जिसमें बैठे हुए बुद्ध का मंदिर बना हुआ है, जिससे पता चलता है कि स्तूप का आकार एक गोल विमान (वेसर) है जिसके अंदर देवता हैं। स्तूप के ड्रम में चारों ओर 12 पैनल हैं, जिनमें से 10 में छोटे बुद्ध की मूर्तियां हैं। सामने की तरफ का मेहराब बहुत बड़ा है और अजंता और दूसरी जगहों पर मिलने वाले मेहराबों से अलग है। इसके तिकोने मेहराब, उद्गम और आमलक, उत्तरी स्टाइल के आज के और बाद के ब्राह्मण मंदिरों की खासियतों जैसे ही हैं।

सातवीं शताब्दी ईस्वी की गुफाएं 11 और 12, जिन्हें 'दो-ताल' कहा जाता है

*Plate 1.* AMARAVATI—STUPA SLAB *(See page 12)*

*Plate 2.* MAHABALIPURAM—DHARMARAJA RATHA *(See page 102)*

प्रारंभिक शैल वास्तुकला

और 'तिन-ताल', शायद बौद्ध खुदाई के इस क्लास में सबसे बड़े हैं, जो अपने प्लान और मंज़िलों में बहुत ओरिजिनल हैं, जिनमें दिलचस्प आइकॉनिक मूर्तियां और आर्किटेक्चरल सजावट है। हालांकि दोनों तीन-मंज़िला हैं, 'दो-ताल' गुफा को यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसका ग्राउंड फ़्लोर दबा हुआ था। कृष्णा नदी के दक्षिणी किनारे पर उंडावल्ली में एक ऐसी ही चट्टान काटकर की गई गुफा की खुदाई, जिसे अब अनंतसयनगुडी कहा जाता है, भी इसी क्लास की है। यह शायद विष्णु-कुंडिन के समय की है और असल में बौद्ध समर्पण के लिए बनाई गई थी।

औरंगाबाद के गुफा मंदिरों में पहले के हीनयान फेज का एक चैत्य और कई विहार (दो ग्रुप में आठ) और दूसरी कम ज़रूरी खुदाई की चीज़ें शामिल हैं, ये सभी सातवीं सदी A.D. की हैं।

इन सभी खुदाई में, तैयार सतहों के टेक्सचर के खुरदुरेपन के कारण उन्हें चिकना बनाने के लिए प्लास्टर कोटिंग की ज़रूरत पड़ी। आगे की सजावट शानदार पेंटिंग्स से हुई, जिनमें से कई अजंता की मशहूर पेंटिंग्स के तौर पर हमारे पास मौजूद हैं।

टी.एस.आई. 3

अध्याय IV

## बाद की चट्टान वास्तुकला

## चट्टान से बने गुफा मंदिर-लायनास

## (हिंदू और जैन)

ईसा के बाद हज़ार साल के दूसरे हिस्से की शुरुआत में, ब्राह्मण और जैन धर्मों ने भी चट्टानों को काटकर मंदिर बनाने का तरीका अपनाना शुरू कर दिया। यह तेज़ी से पॉपुलर हुआ और हज़ार साल की पिछली चार सदियों में पूरे दक्षिण में, दक्कन से लेकर केप के बहुत पास तक, ऐसे बहुत सारे मंदिर बनाए गए। वैसे, ये उत्तर में हुई इसी तरह की खुदाई से कहीं ज़्यादा हैं। इनमें से ज़्यादातर फिर से ब्राह्मण हैं। जैन वाले कम हैं। ब्राह्मण और जैन देवताओं के लिए चट्टानों को काटकर बनाए गए इस तरह के मंदिरों की शुरुआत पेनिनसुला में तीन बड़े साम्राज्यों के सत्ता में आने के साथ हुई - दक्कन इलाके में वातापी (बादामी) के चालुक्य, जिनकी दूसरी ब्रांच तटीय आंध्र पर वेंगी (या पूर्वी चालुक्य) के चालुक्य, पूर्वी तट पर कांची के पल्लव, और दूर दक्षिण में मदुरै के पांड्य। इस दिशा में सबसे अच्छा और सबसे ज़्यादा काम 550 और 850 A.D. के बीच की तीन सदियों में हुआ, जब ये तीन ताकतवर राज्य न सिर्फ़ एक-दूसरे के कट्टर पॉलिटिकल दुश्मन थे, बल्कि आर्ट, आर्किटेक्चर और लिटरेचर के संरक्षण में भी एक-दूसरे के करीबी कॉम्पिटिटर थे। इस समय के बीच में बादामी के शुरुआती चालुक्यों की जगह मान्यखेत के राष्ट्रकूटों ने ले ली, लेकिन पल्लव और पांड्यों का राज चलता रहा। बीच के छोटे और नीचे के राजवंश, जो तीन शाही ताकतों के बीच बफर स्टेट्स के तौर पर फंसे हुए थे, उन्होंने भी इस काम में हिस्सा लिया और अपने-अपने इलाकों में इस मूवमेंट में मदद की।

पत्थर पर पाबंदी की एक पुरानी परंपरा रही है



जैसा कि पहले बताया गया है, यह पवित्र और सेक्युलर स्ट्रक्चर थे, क्योंकि इसका लंबे समय से लोकल जुड़ाव अंत्येष्टि इमारतों से था। इसे चालुक्य राजा मंगलेसा और उनके कंटेंपररी पल्लव राजा महेंद्र I ने लगभग एक साथ ही तोड़ दिया था। मंगलेसा ने शक 500 (578

A.D.) में अपने गुज़रे हुए और प्यारे भाई कीर्ति-वर्मन के नारायण-बलि समारोह (श्राद्ध) की याद में और उससे जुड़े हुए बादामी में विष्णु गुफा-मंदिर नंबर III की खुदाई की, जैसा कि संबंधित शिलालेखों में लिखा है। महेंद्र I ने, शायद इसी बात से सीख लेते हुए, हिंदू त्रिदेवों - शिव, विष्णु और ब्रह्मा के लिए मंडागापट्टू (दक्षिण अर्काट जिला) में अपना पहला गुफा-मंदिर खुदवाया। जबकि मंगलेसा ने नई राजधानी, बादामी (बीजापुर जिला) की बारीक दानेदार और क्षैतिज रूप से बनी नरम बलुआ पत्थर की चट्टानों को चुना, महेंद्र I ने अपनी राजधानी से बहुत दूर, मंडागापट्टू की बहुत सख्त, घनी दानेदार ग्रेनाइट चट्टान को चुना। मंगलेसा के मामले में, हालांकि एक हिंदू देवता के लिए गुफा-मंदिर की खुदाई और उस पर हिंदू मूर्तियां बनाना पूरी तरह से नए धार्मिक इनोवेशन थे, लेकिन यह तरीका सिर्फ़ उस पुरानी परंपरा को जारी रखना था जिसमें ऐसे गुफा-मंदिरों को जानबूझकर चुनी गई नरम चट्टानों जैसे बलुआ पत्थर, ट्रैप या चूना पत्थर से खोदा जाता था, जो मौर्य काल से उत्तर, मध्य और पश्चिमी भारत और दक्कन में भी लगातार मौजूद थीं।[1] इस तरह, उनके कारीगरों को बलुआ पत्थरों को काटने और उन्हें तराशने की लंबे समय से मिली जानकारी का फ़ायदा मिला, जो लगभग एक हज़ार साल से विकसित हो रही थी। नतीजतन, पहला गुफा-मंदिर डिज़ाइन में बोल्ड और बड़ा था और बड़े साइज़ का था। मंगलेसा के पहले गुफा-मंदिर के ठीक बाद बादामी, ऐहोल और दूसरी जगहों पर चालुक्यों के ऐसे ही दूसरे गुफा-मंदिर बने, जो सभी उन्हीं नरम चट्टानों से खोदे गए थे।

महेंद्र के मामले में, कठोर चट्टान की खुदाई और गुफा-मंदिर और मूर्तिकला की नक्काशी लगभग एक नई खोज होगी, क्योंकि अशोक और

1 असल में, गुप्तों ने पहले विदिशा के पास उदयगिरि की बलुआ पत्थर की चट्टानों में हिंदू देवताओं के लिए गुफा-मंदिर खोदे थे।





दशरथ ने लगभग नौ सौ साल पहले गया के पास बराबर, नागार्जुनी और सीतामढ़ी की पहाड़ियों में मंदिर बनवाया था। तब से यह रिवाज और परंपरा पूरी तरह से छोड़ दी गई थी या भुला दी गई थी और इतने लंबे समय और जगह में इसे बनाने की कोशिश नहीं की गई थी। ऐसे में, महेंद्र का मंडागा-पट्टू गुफा-मंदिर पर अपने शिलालेख में अपनी पहली कामयाबी पर गर्व करना काफी मतलब रखता है। शिलालेख में लिखा है कि "लक्षित का यह बिना ईंट, बिना लकड़ी, बिना धातु और बिना गारे का घर राजा विचित्रचित्त ने ब्रह्मा, ईश्वर और विष्णु के लिए बनवाया था।" यह छोटा शिलालेख इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि महेंद्र का काम पत्थर का मंदिर बनाने के मामले में उस समय के इस्तेमाल और परंपरा से अलग था, जिसमें ईंट, लकड़ी, धातु और गारे जैसे आम मटीरियल का इस्तेमाल नहीं किया गया था। इससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह थी कि यह उस प्रोसेस से अलग था जो तब तक पता था कि जानबूझकर चुनी गई नरम चट्टानों में खुदाई की जाती थी। इसके बाद उन्होंने दक्षिण की सख्त चट्टानों में और भी गुफा-मंदिर खोदे। ये सभी सिंपल डिज़ाइन के हैं और साइज़ में कम बड़े हैं,

क्योंकि नए रॉक मटीरियल की हार्डनेस के कारण, जिसमें अब तक अनजान पोटेंशियल थे, ज़्यादा मेहनत लगी, नए टूल्स और काटने के स्किल्स का इन्वेंशन हुआ, और पूरा होने में ज़्यादा समय लगा।

इस तरह कोई कह सकता है कि चालुक्य और पल्लवों ने दक्षिण में दो पैरेलल परंपराएँ शुरू कीं। दक्कन, उत्तरी मैसूर और तटीय आंध्र के चालुक्य इलाके में आने वाले राजवंशों ने अपने गुफा-मंदिरों और बाद में अपने स्ट्रक्चरल मंदिरों के लिए सॉफ्ट स्टोन चट्टानों को चुनना और इस्तेमाल करना जारी रखा। पल्लवों के बाद आने वाले और उनके कंटेंपररी पांड्य, जिन्होंने अपने इलाके की हार्ड चट्टानों की खुदाई भी की, उन्होंने दक्षिण में अपने रॉक-कट और स्ट्रक्चरल मंदिरों के लिए वैसे ही हार्ड चट्टानों को चुनना और इस्तेमाल करना जारी रखा।

नतीजा यह हुआ कि ये दोनों समानांतर परंपराएं दक्षिण में अपने-अपने इलाकों में चौदहवीं सदी के दूसरे हिस्से में विजयनगर साम्राज्य के आने तक चलती रहीं, जिसने जल्द ही इन दोनों इलाकों को अपने दायरे में ले लिया और असल में जल्द ही दक्षिण के दूसरे हिस्सों में भी फैल गया।



लगभग पूरे दक्षिण भारत में। उत्तरी इलाके की सॉफ्ट स्टोन की परंपरा लगभग खत्म हो गई और मंदिर बनाने के लिए हार्ड स्टोन का इस्तेमाल लगभग हर जगह होने लगा, हालांकि उस समय तक दोनों इलाकों में जो रीजनल स्टाइल और खासियतें डेवलप हुई थीं, वे आम तौर पर बनी रहीं।

ब्राह्मण और जैन मंदिर आर्किटेक्चर में रॉक-कट फेज़ को कवर करने वाली तीन सदियों के दौरान हिंदुओं के बड़े रिवाइवलिस्ट मूवमेंट और लोगों के कुछ हिस्सों पर जैन पंथों की पकड़ भी बनी रही। सातवीं सदी की शुरुआत में, और हिंदुओं के रिवाइवलिस्ट मूवमेंट के बाद बड़े बदलाव हुए और भक्ति पंथ डेवलप हुआ। तमिल लैंड में शैव और वैष्णव भजन गाने वाले संत, नयनमार और अलवार वैदिक परंपराओं से जुड़ गए और पूरे इलाके में घूमे, मंदिरों में गए, तमिल में सैकड़ों भक्ति भजन गाए और लोगों को जगाया। इसका नतीजा यह भी हुआ कि कला मुख, पाशुपत, महेश्वर, शाक्त और इसी तरह के कट्टर शैव पंथों में सुधार हुआ, इसने लोगों पर जैन धर्म की मजबूत पकड़ को कम किया और, लगभग बौद्ध धर्म के पतन का कारण बना।

जैन धर्म का तेलुगु और कन्नड़ इलाकों पर हमेशा से बहुत दबदबा रहा है, क्योंकि इसे राजाओं और अमीर व्यापारी ग्रुप से मदद मिली थी। कन्नड़ इलाका दक्षिण भारतीय जैन धर्म का सेंटर बना रहा, जहाँ से अलग-अलग गुच्छ तमिल और तेलुगु इलाकों में फैल गए। नौवीं सदी के पहले आधे हिस्से में ही महान हिंदू सुधारक-दार्शनिक, शंकराचार्य सामने आए, उन्होंने मौजूदा

पंथों और उनके तरीकों को बेहतर बनाया, छह मतों (शान्मत, यानी गणपत्य, कौमार, सौर, शैव, वैष्णव और शाक्त) को एक मज़बूत आधार पर स्थापित किया, और अद्वैत के महान और यूनिवर्सल दर्शन को बढ़ावा दिया। यह एक अजीब बात है कि उस समय के ये चट्टान काटकर या पत्थर से बने मंदिर, भले ही महान राजाओं ने या उनकी मदद से बनाए थे, लेकिन आज के तमिल भजन गाने वालों ने उन्हें लगभग पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया था। ऐसा शायद इसलिए था क्योंकि वे



ये ऐसे इनोवेशन थे जिनमें आर्किटेक्चर और मूर्तिकला की पारंपरिक चीज़ों का इस्तेमाल नहीं किया गया था और इस तरह ये संप्रदाय के खिलाफ थे। ज़ाहिर है, उन्हें मंज़ूर होने में समय लगा।

पल्लवों और उनके बाद समकालीन पांड्यों और बीच के तंजावुर क्षेत्र के मुत्तरैयार जैसे छोटे राजवंशों, और केरल क्षेत्र के शासकों के चट्टान काटकर बनाए गए मंदिरों का उत्पादन, दक्कन और तटीय आंध्र क्षेत्रों के चालुक्यों, राष्ट्रकूटों, पूर्वी चालुक्यों और तेलुगु चोडों की नरम चट्टानों की तुलना में कठोर चट्टानों में कहीं अधिक है।

पल्लव गुफा मंदिर एक ज़्यादा जुड़ी हुई सीरीज़ बनाते हैं और इसलिए उन्हें पहले माना जा सकता है।

पल्लव: महेंद्र शैली के गुफा-मंदिर

महेंद्र (लगभग 580-630 A.D.) के सादे गुफा-मंदिरों में खंभों वाला बरामदा होता है, जिसमें बरामदे या हॉल की पिछली या साइड की दीवारों में मंदिर-कोठरी या कोठरियां काटी जाती हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि बरामदे या मंडप का मुख्य हिस्सा किस तरफ है। इस तरह, दक्षिण या उत्तर की ओर वाले मंडपों में, एक मंदिर-कोठरी या कोठरियां अक्सर बगल की दीवारों में इस तरह काटी जाती थीं कि उनका मुंह पूरब या पश्चिम की ओर हो, जबकि पूरब या पश्चिम की ओर वाले मंडपों में, मंदिर-कोठरी या कोठरियां मंडप की पिछली दीवार में काटी जाती थीं। ये, सभी रॉक-कट आर्किटेक्चर की तरह, ज़रूरी तौर पर उन स्ट्रक्चरल स्मारकों के अंदरूनी हिस्से को दिखाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिनकी उन्होंने नकल की थी। वे असल में मंडप-टाइप के मंदिर हैं। महेंद्र द्वारा खोदे गए गुफा-मंदिरों को उनके अपने शिलालेखों से प्रमाणित किया गया है जो अक्सर एकल समर्पण छंद या उनके शीर्षकों की एक लाइन होते हैं। ऐसे मंदिरों की संख्या दस है। उनमें से नौ हैं: मंडागपट्टु में त्रिमूर्ति को समर्पित लक्षितन, पाल-लावरम में तथाकथित पंच पांडव गुफा-मंदिर (जिसे अब मुस्लिम दरगाह में बदल दिया गया है), मामंदूर में शिव को समर्पित रुद्रावलीस-वरम या गुफा-मंदिर नंबर II, कुरंगनिलमुट्टम में काल-मंडपम गुफा-मंदिर, जो पल्लवरम गुफा-मंदिर से बहुत

मिलता-जुलता है, हालांकि यह अधूरा है और इसमें पल्लव मंदिर नहीं हैं।



शिलालेखों में, वल्लम में वसंतेश्वर या शिव को समर्पित बड़ा गुफा-मंदिर, महेंद्रवाड़ी में महेंद्र-विष्णु-गृह गुफा-मंदिर, मामंदूर में विष्णु गुफा-मंदिर या गुफा-मंदिर नंबर 1, दलवनूर में शिव को समर्पित सत्रुमल्लेश्वरालय गुफा-मंदिर, और सियामंगलम में अवनिभाजन पल्लवेश्वर-गृह गुफा-मंदिर शामिल हैं। ये सभी पल्लवों की राजधानी कांची और चिंगलपुट, नॉर्थ अर्कोट और साउथ अर्कोट जिलों में महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के बंदरगाह शहर के आसपास स्थित हैं, जिसमें पल्लवों का गृह प्रांत तोंडईमन-दलम (आधुनिक मद्रास के उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में स्थित क्षेत्र) शामिल है। ललितांकुरा पल्लवेश्वर-गृह, या तिरुचिरापल्ली में ऊपर चट्टानों को काटकर बनाया गया गुफा-मंदिर, राजधानी से सबसे दूर अकेला मंदिर है, जो कावेरी नदी के किनारे चोल मंडलम में है, जिसकी सीमा तक महेंद्रवर्मन को अपने पिता, सिंह विष्णु से राज्य विरासत में मिला था। यह गुफा-मंदिर पहाड़ी की चोटी के पास खुदाई में मिला एकमात्र उदाहरण भी है, जबकि बाकी चट्टानों के बेस के पास हैं। विलप्पक्कम (नॉर्थ आरकोट डिस्ट्रिक्ट) और अरागंडनल्लूर (साउथ आरकोट डिस्ट्रिक्ट) में अधूरे चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर भी, स्टाइल के आधार पर, महेंद्र स्टाइल के होंगे।

मंडप के पीछे सिर्फ़ एक कमरा है, वहीं रेक्टेंगुलर मंडप के सामने वाले हिस्से पर चार पिलर और पिलस्टर हैं, साइड की दीवारों के सामने दो सबसे आखिर में दो पिलस्टर हैं, और बीच में दो पिलर हैं जो सभी बराबर दूरी पर हैं। सामने का हिस्सा लंबा है जिसमें सबसे आखिर के पिलस्टर के बीच चार, छह या आठ बराबर दूरी पर पिलर हैं और तीन, पाँच, या सात मंदिर-कोठरियाँ हैं। सभी पिलर बड़े, छोटे, बेस और ऊपर से चौकोर सेक्शन में हैं, और ऊँचाई का बीच का एक तिहाई हिस्सा आठ कोनों वाला है। उन पर बेवल वाले या घुमावदार सिरों वाले बड़े कॉर्बल हैं, कभी-कभी उनके चेहरे रोल की एक सीरीज़, तरंगा के रूप में उकेरे गए होते हैं, और बीच में एक सपाट बैंड, पट्टा होता है। कॉर्बल के ऊपर एक बड़ा बीम काटा गया है, लेकिन कोई अच्छी तरह से बना हुआ कॉर्निस प्रोजेक्शन, या कपोत नहीं है, जो कि खुरदरी चट्टान की भौंह है जो खुद एक का काम करती है। पिलर के चौकोर सेक्शन के चेहरे हैं



बड़े गोल कमल के मेडल से सजा हुआ, जो अक्सर एक चौकोर के अंदर खुदे होते हैं। मंडप को खंभों और पिलस्टर की एक अंदर की लंबी लाइन से दो हिस्सों में बांटा जा सकता है, आगे और पीछे, जो मुख-मंडप और अर्ध-मंडप के हिस्सों को दिखाते हैं, हालांकि दोनों एक ही

चौड़ाई और एक ही तरह के हो सकते हैं, जो सामने की लाइन के हिसाब से होते हैं। जहां अंदर के खंभे नहीं हैं, वहां फ़र्श के अलग-अलग लेवल या छत की ऊंचाई से फ़र्क दिखाया जाता है।

मंडप के फ़र्श से लगभग तीन चट्टान से काटी गई सीढ़ियाँ मंदिर के साधारण एंट्रेंस तक जाती हैं, जो मंडप में थोड़ा बाहर निकला हुआ कटा हुआ है। मंदिर में अक्सर एक मोल्डेड पेडस्टल, या अधिष्ठान दिखता है, और दीवार के दो सामने के कोनों पर चार-तरफ़ा फ़्लैट पिलस्टर हैं, जिनके बीच में दो और हैं, हर अंदरूनी जोड़ा मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर है। अक्सर ये दो अंदरूनी पिलस्टर साधारण दरवाज़े के दो जाम्ब भी बनाते हैं, जिसके आर-पार एक नीचा लिंटेल होता है और नीचे सीढ़ियों की उड़ान के ऊपर एक सिल कटी होती है। दरवाज़े का फ्रेम, अगर अलग है, तो भी वह साधारण और बिना सजावट का होता है। कुछ मामलों में पिलस्टर के ऊपर अलग कैपिटल मोल्डिंग और कॉर्बल, या पोटिका होती है। ऊपर एक बीम और मुड़ा हुआ ओवरहैंगिंग कॉर्निस या कपोत काटा जाता है। कपोत को सेमी-सर्कुलर कुडू ऑर्नामेंट्स से सजाया जाता है, जिसके ऊपर एक फ़्लैट फावड़े के आकार का फिनियल होता है।

मंदिर के दरवाज़ों पर आम तौर पर दो हथियारबंद द्वारपालों या गेटकीपरों की उभरी हुई मूर्तियां होती हैं, जो दोनों तरफ़ एक-एक होते हैं। सबसे पुराने गुफा-मंदिर में, जहाँ ब्रह्मा, शिव और विष्णु जैसे त्रिदेवों के मंदिर पीछे की दीवार में बने गहरे सादे ताख हैं, वहीं मंडप के सामने के हिस्से के दोनों तरफ़ दो द्वारपाल पाए जाते हैं। वल्लम में वसंतेश्वरम, महेंद्रवाड़ी और मामंदुर का विष्णु गुफा-मंदिर और सियामंगलम में अवनिभाजन गुफा-मंदिर ऐसे गुफा-मंदिरों के उदाहरण हैं जिनमें मंडप की पिछली दीवार में एक ही मंदिर-कोठरी बनी होती है। मामंदुर का रुद्रवलीश्वरम और कुरंगनिल-मुत्तम में कलमंदकम गुफा-मंदिर तीन मंदिर-कोठरियों वाले उदाहरण हैं, जैसा कि मंडगपट्टू में है। कलमंदकम मंदिर के अर्ध- और मुख-मंडप की हर बगल की दीवार पर दो-दो और चार कोठरियां, बाद में जोड़ी गईं।



पिछली दीवार पर तीन कोठरियों के ओरिजिनल स्कीम के हिसाब से। पल्लवरम गुफा-मंदिर में पाँच मंदिर-कोठरियाँ हैं, जबकि अधूरे विलप्पक्कम गुफा-मंदिर में सात मंदिर-कोठरियाँ हैं। इसी तरह का अधूरा अरागन-दनाल्लूर गुफा-मंदिर, जिसके आगे और पिछली लाइन में चार खंभे और दो पिलस्टर हैं, पिछली दीवार पर अभी भी बिना काटे पाँच मंदिर-कोठरियों को दिखाता है। इस तरह पिछली दीवार पर मंदिरों की संख्या और जगह सामने वाले मंडप के खंभों के हिसाब से होगी, हर मंदिर का मुँह दो बराबर दूरी वाले खंभों, या एक खंभे और एक पिलस्टर के बीच में आएगा। यह, बराबर इंटर-कॉलम के साथ, पहले के बौद्ध उदाहरणों के चौड़े सेंट्रल नेव और संकरे साइड के गलियारों की व्यवस्था के उलट होगा, जिसके बाद चालुक्य-राष्ट्रकूट सीरीज़ के आज के और बाद के उदाहरण आए।

कलमंडकम, रुद्र-वलीश्वरम, वसंतेश्वरम और महेंद्रवाड़ी और मामंदूर के विष्णु गुफा-मंदिरों के आगे के हिस्से और मंदिर लगभग पूरब की ओर हैं, जबकि मंडगपट्ट, विलप्पक्कम और सियामंगलम के मंदिर लगभग पश्चिम की ओर हैं। पल्लवरम इस सीरीज़ का अकेला ऐसा उदाहरण है जहाँ मंडप का आगे का हिस्सा और मंदिर-कोठरियाँ दक्षिण की ओर हैं। तिरुचिरापल्ली और दलवनूर में ललितांकुरा और सत्रुमल्ला गुफा-मंदिर ऐसे उदाहरण हैं जहाँ मंडप दक्षिण की ओर है और मंदिर बगल की दीवार में काटा गया है - तिरुचिरापल्ली में पूर्वी वाला और दलवनूर में पश्चिमी वाला - ताकि मंदिर क्रमशः पश्चिम और पूरब की ओर हों। दलवनूर गुफा-मंदिर में बड़ा मंडप, जिसके आगे के हिस्से पर खंभों और पिलस्टरों की एक ही लाइन है, फर्श के लेवल में अंतर से मंडप के आगे और पीछे के हिस्सों का अंदरूनी बँटवारा दिखाता है। अर्ध-मंडप वाले हिस्से की पश्चिमी दीवार पर बना मंदिर, जिसके सामने एक छोटा बरामदा जैसा खंभों वाला मंडप है, काटा गया है। यह भी चट्टान से काटा गया है और अर्ध-मंडप के फ़र्श पर एक अलग चबूतरे पर और भी ऊँचे लेवल पर खड़ा है। तिरुचिरापल्ली गुफा-मंदिर के मामले में, खंभों और पिलस्टर की एक अंदरूनी लाइन पिछली दीवार के बहुत पास काटी गई है, जिसके और दीवार के बीच एक पतला रास्ता है। पूरब की तरफ़ का कमरा पश्चिम की ओर है और मंडप के सामने वाले हिस्से में अंदरूनी हिस्से के बीच है।



और खंभों की बाहरी लाइनें। यह खासियत पूरी तरह पल्लव नहीं है, बल्कि पांड्य देश के गुफा-मंदिरों की याद दिलाती है, जैसे कि तिरुप्परनकुनराम का मंदिर। वैसे, तिरुचिरापल्ली का ललितन-कुरा पल्लवेश्वरम गुफा-मंदिर सबसे दक्षिणी पल्लव गुफा-मंदिर है जो पांड्य इलाके की सीमाओं के पास है। खंभों के ऊपर और नीचे के क्यूबिकल हिस्सों (सदुरम) पर कमल के निशान, जो इस सीरीज़ के पहले के गुफा-मंदिरों जैसे मंडगपट्ट, पल्लवरम और कुरंगा-निलमुट्टम, और मामंदूर और वल्लम की शिव गुफाओं में नहीं हैं, सीरीज़ के बाद के मंदिरों में मिलते हैं जैसे महेंद्रवाड़ी और मामंदूर के विष्णु गुफा-मंदिरों में। तिरुचिरापल्ली और सियामंगलम के शिव गुफा मंदिरों में, इसके अलावा, गोल मेडल के अंदर और भी डिज़ाइन बने हुए हैं, जैसे मकर, किन्नरी, मतंग-नकरा (हाथी और मकर का कॉम्बिनेशन), और पुष्प-लता और पत्र-लता (पत्तियों और फूलों की स्क्रॉल)। सियामंगलम गुफा मंदिर में पिलस्टर के ऊपर मूर्तियों के छोटे उभरे हुए पैनल हैं।

इन सभी मामलों में मंदिर के कमरे, या गर्भगृह, खाली हैं और उनमें न तो चट्टान से बना लिंग है और न ही लिंग-पीठ, जैसा कि पांड्या, मुत्तरैयार और चालुक्य गुफा-मंदिरों में आम है। असल में, उनमें पूजा के लिए इस्तेमाल होने वाले देवता - शिव, विष्णु या दूसरे देवताओं - की कोई सही मूर्ति नहीं है, जिनके बारे में लिखा है कि मंदिर उन्हीं को समर्पित है। अक्सर पिछली दीवार पर चूने के प्लास्टर के निशान होते हैं, जिस पर एक पेंटिंग बनी होती है, जिससे पता चलता है कि पूजा की चीज़ भगवान की म्यूरल पेंटिंग थी। कभी-कभी पिछली दीवार के बेस

पर एक पेडस्टल की हल्की सी उभरी हुई आकृति मिलती है, जिससे पता चलता है कि देवता को प्लास्टर, या चूने के मोर्टार से बनाया गया था और पेंट किया गया था, या यह एक लकड़ी का पैनल था जिस पर दीवार पर एक धँसी हुई जगह में नक्काशी की गई थी।

ये महेंद्र मंदिर इसलिए भी जाने जाते हैं क्योंकि इनमें मंडप वाले हिस्से में भी द्वारपालों के अलावा कोई दूसरी मूर्ति नहीं है। ये द्वारपाल मंडगपट्टू गुफा-मंदिर में मंडप के सामने के हिस्से के दोनों सिरों पर पाए जाते हैं। दलवनूर में



और सियामंगलम गुफा-मंदिरों में, द्वारपाल न केवल मंडप के सामने वाले हिस्से के दोनों ओर पाए जाते हैं, बल्कि अंदर मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर भी पाए जाते हैं। बाकी सीरीज़ में, ये केवल मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर पाए जाते हैं। मामंदूर में विष्णु गुफा और पल्लवरम में गुफा-मंदिर के मामले में, द्वारपाल न तो मंडप के सामने वाले हिस्से के किनारों पर हैं और न ही मंदिर की कोठरियों के किनारों पर। द्वारपाल या तो पूरी तरह सामने की ओर मुंह करके खड़े होते हैं या मंदिर के दरवाज़े की ओर आधे मुड़े हुए होते हैं और एक बड़े से डंडे पर टिके होते हैं जिसमें एक सांप फंसा होता है। सियामंगलम में, हालांकि, दो बाहरी द्वारपालों को मंडप के सामने वाले हिस्से के दोनों सिरों पर अलग-अलग आलों के अंदर योद्धाओं के रूप में दिखाया गया है, जबकि मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर वाले दो द्वारपाल सामान्य रूप के हैं। तिरुचिरा-पल्ली में ललितांकुरा का ऊपरी चट्टानों को काटकर बनाया गया गुफा-मंदिर इस मायने में अनोखा है कि इसमें मंडप की पश्चिमी दीवार पर मंदिर के ठीक सामने एक पैनल में मूर्तियों का एक बड़ा ग्रुप है, जिसमें शिव को गंगाधर के रूप में दिखाया गया है। सियामंगलम गुफा-मंदिर इस मायने में भी अनोखा है कि इसमें कमल के पदक की जगह सामने के खंभों और स्तंभों के ऊपर छोटी मूर्तियों के पैनल हैं। दो स्तंभों के ऊपर दो पैनल, क्रमश: शिव के नाचते हुए रूप, या तांडवमूर्ति को दिखाते हैं, जो शायद पल्लव मूर्तियों में सबसे पहला ऐसा रूप है, और शिव और उमा अपने पीछे बैल के साथ खड़े हैं, जो वृषभंतिकमूर्ति नाम के रूप को दिखाते हैं।

महेंद्र के बेटे नरसिंहवर्मन मामल्ला (630-68) और उनके वारिसों, महेंद्रवर्मन II (668-72), परमेश्वर I (672-700), और राजसिंह (700-728) ने महेंद्र I की शुरू की गई परंपरा को जारी रखा और सदी के दौरान महेंद्र स्टाइल में कई गुफा-मंदिर खोदे। ये हैं तिरुक्कलुक्कुनराम में ओरुकल मंडपम, महा-बलीपुरम में कोटिकल मंडपम, सिंगपेरुमल कोविल में नरसिंह गुफा-मंदिर, सिंगावरम में रंगनाथ गुफा-मंदिर, महाबलीपुरम में धर्मराज मंडपम या अत्यंतकाम पल्लव का गुफा-मंदिर, और महाबलीपुरम के पास सलुवनकुप्पम में अतिरनचंदा मंडपम गुफा - ये सभी तमिलनाडु के चिंगलपुट जिले में हैं।

सिंगावरम और सिंगपेरुमल कोविल गुफा मंदिर विष्णु को, कोटिकल मंडपम दुर्गा को और बाकी शिव को समर्पित हैं। हालांकि शिव गुफा मंदिरों में से किसी के भी गर्भगृह में चट्टान से बना लिंग नहीं है, लेकिन दो विष्णु गुफा मंदिरों के गर्भगृह में देवताओं की प्लास्टर की मूर्तियां हैं जिन्हें अब मॉडर्न बना दिया गया है। दुर्गा के कोटिकल मंडपम में गर्भगृह के अंदर दुर्गा की कोई मूर्ति नहीं है, हालांकि मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर महिला द्वारपालिकाओं और मंदिर के नाम से इस समर्पण का पता चलता है। राजसिंह का अतिरनचंद मंडपम, जो इस सीरीज़ का आखिरी है, उसमें अकेले शिव का सोमस्कंद के रूप में एक बेस-रिलीफ पैनल है, जिसमें उमा और स्कंद उनके बगल में बैठे हैं और ब्रह्मा और विष्णु पीछे के ग्रुप के दोनों ओर खड़े हैं। ऐसा लगता है कि गर्भगृह के मुख्य देवता की पहले की पारंपरिक पेंटिंग, या प्लास्टर-रिलीफ, या लकड़ी की नक्काशी की जगह इस तरह की बेस-रिलीफ की नक्काशी परमेश्वरवर्मन I (672-700) के समय में शुरू हुई थी। मंदिर के एंट्रेंस के दोनों तरफ मंडप की पिछली दीवार पर ऐसी दो और सोमस्कंद रिलीफ खुदी हुई मिलती हैं। ऐसा लगता है कि महेंद्रवर्मन I ने लकड़ी और ईंट-गारे के मंदिरों की परंपरा को तोड़कर पत्थर के मंदिर बनाए, लेकिन वे गर्भगृह में मुख्य देवता की पारंपरिक सामग्री को बदलने के लिए बहुत आगे नहीं जा सके। इसके लिए कुछ दशकों तक इंतज़ार करना पड़ा, जब तक कि सातवीं सदी के आखिरी चौथाई में परमेश्वर वर्मन I ने, दूसरे इनोवेशन के साथ, पहली बार मंदिर की पिछली दीवार पर रिलीफ के तौर पर मुख्य देवता की नक्काशी शुरू नहीं की। राजसिंह के गुफा-मंदिर, अतिरनचंद मंडपम में, एक काले पॉलिश किया हुआ, नालीदार या सोलह भुजाओं वाला पत्थर का लिंग (धारा-लिंग) भी पिछली दीवार पर सोमस्कंद की नक्काशी के सामने गर्भगृह के फर्श पर लगाया गया था। इससे पता चलता है कि पल्लव क्षेत्र में शिव को दिखाने के लिए बिना आकार वाले लिंग की स्थापना शुरू हुई थी।

ज़्यादातर मामलों में महेंद्र के बाद के गुफा-मंदिरों की यह सीरीज़ प्लान और डिज़ाइन और दूसरी आम बातों में महेंद्र के मंदिरों जैसी ही है। लेकिन खंभों और पिलस्टर्स में एक झुकाव दिखता है।



पतले और ऊंचे होते जाते हैं, कभी-कभी चपटे, एक आयताकार हिस्से के साथ। उनके बीच की जगह बराबर लेकिन ज़्यादा चौड़ी होती है। सामने के हिस्से के ऊपर कपोत अभी भी बीम के ऊपर एक बिना अलग किया हुआ, निकला हुआ चट्टान का किनारा है। इस सीरीज़ के सभी गुफा-मंदिरों में पीछे की दीवारों में कटे हुए सिंगल मंदिर-सेल हैं, जिनका अगला हिस्सा मंडप

में ज़्यादा निकला हुआ है। तीन मंदिर-सेल वाला एकमात्र उदाहरण धर्म-राज मंडपम या अत्यंतकाम पल्लव का गुफा-मंदिर है, जहाँ दो साइड के मंदिर-सेल साधारण खुदाई हैं, जो शायद बाद में जोड़े गए हैं, बिना किसी पक्के मंदिर के सामने के हिस्से के, जैसा कि मुख्य सेंट्रल वाले के मामले में पाया जाता है। इन सभी गुफा-मंदिरों में मंडप के सामने के हिस्से पर सिर्फ़ दो पिलर और दो पिलस्टर हैं, और मंडप के अंदर पीछे भी ऐसा ही एक सेट है, जहाँ भी अर्ध-और मुख-मंडपों का ऐसा सीमांकन है, जैसे रंगनाथ गुफा-मंदिर, ओरुक-कल मंडपम और धर्मराज मंडपम में। खंभों पर ऊपर और नीचे सदुरम और बीच में कट्ट हैं, जबकि पिलस्टर महेंद्रवर्मन के गुफा-मंदिरों की तरह एक जैसे चार-तरफ़ा हैं, सिवाय इसके कि सिंगवरम रंगनाथ गुफा-मंदिर में पिलस्टर खंभों की तरह अलग-अलग हैं और सदुरम के चेहरों पर कमल के मेडल हैं। यह गुफा-मंदिर इस सीरीज़ का अकेला ऐसा उदाहरण है जिसमें मंडप के सामने के हिस्से के दोनों सिरों पर द्वारपालों की एक बाहरी जोड़ी है। मंदिर के एंट्रेंस के दोनों तरफ़ अंदर की जोड़ी बाकी सभी के साथ कॉमन है।

आम तौर पर मंडप में द्वारपालों के अलावा कोई और मूर्ति नहीं होती है। लेकिन, ओरुक्कल मंडप में, पीछे की दीवार पर खड़े ब्रह्मा और विष्णु की उभरी हुई मूर्तियाँ हैं, जो मंदिर के एंट्रेंस के दोनों तरफ और द्वारपालों के आगे हैं। इसके अलावा, मुख-मंडप की दोनों छोर की दीवारों पर द्वारपाल जैसी मूर्तियों की दो बढ़िया, बोल्ड, लाइफ-साइज़ उभरी हुई मूर्तियाँ हैं। सिंगावरम गुफा-मंदिर में, सियामंगलम की तरह, अंदर की लाइन के पिलस्टर्स के ऊपर दो महिला भक्तों की छोटी पैनल उभरी हुई मूर्तियाँ हैं।

पल्लव मंदिरों की आखिरी सीरीज़ 730 A.D. के बाद की है, जो छोटी और कम दिलचस्प हैं। वे इस तरह के पतन के दौर को दिखाते हैं।



टोंडईमंडलम में रॉक-आर्किटेक्चर। किल्माविलंगई गुफा-मंदिर, टोंडई-मंडलम के पल्लव साम्राज्य में बिना रॉक-कट सेल का एकमात्र उदाहरण है; लेकिन ऐसे सेल-मंदिर पांड्या और मुत्तरैयार और केरल इलाकों में ज़्यादा आम हैं, जिनमें से ज़्यादातर 700 A.D. के बाद के पल्लव काल के समय के हैं। सेल की पिछली दीवार पर खड़े विष्णु की एक सपाट बेस-रिलीफ है। महेंद्र के वसंतेश्वरम गुफा-मंदिर के नीचे चट्टान पर वल्लम में दो छोटे गुफा-मंदिर हैं, एक विष्णु को और दूसरा शिव को। मंडप के सामने वाले हिस्से पर बेवेल्ड कॉर्बल्स वाले बहुत पतले खंभे हैं, मंडप खुद संकरा है और पीछे का मंदिर सेल बहुत छोटा है।

पल्लव: मामल्ला शैली के गुफा-मंदिर

महेंद्र के परपोते और वारिस नरसिंहवर्मन प्रथम मामल-ला (630-668) ने पहले बताए गए

ओरुक्कल मंडपम और कोटिकल मंडपम जैसे कुछ महेंद्र-स्टाइल के गुफा-मंदिरों की खुदाई के अलावा, कटे हुए गुफा-मंदिरों की एक नई और ज़्यादा सजावटी सीरीज़ शुरू की। यह पूरी तरह से कटे हुए मोनोलिथिक मंदिर-रूपों, या विमानों, जिन्हें रथ कहा जाता है, और कुछ खुले आसमान के नीचे बनी बेस-रिलीफ रचनाओं के उनके अनोखे आविष्कार के अलावा था, जो काफी बड़े और शानदार क्वालिटी के थे, ये सभी मामल-लापुरम या महाबलीपुरम के महान पल्लव बंदरगाह-शहर तक ही सीमित थे। मामल-ला द्वारा शुरू किए गए इन सजावटी गुफा-मंदिरों को ज़्यादातर उनके तुरंत बाद आने वालों ने दो पीढ़ियों तक अलग-अलग चरणों में पूरा किया, जिन्होंने उसी स्टाइल में और उसी जगह पर कुछ स्मारक भी बनाए। इनमें जो शानदार डेवलपमेंट दिखता है, वह है उनके मंडप के बाहरी हिस्से का पूरा रिप्रेजेंटेशन, उनकी अंदर की सजावट और चौकोर बड़े खंभों और पिलस्टर की जगह सजावटी बेस और पूरे टॉप वाले खास खंभों और 'ऑर्डर' के सभी मोल्डेड हिस्सों को लगाना, जिससे पत्थर की कॉपी ईंट और लकड़ी से बनी अपनी आज की स्ट्रक्चरल ओरिजिनल चीज़ों के ज़्यादा करीब लगती हैं।

अधिष्ठान, या चबूतरा, सभी सामान्य ढलाई को दर्शाता है



तैयार उदाहरणों में देखा जा सकता है। मंडप के सामने के हिस्से में पूरी तरह से बना हुआ एंटेब्लेचर, या प्रस्तर है, जिसमें बीम के ऊपर आने वाले और उसमें शामिल सभी आर्किटेक्चरल हिस्से शामिल हैं, जैसा कि महेंद्र-स्टाइल के गुफा-मंदिरों में देखा जाता है। प्रस्तर पूरी तरह से एक मुड़े हुए कपोत, या छज्जे जैसे कॉर्निस प्रोजेक्शन के साथ तैयार किया गया है, जिसे घोड़े की नाल के आकार के कुडू मेहराबों से सजाया गया है। प्रस्तर के ऊपर छोटे मंदिरों की एक लाइन भी है, जो सभी आयताकार प्लान के हैं, अक्सर बैरल-वॉल्टेड छत, सला के साथ, जबकि बाद के उदाहरणों में, सला की लाइन दोनों सिरों पर चौकोर प्लान के समान छोटे मंदिर मॉडल में खत्म होती है, जिसमें चार तरफ से गुंबद जैसी छत, कूट होती है। पूरी लाइन हारा बनाती है जिसमें क्लोइस्टर की आपस में जुड़ी हुई लंबाई होती है। खंभे आमतौर पर लकड़ी के प्रोटोटाइप जैसे ही होते हैं, लेकिन वे ऊंचे और पतले होते हैं और उनके बेस अक्सर बैठे हुए शेरों के आकार के होते हैं। शाफ्ट के ऊपरी हिस्से में अलग-अलग तरह से बने हुए कैपिटल मेंबर होते हैं, जैसे मालास्थान, पद्मबंध, कलश, ताड़ी, कुंभ, पाली और फलक या एबेकस, कुछ मामलों में आखिरी वाला हटा दिया जाता है, और सबसे ऊपरी हिस्से में कर्व्ड प्रोफ़ाइल और रोल ऑर्नामेंटेशन वाला कोरबेल या पोटिका, या तरंगा होता है, जिसमें बीच का सादा पट्टा होता है।

उनके मंडप अक्सर खंभों की एक अंदरूनी लाइन से आगे और पीछे के हिस्सों में बंटे होते हैं। मंदिर के सामने वाले हिस्से, एक, तीन या पाँच, अंदर के मंडप के पीछे होते हैं, मंडप में ज़्यादा बाहर निकले होते हैं, और उनमें विमान के सामने वाले हिस्से के सभी अंग होते हैं, जैसे, ढले

हुए अधीश-थान, पिलस्टर, या कुड्या-स्तंभ, जिनमें ऊपर बताए गए मुख्य हिस्से होते हैं और प्रस्तर, जिसमें अच्छी तरह से बने कपोत और कुडू सजावट होती है। विमान का आगे का सुपरस्ट्रक्चर नहीं दिखाया गया है, क्योंकि मंडप के अंदर के हिस्से को मंदिर के पीछे दिखाने पर, विमान के ऊपरी हिस्से दिखाई नहीं देंगे। मंदिर के सामने का प्रस्तर मंडप की छत से सटा होता है।

ऐसे आठ गुफा-मंदिर हैं जो अलग-अलग स्टेज में पूरे हो रहे हैं: कोनेरी मंडपम, वराह मंडपम, महिषमर्दिनी मंडपम (जिसे लोकल लोग यमपुरी मंडपम कहते हैं), कोनेरी मंडपम के बगल में एक अधूरा गुफा-मंदिर, पंच-पांडव मंडपम



मंडपम, आदिवराह गुफा-मंदिर जिसे उसके शिलालेखों में परमेश्वर महा-वराह विष्णुगृहम कहा गया है, और रामानुज मंडपम। इनमें से वराह और रामानुज मंडपम में बिना बंटे मंडप हैं, जबकि कोनेरी मंडपम और आदिवराह गुफा-मंदिर के मंडप खंभों की एक अंदरूनी लाइन से अर्ध- और मुख-मंडपों में बंटे हुए हैं। महिषमर्दिनी मंडपम इस मायने में खास है कि इसके मुख्य केंद्रीय मंदिर से पहले एक चौकोर और खंभों वाला पोर्टिको है जो बड़े मंडप में निकला हुआ है, जैसा कि दलवनूर गुफा-मंदिर के मामले में है। पंच-पांडव मंडपम में एक चौकोर केंद्रीय मंदिर को काटने की कोशिश का रिकॉर्ड है, जिसके चारों ओर खंभों की दो लाइनें हैं और मंडप के रूप में एक चारों ओर एक क्लोस्टर है। वराह मंडपम और आदिवराह गुफा-मंदिरों में हर एक में एक मंदिर-कोठरी है, जबकि महिषा-मर्दिनी और रामानुज मंडपम में तीन मंदिर-कोठरी हैं; कोनेरी मंडपम में मंडपम के पीछे एक लाइन में पांच मंदिर-कोठरी हैं।

मामल्ला-स्टाइल के गुफा-मंदिर प्लास्टिक की सजावट में भी महेंद्र टाइप के मंदिरों से काफी आगे हैं, क्योंकि इनमें आम द्वारपाल की मूर्तियों के अलावा बड़ी और बढ़िया मूर्तियां भी हैं। ये अक्सर सिनॉप्टिक होती हैं, जिनमें ज़रूरी पौराणिक कहानियों का ज़िक्र होता है। वराह मंडपम, जो सबसे पूरा गुफा-मंदिर है और अपने सभी हिस्सों में बचा हुआ है, उसके मंडपम की साइड की दीवारों पर बड़े पैनल के अंदर भू-वराह और त्रिविक्रम की बेस-रिलीफ रचनाएं हैं। इसकी पिछली दीवार पर दो और हैं, एक-एक बाहर निकले हुए मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर, जिन पर गजलक्ष्मी और दुर्गा के पैनल हैं। बाहर निकले हुए मंदिर के सामने और साइड की दीवारों पर द्वारपाल की मूर्तियों वाले ताखे हैं। जिस तरह से भू-वराह का सूअर का सिर गर्दन पर इंसानी शरीर के साथ छिपा हुआ मिलता है, वह कला का एक ऐसा मास्टरपीस है जिसकी बराबरी गुप्त और दूसरी मूर्तियों में इसी तरह की आकृतियों से नहीं की जा सकती। बीच का मंदिर अब खाली है, लेकिन शायद कभी इसमें नरसिंह की पेंटिंग या प्लास्टर से बनी तस्वीर थी। पीछे की दीवार के पैनल पर गजलक्ष्मी और दुर्गा की लगभग एक जैसी, लेकिन ज़्यादा कलात्मक और सुंदर तस्वीरें लगभग एक ही जगह पर बनाई गई हैं।

*Plate 3.* ELLORA—KAILASA VIMANA SUPERSTRUCTURE *(See page 107)*

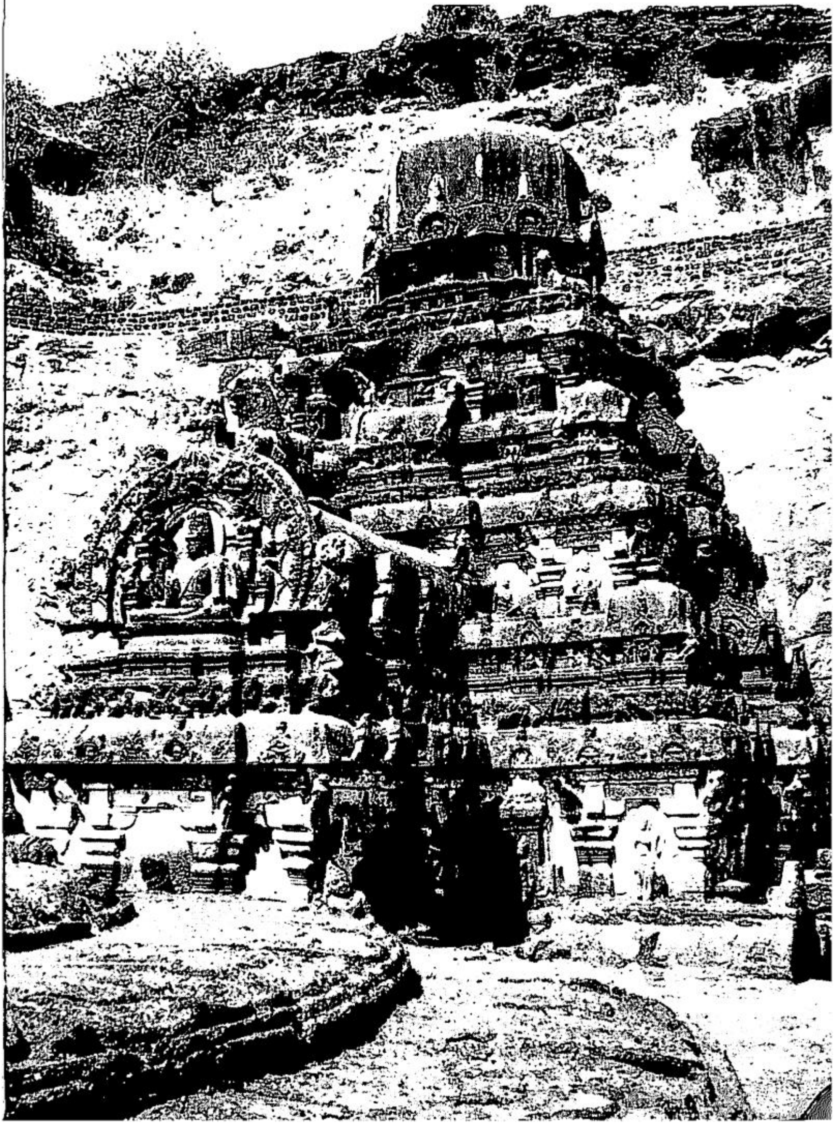

*Plate 4.* MAHABALIPURAM—SHORE TEMPLE *(See page 112)*

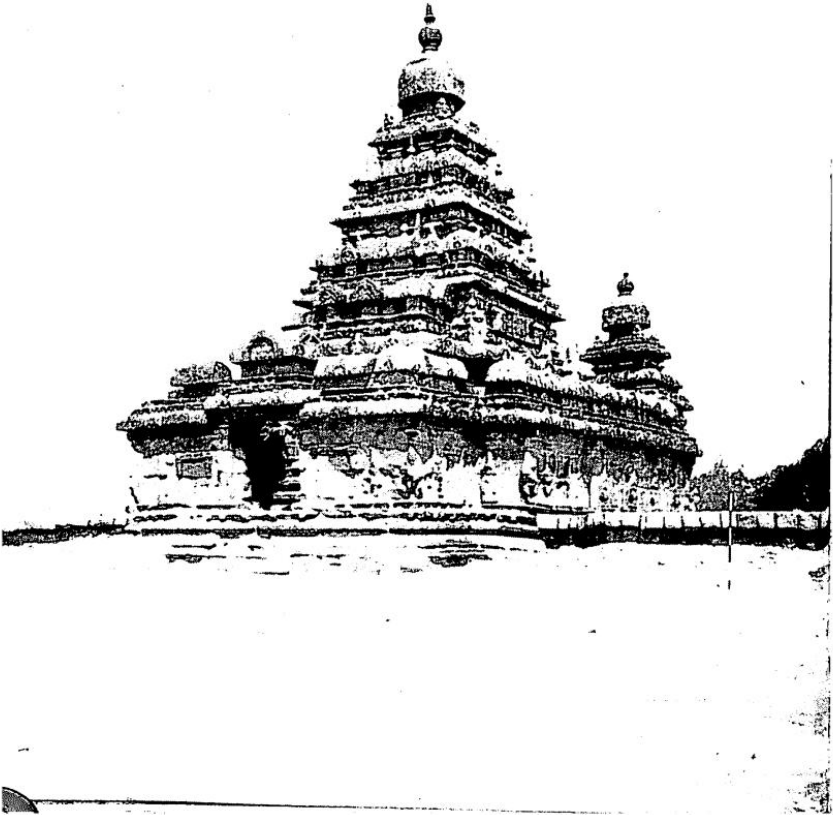

आदिवराह गुफा-मंदिर में निकले हुए मंदिर-प्रवेश द्वार के दोनों ओर। इसके अलावा, आदिवराह गुफा-मंदिर के निकले हुए केंद्रीय मंदिर की सामने की दीवार में प्रवेश द्वार के दोनों ओर तीन-तीन ताखे हैं जिनमें दूसरी मूर्तियां हैं। प्रवेश द्वार के दोनों ओर बने ताखों में द्वारपाल हैं। दो केंद्रीय चौड़े ताखों में, एक-एक करके, खड़े विष्णु और हरिहर की मूर्तियां हैं। उत्तर और दक्षिण की ओर के सबसे बाहरी हिस्सों में पांच सिर वाले सांप के फन वाले नागराज या आदिशेष को मानव रूप में और सुंदर त्रिभंग मुद्रा में एक पोर्ट्रेट मूर्ति दिखाई गई है। मुख-मंडप की दक्षिण और उत्तर की दीवारों पर खड़े ब्रह्मा और गंगाधर के रूप में शिव की बड़ी उभरी हुई मूर्तियां हैं। अर्ध-मंडप की दक्षिण और उत्तर की दीवारों पर इसी तरह के पैनलों में पल्लव राजाओं सिंहविष्णु और महेन्द्र के लगभग आदमकद शाही पोर्ट्रेट समूह हैं, जिनमें उनकी रानियां और पत्नियां हैं और उन पर उनकी पहचान बताने वाले लेबल लिखे हैं। मुख्य पवित्र जगह में वराहमूर्ति का मॉडर्न प्लास्टर का रूप है। यह मंदिर पूजा के लिए इस्तेमाल होता है, जबकि दूसरे नहीं। रामानुज मंडपम की दक्षिण दिशा की दीवारों पर दुर्गा और उत्तर दिशा की दीवारों पर गजलक्ष्मी (?) की उभरी हुई मूर्तियां बाद के समय में वैष्णव लोगों ने पूरी तरह से तराश दी थीं, साथ ही इस असली तीन कोठरियों वाले शिव गुफा-मंदिर के तीनों मंदिर-सामने के हिस्से और उनके द्वारपाल भी। बीच वाले मंदिर की पिछली दीवार पर सोमस्कंद समूह के निशान हैं। महिषमर्दिनी गुफा-मंदिर के मंडप की दो तरफ की दीवारों पर दो सबसे मशहूर और मशहूर पल्लव मूर्तियां हैं, यानी, उत्तर दिशा में महिषासुरमर्दिनी के रूप में दुर्गा, जो एक उछलते हुए शेर पर सवार हैं और महिषासुर और उसके झुंड से लड़ रही हैं, और दक्षिण दिशा में सांप के बिस्तर पर योग-निद्रा या ध्यान में सो रहे अनंतशायन के रूप में विष्णु। दुर्गा में दिखाई गई सुंदरता, ग्रेस, ताकत और फुर्ती के अलावा, राक्षस महिषासुर के भैंसे के सिर और इंसानी शरीर का चालाकी से किया गया मेल सिर्फ़ ऊपर बताए गए वराह रूप के बराबर होगा, उसके हाव-भाव और जानवर के चेहरे में भी दिखाए गए विद्रोह और घमंड की तो बात ही छोड़िए। इस तरह ये सभी मूर्तियां बनेंगी-

टी.एस.आई. 4



संबंधित रूपों के कुछ सबसे पुराने विद्यमान निरूपणों को शामिल करें और इस प्रकार दक्षिण में प्रारंभिक प्रतीकात्मकता के विकास के अध्ययन के लिए बहुमूल्य सामग्री प्रदान करें।

हालांकि यह उनके अतिरनचंद मंडप की तरह पूरी तरह से गुफा-मंदिर नहीं हैं, लेकिन महाबलीपुरम और आस-पास मिली चट्टानों पर की गई नक्काशी की सीरीज़ में राजसिंह पल्लव (700-728) की दूसरी रचनाएँ हैं - सलुवनकुप्पम में यलीमंडपम, जो महाबलीपुरम के उत्तर में एक छोटा सा गाँव है, जिसे आम तौर पर 'टाइगर गुफा' कहा जाता है, और इसी

तरह के सजावटी मंडप। ये ऊपर बताए गए गुफा-मंदिरों के किसी भी ग्रुप से अलग दिखेंगे। यलीमंडपम एक छोटा, आयताकार-लंबा, उथला मंडप या मंडप है, जो समुद्र के सामने एक पत्थर के पूर्वी हिस्से पर खोदा गया है, जिसमें ढाला हुआ अधिष्ठान और बगल में खंभों का एक आगे का हिस्सा है, जिनके बेस पर खड़े या बड़े शेर या व्याल बने हैं, जो सीढ़ियों से पहुँचने वाले निचले प्लेटफॉर्म पर काटे गए हैं। पूरा स्ट्रक्चर ग्यारह बड़े व्याल सिरों की एक मेहराबदार फ्रिज़ से घिरा हुआ है, जिन्हें गलती से 'टाइगर-हेड्स' कहा जाता है। मंडप के दक्षिण में, और चट्टान पर खुदी हुई, दो हाथियों के आगे के हिस्से की उभरी हुई आकृतियाँ हैं जिनके गले में हौदा है, बीच में एक ध्वजस्तंभ है, और दक्षिण छोर पर एक घोड़ा है। चट्टान के उत्तरी हिस्से को मोटे तौर पर एक बड़े बैठे हुए शेर के आगे के हिस्से में उकेरा गया है, जिसके सीने में एक छोटा चौकोर आशियाना बनाया गया है जिसमें महिषमर्दिनी का एक उभरा हुआ पैनल है। यलिमंडपम साफ़ तौर पर जुलूस वाली मूर्तियों या त्योहारों के दौरान राजघरानों के आराम करने की जगह के तौर पर काम करता था। यहाँ तक कि शिलालेखों में मिले जगह के नाम - तिरुवेलुच्चियुर - से भी यही पता चलता है। यलि-मंडपम की एक छोटी रेप्लिका महाबलीपुरम में शोर मंदिर के दक्षिण में लहरों से घिरे एक पत्थर पर मिली है। मंदिर के उत्तर में एक और बड़ी चट्टान है जिसे महिषमर्दिनी चट्टान कहा जाता है, जिसके सीने में एक बड़े शेर का चेहरा और दुर्गा का आशियाना है।

चलते-चलते, महाबलीपुरम की बड़ी चट्टानों पर बनी दो मशहूर ओपन-एयर बेस-रिलीफ मूर्तियों का ज़िक्र किया जा सकता है। वे हैं अर्जुन की तपस्या और गोवर्धन-कृष्ण के सीन। ये दोनों ही रचनाएँ एक-दूसरे का सार हैं-



संबंधित थीम की कहानी और कहानी। अर्जुन की तपस्या में शिव का वह सीन दिखाया गया है जिसमें अर्जुन को वरदान के तौर पर मनचाहा हथियार - पशुपत दिया जाता है, जिसे अर्जुन ने कड़ी तपस्या करके मांगा था। यह सीन भारवि के किरातार्जुनीय में दिए गए सीन के विवरण के बाद है। गोवर्धन-कृष्ण सीन में कृष्ण को पहाड़ी को थामे हुए दिखाया गया है ताकि वे बेघर हुए गोपों और गोपियों को उनके बच्चों, मवेशियों और दूसरे सामान के साथ पनाह दे सकें, जब उन्हें गुस्साए इंद्र की भारी बारिश और पत्थरों की वजह से अपने घरों से भागना पड़ा था। यह सीन काफी दमदार और असली है। कृष्ण की पसंदीदा गोपी, नप्पिनई को ग्रुप में उनके पास दुबककर बैठाने और सीन में बाकी औरतों से अलग दिखने से एक अनोखा साउथ इंडियन टच मिलता है, जो अपने कपड़ों, हाव-भाव और साथ में मौजूद महिला की वजह से अलग दिखती है। कृष्ण-नप्पिनई थीम पहले और आज के तमिल साहित्य और परंपरा के लिए खास है।

पांड्य और दक्षिण के अन्य गैर-पल्लव गुफा-मंदिर

दक्षिण में पांडिमंडलम में, जिसमें मुख्य रूप से आज के मदुरै, रामनाथपुरम, तिरुनेलवेली, कन्याकुमारी, त्रिवेंद्रम और क्विलोन जिले, और पुराने पुदुक्कोट्टई इलाके के दक्षिणी हिस्से शामिल हैं, जो अब तिरुचिरापल्ली जिले का दक्षिणी आधा हिस्सा है, पल्लवों के समय के पांड्या लोगों ने शुरुआती लोगों के तुरंत बाद, यानी सातवीं सदी के बीच से ही रॉक आर्किटेक्चर शुरू कर दिया था। उन्होंने यह काम तीन सदियों से ज़्यादा समय तक जारी रखा, जब तक कि पल्लवों की तरह, तंजावुर के उभरते चोलों ने उन्हें खत्म नहीं कर दिया। तमिलनाडु के दक्षिणी आधे हिस्से और आस-पास के केरल इलाके में उनके गुफा-मंदिर पल्लवों के मंदिरों से कहीं ज़्यादा हैं।

मुत्तरैयार सरदार, जिनका राज्य पारंपरिक चोलमंडलम, यानी तिरुचिरापल्ली, तंजावुर और दक्षिणी अर्काट जिलों के दक्षिणी हिस्से में कावेरी नदी के किनारे था, और जो बारी-बारी से पल्लवों और पांड्यों के प्रति वफ़ादार थे, चले गए।



इस समय के बाद के हिस्से में उनके इलाके में काफी गुफा-मंदिर मिले। ये तिरुवेल्लारई, नर्ततमलाई, कुन्नंदरकोविल, पुवलाईक्कुडी और दूसरी जगहों पर मिले, ये सभी तिरुचिरापल्ली जिले में हैं। उनके गुफा-मंदिर भी मंडप जैसे हैं जिनमें साधारण मंदिर-कोठरियाँ हैं और वे उसी इलाके के पांड्या गुफा-मंदिरों से काफी मिलते-जुलते हैं। तिरु-चिरापल्ली जिले की सीमा से लगे सलेम और कोयंबटूर जिलों के कोंगु इलाके में राज करने वाले अतियामन, या अडिगईमन सरदारों ने नामक्कल में दो बेहतरीन गुफा-मंदिर खोदे हैं। वे विष्णु को समर्पित हैं और अपनी बेहतरीन मूर्तियों के पैनल के लिए जाने जाते हैं।

ये गुफा-मंदिर, जिनकी कुल संख्या लगभग साठ है, पल्लव उदाहरणों की तरह, कठोर स्थानीय चट्टानों में खोदे गए हैं और प्लान और डिज़ाइन में महेंद्र-शैली की खुदाई से काफी मिलते-जुलते हैं। लेकिन वे अपनी कुछ खासियतें भी दिखाते हैं, जिसमें चालुक्य उदाहरणों की कुछ खासियतें भी शामिल हैं, खासकर उनकी मूर्तिकला और आइकनोग्राफी के संबंध में।

महेंद्र-स्टाइल के गुफा-मंदिरों की तरह, इनमें भी एक मंडप होता है जिसमें एक या ज़्यादा मंदिर-कोठरियाँ होती हैं जो अक्सर पीछे की तरफ़ काटी जाती हैं, लेकिन कुछ मामलों में मंडप की बगल की दीवारों में खुदाई की जाती है, जैसे तिरुचिरापल्ली में निचली चट्टानों को काटकर बनाई गई पांड्या गुफा और मदुरै के पास तिरुप्परन-कुनराम में गुफा-मंदिर वगैरह। इनके आगे के हिस्से पर बड़े-बड़े खंभे हैं, जो असल में नीचे और ऊपर से चौकोर हैं, और बीच का हिस्सा आठ कोनों वाला है, जिस पर भारी पोतिकाएँ या कॉर्बल लगे हैं, जो आमतौर पर सीधे बेवल के साथ होते हैं, जिससे एक एंगुलर प्रोफ़ाइल बनती है। हालाँकि, कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं जिनमें दूसरी तरह के खंभे और घुमावदार प्रोफ़ाइल और तरंग मोल्डिंग वाले कॉर्बल हैं। सभी गुफा-मंदिरों में, उनके मंडप के आगे के हिस्से पर बने आर्किटेक्चर में एक

सुपरिभाषित कपोत का अभाव है, जैसा कि महेंद्र-स्टाइल के गुफा-मंदिरों में भी होता है।

कुछ खुदाई में मिले मंदिर सिर्फ़ चट्टान में खोदे गए हैं, जिनके सामने चट्टान से काटा गया मंडप नहीं है। इस इलाके में ऐसे गुफा-मंदिर बहुत सारे हैं और टोंडई-मंडलम में बहुत कम हैं।



मलैयाडी-क-कुरिची (तिरुनेलवेली ज़िला) का गुफा-मंदिर मंडप-टाइप का सबसे पुराना ज्ञात पांड्या गुफा-मंदिर लगता है, जिसके पीछे एक ही मंदिर-कोठरी है और इसमें सातवीं सदी के दूसरे हिस्से में पांड्या-मरन सेंदन के सत्रहवें साल का एक नींव का शिलालेख है। शिलालेख में गुफा-मंदिर का ज़िक्र खास तौर पर काल-तिरु-क-कोयिल या 'पवित्र-पत्थर का मंदिर' के तौर पर किया गया है, जो इस इलाके के लिए शुरुआती विचार को दिखाता है, जैसा कि टोंडैमंडलम के मंडगापट्टू में पल्लव महेंद्रवर्मन के शिलालेख में मिलता है। पिल्लैयारपट्टी (रामनाथपुरम ज़िला) में पुरानी स्क्रिप्ट में शिलालेख वाला चट्टान से बना गुफा-मंदिर भी शुरुआती पांड्या गुफा-मंदिरों में से एक होगा, जैसा कि उसी ज़िले में कुन्नक्कुडी में शिव गुफा-मंदिर III भी है, जिस पर उसी स्क्रिप्ट में एक और छोटा शिलालेख है जिसे मसिलिसवरम कहा जाता है। अनाइमलाई (मदुरै ज़िला) में विष्णु (नरसिंह) गुफा-मंदिर की नींव पर एक लिखावट है, जिसमें कलि वर्ष 3871 (770 A.D.) लिखा है और पांड्या मरन सदायन, उर्फ़ परंतक के एक मंत्री द्वारा इसकी खुदाई का ज़िक्र है। वहाँ की नींव पर लिखे लेखों के अनुसार, मदुरै के पास तिरुप्परनकुनराम में सुब्रह्मण्य मंदिर के नाम से मशहूर बड़े गुफा-मंदिर की खुदाई एक और पांड्या मंत्री और उनकी पत्नी ने कलि वर्ष 3874 (773 A.D.) में की थी। तिरुप्परनकुनराम चट्टान के इस उत्तरी हिस्से पर चार गुफा-मंदिरों का एक कॉम्प्लेक्स है और ऊपर दिए गए एक लेख में एक अलग ज्येष्ठ गुफा-मंदिर की खुदाई का भी ज़िक्र है, जो गुफा-कोठरी टाइप का है, जिसके सामने कोई मंडप नहीं है। बड़े मंडप-टाइप गुफा-मंदिर के दोनों ओर और ज्येष्ठ गुफा-मंदिर के लेवल से ऊपर की बाकी दो खुदाई कुछ बाद की होनी चाहिए। इनमें से एक में गजलक्ष्मी की बेस-रिलीफ है, और दूसरे में भुवनेश्वरी देवी और उनके सेवकों का एक समूह है।

पुदुक्कोट्टई इलाके (तिरुचिरापल्ली ज़िले) में सित्तनवसाल में मशहूर रॉक-कट गुफा मंदिर, जिसमें फ्रेस्को में मशहूर शुरुआती म्यूरल पेंटिंग हैं, आठवीं-नौवीं सदी के जैन गुफा मंदिर का एक उदाहरण है। एक लंबे श्लोक के अनुसार, यह-



इससे जुड़े शिलालेख को एक इलान-गौतम उर्फ मदुरै असीरियन ने फिर से सजाया और सामने एक स्ट्रक्चरल मुख-मंडप बनवाया, यह सब अवनिपासेखर श्री वल्लभ पांड्या (लगभग

815-862) के राज में हुआ था। इसमें मंदिर की पिछली दीवार पर और सामने मंडप की साइड की दीवारों पर बने आलों में उभरी हुई जैन तीर्थंकर की मूर्तियां हैं। यह गुफा-मंदिर महेंद्र-स्टाइल गुफा-मंदिर का एक खास पांड्या वर्शन है, जिसके सामने के खंभों पर तरंग कॉर्बल लगे हैं।

मलयाक्कोविल में पूर्वी गुफा-मंदिर, तिरुमयम में ऊपरी शिव गुफा-मंदिर, मंगडू में गुफा-मंदिर, रायवरम के पास मलाइक-कोलुंडिसवरन, तिरुप्परनकुनराम में ज्येष्ठ, गजलक्ष्मी और भुवनेश्वरी गुफा-मंदिर, और विज़िनम (विज़िंगम) में गुफा-मंदिर, दूसरों के अलावा, गैर-पल्लव श्रृंखला के पांड्या-मुत्तरैयार-अयवेल विंटेज के सरल गुफा-मंदिरों के उदाहरण हैं।

जिन गुफा-मंदिरों में मंडप की साइड की दीवारों में से एक पर मंदिर-कोठरी है, उनमें तिरुमयम में सत्यगिरीश्वर या शिव गुफा-मंदिर, मलयाक्कोविल में दक्षिणी गुफा-मंदिर, तिरुमलपुरम (तिरुनेलवेली जिला) में शिव गुफा-मंदिर, और तिरुप्परनकुनराम में चट्टान के दक्षिणी हिस्से पर उमैयांदर गुफा-मंदिर का ज़िक्र किया जा सकता है। कुछ गुफा-मंदिरों के मामले में, जैसे मलैयाडिप्पट्टी में शिव गुफा-मंदिर, पिल्लैयारपट्टी में गुफा-मंदिर, और मुवरैवेनरन (रामनाथ-पुरम जिला) में गुफा-मंदिर, मंदिर वाला हिस्सा, मानो, आयताकार मंडपम के एक कोने पर होता है, जो इसे सामने दो तरफ और एक किनारे पर घेरता है, जिससे यह एक मॉडल की आधी कॉपी जैसा लगता है जिसमें बीच में एक मंदिर और चारों ओर एक मंडपम है जिसका ज़्यादातर हिस्सा सामने है। महाबलीपुरम के पंच-पांडव मंडप और मामंदुर में अधूरे गुफा-मंदिर IV को छोड़कर पाल-लावा के उदाहरणों में ऐसा प्लान आम तौर पर नहीं मिलता है। केरल में त्रिचूर के पास त्रिकुर में गुफा-मंदिर, बीच में एक लिंग के साथ एक चौकोर कमरे की एक बड़ी खुदाई है। गुफा-मंदिरों में मंदिर की दोनों तरफ की दीवारों में मंदिर-कोठरियां काटी गई हैं।



मंडप के उदाहरण तिरुचिरापल्ली में नीचे की ओर चट्टान से बना गुफा-मंदिर और तिरुप्परनकुनराम में पहाड़ी के उत्तरी हिस्से पर बना बड़ा गुफा-मंदिर, जिसे सुब्रह्मण्य मंदिर कहते हैं, हैं। इसमें मंडप की पिछली दीवार में एक तीसरा मंदिर भी बनाया गया है, जो मंडप की दोनों छोर की दीवारों में खोदे गए दो मंदिरों के अलावा है।

हालांकि महेंद्र-स्टाइल गुफा-मंदिरों की तरह, क्यूबिकल बेस और टॉप और बीच में आठ कोनों वाली पट्टी वाला मंडप-टाइप का सामने का खंभा आम नियम है, लेकिन इसमें अक्सर बदलाव होते हैं। उदाहरण के लिए, कुडुमियामलाई के मेलैक्कोविल में कलश, कुंभ, वगैरह जैसे मुख्य हिस्से सामने के खंभों के ऊपर काटे गए हैं। मलैयाडिप्पट्टी के विष्णु गुफा-मंदिर में खंभों के बेस को बैठे हुए शेरों का आकार दिया गया है। मलैयाडिक्कुरिची गुफा-मंदिर के कोरबेल इस मायने में खास हैं कि तरंग रोल को अंदर की ओर मुड़े हुए कर्ल के रूप में काटा गया है, यह एक खासियत है जो चालुक्य प्रेरणा दिखाती है।

इन गुफा मंदिरों में सबसे दिलचस्प बात उनकी अलग-अलग तरह की मूर्तियां और आइकॉनिक रूप हैं, जिनमें से कुछ तमिलनाडु और केरल के दक्षिणी गुफा मंदिरों में सबसे पहले दिखाई देते हैं। वे हैं गणेश, सप्तमातृका और ज्येष्ठ। ऐसा लगता है कि गणेश और सप्तमातृका पंथ पल्लवों के तोंडईमंडलम में घुसने से पहले, गंगा क्षेत्र के रास्ते चालुक्य इलाके से बहुत दूर दक्षिण में आए थे।

ये दोनों किसी भी पल्लव गुफा-मंदिर में नहीं दिखते, जब तक कि वे राज-सिंह पल्लव (700-725) के स्ट्रक्चरल मंदिरों में पहली बार नहीं दिखते, जैसे कि कांची के कैलाशनाथ में। बहुत दूर दक्षिण में, गणेश पिल्लैयारपट्टी, कुडुमियामलाई, मलैयाक्कोविल (दक्षिणी गुफा मंदिर), तिरुगोकर्णम, कुन्नंदरकोविल, तिरुवेल्लारई (शिव गुफा मंदिर), देवरमलाई, तिरुक्कलक्कुडी, तिरुचिरापल्ली (निचला गुफा मंदिर), तिरुमलापुरम, कुन्नक्कुडी, मुवरैवेनरन, तिरुप्परन-कुनराम (बड़ा गुफा-मंदिर) सेविलिप्पट्टी, कुन्नत्तूर (नीलकंठे-स्वर), वीरसिखामणि और अरितपट्टी के गुफा मंदिरों में मिलते हैं। सप्तमातृका ग्रुप तिरुगोकर्णम, मलैयाडिप्पट्टी में है।



तिरुक्कलक्कुडी और कुन्नत्तूर। शिव को समर्पित कई गुफा-मंदिरों में मंदिर में एक पीठ के साथ चट्टान से बना लिंग होता है, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जहाँ शिव के आइकॉनिक रूपों को पवित्र जगह की पिछली दीवार पर उभरी हुई आकृतियों के रूप में दिखाया गया है। अभिषेक का पानी लेने और इकट्ठा करने के लिए अक्सर लिंग-पीठ या मूर्ति के ऊपर के उभरे हुए चैनल-टोंटी के नीचे पवित्र जगह के फ़र्श में एक छोटा सा कुंड या गड्ढा बनाया जाता है। यह खासियत पल्लव मंदिरों में नहीं है, चाहे वे गुफा वाले हों, एक पत्थर जैसे हों या बनावट वाले हों, लेकिन यह चालुक्य इलाके और जावा (इंडोनेशिया) में डिएंग घाटी के दूर के मंदिरों में पाई जाती है। लिंग-पीठ आम तौर पर चौकोर होता है, लेकिन मलाइयाकोविल के पूर्वी गुफा-मंदिर में यह आठ कोनों वाला है। तिरुप्परनकुनराम गुफा-मंदिर के शिव मंदिर में, पीछे की दीवार पर एक सोमस्कंद पैनल है, जैसा कि सातवीं सदी के आखिर के पल्लव गुफा-मंदिरों और उसके बाद के स्ट्रक्चरल मंदिरों में है। पिरनमलाई और तिरुमलाई (रामनाथपुरम और नॉर्थ अर्काट ज़िले) के गुफा-मंदिरों में सिर्फ़ शिव और पार्वती (उमा-सहितमूर्ति) बैठे हैं, स्कंद नहीं हैं। तिरुप्परनकुनराम में उमैयांदर गुफा-मंदिर के मंदिर की पिछली दीवार पर अर्धनारी-शिव की एक नक्काशी है, जबकि अनाइमलाई में सुब्रह्मण्य को समर्पित लाडन कोविल गुफा-मंदिर में, उन्हें बीच वाले मंदिर में अपनी पत्नी के साथ दिखाया गया है।

तिरुचिरापल्ली (पांड्या) में नीचे की चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा-मंदिर में, जबकि बगल के दो मंदिर-कोठर शिव और विष्णु को समर्पित हैं, मंडप की पिछली दीवार में पाँच ताखे हैं जो खंभों से घिरे हैं, बीच वाले में ब्रह्मा हैं और बाकी में गणेश, सुब्रह्मण्य, सूर्य और दुर्गा हैं।

शिव और विष्णु के साथ, ये शानमत ग्रुप के देवता बनेंगे, जिनके बारे में कहा जाता है कि शंकराचार्य ने मौजूदा रीति-रिवाजों में सुधार के बाद उन्हें फिर से स्थापित किया था। शंकर को शानमत स्थापनाचार्य माना जाता है, शानमत शैव, वैष्णव, शाक्त, कौमार, सौर और गणपत्य हैं। इस गुफा-मंदिर में ग्रुपिंग यह भी दिखाता है कि शानमत देवताओं को पहले से मौजूद शिव, विष्णु और ब्रह्मा की त्रिमूर्ति अवधारणा पर सुपर-इम्पोज़िशन किया गया है, जिसका उद्घाटन महेंद्र ने किया था।



पल्लव अपने पहले मंडगपुट्टु गुफा-मंदिर में। तिरुप्परनकुनराम के बड़े गुफा-मंदिर में छह देवताओं में से पांच की मूर्तियाँ हैं, सूर्य को छोड़कर, क्योंकि दो मुख्य साइड वाले मंदिर शिव और विष्णु को समर्पित हैं, जबकि तीसरा, दुर्गा के लिए, इसके बीच में पीछे की दीवार से काटा गया है, जिसके दोनों तरफ दो खाली जगहों में गणेश और सुब्रह्मण्य की मूर्तियाँ हैं। तुलना में कम विष्णु गुफा-मंदिरों में जो सिर्फ विष्णु के लिए समर्पित हैं और दूसरे गुफा-मंदिरों के विष्णु मंदिरों में, खड़े, बैठे और ज़्यादातर, लेटे हुए रूप मुख्य मूर्तियों के रूप में मिलते हैं। खड़ी मूर्ति तिरुचिरापल्ली के निचले गुफा-मंदिर के विष्णु मंदिर में, बैठी हुई मूर्ति बड़े तिरुप-परंकुनराम गुफा-मंदिर के विष्णु मंदिर में, और लेटी हुई मूर्ति तिरुमयम, मलैयाडिपट्टी और तिरुत्तंगल (रामनाथपुरम जिला) के विष्णु गुफा-मंदिरों में, और नमक्कल (सलेम जिला) के पूर्वी या रंगनाथ गुफा-मंदिर में मिलती है। नमक्कल के दूसरे गुफा-मंदिर में गर्भगृह में नरसिंह की मूर्ति है।

कुडुमियामलाई में मेलैक्कोविल शिव मंदिर, तिरुमयम में सत्यगिरी-स्वर या शिव गुफा-मंदिर, उसी जगह पर ऊपरी शिव गुफा-मंदिर, तिरु-गोकर्णम में गोकर्णेश्वर गुफा-मंदिर और मलैक्कोविल में पूर्वी गुफा-मंदिर, पल्लव-ग्रंथ लिपि में संगीत के नोटेशन पर लिखे शिलालेखों से जुड़े हैं, साथ ही पुरानी तमिल लिपि में कोलोफ़ोन भी हैं, जैसा कि उन पर लिखे लेबल परिवादिनी-ई से पता चलता है। जबकि असली नोटेशन, या उनके बचे हुए हिस्से, पहले दो मामलों में देखे जा सकते हैं, वे बाकी में गायब हो गए हैं। मौजूदा कोलोफ़ोन बताते हैं कि विद्या-परिवादिनी नाम की परिवादिनी (एक तार वाली वीणा) की कला को एक गुणसेन ने बताया था, और भक्तों के फ़ायदे के लिए एक राजा ने नोटेशन लिखवाए थे, जो एक महान शैव या परम-महेश्वर थे, और रुद्राचार्य के शिष्य थे। जबकि तिरुमयम में सत्यगिरीश्वर गुफा-मंदिर इस तरह ऊपर दिए गए दूसरे मंदिरों के साथ म्यूज़िकल शिलालेखों की मौजूदगी से जुड़ा हुआ है, इसके अलावा, मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर इसके एक द्वारपाल के तौर पर, एक राजा या सरदार की पोर्ट्रेट मूर्ति भी मिली है।

उसी जिले (तिरुचिरापल्ली) में तीस मील के अंदर कुन्नंदरकोविल और देवरमलाई के गुफा-मंदिरों में भी यह पाया गया है। इसके अलावा, यह दूर-दक्षिणी तिरुनेलवेली जिले में विरासिखामनी के शिव गुफा-मंदिर और केरल में क्विलोन के पास कवियूर के गुफा-मंदिर में भी पाया गया है। ये मूल, यानी पांड्या, की समानता और तारीख की निकटता का संकेत देते हैं। तिरुनंदिक्करा में गुफा-मंदिर, जिसका मंडप दक्षिण की ओर है और मंडप की पश्चिमी दीवार पर अंदर पूर्व की ओर एक मंदिर है, पांड्या विंटेज के सित्तन्ना-वसल और तिरुमलापुरम के समान समय की प्राचीन फ्रेस्को पेंटिंग के अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

मलैयाडीपट्टी में वागीश्वरम नाम का शिव गुफा-मंदिर, पल्लव दंतीवर्मन के 16वें साल में विडेल विदुगु मुत्तरैयार ने खोदा था। बाद की तारीख का पास का विष्णु गुफा-मंदिर भी शायद मुत्तरैयार की खुदाई थी। नरत्तमलाई में पलियिलिस्वरम नाम का गुफा-मंदिर, एक और मुत्तरैयार खुदाई, नौवीं सदी के आखिर में पल्लव नृपतुंगा के सातवें साल से कुछ साल पहले का है। यही बात पुवलाईक्कुडी गुफा-मंदिर के बारे में भी कही जा सकती है, जिसे अमरुनरी मुत्तरैयार नाम के एक व्यक्ति ने खोदा था। तिरुमायम में विष्णु गुफा-मंदिर, जिसमें लेटे हुए विष्णु का समूह है, एक प्राकृतिक गुफा है जिसे पेरुम्बिदुगु मुत्तरैयार की एक रानी ने सामने के खंभों और दूसरी खासियतों के साथ गुफा-मंदिर में बदल दिया था और यह उससे सटे सत्यगिरीश्वर के शिव गुफा-मंदिर से कुछ समय बाद का होगा। उसी इलाके में मंगडू गुफा-मंदिर और मलाइकोलुंडिसवरम गुफा-मंदिर जैसे कुछ और मंदिर, और तिरुवेल्लारई के गुफा-मंदिर भी मुत्तरैयारों के ही हैं।

उत्तरी केरल इलाके में त्रिकुर, इरुनिलमकोडु, कोट्टक्कल और दूसरी जगहों पर गुफा मंदिर चेर देश के शासकों के समय के हैं, जबकि दक्षिणी हिस्सों में, केरल के क्विलोन और त्रिवेंद्रम जिलों में, और तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में, या जैसा कि उन्हें वेनाडु और नंजिलनाडु कहा जाता है, शायद ज़्यादातर पांड्या से जुड़े हुए हैं। खास प्रमाणिकता की कमी और इस बात की वजह से कि केरल



सातवीं सदी के बीच से लेकर नौवीं सदी के बीच तक, जिस समय में ये गुफा मंदिर हैं, एक से ज़्यादा राजवंशों के राज में ये मंदिर रहे हैं। इसलिए, इन सभी को 'चेर' कहने के बजाय, इन्हें केरल का क्षेत्रीय नाम देना ज़्यादा सही होगा। पहले के सरिगाम युग के बाद दूसरे दौर के चेरों का जुड़ा हुआ राजनीतिक इतिहास नौवीं सदी के बीच से शुरू होता है।

नमक्कल में दो विष्णु गुफा-मंदिर हैं, एक रंगनाथ या अनंतसायन को समर्पित है, और दूसरा नरसिंह को। उनके शिलालेखों के अनुसार, ये अतिया राजा गुणशीला की खुदाई के हैं, जो तमिल साहित्य से पहले से ज्ञात आदिगैमन वंश के थे। ये आठवीं सदी के पहले आधे हिस्से के हैं और इनमें कुछ बेहतरीन मूर्तियां हैं। रंगनाथ गुफा में शिलालेख इसे अतियेंद्र-विष्णु-गृहम कहता है और यह इस मायने में अनोखा है कि इसमें अनंतसायन के आसपास के आइकॉनोग्राफिक ग्रुप में अलग-अलग आकृतियों का सही विवरण दिया गया है। ये मूर्तियां अपनी साफ ड्राइंग और ज़ोरदार पोज़ और फ्लेक्सन के लिए जानी जाती हैं जो उनके पल्लव साथियों से काफी अलग हैं।

दक्षिण मैसूर में तालकड के पश्चिमी गंगा लोगों ने चालुक्य-राष्ट्रकूट परंपरा को अपनाते हुए, मैसूर के पास मेलकोट में सख्त चट्टान में दो अधूरे गुफा-मंदिर छोड़ दिए हैं।

ऊपर बताई गई चालुक्य खासियतों को शामिल करने के अलावा, ये दक्षिणी गुफा-मंदिर, असल में पल्लव महेंद्र स्टाइल और हार्ड रॉक परंपरा को फॉलो करते हुए, कई आइकॉनिक रूपों को भी दिखाते हैं जो पल्लव रॉक-कट और स्ट्रक्चरल उदाहरणों में पाए जाते हैं। ज़्यादा ज़रूरी हैं दुर्गा का रिप्रोडक्शन जिसमें एक भक्त बलि में अपना सिर काट रहा है, एक आम पल्लव रूप, जिसे तिरुत-तंगल में विष्णु गुफा-मंदिर के पास दिखाया गया है, और महिषासुरमर्दिनी ग्रुप, जैसा कि महाबलीपुरम और सलुवंकुप्पम में है, जिसे मलैयाडिपट्टी में वागीश्वरम गुफा-मंदिर में अलग-अलग तरीकों से दिखाया गया है। भुवराह और गजलक्ष्मी रूप तिरुप्परनकुनराम के गुफा-मंदिरों में और त्रिविक्रम रूप भुवराह के साथ तिरुप्परनकुनराम के गुफा-मंदिर में पाए जाते हैं।





नमक्कल। इस तरह बनाए गए दूसरे आइकॉनिक रूप हैं लिंगोद्भव, हरिहर, सुब्रह्मण्य, इंसानी रूप में गरुड़ के साथ विष्णु, नरसिंह, और शिव के तांडव रूप।

केरल के गुफा मंदिर, जिनके बनाने वाले का नाम तय नहीं है, लेकिन दक्षिणी गुफा आर्किटेक्चर में एक अहम जगह बनाते हैं। इनमें आस-पास के इलाके के पांड्या और अडिगैमन गुफा मंदिरों की खासियतें शामिल हैं। उनकी तरह, ये भी असल में पल्लव महेंद्र-स्टाइल मॉडल के हैं, दोनों ही तरह उनके ग्रेनाइट रॉक मटीरियल और खुदाई के प्लान और टेक्निक में, हालांकि अक्सर कुछ चालुक्य मोटिफ्स भी शामिल होते हैं। अधूरी ब्रांथनपारा खुदाई, महाबलीपुरम की तरह रॉक खुदाई की जानी-पहचानी पाल-लावा टेक्निक दिखाती है, जिसे पांड्या-मुत्तरैयार-अडिगैमन इलाकों में, जैसे नर्तमलाई, मंगडू और दूसरी जगहों पर अपनाया गया है। विझिनम की गुफा, जो बिना सामने के मंडप वाली रॉक-सेल टाइप की है और पांड्या-मुत्तरैयार इलाके की खासियत है, अपने दरवाज़े के दोनों तरफ रॉक की नक्काशी होने की वजह से अनोखी है। इसके एक तरफ चतुर तांडव करते हुए शिव की उभरी हुई

आकृतियाँ हैं, जिसमें एक तरफ पार्वती हैं, और दूसरी तरफ किरात के रूप में धनुष लिए शिव हैं, और उनके पीछे एक बौना गण है। ये बेस-रिलीफ मूर्तियां, पड़ोसी पांड्य रूपों की तुलना में पल्लवों से ज़्यादा मिलती-जुलती हैं। इरुनिलमकोडु में, बिना किसी बाहरी हिस्से या सामने के बरामदे के, एक और साधारण, छोटी सिंगल-सेल खुदाई में, दक्षिण की दीवार पर योग-दक्षिणामूर्ति की एक शानदार मूर्ति है, जिसके नीचे एक अटेंडेंट ऋषि और शिष्य हैं, जबकि असली लिंग को एक प्लेटफॉर्म के ऊपर पश्चिमी दीवार में काटे गए एक छोटे से आले में रखा गया है। दूसरे गुफा-मंदिर तिरुनंदिक्कारा और कवियूर में हैं। ये सेल और सामने मंडप वाले खास गुफा-मंदिर पैटर्न के उदाहरण हैं। इसी तरह, कल्लिल, त्रिक्कुर, कोट्टुक्कल, ऐलुरपारा, तुवरंगडु और भूतपंडी में भी हैं, जो कन्याकुमारी के पास विझिनम के दक्षिण में आखिरी दो हैं। इनमें से कुछ गुफा-मंदिर मंदिर के ओरिएंटेशन और द्वारापालों और दूसरे अटेंडेंट आले देवताओं की जगह के बीच के संबंध के मामले में अन-कन्वेंशनल हैं। त्रिक्कुर गुफा-मंदिर,





उदाहरण के लिए, इसका सामने का हिस्सा उत्तर की ओर है और सिर्फ़ उसी तरफ़ खुला है; कोरबेल चालुक्य स्टाइल की तरह डबल-वॉल्यूट टाइप के हैं और मंदिर के अंदर देवता का मुँह पूर्व की ओर है, जैसा कि उत्तर की ओर निकले लिंग पीठ के पानी के टोंटी से पता चलता है। द्वार-पाल पूर्वी और पश्चिमी तरफ़ की दीवारों से लगभग गोल काटे गए हैं, बीच की पूरब-पश्चिम एक्सियल लाइन से थोड़ा पीछे। लिंग पीठ अक्सर एक स्ट्रक्चरल एडिशन होता है, हालांकि गुफा जैसी ही चट्टान से काटे गए मोनोलिथिक उदाहरण भी मिलते हैं। कवियूर और तिरुनंदिक्कारा में, शुरुआती पल्लव गुफा-मंदिरों की तरह, स्टाइल में असली चट्टान से काटे गए लिंग नहीं हैं, बल्कि मंदिर-सेल के सॉकेट में लिंग लगाए गए हैं। हमारे पास फ़र्श पर चौकोर जगहें हैं जिनमें लिंग का चौकोर-खंड वाला निचला हिस्सा, या ब्रह्मभाग, डाला गया है, और पीठ को उसके खुले बेस के चारों ओर जोड़ा गया है, जैसा कि पल्लव गुफा-मंदिरों में पाया जाता है, यह एक खासियत है जो लगभग 700 A.D. से शुरू होती है। ऐलुरपारा और भूतपंडी में, लिंग गुफा का एक ज़रूरी हिस्सा है और पांड्या-मुत्तरैयार उदाहरणों की तरह चट्टान से काटा गया है। कोट्टुक्कल के गुफा-मंदिर में दो द्वारपालों में से एक के रूप में हनुमान की जगह मदुरै के पास कुन्नत्तूर के पांड्या गुफा-मंदिर में पाई गई वैसी ही खासियत की याद दिलाती है।

## दक्कन के चालुक्य और राष्ट्रकूट गुफा मंदिर

छठी सदी के बीच में बादामी के चालुक्य और आठवीं सदी के बीच में मान्यखेत के राष्ट्रकूट, जिन्होंने उन्हें अच्छी तरह से हटा दिया था, ने वेंगी के पूर्वी चालुक्यों के साथ मिलकर ताप्ती और उत्तरी पेन्नार नदियों के बीच के इलाके में कई गुफा-मंदिर बनाए हैं, जो एक किनारे से

दूसरे किनारे तक फैले हुए हैं। वेंगी के चालुक्य एक दूसरी लाइन थे जिन्होंने पुलकेशिन II के निडर भाई कुब्ज विष्णु-वर्धन के तहत सातवीं सदी की शुरुआत से आंध्र तट पर अकेले राज करना शुरू कर दिया था, और पूरे समय तक जारी रखा। गुफा-मंदिर बादामी में पाए जाते हैं,





ऐहोल, एलोरा, भोकरदन, एलीफेंटा, जोगेश्वरी, पूना, अरवलम (गोवा), माहुर, अद्विसोमन्पल्ली, विजयवाड़ा, मुगलराजपुरम, उंडावल्ली, सीतारामपुरम, पेनामगा और भैरवकोंडा। चालुक्य ज़्यादातर हिंदू थे, हालाँकि उन्होंने जैन धर्म को बढ़ावा दिया, लेकिन राष्ट्रकूट और पश्चिमी गंगा के कई लोग जैन धर्म को मानने वाले थे। इस तरह, कोई भी मकसद, तकनीक और हिंदू धर्म को मज़बूत करने और जैन धर्म को बढ़ावा देने और अपनी परंपराओं को बनाए रखने के लिए चुने गए कच्चे माल में एक जैसापन देख सकता था, जबकि बौद्ध धर्म उस समय तक अमीर, आम, खेती करने वाले और व्यापारी तबके के लोगों पर ज़्यादा असर डाल रहा था।

इन सभी राजवंशों ने लोकल सॉफ्ट-स्टोन फ़ॉर्मेशन को चुना, जैसे कि बादामी और ऐहोल में सैंडस्टोन और ज़्यादातर दूसरी जगहों पर, लेटराइट, जैसे कि सबसे पश्चिमी तट पर अरवलम में, भैरवकोंडा में शिस्ट, और उत्तर-पश्चिम दक्कन और पश्चिमी भारत में औरंगाबाद, पूना और बॉम्बे के आसपास ट्रैप। अकेले पश्चिमी गंगों ने, जैसा कि पहले बताया गया है, अपने चालुक्यों से जुड़ाव के बावजूद, एक बदलाव किया कि उन्होंने मेलकोट (मैसूर) में हार्ड लोकल ग्रेनाइट में खुदाई की।

वेंगी से राज करने वाले चालुक्यों की पूर्वी ब्रांच ने, हालांकि नरम चट्टानों की खुदाई की, अपने गुफा-मंदिरों में एक अलग तरीका और डिज़ाइन अपनाया, जिसमें पूर्वी आंध्र और उत्तरी तमिलनाडु, या पल्लवों से जुड़े तोंडईमंडलम में जो आम था, उसे अपनाया गया, इस तरह एक अलग आंध्र परंपरा की शुरुआत हुई, जो बादामी चालुक्यों ने कन्नड़ परंपरा और संस्कृति के लिए जो किया, उसके उलट थी।

पश्चिम के इलाकों पर चालुक्य-राष्ट्रकूटों के दबदबे की वजह से ऊपरी दक्कन के जुड़ाव निचले दक्कन से काफी अलग हो गए, इस तरह दो क्षेत्रीय मुहावरे दिखे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उत्तरी इलाका पहले की बौद्ध गुफा-कला और रॉक-आर्किटेक्चर की जगहों के ज़्यादा पास था। इस तरह, स्थानीय कारीगरों के ग्रुप में आठ सदियों से ज़्यादा समय तक जो हुनर और परंपराएँ चली आ रही थीं, वे आने वाली पीढ़ियों में भी जारी रहीं।

## बाद की चट्टान वास्तुकला

63

हिंदू और जैन रॉक-आर्किटेक्चर और गुफा-कला को अपनाया गया। रॉक-आर्किटेक्चर उत्तरी इलाके में भी एक विधा के तौर पर लंबे समय तक बना रहा। यह खासकर राष्ट्र-कूटों के समय में और ज़्यादा तेज़ी से विकसित हुआ, जैसा कि उनके बहुत ज़्यादा काम और एलिफेंटा, धूमरलेना और जोगेश्वरी की गुफाओं जैसी बड़े पैमाने की रचनाओं से देखा जा सकता है, कैलाश मंदिर की एक ही पत्थर की नक्काशी और इंद्रसभा कॉम्प्लेक्स में जैन चौमुख की तो बात ही छोड़िए। लेकिन रॉक-आर्किटेक्चर जल्द ही चालुक्यों के दक्षिणी इलाके में पत्थर के स्ट्रक्चरल कंस्ट्रक्शन के बाद दूसरे नंबर पर आ गया, जैसा कि आगे चलकर देखा जाएगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि नरम बलुआ पत्थर के ब्लॉक निकालने, सीखे हुए हुनर की मदद से उन्हें तैयार करने और तराशने की सुविधा के साथ-साथ ईंट और लकड़ी के असली मॉडल पर पत्थर के मंदिर बनाने की इच्छा के कारण, बादामी-ऐहोल-पट्टदकल इलाके के पत्थर के कारीगरों ने जल्द ही खुद को स्तपतियों के ग्रुप में ट्रेनिंग दी, जो चट्टानों को तराशने के बजाय मंदिरों को बेहतर ढंग से बना सकते थे। हालांकि, राष्ट्रकूट काल की बनावट की चीज़ें, उनके चट्टान से काटे गए स्मारकों की तुलना में कम दिखावटी, मीडियम या छोटे साइज़ की और कम अच्छी तरह से बनी हुई हैं।

गुफा-मंदिरों का ले-आउट प्लान, एक्सियल मंडपों और मंदिर के फ्लोर-लेवल में लगातार बढ़ोतरी वाले स्ट्रक्चरल मंदिरों से अलग था, जबकि पवित्र जगह के फ्लोर का लेवल काफी ऊंचा था, हालांकि छत का लेवल पूरे समय एक जैसा रहा। इन गैर-बौद्ध गुफा-मंदिरों के डेवलपमेंट को पांच या छह स्टेज या पैटर्न में बांटा जा सकता है। पहले ग्रुप में वे होंगे जो उस इलाके के बाद के बौद्धों द्वारा आम तौर पर अपनाई गई स्कीम को फॉलो करते हैं, यानी विहारचैत्य टाइप, जिसमें एक तहखाना और सामने खंभों वाला हॉल होता है। दूसरे वे होंगे जिनके पीछे और साइड में तीन तहखाना होंगे, हर एक में अर्ध-मंडप के रूप में खंभों वाला आगे का हिस्सा होगा, पूरे हॉल के सामने एक कॉमन बड़ा हॉल, या महा-मंडप, और एक पतला अग्र- या मुख-मंडप होगा, जिसमें फिर से खंभों वाला आगे का हिस्सा होगा। तीसरे, वे होंगे जो पैनल वाले चैंबर के रूप में साइड-मंदिरों को दिखाते हैं या दिखाने की कोशिश करते हैं।

64

दक्षिण भारत के मंदिर

मूर्तियां और सप्तमातृका मंदिर, जिनके पीछे एक रेगुलर या मुख्य पवित्र जगह होती है, जो संधार होती है या जिसके चारों ओर चक्कर लगाने का रास्ता होता है, जिसमें अक्सर अर्ध- और महा-मंडप में वेदी की दीवारें होती हैं। कुछ मामलों में सामने एक नंदी-मंडप भी देखा जा सकता है, जैसे एलोरा (कैलाश कॉम्प्लेक्स) की लंकेश्वर गुफा में। चौथे टाइप का उदाहरण

उन स्ट्रक्चर से मिलता है जहां मुख्य मंदिर में कोई चक्कर लगाने का रास्ता नहीं होता, यानी निरंधर; अर्ध-मंडप की साइड की दीवारों पर मूर्तियों के पैनल होते हैं, और बड़ा महा-मंडप खंभों वाला होता है और साइड-मंदिरों के साथ या बिना होता है। अक्सर एक और मुख-मंडप होता है। सप्त-मातृका मंदिर, या आले, मुख्य गुफा-मंदिर के बाहर, आमतौर पर इसके बाईं ओर अलग से काटा गया है, जबकि सामने एक नंदी-मंडप है, जैसा कि एलोरा गुफा 22 में है। पाँचवाँ ग्रुप वह होगा जहाँ परिक्रमा के साथ संधार पैटर्न एक सर्वतोभद्र गर्भगृह बनाता है, जिसके चारों तरफ दरवाज़े हैं, जिसके सामने दो या तीन मंडपों की एक सीरीज़ है, और, सबसे एडवांस्ड टाइप में, एक अतिरिक्त अग्र-मंडप है जिसमें एक तरफ गणेश, दुर्गा और दूसरे रूपों की मूर्तियों के पैनल हैं और अग्र-मंडप के दूसरी तरफ सप्तमातृकाएँ हैं। आखिर में, ऐसे उदाहरण हैं जिनमें, ज़्यादा दक्षिणी रूपों की तरह, आड़े-तिरछे हॉल के सामने अर्ध- और मुख-मंडप हैं, जिनमें बाद वाले के लिए कोई वेदी पैरापेट नहीं है, और जहाँ खंभों पर मूर्तियाँ उनके शाफ्ट वाले हिस्से पर हैं, न कि ब्रैकेट वाले हिस्से पर, जैसा कि दूसरे मामलों में आम तौर पर महिला आकृतियों के रूप में होता है।

इस तरह चालुक्य गुफा-मंदिरों में देखी जाने वाली मुख्य किस्में अलग-अलग बदलावों के साथ हैं: निरंधर टाइप जिसमें मंदिर-कोठरियों में चक्कर लगाने का रास्ता नहीं होता, जैसा कि बादामी में है, संधार टाइप जिसमें मंदिर-कोठरियों में चक्कर लगाने का रास्ता होता है, जैसा कि एलोरा, रामेश्वर, वगैरह में है, त्रिकूट टाइप जिसमें तीन मंदिर-कोठरियाँ होती हैं, जैसा कि ऐहोल और एलोरा में है, और सर्वतोभद्र टाइप जिसमें मंदिर-कोठरियों में चारों तरफ दरवाज़े होते हैं, जैसा कि एलीफेंटा, एलोरा और जोगेश्वरी में है। संधार और सर्वतोभद्र रूप सबसे खास हैं। सर्वतोभद्र प्रकारों में, जैसा कि देखा गया है

*Plate 5.* KANCHIPURAM—VAIKUNTHA PERUMAL TEMPLE *(See page 118)*

Plate 6. TIRUVALISVARAM—VALISVARA TEMPLE (See page 123)

बाद की चट्टान वास्तुकला

एलोरा में धूमरलेना, एलीफेंटा की मुख्य गुफा, और जोगेश्वरी की गुफा में, चट्टान से काटे गए बाहरी मंडप में तीन तरफ कम से कम तीन खुले रास्ते होते हैं, जबकि पीछे की तरफ चौथा रास्ता मूल चट्टान में खत्म होने वाला रास्ता बनाता है।

बादामी में चालुक्य खंभों का भारीपन, नक्काशी और नक्काशी की वजह से कम हो गया है; खंभे और कॉर्बेल के आकार अलग-अलग हैं, लेकिन उनके विकास में वे चालुक्य काल के आखिर तक अपनी पहचान बनाए रखते हैं और राष्ट्रकूट रचनाओं में दोबारा नहीं आते हैं। राष्ट्रकूट खंभों में चौकोर सेक्शन वाले आकार ज़्यादा हैं और कॉर्बेल में कॉर्बेल आर्म के घुमावदार हिस्से पर खास घुमावदार हिस्सा नहीं दिखता, बल्कि ऊपरी सिरे पर एक हल्का रोल होता है। चालुक्य कॉर्बेल में आम तौर पर मिलने वाला सजाया हुआ बीच का बैंड, या पट्टा, नहीं है।

इस स्टाइल की सबसे खास बात है तहखाने के दरवाज़ों के फ्रेम और दरवाज़े के ऊपर बने बड़े हिस्से। इस मामले में कम से कम चालुक्य और रष्ट्रकूट गुफा मंदिरों में एक जैसापन देखा जाता है, साथ ही स्ट्रक्चरल मंदिरों में भी। सखा, या दरवाज़े के हिस्से, तीन से लेकर कई तक होते हैं, लिंटेल-पीस पर एक शिखा होती है - ललता-भिंबा, और एक सुपर-स्ट्रक्चर, या उत्तरांग। अंदर की सखाओं और चौखट के निचले हिस्से पर नदी देवियों, गंगा और यमुना की उभरी हुई नक्काशी वाले पैनल हैं। दक्षिणी ज़ोन, कन्नड़ इलाके के चालुक्य गुफा मंदिरों में, नदी देवियों के साथ द्वारपाल रूपों को एक ही पैनल में दिखाया गया है। यह गुफा मंदिर के सामने वाले मंडप, या सामने के बरामदे के सबसे बाहरी दरवाज़े के किनारे बने आलों में बने तुलनात्मक रूप से बड़े द्वारपालों के अलावा है। दूसरी तरफ, दक्कन के उत्तरी इलाके के गुफा मंदिरों में, जैसे एलोरा, एलीफेंटा, माहुर और दूसरी जगहों पर, छत को छूते हुए आदमकद से ज़्यादा द्वारपाल जोड़े हैं। जोगेश्वरी में वे पवित्र जगह के एंट्रेंस और बाहरी मंडप के एंट्रेंस के दोनों तरफ हैं। यह एक पुराने दौर का इशारा देता है, जबकि दूसरी राष्ट्रकूट गुफाओं में पवित्र जगह के एंट्रेंस के दोनों तरफ आदमकद से छोटे द्वारपालों की बनावट की तरफ लौटने का ट्रेंड दिखता है। मंडप





छतों पर बड़े कमल के मेडल या स्क्रॉल डिज़ाइन की नक्काशी दिखती है, सिवाय बादामी गुफा III के, जहाँ छत के मेडल की मूर्ति के डिज़ाइन में बीच में ब्रह्मा को दिखाया गया है। इससे स्ट्रक्चरल मंदिरों में भी ऐसी ही छत की मूर्तियों की उम्मीद है, जहाँ स्कीम अष्टदिक्पाल

ग्रिड की है और बीच की आकृति अक्सर मंदिर के मुख्य देवता जैसी होती है।

ज़्यादातर मामलों में गर्भगृह में पूजा के मुख्य देवता की पत्थर की मूर्ति या निशान (लिंग) रखने का आम नियम होता है, जो पल्लव उदाहरणों में सातवीं सदी के आखिरी चौथाई तक नहीं दिखा, हालांकि यह पांड्य उदाहरणों में मिलता है, जहाँ भी शुरुआती मामलों में, पत्थर की मूर्ति के बिना गर्भगृह को प्राथमिकता दी गई थी। गर्भगृह के बीच में फर्श पर होने के बजाय, पीछे की दीवार पर प्लास्टर का पैनल या पेंटिंग या पत्थर की मूर्ति बेस-रिलीफ के तौर पर होती थी। बादामी जैसे गुफा-मंदिरों के शुरुआती उदाहरणों में, गर्भगृह, या गर्भगृह, शिव गुफा-मंदिरों में लिंग के पीठ और दूसरों में मूर्ति के लिए काफी छोटा और बस काफी होता है। सभी मामलों में पीठ भी चट्टान से काटा हुआ, या मोनोलिथिक होता है, और कोई अलग इंस्टॉलेशन नहीं होता है, और अक्सर लिंग भी मोनोलिथिक और जीवित चट्टान का होता है। हमेशा चौकोर लिंग-पीठ के ऊपर अभिषेक का पानी निकालने के लिए एक निकली हुई टोंटी होती है, और उसे इकट्ठा करने के लिए उसके नीचे चट्टान के फ़र्श में एक हौद बनाया जाता है। सभी शुरुआती मंदिरों में फ़र्श के साथ और मंदिर के कमरे के बाहर इसे निकालने का कोई और इंतज़ाम नहीं है। यह फिर से सिर्फ़ सबसे दूर दक्षिण के पांड्य गुफा-मंदिरों में पाया जाता है, और बीच के पल्लव गुफा-मंदिरों में, या उत्तर के गुफा-मंदिरों में बिल्कुल नहीं। जैसा कि पहले बताया गया है, गर्भगृह के फ़र्श पर हौद दूर जावा (इंडोनेशिया) में डिएंग घाटी के पत्थर के मंदिरों में भी पाए जाते हैं। गर्भगृह की दिशा चाहे जो भी हो, टोंटी हमेशा उत्तर की ओर निकली रहती है। जिन मामलों में गर्भगृह खुद उत्तर की ओर होता है, वहाँ दूसरी आगमिक आज्ञा का पालन किया जाता है कि इसे ठीक बाईं ओर होना चाहिए। दूसरी बातों के अलावा, यह अगामिक या रीति-रिवाजों के शुरुआती सिद्धांतों की ओर इशारा करता है, जिन्हें बाद के समय में और बेहतर बनाया गया और फिर से कोड में शामिल किया गया।



!

शुरुआती गुफा-मंदिरों के सामने मंडप में आड़े एक्सिस पर साइड में ज़्यादा खांचे होते हैं और लंबे एक्सिस के दोनों सिरों पर सिर्फ़ एक खांचा होता है। दूसरी ओर, अजंतन विहारों में, मंडप एक कॉन्सेंट्रिक स्कीम है जिसमें सेंट्रल खांचे के चारों ओर एक खांचा होता है, जो अक्सर बाकी से बड़ा होता है। जबकि यह नवरंग, या कॉन्सेंट्रिक नौ-खांचे वाला पैटर्न, चालुक्य सीरीज़ के स्ट्रक्चरल मंदिरों में मुख्य स्कीम के तौर पर दोहराया जाता है, बाद में बादामी गुफा-मंडप टाइप भी अपने स्ट्रक्चरल एनालॉग्स पाता है, खासकर दक्षिण-पश्चिम दक्कन, पश्चिम मैसूर और कोंकण और मालाबार तटों के मंदिरों में, जो सत्रहवीं सदी के इक्केरी नायकों के समय तक थे। सेंट्रल नेव के पैरेलल ज़्यादा आइल या खांचों का प्रोविज़न, जिसमें लॉन्गिट्यूडिनल एक्सिस के दोनों सिरों पर सिर्फ़ एक एक्सट्रीम खांचा होता है, उन स्ट्रक्चरल मंदिरों में इस्तेमाल होता है जहाँ साइड खांचों में, सेंटर से घटती ऊँचाई वाले पिलर या दीवारों

के साथ, एक के बाद एक ढलान वाली या सपाट छतें होती हैं। ऐसे शुरुआती स्ट्रक्चरल मंदिर ऐहोल में लाडखान और बादामी में कल्लमठ हैं। यह साफ़ है कि रॉक आर्किटेक्चर में यह खासियत आज के और पहले के ईंट-और-लकड़ी के स्ट्रक्चरल मॉडल के बाद की है। एलोरा में रामेश्वर का बाहरी हिस्सा भी मध्ययुगीन स्ट्रक्चरल मंदिरों के मंडप के प्रोटोटाइप या आर्किटाइप को दिखाता है। आगे की ओर निकले हुए पोर्च में बेंच जैसे प्लेटफॉर्म हैं, जिनमें खंभों के बीच सीटें और लीन-बैक हैं, कक्षासन हैं, उनका बाहरी नज़ारा वेदी के आकार और बौने खंभों और दूसरी सजावट और मूर्तियों के साथ पैरापेट जैसा है। इस वजह से, बाहरी हिस्से का इंटरकॉलुमनिएशन आम तौर पर बराबर नहीं होता है, बीच के खंभों में साइड वाले खंभों की तुलना में ज़्यादा जगह होती है।

}

बादामी में बलुआ पत्थर की चट्टान के सीधे ढलान पर अलग-अलग ऊंचाई पर खोदे गए चार गुफा-मंदिर हैं। इन तक सामने सीढ़ियों वाली एक कुदरती ढलान से पहुंचा जा सकता है। सबसे पुरानी और सबसे बड़ी गुफा III है जिसे मंगलेसा ने 578 A.D. में खोदा था और यह विष्णु को समर्पित है। यह सामने की घाटी से दिखने वाली सबसे ऊंची जगह पर खोदी गई है। गुफा-मंदिर I जो मीडियम साइज़ का है और शैव है, और सबसे छोटा गुफा-मंदिर II, जो



वैष्णव हैं, निचले स्तरों पर काटे गए हैं, पूर्व में लगभग जमीन के स्तर के पास हैं। गुफा-मंदिर IV, जो छोटा लेकिन जैन है, चट्टान के शीर्ष के पास काटा गया था, अन्य तीन की तुलना में बहुत बाद में आया जो छठी शताब्दी की अंतिम तिमाही के हैं। इन गुफा-मंदिरों में एक आयताकार स्तंभों वाला मुख-मंडप होता है, जिसके पहले कमोबेश चौकोर स्तंभों वाला महा-मंडप होता है, जिसके पीछे के सिरे पर एक मंदिर-कोश होता है। अर्ध-मंडप जो मंदिर और महा-मंडप के बीच में होना चाहिए, वह अलग नहीं है, और महा-मंडप के पीछे के खंडों द्वारा लिया गया है। मुखौटा का उद्घाटन चौड़ा और पर्याप्त रूप से ऊंचा है। मुखौटा स्तंभ ऊंचे और विशाल हैं, अक्सर एक वर्ग खंड के, कॉर्बल्स, या पोतिका को धारण करते हैं, जो बीम को सहारा देते हैं। बीम के ऊपर पोतिका के ऊपर के बीम, और कपोत के नीचे के फ्रेम को अक्सर, लगभग गोल आकार में बनी इंसान, आसमानी या जानवरों की आकृतियों के मोटे कैरिएटिड जैसे सपोर्ट से सजाया जाता है। दो बीच के खंभों के बीच का अंतर-स्तंभ दूसरों के बीच के अंतर-स्तंभों से चौड़ा होता है। मुख-मंडप या अग्र-मंडप की छतें मोटे क्रॉस-बीम से रेगुलर चार-तरफा संदूकों में धंसी होती हैं, जिनमें उभरी हुई नक्काशीदार मेडल-शेर भरे होते हैं। अंदर के खंभे, खासकर मुख-मंडप की अंदर की लाइन के, हालांकि नीचे से चौकोर होते हैं, ऊपर से गोल सेक्शन के होते हैं, जिनमें ढले हुए मुख्य हिस्से होते हैं, जैसे फूलदान के आकार का कलश और कुशन के आकार का बल्बनुमा कुंभ, जो सबसे खास हैं। खंभों वाले महा-मंडप में, जैसा कि पहले ही बताया गया है, बीच में साइड के गलियारों की तुलना में एक

चौड़ा नेव है, और अंदर के खंभे सेक्शन में पॉलीगोनल हैं। मुख-मंडप और सेंट्रल हॉल का काम करने का तरीका यह है कि दोनों मंडपों के बीच दोनों सिरों से लगभग एक चौथाई चौड़ाई तक एक स्क्रीन वॉल बनाई गई है, जिसमें महा-मंडप के सामने के खंभे और पिलस्टर बीच के गैप में लगे हैं। सेंट्रल नेव का ऊंचा फ्लोर लेवल एक सेंट्रल क्लेरेस्टोरी छत का सुझाव देता है, जो साइड के गलियारों की छतों से ऊपर उठती है।

!



पहले संदर्भित संरचनात्मक उदाहरणों में देखा जा सकता है, हालांकि इस रॉक-कट मॉडल में छत पूरी तरह से एक समान ऊंचाई की है। गुफा I में एक अखंड लिंग-पीठ है और यह समय के हिसाब से थोड़ा बाद की है। गुफा II, गुफा III से थोड़ी बाद की होगी जिसमें मूल विष्णु छवि के लिए केवल एक अखंड पीठ है। गुफा III में मुख-मंडप के अग्रभाग की नींव का धंसा हुआ कंठा, गण समूहों के बीच में जोड़े गए भित्तिस्तंभों को दर्शाता है जबकि गुफा I और II में गण फ्रिज़ निरंतर हैं। शिव गुफा I के सामने वाले मंडप की छत पर कोई वैष्णव फ्रिज़ नहीं हैं, जबकि वे प्रारंभिक गुफा II और III में मौजूद हैं, जो वैष्णव हैं। और भी बाद की तिथि का जैन गुफा-मंदिर जैन मूर्तियों और कैमियो से परिपूर्ण है

ऐहोल (बीजापुर ज़िला) में चट्टानों को काटकर बनाए गए दो गुफा मंदिरों में से, रावलगुड़ी नाम का मंदिर शिव को समर्पित है, जो लगभग 700 A.D. का है, जबकि दूसरा मंदिर थोड़ा बाद का है और यह एक जैन मंदिर है। दोनों को निचले बलुआ पत्थर की चट्टानों में खोदा गया है, और ये अपने ज़िलों में शुरुआती चालुक्य या पश्चिमी चालुक्य सीरीज़ के सबसे नए मंदिर हैं। हालांकि बादामी गुफा मंदिरों से छोटे हैं, लेकिन ये प्लान, डिज़ाइन और मूर्तिकला के नज़रिए से दिलचस्प हैं। खंभे ज़्यादा पतले हैं और उनमें 'ऑर्डर' के आम मुख्य हिस्से हैं। रावलगुड़ी में असल में एक लगभग चौकोर मंडप है जिसके पीछे लगभग बराबर साइज़ का एक बड़ा मुख्य तहखाना है, और दो और, चौड़े, साइड में मंदिर हैं, जिससे एक त्रिकूट प्लान बनता है। जबकि पीछे वाले मंदिर में चट्टानों को काटकर बनाया गया लिंग है, उसके दाईं ओर वाला साइड वाला मंदिर सप्तमातृकाओं और उनसे जुड़े देवताओं को समर्पित है, और बाईं ओर वाला शिव के दूसरे रूपों को समर्पित है। मंडप और पीछे के मंदिर के बीच थोड़ी बाहर निकली हुई दीवार की पट्टियाँ, जिनके बीच में एक चौड़ा दरवाज़ा है, द्वारपाल की मूर्तियों को दिखाती हैं। आगे के हिस्से में, चट्टान की दीवार पर दोनों तरफ दो निधियों - शंख और पद्म - की मूर्तियों वाले ताखे हैं। जैन गुफा-मंदिर में एक सामने का मंडप है जो ज़्यादा साफ़ तौर पर आयताकार है, और इसके जैसा है।

विशिष्ट मंडप-प्रकार गुफा-मंदिर पैटर्न।

एलोरा की ऊँची ट्रैप-रिज, जिसने पहले बताई गई बौद्ध खुदाई की एक सीरीज़ के लिए जगह दी थी, अब हिंदू और जैन कामों के लिए भी जगह देती है। पहाड़ी के बीच के हिस्से और ऊपर के हिस्सों में बने ब्राह्मण गुफा-मंदिर, चालुक्यों और उनके राष्ट्रकूट उत्तराधिकारियों के समय के हैं। हिंदू खुदाई, जिन्हें गुफाएँ 13 से 29 कहा जाता है, ज़्यादातर शैव हैं और दो अलग-अलग क्रोनोलॉजिकल सीरीज़ में आती हैं, पहली सीरीज़ पिछली बौद्ध खुदाई के मॉडल पर ज़्यादा आधारित है, जिनकी खासियत यह है कि उनके पवित्र जगहों में लिंग जैसी चट्टान से बनी कोई मूर्ति या निशान आम तौर पर नहीं होता है। बेशक, कुछ में प्लान और कंटेंट में बदलाव हैं। गुफा 16 कैलाश कॉम्प्लेक्स है, जहाँ मुख्य हिस्सा कैलाश का मोनोलिथिक विमान मंदिर है, जिसमें लंकेश्वर (16a) की तरह परिक्रमा मार्ग के किनारे गुफा-मंदिर हैं। बाद की सीरीज़ दक्षिण के मॉडल पर ज़्यादा आधारित हैं और अक्सर उनके गर्भगृह में एक मूर्ति होती है, एक चट्टान से बना लिंग, और कभी-कभी एक चट्टान से बना नंदी भी होता है।

इन गुफाओं में खंभे अलग-अलग तरह के और डिज़ाइन के हैं और सेक्शन में चौकोर या आठ कोनों वाले हैं, या आम तौर पर कुंभ-वल्ली टाइप के हैं जिनमें बीच की ऊंचाई पर पूरे फूलदान और फूली हुई पत्तियां हैं; या उनके ऊपरी हिस्से में कुशन के आकार की कुंभ मोल्डिंग है। जहां कॉर्बल्स हैं, वे या तो सादे हैं या सजावटी हैं। सामने के हिस्से और मंदिर के एंट्रेंस पर कॉर्निस, या कपोत, घोड़े की नाल के आकार के कुदुस से सजाए गए हैं जो छोटी नासिकाएं हैं। दरवाज़ों के फ्रेम में बड़े ओवर-डोर हैं और ऊपर उत्तरांग के रूप में, दक्षिणी विमान-टाइप मंदिरों या उत्तरी शिखर या प्रसाद मंदिरों के छोटे रूप हैं। रामेश्वर (गुफा 21) इस ग्रुप का सबसे पुराना मंदिर होगा। आयताकार मुख-मंडप के सामने के हिस्से में चार छोटे, भारी, सजे हुए खंभे हैं, और दोनों सिरों पर दो-दो पिलस्टर हैं जो एक बहुत सजे हुए वेदी पैरापेट, या बौनी दीवार के ऊपर उठे हुए हैं, जो दो बीच के खंभों के बीच में एंट्री गेट बनाने के लिए रुका हुआ है। आड़ा

!


आयताकार पोर्टिको, या मुख-मंडप की लंबाई, जो खुदाई के पूरे सामने तक फैली हुई है, उसके दोनों सिरों पर एक साइड-मंदिर या चैंबर के रूप में और भी विस्तार हैं। मुख-मंडप के पीछे खंभों वाला महा-मंडप है, खंभों की दो बीच की लाइनें जो एक-दूसरे से ज़्यादा दूर हैं, नेव बनाती हैं, जिसके पीछे संधार गर्भगृह है, जबकि सबसे बाहरी खंभे, जो बीच वाले खंभों के करीब हैं, गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा मार्ग की ओर जाने वाले रास्ते बनाते हैं। गर्भगृह के एंट्रेंस पर बड़े-बड़े द्वारपाल पहरा देते हैं। खंभों पर कुंभ की ढलाई है। मंदिर की जगह के मामले में, किए गए बदलावों के बाद भी, यह एलोरा में पहले से खोदे गए महायान बौद्ध मंदिरों

के अनुसार ही है। दूसरी ओर, सामने की बौनी दीवार में भूत गण की फ्रिज़ और ब्रैकेट के आकार इस खुदाई को बादामी ग्रुप के करीब ले जाएंगे, जिससे सातवीं सदी के पहले चौथाई हिस्से को इसकी तारीख के रूप में दिखाया जा सकता है। इसके पास की गुफाएं 20, 22, 23 और 24 भी लगभग उसी समय की होंगी।

रावण-की-काई (गुफा 14) का प्लान सिंपल है, जिसमें एक बड़ा खंभों वाला मंडप और उसके पीछे एक संधार मंदिर है। खंभों की आगे की लाइन को डबल करने से मंदिर की ओर जाने वाले नेव के सामने एक मुख-मंडप जैसा बरामदा बन जाता है, गलियारे मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाने वाले रास्ते के रूप में बने रहते हैं। खंभे कुंभ-वल्ली टाइप के हैं। मंदिर के एंट्रेंस के दोनों ओर, दो द्वारपालों सहित कई नक्काशीदार मूर्तियां हैं। मंडप की दीवारों पर, और खंभों के बीच की खाली जगहों में, शैव और वैष्णव मूर्तियां बनी हैं। तहखाना रेक्टेंगुलर है और इसके पीछे एक प्लेटफॉर्म है जिसमें विष्णु या दुर्गा के लिए एक सॉकेट है, लेकिन शिव या लिंग के लिए नहीं। राष्ट्रकूट काल से पहले की इस खुदाई को लगभग 700 A.D. का माना जा सकता है। ऊपर बताई गई खुदाई के अलावा, गुफाएँ 17, 20, 21 और 26 जैसी दूसरी गुफाएँ संधार टाइप की हैं और उनके मंदिर-कक्ष खंभों वाले मंडप के पीछे चारों तरफ से कटे हुए हैं, जिससे एक चक्कर लगाने वाला रास्ता बनता है। गुफा 17 को





समय के हिसाब से यह रामेश्वर के ज़्यादा पास होना चाहिए, यानी सातवीं सदी का दूसरा क्वार्टर, और गुफा 26 राष्ट्र-कूट खुदाई के समय के आस-पास होनी चाहिए।

धूमरलेना, या गुफा 29, सबसे ज़्यादा दिलचस्प है क्योंकि यह एलोरा की गुफाओं में सबसे बड़ी और सबसे शानदार है। इसका संधार और चौमुख, या चतुर्मुख मंदिर, न सिर्फ़ अलग है बल्कि एलिफेंटा और जोगेश्वरी गुफाओं की तरह क्रूसिफ़ॉर्म प्लान में बने मंडपों के एक ग्रुप के अंदर भी है। मंदिर के चार दरवाज़ों के दोनों ओर बड़े द्वारपाल और दूसरी मूर्तियां हैं। मंदिर से पहले और उसके आस-पास लंबा रेक्टेंगुलर महा-मंडप या मेन हॉल है, जिसमें एक चौड़ा नैव और गलियारे हैं जो हर तरफ़ पांच खंभों के कॉलम से बने हैं, जिसका अगला हिस्सा मेन एंट्रेंस को घेरता है। इसके अलावा, मेन हॉल के दोनों ओर दो पोर्टल या खंभों वाले ट्रेसेप्ट के ज़रिए दो साइड एंट्रेंस हैं। खंभे कुंभ या कुशन के आकार के बड़े हैं, और अंदर की मूर्तियां भी भारी और बड़े साइज़ की हैं। इस मंदिर में एक मोनोलिथिक पीठ पर एक लिंग है। गुफा-मंदिर का निर्माण चालुक्य काल में सातवीं शताब्दी के मध्य में हुआ माना जाता है।

गुफा 27, या दूधवाली की गुफा (गोपीलेना), मंडप की पिछली और साइड की दीवारों पर तीन मंदिरों वाली एक दिलचस्प मिसाल है। गुफा 25, या कुंभारवाड़ा में भोकरदन की तरह कई मंदिर-कोठरियां हैं और आगे के कमरे से जुड़ी साइड की गैलरी हैं। जबकि गुफा 27 चालुक्यों और राष्ट्रकूटों के बीच के बदलाव के समय की हो सकती है, गुफा 25 उससे पहले

की होनी चाहिए, जो सातवीं सदी के दूसरे हिस्से की हो सकती है।

दशावतार, या गुफा 15, एक अजीब उदाहरण है क्योंकि यह बहुत बड़े साइज़ का अकेला दो-मंज़िला गुफा-मंदिर या गुफा-कॉम्प्लेक्स है। यह साफ़ तौर पर बौद्ध ज़रूरतों के लिए तैयार और काटी गई सभी चीज़ों को फिर से बनाने का मामला है। यह एलोरा में राष्ट्रकूट काम का सबसे पहला उदाहरण होगा। इसके सामने के पविलियन पर दंतिदुर्ग (लगभग 752-56) का लिखा हुआ है और यह आज के ज़माने के रॉक-आर्किटेक्चर का एक बेहतरीन नमूना है। गुफा-



मंदिर को आठवीं सदी के बीच का माना जाएगा। अलग नंदी-मंडप चार खंभों वाला है और इसमें आगे और पीछे सीढ़ियाँ बनी हैं। मंदिर का आगे का हिस्सा दो मंज़िला है जिसमें खंभों की दो लाइनें हैं, एक के ऊपर एक, खंभे चौकोर हैं और अजंता की तीन-ताल गुफा में बनी व्यवस्था की याद दिलाते हैं। ग्राउंड फ़्लोर चौदह चौकोर खंभों वाला एक हिस्सा है और ऊपरी मंज़िल पर एक बड़े खंभे-लाल मंडप का प्लान है जिसमें बीच में नैव और साइड में गलियारे हैं और पीछे एक लिंग के साथ एक मंदिर है। लिंग-पीठ गोल है। खंभों को नौ-नौ की छह लाइनों में लगाया गया है, और नैव के सबसे आखिर में दो और खंभे हैं जो मंदिर के सामने एक वेस्टिबुल बनाते हैं। वेस्टिबुल के सामने के दो खंभों पर बारीक नक्काशी की गई है, जबकि बाकी खंभे सादे, चौकोर सेक्शन वाले हैं। दीवारों के साथ लगे पिलस्टर के बीच बड़े धँसे हुए पैनल हैं जिन पर बढ़िया ग्रुप स्कल्पचर बने हैं। गुफा 16 एक और उदाहरण है जिसके मंदिर में एक गोल लिंग-पीठ है।

कैलाश मोनोलिथ के दाईं ओर, ऊपरी लेवल पर लंकेश्वर गुफा भी राष्ट्रकूट खुदाई की है, जो खंभों वाले मंडप के पीछे एक संधार मंदिर-कोठरी के साथ उसी तरह का बदलाव दिखाती है। यह कॉम्पैक्ट है और इसमें एक टर्मिनल नंदी मंडप है और इसमें बहुत कीमती मूर्तियों का एक बहुत ही शानदार ग्रुप है।

गणेशलेना में बीस से ज़्यादा गुफा-मंदिर हैं, जो मिलकर गुफा 21 के तौर पर गिने जाते हैं। हर यूनिट में एक मंडप है जिसमें चौकोर सेक्शन के सिंपल पिलर और पिलस्टर हैं, जिसके आगे के हिस्से पर चालुक्य टाइप के कॉर्बल्स हैं, और पीछे मंदिर-कक्ष है। मंदिर की पिछली दीवार पर महेशमूर्ति की एक उभरी हुई नक्काशी है। ज़्यादातर मामलों में फर्श पर एक मोनो-लिथिक गोल पीठा में एक लिंग डाला गया है, और एक मामले में चट्टान से काटा गया लिंग भी है। मंदिर के दरवाजों पर ऊपर के दरवाज़े हैं। ये शायद एलोरा में राष्ट्रकूट शासन के शुरुआती सालों में लगभग 750 A.D. में लगाए गए होंगे। यहाँ की महेशमूर्ति की उभरी हुई नक्काशी, एलीफेंटा की मशहूर नक्काशी से ट्रीटमेंट और फिनिश में काफी अलग है,

एलिफेंटा के विपरीत, उन्हें मुख्य मंदिर में राष्ट्र-कूट प्रकार के लिंग के पीछे की दीवार पर रखा गया है।

जैन खुदाई (गुफा 30 से 34) एलोरा में एक्टिविटी के आखिरी फेज़ को दिखाती है, जो लगभग 800 A.D. से शुरू होकर अगली सदी तक जारी रही। वे प्लान और डिज़ाइन में ज़्यादातर पुराने हिंदू एग्जांपल को फॉलो करते हैं, बस उनकी स्कल्पचर और आइकॉनोग्राफी में फर्क है। इंद्र सभा (गुफा 32) और जगन्नाथ सभा (गुफा 33), जो पास-पास खड़ी हैं, दोनों दो-मंज़िला खुदाई हैं। इंद्र सभा के खुले फोर-कोर्ट में जैन मोनोलिथिक मंदिर, छोटा कैलास है। खुले फ्रंट क्वाड्रैंगल के किनारों पर चट्टानों पर बहुत सारी स्कल्पचर बनी हैं और उन पर डिटेल में नक्काशीदार कपोत एंटेब्लेचर हैं, एक निचली मंजिल को ऊपरी मंजिल से अलग करता है, जिसमें फ्रिज़ में शेर और हाथी की सीरीज़ है, और दूसरा, ऊपरी मंजिल के ऊपर, तीर्थ-कर रूपों को दिखाने वाले मंदिरों की एक सीरीज़ है। गुफा की निचली मंजिल एक अधूरा हॉल है जिसमें ज़्यादातर सिंपल पिलर हैं, जिनमें से कुछ मोल्डेड हैं। दीवारों में सेल काटने की कोशिश की गई है। ऊपरी मंज़िल भी बारह खंभों वाला एक नव-रंग-मंडप है, बीच की जगह में जैन चौमुख के लिए एक ऊंचा प्लेटफॉर्म है, जिसकी छत पर कमल की शानदार नक्काशी है। हॉल में खंभों वाला पोर्टिको है, और सामने की तरफ दोनों तरफ दो साइड-मंदिर बने हुए हैं।

जगन्नाथ सभा, हालांकि उसी तरह की है, लेकिन इसमें प्लान की रेगुलरिटी की कमी है। ग्राउंड फ़्लोर तीन अलग-अलग तरह से बने पवित्र स्थानों का एक कॉम्प्लेक्स है, हर एक पूरी यूनिट है, जिसमें अग्र- और महा-मंडप हैं। पीछे के मंदिर आंगन में खुलते हैं जो टूट गया है। ऊपरी मंज़िल पर इंद्र सभा की तरह बारह बाहरी खंभों वाला नवरंग हॉल है, लेकिन पीछे भी एक मंदिर है। मंडप के एक कोने से और एक एंगल पर एक और यूनिट है जो साइज़ और कैरेक्टर में ग्राउंड फ़्लोर के समान है, लेकिन पूरी और अच्छी तरह से नक्काशीदार है।

बॉम्बे के पास एक छोटे से द्वीप, एलीफेंटा में, गुफा-मंदिर अपनी मूर्तियों की असाधारण गुणवत्ता के कारण विशिष्ट है, जिनमें से



महान महेशमूर्ति सबसे मशहूर हैं। खुदाई की मुख्य पूरब-पश्चिम सीधी धुरी चट्टान की लंबाई के पैरेलल है, इसके प्लान में एक बड़ा मंडप है जिसके किनारे पर बीस खंभे हैं, हर लंबी साइड पर आठ और कोने के खंभों के बीच आगे और पीछे दो-दो खंभे हैं। छोटी या आगे और पीछे की साइड के सामने सीढ़ियाँ हैं, जो दोनों तरफ खुले आंगनों में जाती हैं, जो कटिंग से बने हैं

जो चट्टान के उस हिस्से को, जिसमें खुदाई की गई गुफा-मंदिर है, बाकी हिस्से से लगभग अलग करते हैं। पूर्वी आंगन में इसके फर्श पर एक गोल चट्टान से काटा हुआ पेडस्टल है, शायद नंदी के लिए। मुख्य महा-मंडप के उत्तरी हिस्से में उभरे हुए मुख- और अग्र-मंडप हैं। सबसे बाहरी अग्र-मंडप के आगे के हिस्से पर दो खंभे और पिलस्टर हैं; मुख-मंडप पहले वाले से लंबा है क्योंकि इसके दोनों सिरों पर एक और खाड़ी है। इन दोनों को महा-मंडप के उत्तरी साइड एक्सटेंशन के तौर पर डिज़ाइन किया गया है, जिसका एंट्रेंस खुली तरफ है, जबकि दक्षिण में उसी प्लान का मिलता-जुलता साइड एक्सटेंशन, जो पेरेंट रॉक में खोदा गया है, उसमें महेशमूर्ति और दूसरी मूर्तियों के ताखे हैं। महा-मंडप के पिछले सिरे की तरफ एक संधार, चतुर्मुख मंदिर है, जो चौकोर है, और जिसके चारों तरफ बड़े ओवर-डोर बने हैं। अंदर एक बड़ा रॉक-कट लिंग पेडस्टल है, जिसका टोंटी उत्तर की तरफ है, और उसमें एक लिंग डाला हुआ है। मंदिर के सामने चार खंभों की दो लाइनों के बीच एक अंदरूनी प्रदक्षिणा-मंडप है, जो मंदिर के चारों ओर घूमने वाले रास्ते का हिस्सा है। उत्तरी पोर्टिको के आगे, पूर्व में चट्टान में एक कटिंग, पूर्वी फोर-कोर्ट और मंदिर के मुख्य एंट्रेंस की ओर ले जाती है। इस कोर्ट के दक्षिणी तरफ, ढलान में दुर्गा के लिए एक छोटा गुफा-मंदिर खोदा गया है। उत्तरी पोर्टिको के आगे पश्चिमी छोर पर इसी तरह की एक कटिंग मुख्य मंदिर के पीछे के कोर्ट में पश्चिमी ढलान तक जाती है। इसमें एक छोटा शिव गुफा-मंदिर काटा गया है, जिसमें सामने एक मंडप के साथ एक चौकोर मंदिर है। यह गुफा-मंदिर सातवीं सदी के दूसरे क्वार्टर के बीच में बनाया गया होगा, जबकि एलोरा





गुफा 29 (धुमरलेना), जो काफी हद तक इसकी कॉपी है, उसी सदी के आखिरी चौथाई हिस्से की शुरुआत में रखी जानी चाहिए।

बॉम्बे के पास साल्सेट में जोगेश्वरी गुफा-मंदिर, जो लगभग ज़मीन के नीचे एक नीची ट्रैप आउटक्रॉप में खोदा गया है, एलिफेंटा गुफा से एरिया में बड़ा है, लेकिन असल में उसी तरह का है। चट्टान के आउटक्रॉप में एक मार्क किए गए एरिया के चारों ओर तीन तरफ खाई खोदने से एक बड़ा रेक्टेंगुलर हिस्सा अलग हो गया, जिस पर खुदाई के लिए स्कार्पियों को तैयार किया गया था। पूर्वी और लंबे सिरे पर एक बड़ा गेटवे या महादेवरा खुदा हुआ है, जिसमें बीच में एक रास्ता है और दोनों तरफ मंडप हैं, जिनमें से एक में गणेश विराजमान हैं। महादेवरा एक खुले कोर्ट और पूर्वी हिस्से की ओर जाता है, जो एक अग्र-मंडप है जिसका फ्लोर लेवल ऊंचा है। मंदिर का मेन हिस्सा आगे एक चौकोर चतुर्मुख मंदिर है, जिसके चारों ओर खंभों वाला एक क्लोस्टर है, जिसके दोनों तरफ छह खंभे हैं, जिसमें कोने वाले भी शामिल हैं। यह फिर से एक बाहरी एस्टाइलर क्लोस्टर, या मंडप से घिरा हुआ है, जिसका निचला फ़्लोर लेवल चारों तरफ़ से चट्टान की दीवारों से घिरा है, सिवाय पूरब और पश्चिम में एक-एक एंट्रेंस के, और दक्षिण में तीन एंट्रेंस के। यहाँ मंदिर बीच में है और इसके दरवाज़े बड़े ओवर-डोर से

बने हैं। पश्चिम की तरफ़ एक और अग्र-मंडप है, जो पूरब वाले जैसा ही है, जो एक पतली सुरंग से बाहर और ऊपर सड़क तक जाता है। दक्षिण की तरफ़, मुख्य मंडप अपने तीन खुलने वाले रास्तों से होकर जाता है, जिसमें बीच वाले के चारों ओर एक बढ़िया ओवर-डोर फ्रेम है, जिसके दोनों ओर दो बीच की खिड़कियाँ हैं, जो इस तरफ़ एक एक्सटेंशन तक जाता है, जो एक बाहरी खुले मंडप के रूप में है जिसके दक्षिणी हिस्से पर दस खंभों और दो पिलस्टर की एक लाइन है। इसके बाहर एक पतला खुला आंगन है। आगे की चट्टान की दीवार पर छोटे साइज़ की अधूरी या छोड़ी हुई खुदाई है, जिसमें से सबसे आखिर वाली शिव को समर्पित है। इसके सामने के हिस्से पर कैरिएटिड्स वाले दिलचस्प खंभे हैं। मुख्य पवित्र जगह असल में शिव को समर्पित थी, हालांकि अब मंदिर में एक देवी की मॉडर्न मूर्ति है।

थे पातालेश्वर (ओर पंचालेश्वर) केव ऑन जंगली महाराज रोड



पूना में, एक नीची ट्रैप रॉक में बना यह मंदिर अनोखा है क्योंकि इसमें तीन मंदिर हैं जिनके चारों ओर एक ही प्रदक्षिणा है, नंदी के लिए सामने एक गोल मंडप है, और दुर्गा के लिए एक साइड मंदिर है। तीनों मंदिर-कोठर शायद हिंदू त्रिदेवों को समर्पित थे, बीच वाला शिव को और बगल वाले ब्रह्मा और विष्णु को। ये सभी बातें आठवीं सदी के दूसरे हिस्से को राष्ट्रकूट काल की तारीख बताती हैं।

महाराष्ट्र के माहुर (नांदर ज़िले) में हिंदू गुफा में संधार टाइप का पवित्र स्थान है, जिसके सामने दो छोटे आड़े गलियारे हैं और किनारों पर दो छोटे मंदिर हैं। यह साफ़ तौर पर एलोरा की गुफाओं 17 और 21 के मॉडल के बाद का एक बाद का प्लान है, और आठवीं सदी के पहले चौथाई हिस्से का है। यह शायद एलोरा के धूमरलेना का एक प्रांतीय समकालीन था। इस शिव गुफा के किनारे एक अधूरी खुदाई है।

औरंगाबाद के पास भोकरदन की गुफा में केलना नदी के बाएं किनारे पर एक नीची उभरी हुई ट्रैप रॉक में एक खुली कटाई के पीछे, खंभों वाले आयताकार मंडप के पीछे एक लाइन में पाँच मंदिर-कोठरियाँ हैं। हर कोठर में एक दरवाज़ा है। मंडप में आगे और पीछे दो हिस्से हैं, जो मुख- और अर्ध-मंडप बनाते हैं। मंडप की साइड की दीवारें बड़ी मूर्तियों के साथ उथले घुमाव में खोदी गई हैं। द्वारपाल बड़े आकार के हैं, और वहाँ अनंतशायी, सूर्य, बलराम, महिष-मर्दिनी, आदि की मूर्तियाँ हैं। यह साफ़ नहीं है कि यह गुफा पश्चिमी या पूर्वी चालुक्यों की है; यह मिली-जुली परंपरा की भी हो सकती है। मूर्ति की प्रकृति और दूसरे सबूत सातवीं सदी के मध्य में पूर्वी चालुक्यों के लेखक होने का संकेत देते हैं।

गोवा के अरवलम में दो आसन्न गुफा-मंदिरों का समूह पश्चिमी तट के स्थानीय लेटराइट में खुदाई का एक दुर्लभ उदाहरण है, जहाँ से एक धारा दिखाई देती है। दोनों की विशेषताएँ

साधारण हैं। उनमें से एक, दक्षिणी गुफा-मंदिर, एक त्रि-कोशिका वाली इकाई है, जिसमें प्रत्येक इकाई में एक लिंग है, जो चट्टान को काटकर बनाए गए पीठ पर स्थापित है। लिंग के रूप अपने प्रतीकात्मक पहलू में एक दूसरे से भिन्न हैं और तीन अलग-अलग देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। केंद्रीय लिंग सामान्य चालुक्य-प्रकार का शिवलिंग है;



दक्षिणी सेल में एक लिंग शाफ्ट है जिसके ऊपर एक सोलर डिस्क है जो सूर्य या सूर्य-देवता को दिखाता है, डिस्क के नीचे एक लिखावट है जिसमें इसे खास तौर पर सूर्य का रूप बताया गया है। उत्तरी सेल में लिंग शाफ्ट के ऊपर एक चपटा भाला या 'शक्ति' है, जो बताता है कि यह कुमार या कार्तिकेय को दिखाता है। यह एक दिलचस्प उदाहरण है कि सूर्य-नारायण कॉन्सेप्ट के अनुसार त्रिदेवों में से विष्णु की जगह सूर्य ने ले ली, और ब्रह्मा की जगह ब्रह्मण्य या कार्तिकेय ने ले ली, जैसा कि महाबलीपुरम के त्रिमूर्ति गुफा-मंदिर में है।

बौद्ध काल से ही चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफा कला की सबसे खास बात यह रही है कि इसमें आर्किटेक्चर पर मूर्तियों का दबदबा रहा है। यह काफी हद तक पत्थर के मटीरियल के मुलायम होने और जगहों का इस्तेमाल करने की चाहत की वजह से हुआ, जैसे खंभों पर, खंभों के बीच की दीवारों पर और छत पर भी। इसी सोच की वजह से अजंता, एलोरा और बादामी जैसी जगहों पर बड़े पैमाने पर पेंटिंग बनीं।

मूर्तियों में बने अलग-अलग भगवान के रूप अक्सर कहानी या सिनॉप्टिक पैनल में दिखाए जाते हैं। इनका साइज़ बहुत बड़े आकार के अलग-अलग आकृतियों, जैसे द्वारपाल, महेशमूर्ति, वगैरह से लेकर लगभग कैमियो के साइज़ तक होता है। बादामी जैसी शुरुआती पश्चिमी चालुक्य गुफाओं में, विष्णु और शिव की मूर्तियां बिना किसी भेदभाव के मिलती हैं, जबकि बाद की गुफाओं में वे लगभग अलग-अलग हैं। पहली तरह की गुफाओं में महिला देवताओं में सिर्फ़ दुर्गा दिखाई देती हैं, जबकि बाद वाली में सप्तमातृकाएं, सरस्वती, गजलक्ष्मी और पार्वती हैं। बाद वाली कैटेगरी राष्ट्रकूट गुफाओं में भी मिलती है, साथ ही वैष्णव नक्काशी का मिश्रण भी है, हालांकि कम हद तक। जबकि पश्चिमी चालुक्य मूर्तियाँ रूप, पोज़ और एक्सप्रेशन में स्पष्टता के लिए जानी जाती हैं, राष्ट्रकूट दौर की खासियत है कि उनमें बहुत ज़्यादा सजावट होती है, जिसमें पोज़ और एक्सप्रेशन पर कम ज़ोर दिया जाता है और, इससे भी ज़्यादा, पौराणिक घटनाओं को सिनॉप्टिक या कहानी के रूप में दिखाने का चलन है। इस तरह के शिक्षाप्रद चित्रणों की भरमार पहले के दौर के सौंदर्य के ट्रेंड्स में कमी की भरपाई करती है। कम से कम शैव मंदिरों में, पंथ के दबदबे और आगम के नुस्खों की प्रवृत्ति देखी जाती है। जबकि पश्चिमी चालुक्य लिंग-पीठ ज़्यादातर

चौकोर, राष्ट्रकूट लिंग-पीठ, जैसे एलोरा गुफाओं 15 और 16 में, और गणेशलेना गुफाएँ गोल हैं। वे एक ही पत्थर के हैं और खुदाई की जीवित चट्टान का हिस्सा हैं। ये पल्लव गुफा-मंदिरों में लिंग-पीठों की कमी से अलग हैं, जहाँ फर्श में सॉकेट में डाले गए प्रिज्मीय धारलिंग टाइप के लिंग, या सॉकेट में जाने वाले चौकोर निचले हिस्से के ऊपर एक समान गोल सेक्शन का आना, गुफा-मंदिर की तुलना में बाद की तारीख का है। चालुक्य-राष्ट्रकूट लिंग एक अलग तरह के हैं। यह केवल एक ही पत्थर के लिंग-पीठ और पांड्य मंदिरों के लिंग में है कि हमें चौकोर, गोल और यहाँ तक कि आठ कोनों वाले लिंग-पीठ मिलते हैं।

बादामी ग्रुप में देखे गए आइकॉनिक रूपों में, वैष्णव रूपों में, वराह, त्रिविक्रम, नरसिंह, अनंत-सायन, वैकुंठनाथ, विष्णु, और वैष्णव कथाएँ और फ्रिज़ में कृष्ण-लीला शामिल हैं। शिव-रूप तांडवमूर्ति, हरिहर, और अर्धनारी हैं। दूसरों में गणेश, कार्तिकेय, दुर्गा और महिषमर्दिनी हैं। ऐहोल (रावलपुडी या रावलगुडी) में, हमारे पास वराह, हरिहर, अर्धनारी, गंगाधर, सप्तमातृकाएँ, महिषमर्दिनी और दो निधियाँ हैं।

एलोरा में चालुक्य काल में गणेश, कार्ति-केय, सरस्वती, गजलक्ष्मी, सप्तमातृकाएं, शिव-पार्वती की छोटी-छोटी कहानियां, पार्वती की तपस्या, कैलाश-तोलन, अक्ष-क्रीड़ामूर्ति, कल्याण सुंदर, अंधकारी, शिव-तांडव, लकुलिस, शिव-लकुलिस, कृष्ण, बलराम, सुभद्रा, सूर्य, अनंतशायन और ब्रह्मा देखे जा सकते हैं। उसी जगह पर राष्ट्रकूट काल दुर्गा, महिषमर्दिनी, पार्वती-तपस, कल्याण सुंदर, कैलाश का दृश्य, अर्धनारी, शिव, गोवर्धनधारी, कालियादमन, वराह, नरसिंह, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश और कार्तिकेय जैसी मूर्तियों के लिए जाना जाता है। एलोरा में गणेश सलेना में सूर्य, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, गणेश और दुर्गा के षणमता या छह गुना पंथ को भी दिखाया गया है।

एलिफेंटा की मूर्तियां लगभग डुमर-लेना (एलोरा) जैसी ही हैं, बस कुछ और मूर्तियां हैं, जैसे महेशमूर्ति और शिवयोगी। जोगेश्वरी में कार्तिकेय, लक्ष्मी, गणेश, सप्त-



मातृकाएँ, लकुलिसा और कल्याण सुंदरा। पूना के पातालेश्वर में गजलक्ष्मी, त्रिपुरांतक, अनंतशायन, लिंगोद्भव और अंधकारी हैं। माहुर में अर्धनारी, गंगाधर, त्रिपुरांतक, गणेश, कार्तिकेय और सूर्य को दिखाया गया है।

## तटीय आंध्र के पूर्वी चालुक्य गुफा मंदिर

आंध्र के तटीय इलाके में, वेंगी के पूर्वी चालुक्यों के इलाके में कृष्णा नदी के दोनों किनारों पर

नरम चट्टानों में खुदाई करके एक दर्जन से ज़्यादा गुफा-मंदिर मिले हैं। ये कृष्णा ज़िले में उत्तरी किनारे पर विजयवाड़ा और मोगलराजपुरम की पहाड़ियों में और गुंटूर ज़िले में दक्षिणी किनारे पर उंडावल्ली, पेनामगा और सीतारामपुरम की पहाड़ियों में पाए जाते हैं। पूर्वी चालुक्यों के बनाए ये गुफा-मंदिर अपने ले-आउट, आइकॉनोग्राफी और तहखाने की स्कीम में अलग तरह के कैरेक्टर दिखाते हैं। वे अपने पैतृक चालुक्य और उत्तरी विरासत के अलावा, कुछ मामलों में पड़ोसी पल्लव तरीकों का भी हिस्सा हैं। गुफा-मंदिरों की इस सीरीज़ की खास बात यह है कि तहखाने की पिछली दीवार के बेस पर एक चट्टान से काटा हुआ पेडस्टल सॉकेट है जो पूजा की चीज़ को दिखाता है, चाहे वह शिव का लिंग रूप हो, या सॉकेट में डाले गए दूसरे देवताओं की तस्वीर वाला एक नक्काशीदार स्टील हो। भैरवकोंडा में, लिंग या मूर्ति को रखने के लिए, पेडस्टल के ऊपर दीवार पर एक धँसे हुए गड्ढे में सॉकेट काटा जाता है। पूर्वी चालुक्यों के गुफा-मंदिरों के मामले में, पश्चिमी चालुक्य-राष्ट्रकूट समूह में जो नक्काशी मिलती है, उसके मुकाबले विष्णु की नक्काशी का न होना ध्यान देने लायक है। लगभग सभी गुफा-मंदिर शैव हैं, या शैव देवताओं के दूसरे देवताओं को समर्पित हैं। एकमात्र अपवाद उंडवल्ली गुफा-मंदिर है जो विष्णु को समर्पित है। शैव गुफा-मंदिरों में नंदी को दक्षिण में पांड्य उदाहरणों की तरह चट्टान से काटा गया है। समय के हिसाब से विजयवाड़ा में अक्कन्ना-मदन्ना गुफा अपने मौजूदा रूप में सबसे पहले आती है। इसे सातवीं सदी के बीच का माना जाता है, और इसके ठीक बाद मुगलराजपुरम की गुफाएँ I से IV हैं।



बाद की चट्टान वास्तुकला

विजयवाड़ा में निचला गुफा-मंदिर, उंडावल्ली और दूसरी गुफाएँ एक सीरीज़ में हैं, जो आठवीं सदी के बीच के भैरवकोंडा ग्रुप पर खत्म होती हैं। आखिरी, अगर सीधे पूर्वी चालुक्यों का नहीं है, तो ज़्यादा से ज़्यादा तेलुगु-चोडा का लिखा हुआ हो सकता है।

इन गुफा-मंदिरों में असल में एक चट्टान से काटा हुआ हॉल, या मंडप होता है, जिसके पीछे एक या ज़्यादा, अक्सर तीन, मंदिर-कोठरियाँ होती हैं। कई मंदिर पीछे की तरफ एक लाइन में होते हैं। मंडप कुछ मामलों में एक जैसा होता है और कुछ में कई खंभों वाला, या खंभों और पिलस्टर की दो लाइनों से आगे और पीछे के हिस्सों में बंटा होता है - आम तौर पर सामने की लाइन और पैरेलल अंदर की लाइन। खंभे आमतौर पर सादे, मोटे, छोटे और पूरे हिस्से में चौकोर होते हैं, या उनके बीच की ऊँचाई कोनों पर तिरछी होती है। इसका नतीजा यह होता है कि बीच का हिस्सा आठ कोनों वाला होता है, जबकि नीचे और ऊपर के हिस्से चौकोर होते हैं। सामने के हिस्से का कॉर्निस, कपोत, कुडू, या नासिका मेहराबों से सजाया गया है। मंदिरों के दरवाज़े दक्षिणी गुफा-मंदिरों की तरह सादे होते हैं, और पश्चिमी चालुक्य-राष्ट्रकूट टाइप के मंदिरों से अलग होते हैं जिनमें बड़े दरवाज़े होते हैं। दरवाज़ा अक्सर दो बगल के पिलस्टर से घिरा होता है जिनके ऊपर तोरण फेस्टून होता है। ज़्यादातर गुफा-मंदिर शिव को समर्पित हैं, लेकिन दो निश्चित रूप से दुर्गा को और कुछ विष्णु को समर्पित हैं। बादामी, ऐहोल, एलोरा वगैरह के उदाहरणों की तुलना में इनमें मूर्तियां बहुत कम हैं। कुछ मूर्तियों में, तांडव-शिव का

ज़िक्र किया जा सकता है। उंडावल्ली में अनंतसयनगुडी गुफा-मंदिर इस ग्रुप में सबसे बड़ा है और यह एलोरा की बौद्ध गुफाओं 11 और 12, दो-ताल और तिन-ताल जैसा तीन मंज़िला स्ट्रक्चर है। यह सातवीं सदी का है, अगर उससे पहले का नहीं, और शायद मूल रूप से बौद्ध धर्म के लिए बनाया गया था, लेकिन बाद में इसे विष्णु मंदिर के लिए अपना लिया गया, जिसमें मुख्य देवता लेटे हुए विष्णु, या अनंतसायिन हैं।

भैरवकोंडा गुफा-मंदिरों को नेल्लोर जिले के कोट्टापल्ले की पहाड़ियों में एक नरम शिस्ट घुसपैठ में खोदा गया है, जो कृष्ण-गुंटूर समूह से अलग चट्टान का मटीरियल है। उनके बीच, नाचते हुए शिव और दो रॉक मूर्तियों के साथ।



हरिहर, छोटे आले या यादगार मंदिर हैं जिनके अंदर लिंग खुदे हुए हैं, जिन पर आठवीं सदी के समर्पण या दूसरे लेख लिखे हैं। आठ गुफा-मंदिर दो ग्रुप में आते हैं। पहले चार, घोड़े की नाल जैसी घाटी या खाई के उत्तरी छोर से शुरू होकर, बिना सामने के मंडप के साधारण मंदिर की खुदाई हैं और उनमें अच्छी तरह से सजाए गए कपोत कंगनी और उसके कुडू गहने नहीं हैं। दूसरे ग्रुप के गुफा-मंदिर रेगुलर टाइप के हैं जिनमें एक बाहरी मंडप है जिसके आगे दो खंभों और दो पिलस्टर की एक लाइन है और पीछे एक मंदिर-कोठरी है। मंडप के आगे के हिस्से के ऊपर पल्लवों के मामल्ला-स्टाइल गुफा-मंदिरों की तरह कुडू के साथ एक पूरी तरह से बना हुआ कपोत है। खंभे चौकोर सेक्शन के हैं और चालुक्य पैटर्न के हैं जैसा कि कृष्णा नदी के किनारे गुफा-मंदिर में पाया जाता है। कुछ खंभों के ऊपर शेर के कैरिएटिड हैं और वे भी शेर पर आधारित हैं, जिनमें मामल्ला-स्टाइल गुफा-मंदिरों की तरह ऊपर कैपिटल हिस्से हैं। मंदिर के एंट्रेंस सादे हैं और उनमें कोई ऊपर का दरवाज़ा नहीं है। ये मिले-जुले कैरेक्टर और दूसरी खासियतें, साथ ही मंडप में ब्रह्मा और विष्णु की उभरी हुई मूर्तियां, मंदिर में एक लिंग का इंतज़ाम, और चंदेसा और गणेश जैसी दूसरी मूर्तियां, और चट्टान पर बनी नंदी, उनके गैर-पल्लव मूल और उनकी तारीख आठवीं सदी के बीच की होने का इशारा करती हैं।

# अध्याय 5

## स्थापत्य मूर्तिकला

### अखंड विमान-रथ

पल्लव नरसिंहवर्मन मामल्ला (630-668) का रॉक आर्किटेक्चर में सबसे बड़ा योगदान, पूरी तरह से ज़िंदा चट्टान से काटे गए मोनोलिथिक विमान-मंदिर हैं। असल में, ये खड़ी चट्टानों के

टुकड़ों से या महाबलीपुरम की मुश्किल ग्रेनाइट नीस चट्टानों के पूरे पत्थरों से काटे गए आर्किटेक्चरल मॉडल की बड़ी मूर्तियां हैं। पूरे मंदिर के आकार को काटने के आइडिया की शुरुआत पश्चिमी भारत के चट्टानों को काटकर बनाए गए चैत्य-हॉल के अंदर खुदे हुए स्तूपों से हुई। इस आइडिया को बौद्धों ने शंकरम (विशाखापत्तनम ज़िला, आंध्र प्रदेश) में बड़े हाइपेथ्रल स्तूप-आकार में और आगे बढ़ाया। उदयगिरी (विदिशा ज़िला, मध्य प्रदेश) की तवा गुफा में एक शुरुआती, भले ही अधूरा, मोनोलिथिक मंदिर-आकार मिला है। यह कमोबेश एक गोल, एक पत्थर जैसा मंदिर है, जिसे बलुआ पत्थर की एक अलग चट्टान को काटकर बनाया गया है और एक बेस पर एक आधे हिस्से में बनाया गया है, और ऊपर एक चपटे पत्थर से ढका हुआ है, जो तवे जैसा है। इस पर लिखे शब्दों के अनुसार, इसे चंद्रगुप्त के एक मंत्री ने बनवाया था।

इससे भी ज़्यादा दिलचस्प बात यह है कि पल्लवों ने सातवीं सदी की शुरुआत में ईंट और लकड़ी से बने अलग-अलग तरह के स्ट्रक्चरल विमान-मंदिरों को, जो कभी न खत्म होने वाले पत्थर के खंभों में बदल दिया था, बदल दिया। ये पत्थर की कॉपी इन तेरह सदियों तक बची रहीं, जबकि उनकी ईंट और लकड़ी की ओरिजिनल, और उसी तरह के उनके कंटेंपररी और बाद के काउंटरपार्ट पूरी तरह खत्म हो गए। इस तरह वे दक्षिण में विमान-आर्किटेक्चर की शुरुआत के सबसे शुरुआती उदाहरण के तौर पर अलग दिखते हैं, और उस समय मौजूद या विकसित हुए विमानों की वैरायटी दिखाते हैं। रूप में वैरायटी, यानी प्लान और राइज़, जिसका उदाहरण है



ये मोनोलिथ, जिन्हें लोकल लोग 'रथ' कहते हैं, रीति-रिवाजों, कला और आर्किटेक्चर पर अच्छी तरह से तय कोड और मैनुअल के होने का भी इशारा देते हैं - आगम, शिल्प और वास्तु शास्त्र। इस तरह वे भारतीय मंदिर-आर्किटेक्चर, खासकर दक्षिण के अध्ययन में सबसे ज़रूरी जगह बनाते हैं।

पूरी तरह से कटे हुए मॉडल के तौर पर, ये मोनोलिथ न सिर्फ़ बेस से लेकर टॉप तक विमान का पूरा बाहरी हिस्सा दिखाते हैं, जिसमें सामने का अर्ध-मंडप मंदिर के रूप का एक जैसा रूप बनाता है, बल्कि काफी हद तक, गुफा-मंदिरों की तरह, अंदर के हिस्से भी दिखाते हैं। ये सभी टॉप से बेस तक खुदे हुए थे, जबकि स्ट्रक्चरल कंस्ट्रक्शन बेस, या नींव, से टॉप तक बनाए जाते हैं। हालाँकि, पारंपरिक रस्म के अनुसार, स्तूप, या कलश की स्थापना, मंदिर की पवित्रता के साथ होनी चाहिए, गर्भगृह में अर्चा मूर्ति, या पूजा की छवि की औपचारिक स्थापना, प्रतिष्ठा और कुंभाभिषेक की रस्मों के बाद, स्तूप को शुरू में नहीं काटा गया था और इन मोनोलिथ पर काम अगले हिस्से, यानी शिखर से शुरू हुआ, और बाद में एक अलग से खुदी हुई स्तूप को जगह पर लगाया गया। एक विकल्प के तौर पर, शुरू में ऊपर से काफ़ी चट्टान का सामान बिना तराशा हुआ छोड़ दिया गया था, जिसे काम के आखिर में स्तूप में डाला गया।

इन मोनोलिथिक विमानों की नक्काशी, जो सिर्फ़ महा-बलिपुरम तक ही सीमित थी, ऐसा लगता है कि मामल्ला के बाद कम से कम दो पीढ़ियों तक जारी रही, यानी लगभग 700 A.D. तक, जब शायद, इन दो विमानों - द्रौपदी रथ और धर्मराज रथ की सबसे ऊपरी मंज़िल - के पवित्र स्थानों में मुख्य देवताओं की उभरी हुई मूर्तियाँ बनाई गईं। पहले का रिवाज था कि पवित्र स्थान के अंदर मुख्य देवता की प्लास्टर से बनी मूर्तियाँ बनाई जाती थीं।

विमान मंदिर

चूँकि विमान रूप दक्षिणी मंदिर की सबसे विशिष्ट और विशिष्ट विशेषता है, इसके विपरीत विशेषता



उत्तर और मध्य भारत के प्रसाद मंदिर को संक्षेप में बताना और इसकी आम विशेषताओं के साथ-साथ इसके रूप, योजना और ऊँचाई में होने वाले बदलावों को समझना इस संदर्भ में उपयोगी होगा। दक्षिणी विमान-मंदिर की बुनियादी बातों की ऐसी सामान्य समझ ज़रूरी होगी, क्योंकि आगे आने वाले मंदिरों के बारे में विस्तार से बताना संभव नहीं होगा, सिवाय उनकी सबसे खास विशेषताओं को हाईलाइट करने के।

सभी शुरुआती और ज़्यादातर बाद के शिल्प और आगम कामों के अनुसार, साथ ही कई आज के शिलालेखों के अनुसार, विमान शब्द का मतलब उपन या अधिष्ठान, या पेडस्टल की सबसे निचली ढलाई से लेकर स्तूप, या सबसे ऊपरी कलश तक की पूरी इमारत से है। यह सिर्फ़ गर्भगृह के ऊपर का सुपरस्ट्रक्चर नहीं है, जैसा कि कई लेखक और कुछ बाद के टेक्स्ट में अक्सर माना जाता है। इसके सामने अक्सर एक छोटा सा वेस्टिबुल होता है जिसे अर्ध-मंडप या अंतराल कहा जाता है, जो उसी बेसमेंट, या अधिष्ठान पर खड़ा होता है। दक्षिणी मंदिर के शुरुआती उदाहरण एक जैसे थे जिनमें विमान, एक या कई मंज़िला होता था, जिसका अर्ध-मंडप घेरे की दीवार, जिसे प्रकार कहते हैं, से घिरा होता था। शुरुआती दक्षिणी टेक्स्ट भी मुख्य रूप से विमान के बारे में बताते हैं, जो ऊंचाई में काफी बड़ा होने के बावजूद, असल में ले-आउट में काफ़ी बेसिक और कॉम्पैक्ट था। इसके बाद, एक स्टेज आया जब अर्ध-मंडप के सामने एक सिंपल महा-मंडप जोड़ा गया और इसे मेन हिस्सों के साथ अच्छी तरह से जोड़ दिया गया, पूरा हिस्सा अक्सर एक घेरे वाली दीवार, जिसे प्रकार कहते हैं, से घिरा होता था। एंट्रेंस, जो साउथ का एक और खास मंज़िला स्ट्रक्चर था, उसे उसकी हाइट और साइज़ के हिसाब से द्वारा सोभा, महाद्वार, या गोपुर कहा जाता था। अक्सर एक्स्ट्रा मंडप एक अलग सहायक स्ट्रक्चर होता था जो प्रकार के अंदर फोर-कोर्ट में अलग से खड़ा होता था। मेन विमान का कद, उसके साथ के अर्ध- या मुख-मंडप के साथ, अधिष्ठान के नीचे एक प्लेटफॉर्म, जिसे उपपीठ कहते थे, जोड़कर बढ़ाया गया था। हालांकि, टेक्स्ट में उप-पीठ को एक ऑप्शनल मेंबर के तौर पर बताया गया है। हमें यह समझना होगा कि मंदिर का फंक्शनल

महत्व सीधे उसके काम करने के तरीके पर निर्भर करता था।



जगह का दायरा। मुख्य गर्भगृह में रखे मुख्य रूप के अलावा दूसरे देवी-देवताओं को ज़्यादातर दो डायमेंशनल आलों, या देवकोष्ठों में, विमान और अर्ध- और महा-मंडप की दीवारों पर, और सुपरस्ट्रक्चर के तलों या मंज़िलों पर रखना पड़ता था। बाकी की मूर्तियाँ मंडप के खंभों पर भी रखी गई थीं। रस्मों के बढ़ते महत्व और विस्तार और त्योहारों के बढ़ने के साथ, इस न्यूक्लियर स्ट्रक्चर में एक्सियल और पेरिफेरल दोनों तरह के बदलाव किए गए। ये एक्सियल लाइन पर सहायक मंडपों और सेंट्रल यूनिट के चारों ओर सहायक मंदिर या विमान, मंडप (हॉल), और मालिका या क्लोइस्टर के रूप में थे। पूरा हिस्सा एक या ज़्यादा प्रकार से घिरा हुआ था, जिसमें एक या ज़्यादा गोपुर-एंट्रेंस थे, जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारत का जाना-पहचाना मंदिर-कॉम्प्लेक्स बना। ये बदलाव कभी-कभी मेन यूनिट के साथ-साथ होते थे। तंजावुर में बृहदीश्वर जैसे मामलों में, पूरे मंदिर-कॉम्प्लेक्स की प्लानिंग और डिज़ाइन एक ही समय में की गई थी और इसे लगभग एक ही समय में पूरा किया गया था। हालाँकि, ज़्यादातर यह अलग-अलग समय में धीरे-धीरे जोड़ने का नतीजा होता है, जिससे ओरिजिनल ले-आउट एक के बाद एक बड़ा होता जाता है और चिदंबरम, तिरुवन्नामलाई, मदुरै और श्रीरंगम जैसे बड़े मंदिर-कॉम्प्लेक्स, या मंदिर शहर बनते हैं।

जैसा कि सभी थ्री-डायमेंशनल कंस्ट्रक्शन में होता है, जहाँ प्लान और एलिवेशन की बातें मायने रखती हैं, यह प्लान का अलग-अलग तरह का होना, और ऊँचाई का लेवल, जिसमें तल या मंज़िलों की संख्या बढ़ाना शामिल है, जिसे तलच्छंदा कहा जाता है, इसी वजह से दक्षिणी विमानों में बहुत ज़्यादा वैरायटी होती है, जिससे उन्हें अलग-अलग कैटेगरी में बांटा जाता है और क्लासिफ़ाई किया जाता है। चार कोनों वाले चौकोर या लंबे प्लान, और घुमावदार - गोल, अंडाकार और धुरी के आकार के प्लान - पहले के बौद्ध और गैर-बौद्ध मंदिरों में भी आम थे। लेकिन दक्षिणी विमान की बनावट में जो हेक्सागोनल या ऑक्टागोनल प्लान मिलता है, वह काफ़ी कम होगा।

उत्थान के मामले में सरल या एकताल विमान में मुख्यतः छह ऊर्ध्वाधर घटक होते हैं, जो आधार से शीर्ष तक (1) अधिष्ठान या तहखाना, (2) पद या स्तंभ, या होंगे

(3) प्रस्तर या आर्च-ट्रेव, जिसमें प्रमुख कॉर्निस या कपोत होता है, (4) गर्भगृह की छत और एंटेब्लेचर के ऊपर ग्रीवा या क्लियर-स्टोरी, (5) शिखर, या क्लेरेस्टोरी या ग्रीवा के ऊपर की सबसे ऊपरी छत, और (6) शिखर के ऊपर स्तूप या कलश। ऐसा सरल ढांचा, या अल्प-विमान, एकतल, या एक मंज़िला कहा जाता है, और यह षडंग या षड्वर्ग, यानी छह भागों में होता है। इसके बॉडी पार्ट, या हर्म्य में एक और तल, और ग्राउंड फ्लोर से छोटे साइज़ का आर्किट्रेव या प्रस्तर, ग्राउंड फ्लोर के प्रस्तर और ऊपर ग्रीवा-शिखर-स्तूपी कॉम्पोनेंट के बीच एक इंटरपोलेशन के तौर पर जोड़ने से, विमान को द्वितल या दो मंज़िला बना दिया जाता था, जिसमें आठ अंग होते थे, जिसमें दूसरे तल का हर्म्य और प्रस्तर जोड़ा जाता था। ऐसे अष्टांग विमान शुरुआती स्टेज में ज़्यादा आम थे। मंज़िलों की संख्या तीन या चार (त्रितल, चतुष्टल) वगैरह तक बढ़ाई जा सकती थी, ऐसे में उन्हें जाति विमान कहा जाता था। पंचतल और सोलह तक ज़्यादा मंज़िलों वाले बड़े विमानों का ज़िक्र शिल्प टेक्स्ट में मुख्य-विमान के तौर पर किया गया है। इसका एक उदाहरण थान-जावुर का महान बृहदीश्वर विमान है, जो लगभग 200 फीट ऊँचा है।

दक्षिणी विमान की सबसे खास और आम खासियत यह है कि हर मंज़िल के ऊपर, उसके किनारे पर बने प्रस्तर के ऊपर, और अगले तल के शरीर, या हर्म्या, को घेरे हुए छोटे विमान जैसे मंदिरों की एक लाइन होती है। ऐसी लाइन को हार कहते हैं। जबकि सिंपल टाइप के एकतल अल्प विमानों के लिए हार तय नहीं है, जाति और मुख्य-विमान में ऐसे हार होते हैं। लगभग 700 A.D. के शुरुआती उदाहरणों में, हर बहुमंज़िला विमान के सभी तलों के ऊपर पाया जाता है, जिसमें सबसे ऊपर का तल भी शामिल है जहाँ यह ग्रीवा को घेरता है। बाद के मामलों में सबसे ऊपर के तल पर हर नहीं होता। इसकी जगह वाहन, या लंछन, यानी आदितल के गर्भगृह में रखे मुख्य देवता के लिए सही पहचान वाले निशान ले लेते हैं। वे शिव मंदिरों में नंदी या भूत हैं,





देवी, विष्णु या जैन मंदिर, विष्णु मंदिरों में गरुड़, वगैरह। इस समय से यह दक्षिणी मंदिरों की एक ज़रूरी खासियत बन गई। इस तरह, किसी मंदिर की धार्मिक या पंथीय पहचान और पवित्रता का प्रकार, सबसे ऊपर वाले तल पर रखे वाहनों या लंछनों के नेचर से दूर से भी पहचाना जा सकता है।

प्लान के हिसाब से - चार-तरफा, पॉलीगोनल या कर्विलिनियर - दक्षिणी विमानों को दक्षिणी शिल्पा और आगम टेक्स्ट में नागर, द्रविड़ और वेसर के तौर पर बांटा गया है। जो बेस से फिनियल तक चार-तरफा, चौकोर या आयताकार हो, या जिसमें चार-तरफा ग्रीवा और शिखर हो, उसे नागर कहा जाता है। जो बेस से फिनियल तक हेक्सागोनल या ऑक्टागोनल हो, या

जिसमें हेक्सागोनल या ऑक्टागोनल ग्रीवा और शिखर हो, उसे द्रविड़ कहा जाता है। जो बेस से ऊपर तक गोल, एलिप्सॉइडल या एप्सिडल हो, या जिसके ग्रीवा और शिखर में ऐसा प्लान हो, उसे वेसर कहा जाता है। आम तौर पर एक जैसा चौकोर या आयताकार प्लान नागर का एक शुद्ध रूप बनाता है, लेकिन कई मामलों में ग्रीवा और शिखर, आदितल से बने चौकोर शरीर पर आठ कोनों वाला, गोल या ऊपरी हिस्सा जैसा प्लान ले सकते हैं, या साधारण या कई मंज़िला उदाहरणों में तलों की सीरीज़ हो सकती है। इससे ऐसे विमान द्रविड़ या मिले-जुले प्रकार के वेसर बनेंगे। इसी तरह, आयताकार शरीर में अंडाकार ग्रीवा और शिखर हो सकते हैं, जो फिर से विमान वेसर बना देंगे। इस तरह, इस तरह के क्लासिफिकेशन में बेसल हिस्सों या शरीर के आकार से ज़्यादा, ग्रीवा-शिखर के हिस्सों का प्लान ही मायने रखता है।

चौकोर, गोल, षट्कोणीय या अष्टकोणीय स्ट्रक्चर जिसमें एक शिखर होता है जो गुंबद जैसा होता है और एक ही कलश या स्तूप में खत्म होता है, उसे कूट-शिखर वाला कूट-विमान कहते हैं। वैगन-टॉप, वॉल्ट जैसी या उल्टी नाव जैसी छत वाले आयताकार और अंडाकार बॉडी-स्ट्रक्चर, या रिज के साथ ऊपर स्तूपियों की एक लाइन वाले शिखर को सल विमान, या कोष्ठ, या सभा फॉर्म के रूप में जाना जाता है। चाप, या अपसाइडल स्ट्रक्चर जिसमें एक अपसाइडल छत और हॉरिज़ॉन्टल हिस्से के साथ कलशों की एक लाइन होती है, उसे आम तौर पर हस्ति पृष्ठ, या गजपृष्ठ कहा जाता है, क्योंकि यह खड़े व्यक्ति के पिछले व्यू जैसा दिखता है।





हाथी पंजर या निदास की कैटेगरी में आता है।

हारा, या कई मंज़िला विमानों के तलों के ऊपर छोटे मंदिरों की लाइन, इन तीन तरह के मंदिर-रूपों से बनी होती है - छोटा कूट, शाला (या कोष्ठ), और पंजारा (या निदा)। ये तल के ऊपरी किनारों पर कोनों और किनारों पर बने होते हैं, और कूट, कोष्ठ और पंजारा एलिमेंट से कम ऊंचाई वाले मठ जैसे या पैरापेट जैसे हिस्सों की लंबाई से आपस में जुड़े होते हैं, जिन्हें हरंतारा कहा जाता है। इन हरंतारा मठ-लंबाई में साइड में बे-विंडो जैसे उभार होते हैं, जिनमें एक निचला आयताकार हिस्सा या खिड़की होती है, जो मठ की दीवार से निकली होती है, और एक आर्च वाला डॉर्मर, जो ऊपरी हिस्सा होता है, हरंतारा मठ की छत से निकला होता है। इन्हें क्षुद्र-नासिका कहा जाता है, क्योंकि ये विमान के मुख्य ग्रीवा-शिखर हिस्से के किनारों से निकले हुए समान उभारों से छोटे होते हैं, जो महा-नासिकाएँ हैं और मूल रूप से वेंटिलेटर के रूप में काम करते थे। यह देखा जाएगा कि ज़्यादातर मामल्ला-स्टाइल गुफा-मंदिरों में हारा अकेले आयताकार शालाओं की एक स्ट्रिंग है, और हर तरफ के छोर पर कूट, कोनों से मिलते-जुलते हैं और इसलिए कर्णकूट कहलाते हैं, जो पहली बार पंचपांडव गुफा-मंदिर में पाए जाते हैं। जबकि ज़्यादातर मोनोलिथिक विमानों में हर तरफ की लंबाई के साथ शालाएँ

और कोनों पर कर्ण-कूट पाए जाते हैं, हारा के तीसरे हिस्से के रूप में निड़ा या पंजरा केवल दो मामलों में दिखाई देता है, अर्थात्, धर्मराज रथ के पहले तल पर और नकुल-सहदेव रथ के दूसरे तल पर, जो सातवीं शताब्दी के अंत में पूरा हुआ था। हालांकि चालुक्य और पल्लव दोनों के स्ट्रक्चरल फेज़ के एक, दो या तीन ताल वाले अल्प-विमान में यह बात दोहराई नहीं गई है, फिर भी आठवीं सदी के बाद से बड़े जाति और मुख्य-विमान में निड़ा एक ज़रूरी हिस्सा के तौर पर दिखता है।

हारा उस ताल के बीच के हर्म्या से अलग खड़ा हो सकता है जिसे वह घेरे हुए है, और बीच में एक पतला चक्कर लगाने वाला रास्ता छोड़ सकता है, जैसा कि धर्मराज रथ में होता है, जहाँ सभी ताल काम करने के लिए होते हैं, और हर एक में एक सेला होता है। ऐसे हारा को अनर्पित कहा जाता है।



हर मंज़िल के बीच के हिस्से के चारों ओर छोटे मंदिर-रूपांकनों के घेरे का यह प्लान, ज़मीन के लेवल पर एक ऐसे ही ले-आउट प्लान के बाद होगा, जिसमें एक सेंट्रल मंदिर होता है जो सहायक या परिवार मंदिरों से घिरा होता है और यह दिखाता है कि इसे हर मंज़िल के लेवल पर योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया गया है। अनर्पित हारा का यह प्लान विमानों के मामले में संभव था जहाँ सेला संधार था, या एक दोहरी दीवार से घिरा हुआ था, जिसमें दो दीवारों के बीच परिक्रमा करने वाली जगह थी और अंदर की दीवार ज़्यादा ऊँचाई तक उठकर दूसरा तल हर्म्य बनाती थी, जबकि बाहरी दीवार अकेले आदितल की ऊँचाई तक उठती थी और उसके ऊपर प्रस्तर हारा होता था। इस नियम को और आगे बढ़ाने पर, आदितल के गर्भगृह के चारों ओर एक ही जगह पर तीन दीवारें हो सकती हैं, जिससे तीन मंज़िला विमान बनता है, जिसमें सबसे बाहरी दीवार आदितल की ऊंचाई तक, बीच वाली दीवार दूसरे तल की ऊंचाई तक और सबसे अंदर वाली दीवार तीसरे तल की ऊंचाई तक होती है। हर तल की ऊंचाई पर हॉरिज़ॉन्टल हिस्से तीन गर्भगृहों का एक सिस्टम बनाते हैं, जो एक के ऊपर एक रखे होते हैं, और उनके अंदर देवता होते हैं।

हालांकि पल्लव काल के बाद से ऐसे कुछ विमान बने हुए मिलते हैं, लेकिन मुख्य श्रेणी के सभी विमानों में इस स्कीम को एक साथ बढ़ाने से भारी, छोटी इमारतें बनतीं, जिनका बेस और ऊंचाई का अनुपात अजीब होता, और ऊंचाई की तुलना में एरिया बहुत बड़ा होता। इसका हल यह था कि आदितल के गर्भगृह के चारों ओर एक बड़ी दीवारें बनाई जाएं जो ऊंचाई तक उठ सकें और वजन सह सकें और ऊपरी तलों को योजनाबद्ध या बिना काम की मंजिलें बनाया जा सके, जिसमें हार तल-हरम्य दीवार से मिल जाएं, जिससे बीच की परिक्रमा की जगह खत्म हो जाए। ऐसे हार को अर्पित कहा जाता था, और आदितल में तहखाने के चारों ओर ऐसी एक दीवार वाले विमान को निरंधर कहा जाता था। यह सब तुलनात्मक रूप से छोटे बेस एरिया पर प्रभावशाली ऊंचाई वाले विमान बनाने की इच्छा से प्रेरित था।

चार-तरफा, पॉलीगोनल, सर्कुलर या एप्सिडल स्ट्रक्चर के मामले में, आदितल के क्वाड्रैचर या साइड्स को, सबसे निचले हिस्से से शुरू करके, अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग प्रोजेक्शन या बे से तोड़ा जा सकता है।



अधिष्ठान का हिस्सा। यह स्कीम ऊपर के तलों तक भी लागू की जा सकती है, जिससे कोनों और किनारों पर खांचों की एक स्कीम बनती है, जिसमें बीच-बीच में खांचे होते हैं। उत्तरी स्टाइल के मंदिरों में उभरे हुए खांचों को रथ के उभार के रूप में दिखाया गया है और उन्हें त्रिरथ, पंच रथ, सप्त रथ, वगैरह के रूप में बताया गया है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि चौकोर के हर तरफ तीन, पांच या सात खांचे हैं। दक्षिणी विमानों में इन हिस्सों पर यह नाम लागू नहीं होता है। यहां खांचों को भद्र कहा जाता है। वे अपने बाहरी कोनों पर पिलस्टर से घिरे होते हैं। आस-पास की दीवारों के साथ अपने अंदरूनी कोनों पर, और प्रस्तर क्षेत्र के ऊपर, इसी तरह से ऑफसेट, वे हारा-कूट, शाला या पंजर के सदस्यों को ले जाते हैं, जैसा भी मामला हो। कोने वाले, बराबर भुजाओं वाले और चौकोर हारा के कूटों को ले जाते हैं जो हमेशा कोनों पर होते हैं और उन्हें सही मायने में कर्णकूट कहा जाता है। विमान के हर हिस्से पर कोने वाले खांचों के बीच आने वाले खांचे तब चौड़े होते हैं जब वे हारा के सलास को अपने प्रस्तर के ऊपर रखते हैं। इन दोनों के बीच तीसरे तरह के उभार सबसे पतले होंगे क्योंकि वे हारा के पंजरा या निदा एलिमेंट को अपने प्रस्तर के ऊपर रखते हैं। ये सिर्फ़ बड़े जाति- और मुख्य-विमानों में होते हैं। इन खांचों में, खासकर ऊपर सलास वाले चौड़े खांचों में, अधिष्ठान के लेवल के ऊपर और प्रस्तर के कपोत के नीचे कैंटनिंग पिलस्टर्स के बीच ताख बने होते हैं।

इनमें फिगर-स्कल्पचर हैं और इन्हें देवकोष्ठ कहते हैं। खांचों के बीच के खाली हिस्से ताला की असली दीवार को दिखाते हैं और पहले के उदाहरणों में आमतौर पर इनमें कोई स्कल्पचर नहीं होता। इनमें सिर्फ़ पिलस्टर होते हैं, लेकिन बाद के कुछ उदाहरणों में स्कल्पचर पैनल भी होते हैं, यहाँ तक कि कम गहरे आले या सजावटी तरह के पिलस्टर मोटिफ भी होते हैं।

पिलर और पिलस्टर लगभग अपने लकड़ी के ओरिजिनल जैसे ही हैं, जिनमें मोल्डेड 'कैपिटल' या टॉप हैं, जो आर्किटेक्चर की भाषा में 'ऑर्डर' बनाते हैं। शाफ़्ट का एक बेस या पेडस्टल, ओमा है, और इसके टॉप पर कमल की पंखुड़ियों का एक बैंड है जिसके नीचे मालाओं के लूप लटके हुए हैं। इस हिस्से को मालास्थान और पद्म बंध कहते हैं जो शाफ़्ट के ऊपरी सिरे को दिखाता है और

कैपिटल की शुरुआत जिसमें ढले हुए हिस्से होते हैं, एक घड़ा, लहसुन या कलश, जिसे पद्म बंध के ऊपर रखा जाता है, एक तश्तरी के आकार का हिस्सा जिसे ताड़ी कहते हैं, उसके ऊपर एक चपटा बल्बनुमा या कुशन के आकार का हिस्सा जिसे कुंभ कहते हैं, जिस पर एक उल्टा थाली जैसा हिस्सा होता है, और एक दोहरी मोल्डिंग, जिसे पाली (या पद्म जब इसे पंखुड़ियों वाले उल्टे कमल के फूल की नकल करने के लिए आकार दिया जाता है) कहा जाता है, जो असल में एक तख्ते जैसे अबेकस के नीचे का हिस्सा बनाती है - फलक। फलक, जो पहले के रूपों में बड़ा, मोटा और चौकोर होता था, बाद के मंदिरों में पॉली-गोनल या गोल और पतला और छोटा हो गया। यह कोरबेल-ब्रैकेट या ब्लॉक, पोतिका को सपोर्ट करता है, जो बीम, या उत्तिरा को संभालता है। ओमा, या पिलर बेस, को अक्सर किसी जानवर, असली या पौराणिक, या किसी दिव्य प्राणी की मूर्ति में बदलने के लिए आकार दिया जाता है। इस तरह, बैठे हुए या पीछे की ओर उठे हुए व्याल (बदले हुए चेहरे वाले पौराणिक शेर जैसे रूप), हाथी, नाग, नाग-देव, भूत वगैरह होते हैं। पिलर शाफ्ट, और मुख्य हिस्से, फलक को छोड़कर (जो पहले के रूपों में हमेशा चौकोर रहता है), चार-तरफा या चौकोर होने के बजाय, छह, आठ, सोलह या उससे ज़्यादा भुजाओं वाले हो सकते हैं, या सेक्शन में गोल हो सकते हैं। पोतिकाएँ अलग-अलग आकार लेती हैं, जैसे पल्लव गुफा-मंदिरों की तरंग पोतिकाएँ या दूसरों में साधारण बेवल वाली पोतिकाएँ। बाद में उनमें एक बीच में निकला हुआ टेनन, या डबल वॉल्यूट बन जाता है, या वे एक लटकती हुई कमल की कली से खत्म होने वाली एक निकली हुई घुमावदार भुजा का आकार ले लेती हैं, जैसे पंद्रहवीं सदी और उसके बाद के मंदिरों की पुष्प पोतिकाएँ। ये आकार क्षेत्रीय विकास और समय के हिसाब से विकास को भी दिखाते हैं।

आर्किटेक्चर की एक और ज़रूरी चीज़ है तोरण, जो असल में एक मेहराबदार तोरण (कभी-कभी सीधा, जैसा कि सांची के तोरणों में होता है) होता है, जो दो खंभों पर लगा होता है और एक पवित्र या रस्मी दरवाज़े को दिखाता है। कहा जाता है कि ऐसे अलग-अलग तोरण दरवाज़े या स्तंभ-तोरण पुराने महलों के गोपुर दरवाज़ों से पहले के थे। लेकिन जहाँ उत्तरी स्मारकों, जैसे सांची और भुवनेश्वर में, में तोरण दरवाज़े को बनाए रखा गया है, वहीं दक्षिण में गोपुर दरवाज़ा ही सबसे ज़्यादा प्रचलित है और सबसे ज़्यादा असरदार है।



मंदिर कॉम्प्लेक्स का खास और हमेशा रहने वाला हिस्सा। हालांकि, तोरण का आइडिया खत्म नहीं हुआ है; यह डिज़ाइन विमान या गोपुर के कई आलों और दरवाज़ों पर इस्तेमाल होता है और इन्हें भित्ति तोरण के नाम से जाना जाता है। उनके सपोर्टिंग कॉलम उसी तरह के होते हैं जैसे मुख्य हिस्सों वाले पिलर या पिलस्टर होते हैं। फलक या अबेकस के ऊपर बने आमने-सामने के मकरों के मुंह से फूलों और पत्तियों की मेहराबदार झालरें, या जानवरों, गणों और दूसरे रूपों की झालरें निकलती हैं। ऐसे तोरणों को इसलिए पत्र-तोरण, चित्र-तोरण, विद्याधर-तोरण वगैरह कहा जाता है। ये कुछ गुफा-मंदिरों के एंट्रेंस, विमान की दीवारों पर बने आलों या

देवकोष्ठों के सामने, और अलग-अलग क्रम और साइज़ की नासिकाओं - महा-नासिका, शुक-नासिका, क्षुद्र-नासिका, और अल्प-नासिका - के सामने पाए जाते हैं। प्रस्तर के कपोत पर बने तिकोने खिड़की जैसे मेहराबदार कुडू ऑर्नामेंट्स के सामने बिना सपोर्टिंग कॉलम वाले तोरण होते हैं।

अधिष्ठान, या पेडस्टल, भी बदलता रहता है। अपने सबसे आसान और सबसे खास रूप में इसमें एक ऑफसेट बॉटम कोर्स, उपान, एक लंबा गर्दन जैसा धंसा हुआ सीधा कोर्स, कंठा, और एक ऊपर निकला हुआ प्लेटफॉर्म, प्रति या पट्टिका होता है। ऐसे प्लेटफॉर्म को मंच कहते हैं। थोड़ा और बड़ा करके इसमें एक टोरस मोल्डिंग डाली जाती है जिसे कुमुद कहते हैं। यह तीन तरफ़ वाला (त्रिपट्टा), या गोल (वृत्त) होता है, और कंठा के ऊपर और पट्टिका के नीचे रखा जाता है। इसमें एक और सादी मोल्डिंग होती है, जो उपान से कम ऑफसेट होती है लेकिन लंबी होती है और उसके ऊपर आती है, जिसे जगती कहते हैं। तीसरा रूप वह होगा जिसमें पट्टिका के नीचे एक मुड़ा हुआ कपोत या कॉर्निस जोड़ा जाता है। जगती या कुमुद को कमल की पंखुड़ियों की एक लाइन के ऊपर भी रखा जा सकता है, जो उपान पर फैली हुई दिखाई देती हैं। ये पहले के समय में क्षेत्रीय रूपों को दिखाते हैं और बाद के रूपों में और बड़े किए गए हैं।

अधिष्ठान रूपों के विभिन्न संयोजन, तालच्छंदा में तालों की संख्या, कर्णकूटों के बीच हार घटकों की विविधता, क्रमिक तालों में उनकी वैकल्पिक या विपरीत स्थिति, उनकी संख्या और अन्य विशेषताओं ने विभिन्न प्रकार के तालों को जन्म दिया।



शिल्प और आगम ग्रंथों में विस्तार से बताए गए विमान और दक्षिण के हजारों मंदिरों में पाए जाने वाले विमान।

जबकि दक्षिणी मंदिर का एक ही तरह का रूप अपने सबसे आसान रूप में सिर्फ़ विमान से बना था जो गर्भगृह को घेरे हुए था, जिसमें एक बरामदे जैसा अंतराल या अर्ध-मंडप था, आगम और रीति-रिवाजों के बढ़ने के साथ, इसे और भी बेहतर बनाया गया। महा-मंडप, मुख-मंडप, अग्र-मंडप, वगैरह जैसे मंडप एक्सिलरी में जोड़े गए, और जल्द ही उत्सव-स्नैपना और सभा-मंडप की तरह आस-पास भी जोड़े गए। दक्षिणी मंदिरों के सभी मंडप सपाट छत वाले हैं, चाहे वे कितने भी लंबे या बड़े हों। कभी-कभी अगर स्थानीय मौसम की ज़रूरत हो, तो वे ढलान वाली छत वाले भी मिल सकते हैं, जैसे कि पश्चिमी तट और पेनिनसुला के सबसे आखिर में। यह गुजरात, उड़ीसा या मध्य भारत के उत्तरी प्रसाद मंदिरों में मिलने वाली चीज़ों से बिल्कुल अलग है। वहाँ हमेशा पिरामिड जैसे ऊपर उठते या टियर वाले सुपरस्ट्रक्चर मिलते हैं जो मुख्य प्रसाद की एक्सियल या ट्रांसवर्स लाइन में मंडप की छतों के ऊपर एक फिनियल में खत्म होते हैं, ये सुपरस्ट्रक्चर घंटासमवरण टाइप के होते हैं, या इसके आसान पिथापीड

टाइप के होते हैं। हालाँकि यह स्कीम सबसे आगे या सबसे बाहरी मंडप के ऊपर से प्रसाद के मुख्य शिखर तक लगातार ऊपर चढ़ते फिनियल की एक अलग स्काई-लाइन देती है, लेकिन यह टावरों का एक भारी क्लस्टर बनाती है और प्रसाद गर्भगृह के ऊपर मुख्य शिखर के सुपरस्ट्रक्चर को भी मंडपों की तुलना में काफी ऊँचा होना ज़रूरी बनाती है। मंडपों की सपाट छत, जो दक्षिणी मंदिर के मुख्य विमान के लिए सिर्फ़ सहायक हैं, हमेशा विमान को स्काई-लाइन के सामने साफ़ खड़ा रहने देती है, जो सबसे ज़रूरी और हावी चीज़ है।

मंडप, जो अंदर से बहुत कम ही स्टाइलर होते हैं, ज़्यादातर खंभों पर टिके होते हैं और किनारों से बंद या खुले होते हैं। बंद होने पर उनमें दीवारों के अंदर की तरफ कई पिलस्टर होते हैं। उनके बाहरी हिस्सों पर मुख्य विमान जैसा बाहरी डिज़ाइन होता है। खंभे ज़्यादातर सिंपल टाइप के होते हैं, जिनके ऊपर और नीचे के हिस्से प्लान में चौकोर होते हैं और बीच के हिस्से-



मंडप अष्टकोणीय या बहुकोणीय होते हैं, जैसा कि दक्षिणी चट्टान-काटे गए गुफा-मंदिरों के मामले में है, जिन्हें इस कारण लोकप्रिय रूप से मंडप-मंदिर कहा जाता है। कोटिकल मंडपम, ओरुकल मंडपम, इदैची मंडपम, आदि नाम इसे इंगित करते हैं। ऊँचे स्तंभों के मामले में मध्य क्षेत्र में अतिरिक्त वर्गाकार खंड भी डाले गए हैं। ऐसे सरल मंडप स्तंभों में विभेदित कैपिटल मोल्डिंग नहीं होती है, बल्कि ऊपरी वर्गाकार खंड के ठीक ऊपर पोतिका या कोरबेल ब्लॉक होता है। कभी-कभी उनमें क्रम की पूरी कैपिटल हो सकती है या, दक्कन के गुफा-मंदिरों के मामले में, वे कुंभावली प्रकार के हो सकते हैं या उनमें पहले उल्लेखित तथाकथित कुशन कैपिटल हो सकते हैं। चालुक्य श्रृंखला के बाद के मंडपों में, उनके वर्गाकार आधार के ऊपर के स्तंभों को एक खराद (लट्ठा) पर घुमाकर घुमावदार और गोल आकृतियों की एक श्रृंखला में प्रस्तुत किया गया है। पल्लव-पांड्य सीरीज़ के बाद के मंडपों में, खंभों पर पोर्ट्रेट मूर्तियां, जानवरों की आकृतियां या कई कॉलम लगे होते हैं जिन्हें अणि-योत्ति-क-कल कहा जाता है।

हालांकि मंडप के प्लान की शुरुआती बातें चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं और नागार्जुनकोंडा के बचे हुए हिस्सों में देखी जा सकती हैं, लेकिन सातवीं सदी के बाद के पत्थर और ईंट के मंदिरों में उनके पैटर्न ज़्यादा साफ़ दिखने लगे। दक्कन में चालुक्य-राष्ट्रकूट सीरीज़ में और उनके बाद आने वाले और उनके बाद बने मंदिरों में, मंडप दो पैटर्न का है। पहले मामले में इसे एक सेंट्रल नेव में बांटा गया है, जिसकी छत ऊंचे खंभों के ऊपर उठी हुई है, या क्लेरेस्टोरी के साथ, और दो साइड के गलियारे हैं जिनकी छतें नीचे हैं। दूसरे पैटर्न में मंडप असल में चौकोर है, जिसे सेंट्रल खंभों की तरह ही छोटे और छोटे खंभों के बाहरी रिंग जोड़कर चारों ओर से एक जगह बनाया गया है। सेंट्रल चौक के कोनों पर चार सेंट्रल खंभे और सेंट्रल खंभों के साथ बराबर दूरी पर, एक्सियल ट्रांसवर्स और डायगोनल अलाइनमेंट में बारह बाहरी खंभे या पिलस्टर लगे होने से, सेंट्रल खंभे के चारों ओर आठ खांचों का एक सिस्टम (कुल नौ खांचों को मिलाकर) मंडप को नवरंग बना देगा। अंदरूनी खंभों के साथ एक सीध में और

कोनों पर एक बाहरी रिंग के तौर पर बीस और खंभों को जोड़ने से

उपहार:

तंजावुर

नटराजपिल्लई उलगनाथन एम.ए.बी.टी.



इसी हिसाब से, खांचों की संख्या पच्चीस तक बढ़ा दी गई और मंडप को बड़ा चौकोर बना दिया गया। पल्लव-पांड्य मंदिरों की सीरीज़, और उनके बाद के समय में दूर दक्षिण में जो चीज़ें, तकनीक और परंपराएँ बनीं, उन्होंने चौड़े फैलाव वाले ऊँचे खंभों की सीधी लाइनों पर ज़ोर देकर चौकोर से लेकर आयताकार आकार तक का विस्तार किया। इन सबका नतीजा सौ या हज़ार खंभों वाले हॉल जैसे कई खंभों वाले मंडप बने।

ग्यारहवीं सदी की शुरुआत तक, गोपुर, या मंज़िल वाले दरवाज़े, जो दक्षिणी मंदिरों की खासियत, सुरक्षा के प्रकार, या घेरे की दीवार को भेदते थे, विमान की तुलना में काफ़ी छोटे बनाए जाते थे। वे असल में प्लान में लंबे, आड़े-तिरछे होते हैं, जिनका एंट्रेंस बीच से होकर जाता है, और एक ही सिंपल या मंज़िल वाला सुपरस्ट्रक्चर होता है, जो स्तूपियों की एक लाइन वाले सला-शिखर से खत्म होता है। तलच्छंदा, या मंज़िल का सिस्टम, जिसमें हर लेवल पर हारा हिस्से होते हैं, लंबे, या आयतसर विमान जैसा ही होता है। मंदिरों की शुरुआती सीरीज़ में ज़्यादातर अल्प- और जाति-विमान ही चलते थे। जाति-विमान वाले बड़े मंदिरों में उनके ले-आउट स्कीम में गोपुर-द्वार, या मेन गेटवे एंट्रेंस शामिल था, जो मेन विमान की तुलना में काफ़ी छोटे साइज़ और ऊंचाई का होता था, जो हमेशा पूरी बनावट पर हावी रहता था। ये छोटे और मीडियम साइज़ के गोपुर एक, दो या तीन मंज़िला होते थे जिन्हें द्वारशोभा, द्वारशाला, द्वारगोपुरा वगैरह कहा जाता था। दसवीं सदी के आखिर से जब बड़े विमान बनने लगे, तो गेटवे भी उसी हिसाब से बड़े होते गए, कई मंज़िला हो गए और उन्हें महादेव, या गोपुरा, या राजगोपुरा कहा जाने लगा। गेटवे की ऊंचाई और साइज़ भी बढ़ता गया, और आखिर में वे मंदिर-कॉम्प्लेक्स की खास बनावट बन गए। यह खासकर उन पुराने मंदिरों में देखा जा सकता था जहाँ मुख्य विमान का पुराना हिस्सा वैसे ही रखा गया था और बाद के समय में इसके चारों ओर प्रकार और गोपुरा के हिस्से जोड़े गए, जैसे चिदंबरम, तिरुवन्नामलाई, मदुरै और

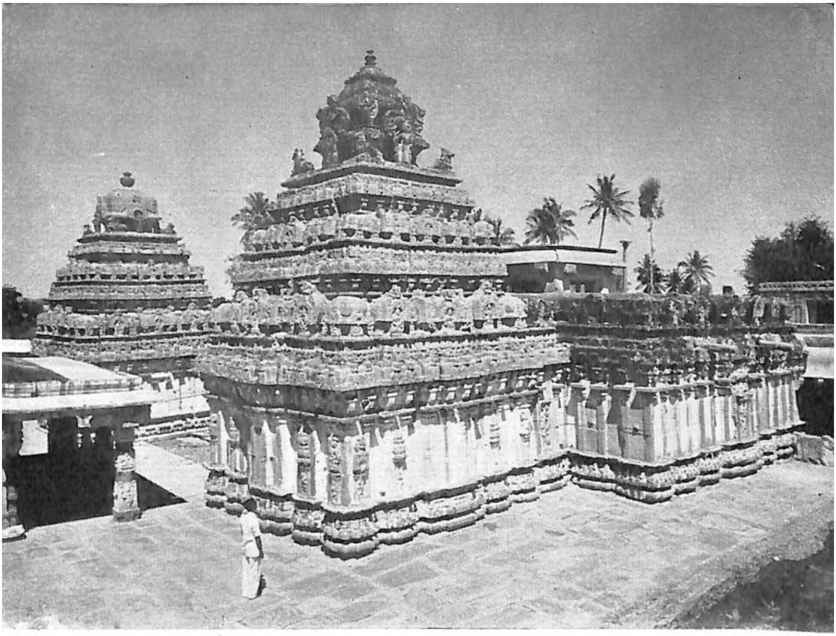

Plate 10. NANDI—BHOGA NANDISVARA TEMPLE (See page 126)

*Plate 11.* Badami—Malegitti Sivalaya *(See page 129)*

श्रीरंगम मंदिर-कॉम्प्लेक्स। इस तरह मुख्य विमान से गोपुर पर ज़ोर दिया गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि पहले के मंदिर-कॉम्प्लेक्स में, जैसे तंजावुर के बृहदीश्वर मंदिर में, स्काईलाइन मुख्य विमान की स्तूप से नीचे उतरकर लगभग उसी समय बने दो सामने वाले गोपुरों के बाहरी हिस्से तक जाती है, जबकि ऊपर बताए गए चार मंदिर-कॉम्प्लेक्स में यह बीच से सबसे बाहरी गोपुर तक ऊपर जाती है।

## अखंड विमान-रूप

बादामी के चालुक्यों ने उसी तरह की चट्टान में अपने पहले खोदे गए गुफा-मंदिरों के ठीक बाद, बहुत ही मज़बूत बलुआ पत्थर से स्ट्रक्चरल मंदिर बनाना शुरू किया, जबकि पल्लवों को एक बहुत ही सख्त और मुश्किल मटीरियल का सामना करना पड़ा - ग्रेनाइट और चार्नोकाइट। कुछ विमान के आकार को छोटी उभरी हुई आकृतियों या पूरे आकार के बाहरी हिस्से के रूप में तराशने के अलावा, उन्होंने सामान्य आकार और अलग-अलग तरह के 3D मोनोलिथिक विमान भी बनाना शुरू कर दिया। यह उस अनुभव का नतीजा था जो उन्हें सख्त पत्थर में गुफा-मंदिरों को काटने में मिला था। कटे हुए विमान मंदिर बनाने का ऐसा पहला काम मामल्ला (नरसिंहवर्मन II-630-668) ने शुरू किया था, और मोनोलिथ को अलग-अलग लेवल पर फिनिश किया गया था। उनके बाद आने वालों, महेंद्रवर्मन II (668-672) और परमेश्वर-वर्मन I (672-700) ने नए विमान बनाए, और शायद राजसिंह (700-728) ने भी, जब उन्होंने स्ट्रक्चरल मंदिर बनाने का चलन शुरू नहीं किया था, अपने शुरुआती सालों में। ऐसे नौ मोनोलिथिक विमान हैं, जिन्हें आम तौर पर रथ कहा जाता है, और लोक परंपरा में हमेशा की तरह पांडव समूह के नाम पर रखे गए हैं, ये सभी महाबलीपुरम तक ही सीमित हैं, जो पूरे होने के अलग-अलग स्टेज में हैं और अलग-अलग रूपों को दिखाते हैं। इनके साथ ही, उसी जगह पर मिले विमानों के आठ छोटे बेस-रिलीफ रिप्रेजेंटेशन और त्रि-मूर्ति गुफा-मंदिर के सामने के हिस्से के पूरे आकार के उदाहरण पर भी विचार करना फायदेमंद होगा, क्योंकि इन्हें एक साथ लेने पर दक्षिणी विमान के अलग-अलग रूप दिखाई देंगे। इत्तेफाक से, ये विमान बनाते हैं।





ये सबसे शुरुआती डिज़ाइन आज के और पहले के ईंट-और-लकड़ी के विमानों से पत्थर पर कॉपी किए गए थे। इस तरह, ये पत्थर की रेप्लिकाएँ दक्षिण भारतीय मंदिर आर्किटेक्चर की

स्टडी के लिए एक अच्छी शुरुआत हो सकती हैं। और भी ज़्यादा इसलिए क्योंकि ये पत्थर पर न सिर्फ़ आम तौर पर अलग-अलग रूपों को बल्कि ईंट-और-लकड़ी के ओरिजिनल के अलग-अलग रूपों के लिए लकड़ी के काम, बांधने, मेटल के काम और सजावटी डिज़ाइन के अलग-अलग हिस्सों को भी, यहाँ तक कि छोटी से छोटी डिटेल में भी, पूरी ईमानदारी से दिखाते हैं।

महाबलीपुरम में अर्जुन की तपस्या के मशहूर सीन में मिला बेस-रिलीफ मिनिएचर, एकताल अल्प-विमान का एक आम रेप्लिका है, जिसमें सभी छह अंग या हिस्से हैं, यानी, अधिष्ठान (ढाला हुआ बेस), पाद, या भित्ति (पिलर या दीवारें), प्रस्तर (कपोत या कॉर्निस वाला एंटेब्लेचर), ग्रीवा (गर्दन या क्लेरेस्टोरी), शिखर (छत), और स्तूप (फिनियल)। बेस से फिनियल तक चार-तरफा और चौकोर होने के कारण, यह नागर क्लास का है और विष्णु को समर्पित है, जिन्हें रिलीफ में सेला के अंदर खड़े दिखाया गया है। लकड़ी के ओरिजिनल के हिस्सों का रिप्रोडक्शन काफी साफ है। रामानुज मंडपम गुफा-मंदिर के सामने के हिस्से के दोनों तरफ मिनिएचर में दो बेस-रिलीफ रेप्लिका भी इसी तरह एकताल, नागर रूप हैं, लेकिन उनका सेला खाली है। उनका अधिष्ठान एक बड़े मोल्डेड प्लेटफॉर्म पर होता है, जो नपा-पीठ बनाता है, जो एक ऑप्शनल हिस्सा होता है, जिसे अक्सर विमान की ऊंचाई बढ़ाने के लिए डिज़ाइन में शामिल किया जाता है।

नकुल-सहदेव रथ के सामने के शिखर आर्च (तोरण-मुख-पट्टी) के अंदर, बेस से टॉप तक हेक्सागोनल सेक्शन वाले एकटल विमान का ऐसा ही बेस-रिलीफ मिनिएचर दिखाया गया है। बेस से टॉप तक एक जैसा पॉलीगोनल प्लान वाला यह विमान, टेक्स्ट में बताए गए दक्षिणी विमानों के प्योर द्रविड़ क्लास जैसा होगा। भीम रथ के वैगन-टॉप शिखर के दो आर्च वाले सिरों के अंदर दो और वैसे ही रिलीफ मिनिएचर एकटल विमानों को दिखाते हैं, जिनमें से हर एक में एक चौकोर बॉडी (आदितल) है, जो एक जैसे अधिष्ठान के ऊपर है, जिसके ऊपर एक गोल ग्रीवा और स्तूपी वाला गोल शिखर है। यह मिक्स्ड वैरायटी के वेसर क्लास को दिखाता है क्योंकि उनके ग्रीवा और शिखर वाले हिस्से गोल हैं, हालांकि आदितल के हिस्से गोल हैं।



नीचे दिए गए हिस्से चौकोर हैं। जो ऊंचे और खंभे जैसे द्वितल, या शुद्ध वेसर विमानों के दो मंज़िला रूप लगते हैं, जो नीचे से ऊपर तक गोल हैं, उन्हें गणेश रथ के वैगन-टॉप शिखर के दोनों सिरों पर एक जैसी छोटी नक्काशी से दिखाया गया है।

महाबलीपुरम का त्रिमूर्ति गुफा-मंदिर महेंद्र या मामल्ला स्टाइल के दूसरे रॉक-कट मंडप-टाइप गुफा-मंदिरों से अलग है, क्योंकि इसमें सिर्फ़ तीन जुड़ी हुई यूनिट्स के विमान- या मंदिर-फ्रंट को बोल्ड रिलीफ में दिखाया गया है, जिसमें सामने वाला मंडप हिस्सा नहीं है। हर यूनिट पूरी तरह से अधिष्ठान के साथ है जिसके सामने सीढ़ियाँ हैं, आदितल में एक खोदा हुआ मंदिर-सेल और बाहरी पिलस्टर, दीवारें और ताखे हैं, और प्रस्तर में एक बड़ा कपोत है जो कुडु आर्च और उसके ऊपर हारा के एलिमेंट से सजा हुआ है, जिस स्टेज पर चट्टान के टॉप पर पहुँचा जाता

है। इन तीन साफ़ तौर पर द्वितल विमान-फ्रंट का ऊपर की ओर बढ़ना पेरेंट चट्टान की कम ऊँचाई की वजह से रुका हुआ है। तीन पश्चिम की ओर वाले मंदिर-सेल की पिछली दीवारों पर मुख्य देवताओं की बेस-रिलीफ हैं। ये दक्षिणी सेल में भक्तों के साथ खड़े विष्णु हैं, बीच वाले सेल में भक्तों के साथ खड़े शिव हैं, और उत्तरी सेल के अंदर भक्तों के साथ ब्रह्मा की जगह खड़े ब्रह्माण्य या ब्रह्मा-सस्ता हैं। यह मंडगपट्ट गुफा-मंदिर के मुख्य देवताओं से थोड़ा अलग है, जो महेंद्र I द्वारा खोदा गया पहला ऐसा पल्लव मंदिर था और जो उनके शिलालेख के अनुसार, त्रिदेवों - विष्णु, शिव और ब्रह्मा को समर्पित था। मंडगपट्ट के ये चिह्न शायद गुफा-मंदिर के तीन आले जैसे मंदिरों की दीवारों पर बनाए गए थे। तीनों विमान-सामने के प्रवेश द्वारों की सुरक्षा आलों के अंदर खुदी हुई उपयुक्त द्वारपाल आकृतियों से होती है। समूह के दक्षिण में चट्टान पर दुर्गा की एक नक्काशी की गई है, जो महिषासुर राक्षस के कटे हुए भैंस के सिर पर खड़ी हैं। यह एक आले के अंदर है जो ढले हुए अधिष्ठान के ऊपर है, जिसके सामने सीढ़ियों की एक उड़ान है, जैसा कि पास के त्रिमूर्ति मंदिर में है। इसका खास दरवाज़ा दो खंभों से बना है, जिन पर एक बड़ा तोरण है,



अधिष्ठान मंच के दोनों चरम कोनों पर ऊंचे भित्ति स्तंभ काटे गए हैं, पूरी योजना द्रौपदी रथ के सामने के उन्नयन की प्रतिकृति प्रतीत होती है, लेकिन शीर्ष पर झोपड़ी जैसी छत नहीं बनी है।

महाबलीपुरम के दक्षिणी छोर पर पाँच रथ अपने आप में एक ग्रुप बनाते हैं। इनमें से द्रौपदी, अर्जुन, भीम और धर्मराज रथ, जो एक लाइन में खड़े हैं, उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली एक व्हेल की पीठ जैसी चट्टान से काटे गए हैं और तीन आसान हिस्सों में बँटे हुए हैं। सबसे उत्तरी हिस्सा, जिसकी ऊँचाई कम है, का इस्तेमाल छोटे द्रौपदी रथ और मंजिला अर्जुन रथ को काटने के लिए किया गया है, और दोनों के लिए उनके अलग-अलग अधिष्ठानों के नीचे एक कॉमन प्लेटफॉर्म या उपपीठ बनाया गया है। बीच का लंबा हिस्सा, जिसमें ऊपर की तरफ काफी हॉरिजॉन्टल रिज है, का इस्तेमाल लंबे भीम रथ के लिए सही तरीके से किया गया है, और दक्षिणी ऊँचा हिस्सा, जिसका बेस भी चौड़ा है, तीन मंजिला धर्मराज रथ के लिए है - सभी पश्चिम की ओर हैं। पांचवां रथ - नकुल-सहदेव रथ जो गजपृष्ठ (हाथी की पीठ) जैसा है और उसके पास हाथी की मूर्ति, दोनों दक्षिण की ओर हैं, उन्हें एक और छोटी चट्टान से तराशा गया है जो द्रौपदी और अर्जुन रथों के पश्चिम में अलग से सामने खड़ी थी। एक और चट्टान जो द्रौपदी और अर्जुन रथों के ठीक पीछे पूरब में खड़ी थी, उसे ज़मीन तक काट दिया गया ताकि इन दोनों रथों के पिछले हिस्से पूरी तरह से दिख सकें। दोनों रथों के बीच में जो बीच का हिस्सा था, उसे रखा गया और पश्चिम की ओर लेटे हुए नंदी की एक बड़ी मूर्ति के रूप में काटा गया। द्रौपदी रथ के ठीक सामने एक छोटी सी सीधी, अलग खड़ी चट्टान, जिससे उसका सामने का नज़ारा छिप जाता, उसे उत्तर की ओर मुंह किए खड़े शेर की एक बड़ी मूर्ति का आकार दिया गया है।

बाकी चार रथों में से, गणेश रथ महाबलीपुरम की मुख्य पहाड़ी के बीच एक पत्थर को काटकर बनाया गया है, और दो पिडारी रथ (उत्तरी और दक्षिणी, इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे गांव की देवी पिडारी के आज के मंदिर के पास हैं) और वलैयानकुट्टई रथ (वलैयानकुट्टई तालाब के सामने खड़ा है) कुछ दूरी पर अलग खड़े पत्थरों को काटकर बनाए गए हैं।



मुख्य पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर।

छोटा द्रौपदी रथ एक बहुत ही साधारण झोपड़ी जैसे विमान का उदाहरण है, जो देखने में चौकोर है, और इसमें विमान के सामान्य छह अंगों में से केवल चार अंग हैं, यानी अधिष्ठान, पाद और भित्ति, शिखर, और स्तूपी, और जिन अंगों की कमी है वे हैं प्रस्तर और ग्रीवा।

यह चतुर्वर्ग रथ कूट-टाइप को दिखाता है, जिसमें चार तरफ़ गुंबद जैसी छत या शिखर होता है, जिसके ऊपर एक ही स्तूप या कलश होता है। नीचे से ऊपर तक चौकोर प्लान होने की वजह से, यह शुद्ध नागर व्यवस्था का उदाहरण है। यह दुर्गा को समर्पित है, जिनकी उभरी हुई खड़ी मूर्ति, सेवकों के साथ, गर्भगृह की पिछली दीवार पर खुदी हुई है। मुख्य दरवाज़े को एक बढ़िया तोरण से सजाया गया है, साथ ही तीन देवकोष्ठ भी हैं, जिनमें तीन तरफ़ की दीवारों पर दुर्गा की उभरी हुई खड़ी मूर्तियाँ भी हैं। दरवाज़े के दोनों तरफ़ द्वारपालिकाएँ हैं, एक-एक कोने के स्तंभ और तोरण स्तंभ के बीच की जगह में, जो प्रवेश द्वार को बनाता है। इस रथ में दूसरे रथों के उलट, मुख- या अर्ध-मंडप नहीं है, और शिखर से निकली हुई नासिकाएँ भी नहीं हैं।

एक द्वितल और इसलिए अष्टांग, या उसी नागर क्रम का अष्टवर्ग विमान, जो आधार से शीर्ष तक चौकोर है, पूर्व की ओर मुख किए हुए अधूरे वलैयानकुट्टई रथ में दिखाया गया है। इसमें एक छोटा अर्ध-मंडप है और आदितल में एक ही दीवार है, इसलिए यह निरंधर है। दोनों तलों के प्रस्तरों में अर्पित हार हैं, जो दूसरे तल के हर्म्य और ऊपर ग्रीवा पर लगाए गए हैं, और हर चेहरे पर कोनों पर चार कर्णकूट और उनके बीच चार शालाओं से बने हैं। ग्रीवा-शिखर क्षेत्र के चारों तरफ नासिकाएँ हैं। आदितल स्तर पर हार अर्ध-मंडप के ऊपर भी फैला हुआ है, जो सभी शुरुआती विमानों की एक खासियत है। मंडप के ऊपर के कूट और शालाएँ हमेशा की तरह आदितल के ऊपर के कूट और शालाओं से छोटे आकार के होते हैं। यह तलच्छंद को और बेहतर बनाने का एक उदाहरण है, जिसमें छह अंगों वाले एकतल रूप के ऊपर एक मंज़िल जोड़ी गई है, जिसे बेस-रिलीफ विमानों से दिखाया गया है, जिन्हें अर्जुन की तपस्या वाली मूर्ति में और फिर रामानुज मंडपम गुफा-मंदिर के सामने के हिस्से के दोनों सिरों पर दिखाया गया है।

जुड़वाँ पिडारी रथ, जो अपने अर्ध-मंडप के साथ उत्तर की ओर हैं, पूरी तरह से नागर शैली के हैं, बस इतना फ़र्क है कि दूसरे तल के ऊपर कोई हारा नहीं है - एक एडवांस्ड फ़ीचर - जो इसे महाबलीपुरम की सीरीज़ का आखिरी रथ बनाता है और इस मामले में आठवीं सदी के बाद के विमानों का अंदाज़ा लगाता है। ग्रीवा-शिखर के चेहरों पर उभरी हुई नासिकाएँ हैं। दोनों रथों की आदितल की दीवारों पर मूर्तियाँ नहीं हैं और वे अधूरे हैं।

अधूरा दक्षिणी पिडारी रथ जो पूरब की ओर है और ज़्यादा पूरा अर्जुन रथ भी इसी तरह दो मंज़िला है, दोनों तलों में चौकोर सेक्शन है और दोनों लेवल पर चार कर्ण-कूट और चार शालाओं के हार लगे हैं। हालांकि, ग्रीवा और शिखर सेक्शन में आठ कोनों वाले हैं, जिससे वे दोनों द्रविड़ ऑर्डर के अष्टांग, निरंकार-धारा विमान बन जाते हैं। ग्रीवा-शिखर के चारों मुख्य किनारों से चार नासिकाएँ निकली हुई हैं। दोनों विमानों में अर्ध-मंडप में आदितल के ऊपर वाले हार से छोटे साइज़ के कूट और शालाएँ हैं। उत्तरी पिडारी रथ की दीवारों पर कोई मूर्तियाँ नहीं हैं, जबकि अर्जुन रथ में आदितल के मुख अधिष्ठान से प्रस्तर तक तीन बार, दोनों कोनों पर और बीच में, ऑफसेट हैं, और उभरी हुई जगहों पर सादे ताख हैं जिनमें बढ़िया मूर्ति-मूर्तियाँ हैं। दूसरे तल की दीवारों पर भी हर तरफ कोने के पिलस्टर के अंदर मूर्तियां हैं, जो सामने हारा के सेंट्रल शाला के दोनों तरफ दिखाई देती हैं। मंडप के सामने के हिस्से के दो पिलर और दो पिलस्टर व्याल पर बने हैं। जैसा कि ऊपर बताए गए सभी मामलों में है, हारा मंडप के ऊपर फैला हुआ है।

धर्मराज रथ तीन मंज़िला है, इसके तल चौकोर हैं और ग्रीवा-शिखर क्षेत्र में आठ कोनों वाला है; लेकिन तीनों मंज़िलें काम करने लायक हैं। इसलिए, विमान को तीन एक-दूसरे के ऊपर रखे गर्भगृहों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जबकि दूसरे रथों और बाद के ज़्यादातर बनावट के उदाहरणों में ऊपरी तल काम नहीं करते लेकिन सिंबॉलिक होते हैं। यह एक सेलुलर तरीके से बनाया गया है जिसमें तीन एक ही जगह पर बनी दीवारों वाले चौकोर आकार हैं जिनकी ऊँचाई बढ़ती जा रही है और जो एक के अंदर एक करके अपने-अपने तलों की ऊँचाई तक पहुँचते हैं।



इस प्रकार बीच में अंतराल छोड़ दिया जाता है। आदितल प्रस्तर की ऊंचाई तक उठने वाली सबसे बाहरी दीवार, हालांकि, केवल चार कोनों के चारों ओर खंडों में मौजूद है, बीच के खुले पक्ष में प्रत्येक में दो स्तंभों और दो भित्तिस्तंभों का एक अग्रभाग है, जो सभी व्याल-आधारित हैं। तीन तलों के प्रस्तर के ऊपर के हार इस प्रकार तल की दीवारों से अलग हो जाते हैं, और इसलिए अनर्पित होते हैं। आदितल के सामने पश्चिम में छोटा मुख-मंडप एक हार धारण करता

है जिसकी संरचना में पहली बार अप्साइडल निड़ा या पंजरा के साथ कूट और शल शामिल हैं। अष्टकोणीय ग्रीवा-शिखर क्षेत्र में चार प्रमुख पक्षों पर चार प्रक्षेपित नासिकाएं हैं। जबकि निचले तल अपने बाहरी भाग के अलावा अधूरे रह जाते हैं, सबसे ऊपरी तल में एक गर्भगृह खोदा गया है जिसमें शिव के सोमस्कंद रूप को स्थापित किया गया है, जिसके पीछे की दीवार पर विष्णु और ब्रह्मा की उपस्थिति में नक्काशी की गई है। एंट्रेंस के दोनों तरफ द्वार-पाल के अलावा, इस तल में, नीचे के दो तल की दीवारों की तरह, इसके आलों में अलग-अलग देवताओं की बढ़िया मूर्तियां हैं, जो शुरुआती पल्लव आइकॉनोग्राफी की अलग-अलग खासियतें दिखाती हैं। शायद इसे मामल्ला ने शुरू किया था, जैसा कि दूसरे तल के पूर्वी हिस्से पर खुदे हुए लेबल से पता चलता है, और इसे परमेश्वर-वर्मन द्वारा सबसे ऊपर वाले तल की पवित्रता के साथ पूरा किया गया, जैसा कि सबसे ऊपर वाले तल पर लगे लेबल से पता चलता है।

भीम और गणेश रथ कोष्ठ या शाला टाइप के आयताकार या आयतसर विमानों को दिखाते हैं, जिनकी छतें वैगन-टॉप (शाला-शिखर) होती हैं और रिज के ऊपर स्तूपियों या कलशों की एक लाइन होती है, जबकि दूसरों में कूट या मिले हुए शिखरों में एक ही कलश होता है। अधूरा भीम रथ धर्मराज रथ की तरह नकली संधार लगता है, क्योंकि इसका आयताकार आदितल एक संकरे मंडप से घिरा है जिसके कोनों पर दीवारें हैं और बीच में दो खंभों और लंबी और छोटी तरफ दो पिलस्टर के खुले हिस्से हैं, खंभे और पिलस्टर व्याल पर आधारित हैं। मंडप के प्रस्तर के ऊपर चारों कोनों पर कूटों का एक हार और दोनों तरफ शाला है। पश्चिम की ओर वाला आयताकार गर्भगृह शायद विष्णु के लेटे हुए रूप के लिए बनाया गया था, जिसका सिर दक्षिण की ओर और पैर उत्तर की ओर हों। आयताकार ग्रीवा, जो एक के रूप में ऊपर उठता है





गर्भगृह की दीवारों का ऊपरी हिस्सा काफी ऊंचा है। ग्रीवा-शिखर के दो लंबे किनारों पर तीन साइज़ की पांच अच्छी तरह से निकली हुई नासिकाएं हैं, बीच वाली सबसे बड़ी, सबसे बाहरी वाली बीच वाली और बीच वाली सबसे छोटी है। तीन बड़ी नासिकाएं पूरी नासिकाएं हैं जिनमें प्रस्तर एलिमेंट है। दो सबसे छोटी नासिकाओं में प्रस्तर हिस्सा नहीं है। हर सर्किट के कूट और शालाओं के बीच हरंतर हिस्सों में बाकी सभी रथों की तुलना में छोटी नासिकाएं हैं। इस तरह यह रथ अकेले ही ग्रंथों में बताए गए नासिकाओं के अलग-अलग रूपों को दिखाता है। दो मंज़िला गणेश रथ निरंधर, एक दीवार वाला है, और इसके सामने एक पतला मुख-मंडप है और यह आदितल के बराबर लंबाई का है। मंडप के छोटे किनारों पर दीवारें हैं और सामने के कोनों पर दीवारें हैं, जिससे सामने एक खुला हिस्सा है, जिसमें व्याल-आधारित खंभे और पिलस्टर हैं। दोनों तलों के ऊपर और मंडप के ऊपर के हारा में सिर्फ़ कूट और शालाएँ हैं। ग्रीवा-शिखर क्षेत्र के दो लंबे किनारों पर तीन उभरी हुई नासिकाएँ हैं, जिनमें से बीच वाली नासिका प्रस्तर तत्व के साथ बड़ी है और दो साइड वाली नासिकाएँ उस तत्व के बिना छोटी हैं। स्तूपियाँ पूरी हैं और विमान के पूरा होने पर रिज के ऊपर बचे हुए हिस्से से काटी जाती हैं,

दूसरे रथों के विपरीत जहाँ वे अलग-अलग जगह होती हैं। शिखर के दो एंड-आर्च के शिखर पर, इसके अलावा, हर एक पर एक त्रिशूल कलश होता है, जो तीन सींग वाले सुला-देव का सिर होता है जिसे सिर्फ़ चेहरे से दिखाया जाता है। भीम रथ के मामले में भी स्तूपियों की तरह ही सुला-देव कलश लगाए गए थे। द्वारपालों के अलावा इस रथ में कोई और मूर्ति नहीं है।

द्वितल और पूरी तरह से अपसाइडल और निरंधर नकुल-सहदेव रथ, द्वयश्र (दो तरफ़ा-अपसाइड वाला) या चाप (धनुष-घुमावदार) रूप को अच्छी तरह से दिखाता है, जिसे गज- या हस्ति-पृष्ठ भी कहा जाता है क्योंकि यह एक खड़े हाथी के पिछले हिस्से जैसा दिखता है, जिसकी एक बड़ी मूर्ति बगल में इस तरह से बनाई गई है जैसे कि समानता पर ज़ोर दिया गया हो। इसके अंडाकार आकार के कारण, हालांकि आगे के सिरे पर कटा हुआ है, इसे वेसर ऑर्डर का भी माना जाता है। इसमें एक छोटा खुला मुख-मंडप है।



सामने, लगभग आदितल के समान चौड़ाई का। दो सामने के स्तंभ व्याल-आधारित हैं और दो पीछे के भित्तिस्तंभ हाथी-आधारित हैं। आदितल के ऊपर प्रस्तर में दो सामने के कोनों पर दो कर्णकूटों के साथ एक हार है, जबकि बगल में और पीछे के शीर्ष के चारों ओर शालाओं की एक पंक्ति है। मंडप के हार में भी केवल कूट और शालाएं हैं। हालाँकि, दूसरे तल के हार में सामने की ओर दो कर्णकूटों के बीच दो निदास या पंजर (जो मुख्य विमान के एकतल लघु रूप हैं) दिखाए गए हैं, जबकि किनारों पर और वक्र के चारों ओर बाकी का हार शालाओं से बना है। ऐसा लगता है कि हारा की बनावट में तीसरी चीज़, पंजरा या निड़ा, को पहली बार यहीं जोड़ा गया था, धर्मराज रथ के मुख-मंडप के ऊपर, जिसका पूरा होना इस अर्द्धवृत्ताकार रथ के लगभग उसी समय हुआ होगा। इस रथ में गर्भगृह के अंदर या पिलस्टर के बीच तल की दीवारों पर कोई मूर्ति नहीं है।

पल्लवों का कटे हुए एक पत्थर के मंदिर बनाने का चलन जल्द ही, न सिर्फ़ दक्षिण भारत में पल्लवों के पड़ोसियों ने, बल्कि बहुत दूर के दूसरे लोगों ने भी अपना लिया। और भारत के अलग-अलग हिस्सों में, पेनिनसुला के सबसे दक्षिणी सिरे पर तिरुनेलवेली ज़िले से लेकर उत्तर में हिमालय की तलहटी में कांगड़ा ज़िले तक; पूरब में बिहार से लेकर पश्चिम में मंदसौर और मध्य भारत में ग्वालियर तक, दक्षिणी और उत्तरी तरह के कई एक पत्थर के मंदिर बनाए गए - ये सब आने वाली दो सदियों में हुआ।1

1 पेनिनसुला की सीमाओं से बाहर, एक पत्थर से बने मंदिरों को तराशने के इस तरीके का फैलाव, हालांकि उत्तरी रेखा-प्रसाद टाइप का था, पश्चिम में आठवीं-नौवीं सदी के धमनार (मंदसौर ज़िले) की लैटेराइट पहाड़ियों में बने सात परिवार मंदिरों वाले वैष्णव मंदिर-कॉम्प्लेक्स के उदाहरण से पता चलता है। उत्तर में मसरूर (कांगड़ा ज़िले) में एक पत्थर से बने मंदिरों के परिवार मंदिरों वाला कॉम्प्लेक्स है, जो ज़मीन के ऊपर बलुआ पत्थर की चट्टान से काटे गए हैं और नौवीं सदी के बताए जाते हैं। मध्य भारत में ग्वालियर की बलुआ पत्थर

की पहाड़ी पर प्रसाद और मुख-मंडप वाला चतुर्भुजाजी मंदिर है, जिसे नौवीं सदी के प्रतिहारों का बताया जाता है, और पूर्व में कोलगोंग (भागलपुर ज़िले) में गंगा में एक चट्टानी द्वीप की चोटी के पास ग्रेनाइट के पत्थर से तराशा गया दसवीं सदी का अधूरा एक पत्थर से बना मंदिर भी है। इसमें उड़ीसा के मंदिरों की तरह आर्किटेक्चरल वॉल-रिलीफ के साथ प्रस्तर और ग्रीवा के साथ एक सला-शिखर है।



पल्लवों के इस शुरुआती काम के बाद, उसी या उसके बाद की सदियों में, पल्लव इलाके तोंडईमंडलम के उत्तर में पूर्वी चालुक्य इलाके में एक ही पत्थर के विमान बनाने की कुछ कोशिशें देखी जा सकती हैं। उन्दावल्ली में, मशहूर चार मंज़िला गुफा-मंदिर अनंत-सयानगुडी के ठीक पश्चिम में, चट्टान के एक उभरे हुए हिस्से को विमान और सामने मंडपों के साथ एक मंदिर के रूप में काटा गया है, जिसमें बाद वाला पूरी तरह से कटा हुआ है और पहले वाले को सामने की ऊंचाई पर बाहर की ओर दिखाया गया है। मुख्य पहाड़ी के सामने की तरफ़, सामने के मंडपों की सबसे ऊपरी लाइन के ऊपर टियर वाला सुपर-स्ट्रक्चर बना हुआ है। अंदर से, यह काम सामने के हॉल और पीछे एक मंदिर-कोठरी के साथ एक खोदे गए गुफा-मंदिर का पूरा रूप दिखाता है। मंडप के सामने वाले हिस्से में दो पिलर और दो पिलस्टर हैं, जो सभी सादे टाइप के हैं। इसके आर्किटेक्चर पर एक अच्छी तरह से बना हुआ कपोत है जिसे कुडू आर्च से सजाया गया है। अंदर मुख-मंडप की साइड की दीवार पर देवकोष्ठ हैं, जो अब खाली हैं। तोरणों से ढके ऐसे ही ताखे अर्ध-मंडप की पिछली दीवार पर साइड-एंट्रेंस के दोनों तरफ मिलते हैं। मंदिर का कोठा खाली है। आस-पास की चट्टानों पर बेस-रिलीफ विमान के छोटे आकार काटे गए हैं, जिनकी संख्या छह है, जो अलग-अलग साइज़ के हैं और अर्जुन की तपस्या रचना में और महाबलीपुरम में रामानुज मंडपम के दोनों तरफ देखे गए मॉडल बेस-रिलीफ से काफी मिलते-जुलते हैं। वे एकतल नागर विमानों की रेप्लिका हैं, जो नीचे से ऊपर तक चौकोर सेक्शन में हैं।

विजयवाड़ा में अक्कन्ना-मदन्ना ग्रुप के ऊपरी गुफा-मंदिर के सामने, एक पत्थर के विमान के बहुत खराब अवशेष मिलते हैं। चेजेरला (गुंटूर ज़िला) में कपोतेश्वर के ऊपरी ईंटों वाले मंदिर के अंदर कई छोटे मंदिर-मॉडल मिलते हैं, जो पत्थर के बने हैं और साफ़ तौर पर मन्नत के हैं। ये पास के कुरनूल ज़िले में सत्यवोलू, महानंदी और आलमपुर के मंदिर के अंदर मिले ऐसे ही मॉडल की याद दिलाते हैं। चेजेरला का एक मॉडल इसलिए दिलचस्प है क्योंकि इसमें एक पूरी तरह से अलग खड़ा हुआ मॉडल दिखाया गया है।

मंदिर के सामने खंभों का जोड़ा। जबकि बादामी के समकालीन पश्चिमी चालुक्य, जो

स्थापत्य मूर्तिकला

अपने स्ट्रक्चरल पत्थर के मंदिरों के साथ आगे बढ़ रहे थे, उन्होंने पल्लवों के नक्काशीदार एक पत्थर के तरीके को नहीं अपनाया, राष्ट्र-कूट, जिन्होंने जल्द ही अपने ही क्षेत्र में चालुक्यों की जगह ले ली, ने इसे पूरे जोश के साथ अपनाया और दूसरों के बीच, एलोरा में एक दक्षिणी मंदिर परिसर का सबसे बड़ा और महान एक पत्थर का वर्शन बनाया जिसे कैलाश के नाम से जाना जाता है।

राष्ट्रकूट कृष्ण I (756-775) की यह रचना काफी अनोखी है। एक चुने हुए इलाके के चारों ओर ढलान वाली पहाड़ी में चट्टान के बेस तक राइट एंगल पर सीधी खाई खोदकर, एक आयताकार बीच का हिस्सा (लगभग 60m × 30m) अलग किया गया था और उसके सामने, चौड़ी सामने की खाई के आगे, एक और खाई ने एक पतली, आड़ी आयताकार चीज़ को अलग किया जो दीवार की तरह फैली हुई थी। बड़ी आयताकार चीज़, जो अगल-बगल से ज़्यादा आगे से पीछे तक लंबी थी, मुख्य विमान और उसके एक्सियल मंडपों के कॉम्प्लेक्स को तराशने के लिए मटीरियल देती थी, साथ ही सामने दोनों तरफ दो ऊँचे और मज़बूत अलग-अलग खड़े मोनोलिथिक पिलर भी थे, जो चारों तरफ खाइयों से बने एक खुले आंगन से घिरे थे। सामने का फोर-कोर्ट, जिसका माप 90m × 60m था, किनारों की तुलना में चौड़ा काटा गया था और इसी के दोनों किनारों पर दो मोनोलिथिक अलग-अलग खड़े पिलर खुदे हुए पाए गए हैं। सामने की तरफ़ काफ़ी पतली, आड़ी-तिरछी, आयताकार चीज़ से सामने के गोपुर-एंट्रेंस को तराशने के लिए मटीरियल मिला, जिसके दोनों तरफ़ प्रकार की दीवारों के दो विंग थे। गोपुर दो मंज़िला है, जिसके ऊपर एक शाला-शिखर है और उसके निचले हिस्से से एक रास्ता बना है ताकि सामने के आँगन और मुख्य विमान कॉम्प्लेक्स के बेस के चारों ओर चक्कर लगाने वाले रास्ते तक पहुँचा जा सके। ऊपरी मंज़िल नंदी-मंडप के फ़र्श से जुड़ी हुई है। इसे भी दो मंज़िला स्ट्रक्चर के तौर पर माना जाता है, जिसमें निचली मंज़िल ठोस और काम न करने वाली है और सिर्फ़ एक ऊँचे प्लेटफ़ॉर्म के तौर पर काम करती है, जबकि आदितल के सभी आर्किटेक्चरल फ़ीचर्स के बाहरी निशान हैं, और ऊपरी मंज़िल काम करने वाली है, जिसमें अंदर नंदी हैं। मंदिर का मुख्य हिस्सा आगे की तरफ़ है, जिसमें असल में एक विमान है जिसमें एक अंतराल, या अर्ध-मंडप, और एक बंद गर्भगृह है।



महा-मंडप सामने की तरफ़ है। पूरी एक्सियल सीरीज़ एक बहुत सजे हुए चबूतरे पर बनी है, जिसका सबसे ऊपरी प्लैटफ़ॉर्म, मानो हाथियों, शेरों और कई पौराणिक जानवरों के साफ़ नक्काशी वाले आगे के हिस्सों की एक फ़्रीज़ पर टिका हुआ है। महा-मंडप अपने दो पिछले कोनों पर कूट टाइप के द्वितल विमानों से घिरा है, और इसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की तरफ़ बीच में तीन बाहर निकले हुए पोर्च हैं, जिन पर गोपुरम जैसे एंट्रेंस दिखाने के लिए बड़े और ज़्यादा ऊँचे शाला बने हैं। मंडप का ऊपरी हिस्सा लगभग सपाट है, जिसके बीच में एक

बड़ा, कई पंखुड़ियों वाला कमल है जो कलश के बेस के चारों ओर है। महा-मंडप और अंतराल के पीछे मुख्य विमान है, इसका मोल्डेड चौकोर अधिष्ठान नीचे वाले प्लैटफ़ॉर्म से छोटी भुजाओं वाला है, जो उपपीठ के बीच में है, जबकि प्लैटफ़ॉर्म के किनारे पर पाँच अलग-अलग सब-मंदिर काटे गए हैं। उपपीठ के तीन मुख्य किनारों पर तीन छोटे विमान द्वितल शाला विमान हैं, जबकि पीछे के कोनों पर दो त्रितल कूट विमान हैं। ये पांच, महा-मंडप के पिछले कोनों को घेरे हुए दो नकली द्वितल कूट विमानों और सामने नंदी मंदिर के साथ मिलकर, मुख्य विमान के चारों ओर आठ सहायक देवताओं के अष्ट-परिवार या मंदिरों का पूरा समूह बनाते हैं, यह कॉन्सेप्ट सुदूर दक्षिण के स्ट्रक्चरल मंदिरों में पहले से ही विकसित हो चुका है। मुख्य विमान चार मंज़िला (चतुष्टल) है। आदितल के ऊपर सुपरस्ट्रक्चर का सबसे निचला तल, जिसमें गर्भगृह है, अंतराल के ऊपर सामने की ओर निकला हुआ है, जिससे एक त्रिकोणीय आकार का उभार बनता है जिसे शुकनासिका कहा जाता है, यह चालुक्य सीरीज़ के दक्षिणी मंदिरों के साथ-साथ उनके सभी उत्तरी प्रसाद मंदिरों की एक खासियत है। हालांकि तल चौकोर हैं, ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं, जिससे विमान मिक्स्ड टाइप के द्रविड़ क्लास के हिसाब से है। स्तूप, जो अब गायब है, मोनोलिथ का हिस्सा नहीं था। सबसे ऊपर वाले तल के चारों कोनों पर, जिसमें हार नहीं है, चार बैल रखे हैं, जिन्हें जानकार लंचन कहा जाता है। यह स्ट्रक्चर अलग-अलग तरह की मूर्तियों से भरा हुआ है। इसके पीछे पहाड़ी पर एक अधूरे साला-टाइप के बचे हुए हिस्से हैं, जो उसी तरह मोनोलिथिक हैं और उसी तरह के हैं।



पल्लवों के भीम और गणेश रथ।

एलोरा में गुफा 15 के सामने राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग का लिखा हुआ एक पत्थर का नंदी-मंडप, शायद इस इलाके में थोड़ा पहले बना एक पत्थर का मंडप है।

कैलाश विमान का छोटा और बहुत बाद का जैन मोनोलिथिक वर्शन, जो एलोरा में राष्ट्रकूट काल का है, चौमुख या चतुर्मुख विमान है जिसे आम तौर पर छोटा कैलाश कहा जाता है, जो गुफा 33 के आगे के आंगन में है। यह एक त्रितल विमान है जिसमें चौकोर तल हैं और आदितल के चारों तरफ बाहर निकले हुए, बरामदे जैसे दरवाज़े हैं। स्तंभ गर्भगृह के फर्श के बीच में रखा है और चारों तरफ से दरवाजों से दिखाई देता है। बरामदे के ऊपरी हिस्से में हारा के आम सला के बजाय पंजरा जैसी नासिकाएं हैं। कोनों पर आम कर्णकूट हैं। दूसरे तल में चार बाहर निकली हुई नासिकाएं हैं और कोई कर्णकूट नहीं है। सबसे ऊपरी तल में कोई हारा नहीं है, लेकिन कोनों पर चार शेर, पहचाने जाने वाले लंछन हैं। ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं, जिससे विमान द्रविड़ मिक्स्ड किस्म का बन जाता है।

इन पल्लव और राष्ट्रकूट रचनाओं के मुकाबले, इस सीरीज़ में दूर दक्षिण के आज के पांड्यों का योगदान कलुगुमलाई (तिरुनेलवेली ज़िले) में बहुत खूबसूरती से नक्काशी किया गया

वेट्टुवनकोविल मोनोलिथ है। इसे लगभग 800 A.D. का माना जा सकता है, अगर थोड़ा पहले का नहीं। खड़ी चट्टानों के अलग-अलग हिस्सों या सख्त चट्टानों के अलग-अलग खड़े पत्थरों को अलग-अलग काटने या तराशने की पल्लव तकनीक के उलट, पांड्यों ने, हालांकि वे हमेशा सख्त पत्थरों में रॉक आर्किटेक्चर की पल्लव परंपरा को फॉलो करते थे, इस मोनोलिथ को बनाने में एलोरा की तरह राष्ट्रकूटों की ट्रेंचिंग तकनीक को अपनाया। पहाड़ी ढलान पर जमे हुए हिस्से से काटे गए द्वितल विमान और उसके अर्ध-मंडप दोनों अधूरे हैं, लेकिन तैयार ऊपरी हिस्सों में बहुत अच्छी कारीगरी और कला दिखती है और उनमें कुछ बेहतरीन मूर्तियां हैं। तल प्लान में चौकोर हैं और ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं। इस तरह यह द्रविड़ ऑर्डर में मिसरा टाइप का एक उदाहरण होगा। ग्रीवा के बेस के चारों ओर सबसे ऊपर वाले ताल के कोनों पर चार नंदी बताते हैं



मंदिर के शिव को समर्पित होने की तारीख और समय। दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और पूर्व नासिका के सामने, ग्रीवा-शिखर के सामने, दक्षिणामूर्ति, विष्णु, ब्रह्मा और शिव की मूर्तियों से भी तारीख का पता चलता है, यह एक ऐसी खासियत है जो नौवीं सदी के बाद से लगातार बनी रही।

## अध्याय VI

## संरचनात्मक पत्थर मंदिर-प्रारंभिक चरण

### पल्लव-पांड्या श्रृंखला

बादामी के चालुक्यों के साथ, कांची के पल्लवों के साथ पत्थर के मंदिर बनाना लगभग साथ ही शुरू हो गया था, अगर उनके कटे हुए गुफा-मंदिरों के बाद नहीं, तो यह कहा जा सकता है कि नरसिंहवर्मन II राजसिंह (700-728) के समय से उनके कटे हुए मोनोलिथ के बाद स्ट्रक्चरल ट्रेंड शुरू हुआ। अपने चालुक्य विरोधियों के साथ कड़े मुकाबले में, जिसने हमेशा आर्किटेक्चर में खास कामयाबी की चाहत को बढ़ावा दिया था और ग्रेनाइट, नीस और चारनोकाइट जैसी बहुत सख्त देसी चट्टानों की खुदाई और साइज़िंग में तुलनात्मक रूप से ज़्यादा मुश्किल का सामना करना पड़ा, जबकि चालुक्यों ने नरम बलुआ पत्थर का आसानी से और फ़ायदे से इस्तेमाल किया था। राजसिंह पल्लव ने, मानो, तोंडईमंडलम की चट्टानों से अलग-अलग तरह के पत्थरों के साथ एक्सपेरिमेंट किया। इसके अलावा, 'रॉक आर्किटेक्चर' का मतलब था कि मंदिर सिर्फ़ उन्हीं जगहों पर बनाए जाएं जहां पहाड़ियां या चट्टानें हों। ऐसे मंदिर कहीं और नहीं बनाए जा सकते थे, जैसे पल्लवों की राजधानी कांची में। अलग-अलग तरह के पत्थरों के साथ उनके एक्सपेरिमेंट शोर मंदिर में इस्तेमाल होने वाले काले-सख्त

लेप्टिनाइट, मुकुंदनयनार मंदिर में इस्तेमाल होने वाले सख्त लाल नाइस, और महाबलीपुरम के ओलक्कन-नेस्वर मंदिर में इस्तेमाल होने वाले थोड़े नरम भूरे-सफेद ग्रेनाइट, और पनमलाई के तालागिरीश्वर मंदिर के सख्त गुलाबी नाइस से देखे जा सकते हैं। यह देखकर कि इन सख्त पत्थरों पर कंस्ट्रक्शन मुश्किल और टाइम लेने वाला था, और अपने दुश्मनों से आगे निकलने के लिए, अगर नहीं तो उनसे मुकाबला करने के लिए, स्पीड बढ़ाने और उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए, राजसिंह ने आखिरकार सॉफ्ट-स्टोन ट्रेडिशन का सहारा लिया और उन्हें मोटे, भुरभुरे, लोकल सैंडस्टोन इस्तेमाल करने पड़े।



उनकी राजधानी के मंदिरों के लिए यह बहुत अच्छी क्वालिटी नहीं थी। ऐसे बलुआ पत्थर के कंस्ट्रक्शन में भी, उनके पुरखों द्वारा शुरू की गई परंपरा, कठोर पत्थर का इस्तेमाल पूरी तरह से नहीं छोड़ा गया था। इसका इस्तेमाल स्लैब के रूप में और बेसमेंट या अधिष्ठान, यानी उपन और पट्टिका के हिस्सों के निचले और ऊपरी हिस्सों के रूप में किया जाता था। कांची में महान कैलाशनाथ मंदिर और उसी जगह के दूसरे मंदिर इसी तरह के हैं। हालांकि इस मामले में पल्लव चालुक्यों से बहुत पीछे थे, लेकिन उनके मोनोलिथिक या कटे हुए रथ के बीच के हिस्से ने उन्हें निश्चित रूप से फायदे दिए, क्योंकि इससे उन्हें रूप, अनुपात और डिज़ाइन के बेहतर आइडिया मिले, जिससे उन्हें अपनी स्ट्रक्चरल इमारतों को चालुक्य स्ट्रक्चरल क्रिएशन की तुलना में ज़्यादा सुंदर, बेहतर बनावट और साइज़ वाला बनाने में मदद मिली।

महाबलीपुरम का शोर मंदिर तीन मंदिरों का एक कॉम्प्लेक्स है, जिसमें एक्स्ट्रा मंडप, प्रकार-घेरे और गोपुर-एंट्रेंस हैं। तीनों में से, पूरब में समुद्र की तरफ वाला बड़ा विमान, जिसे क्षत्रियसिंहेश्वर कहते हैं, और उसके पीछे पश्चिम में गाँव की तरफ वाला छोटा विमान, जिसे राजसिंहेश्वर कहते हैं, दोनों ही शिव को समर्पित हैं और उनके बीच बिना किसी सुपरस्ट्रक्चर वाला एक रेक्टेंगुलर मंडप-मंदिर है - जिसे नरपतिसिंह-पल्लव विष्णुगृह कहते हैं। यह एक नीची चट्टानी चट्टान पर पहले से मौजूद लेटे हुए विष्णु के ऊपर बना है। स्ट्रक्चर पर लिखे ये सभी नाम कॉम्प्लेक्स के बनाने वाले राजसिंह के टाइटल हैं। एक्सियल मंडप और गोपुर छोटे विमान के सामने बने हैं, और पूरा एक कॉमन प्रकार की दीवार से घिरा हुआ है। बड़े पूर्वी विमान का अपना एक और प्रकार है, जो इसे पूरब, दक्षिण और उत्तर में करीब से घेरे हुए है, और पश्चिम को खुला छोड़ देता है। छोटा विमान तीन मंज़िला है, प्लान में पूरा चौकोर है, लेकिन ऊपर आठ कोनों वाला ग्रीवा, शिखर और स्तूप है। जबकि आदितल के ऊपर हारा एलिमेंट नहीं है, इसमें, ऊपर वाले तल की तरह, कोनों पर शंख बजाते हुए चार बैठे हुए भूत हैं। हारा एलिमेंट दूसरे तल के चारों तरफ और फिर आदितल के सामने अर्ध-मंडप के ऊपर पाए जाते हैं। भूत रूप हमेशा नंदी या बैल की जगह लेते हैं।

*Plate 12.* PATTADAKKAL—MALLIKARJUNA TEMPLE *(See page 133)*

*Plate 13.* THANJAVUR—BRIHADISVARA VIMANA *(See page 137)*

बाद के शिव मंदिरों के सबसे ऊपरी तल पर पाए जाते हैं। तल समानुपातिक रूप से ऊँचे हैं, सबसे ऊपरी तल नीचे के तल के हार तत्वों के ऊपर ऊँचा और साफ़ दिखता है, आठ कोनों वाले ग्रीवा और शिखर के ऊपर स्तूप पॉलिश किए हुए काले बेसाल्ट से बने हैं। दीवारों पर बने स्तंभों पर खड़े शेरों के बेस हैं, जैसा कि राजसिंह मंदिरों की खासियत है। चार मंज़िला पूर्वी विमान भी ग्रीवा तक चौकोर प्लान का है, जो ऊपर शिखर और बेसाल्ट स्तूप के साथ आठ कोनों वाला है। कूट और शालाओं के हार दूसरे और तीसरे तल के टॉप तक ही सीमित हैं, साथ ही आदितल के सामने अर्ध-मंडप के टॉप तक भी हैं, जिसके चारों कोनों पर बैठे हुए शेरों की आकृतियाँ हैं। सबसे ऊपरी तल पर चार बैठे हुए भूत शंख बजा रहे हैं, जो छोटे विमान की तरह ही शिव मंदिर का प्रतीक हैं। इस विमान के लिए विशेष रूप से बहुत पास-पास स्थापित प्रकार आदितल से कम ऊँचाई का है, और इसके कोनों पर कर्णकूट और भुजाओं की लंबाई पर शालाएँ हैं। पश्चिम में पीछे का अंतर आंशिक रूप से उसी स्तर पर विष्णु मंडप के शीर्ष पर हार तत्वों द्वारा भरा गया है। इस प्रकार के पूर्वी लंबाई पर समुद्र की ओर प्रवेश द्वार पर केंद्रीय शाला को द्वारशाला या छोटे गोपुर योजना का अनुकरण करने के लिए बाकी की तुलना में बड़ा बनाया गया है। आनुपातिक रूप से ऊँची मंजिलें और सबसे निचले और सबसे ऊपरी तल पर हार तत्वों को हटाना इस क्षीण संरचना को एक अनुग्रह और आकर्षण प्रदान करता है, जबकि आदितल के चारों ओर कम ऊँचाई का पास-पास स्थापित प्रकार, जिसके ऊपर हार तत्वों के साथ, बाहरी रूप से एक अतिरिक्त तल का आभास देता है दोनों विमान पवित्र जगहों की पिछली दीवारों पर आम सोमस्कंद के उभरे हुए पैनल मिलते हैं। इसके अलावा, गर्भगृह के फ़र्श के बीच में बिना आम आधार के सोलह कोनों वाला, नालीदार, पॉलिश किया हुआ, बेसाल्ट का लिंग भी है। हालांकि इस मंदिर-कॉम्प्लेक्स की दीवारों पर बनी मूर्तियां समुद्र से आने वाली नमी और खारी हवाओं से बहुत ज़्यादा घिस गई हैं, लेकिन आर्किटेक्चर का अनुपात और बनावट, और समुद्र के किनारे की प्राकृतिक सेटिंग इस इमारत को भारत के सबसे बेहतरीन स्मारकों में से एक बनाती है। आम तौर पर खड़े शेर वाले पिलस्टर के अलावा,





बड़ा विमान अपनी दीवारों पर और अपने प्रकार के अन्य प्रकारों पर दिखाता है, जिनके आधार में हाथी, मेढ़ा, नाग, नागदेव और भूत रूप हैं।

लाइट-हाउस पहाड़ी के ऊपर ओलक्कन्नेश्वर स्ट्रक्चर, जिसमें उसके असली सुपरस्ट्रक्चरल तल नहीं हैं और सिर्फ़ उसके आदितल और अर्ध-मंडप का बाहरी आवरण ही मौजूद है (क्योंकि 1900 में मौजूदा लाइट-हाउस बनने से पहले इसे पहले लाइट-हाउस के तौर पर

बदला गया था और इस्तेमाल किया गया था), बाहरी दीवारों की मूर्तियां, ताखे और खंभे वैसे ही हैं। इसकी सबसे दिलचस्प बात यह है कि दक्षिण की तरफ बीच वाले ताखे में दक्षिणामूर्ति का निशान है, जो बाद में बने दक्षिणी विमानों की इस आम बात की ओर इशारा करता है।

पनमलाई रॉक (साउथ आर्कोट डिस्ट्रिक्ट) पर उसी गुलाबी-लाल हार्ड ग्रेनाइट से बने तलगिरीश्वर मंदिर का प्लान दिलचस्प है। यह असल में अपने बेस और तलों पर चौकोर है, लेकिन इसके पूरब की ओर वाले आदितल में छोटे आयताकार मंदिर हैं, जिनके दक्षिण, पश्चिम और उत्तरी किनारों के बीच में अधिष्ठान के संबंधित ऑफसेट एक्सटेंशन पर सेल लगे हैं। पूरब की ओर संबंधित आयताकार अटैचमेंट, जिसमें से होकर जाने वाला रास्ता है, मुख्य गर्भगृह का अंतराल एंट्रेंस बनाता है। पूरब की ओर वाले दो साइड के मंदिर और पश्चिम की ओर वाला पिछला मंदिर, मुख्य गर्भगृह की तरह ही शिव को समर्पित हैं। मुख्य गर्भगृह में एक सोमस्कंद रिलीफ पैनल है जो इसकी पिछली दीवार पर ऊंचे एक खास ताक के अंदर है और फ्लूटेड लिंग स्टेल के ऊपर दिखाई देता है, जिसे गर्भगृह के फर्श पर बिना पीठा के लगाया गया है, दूसरे राजसिंह मंदिरों के विपरीत जहां लिंग लगभग सोमस्कंद पैनल को छिपा देता है, जो पिछली दीवार के बीच में लगा होता है। विमान चार मंज़िला है, और दो मंज़िला आयताकार साइड-मंदिरों के शाला सुपरस्ट्रक्चर को कर्णकूट के हारा और आदितल के दूसरे हिस्सों में बड़ी कुशलता से मिलाया गया है। सबसे ऊपरी मंज़िल को छोड़कर बाकी सभी ऊपरी मंज़िल पर हारा फिर से मिलता है। ग्रीवा और शिखर, जो ईंट और गारे से बने मॉडर्न रेस्टोरेशन हैं, ओरिजिनल प्लान के अनुसार, आठ कोनों वाले हैं। आदितल और उससे जुड़े मंदिरों की दीवारों के कोनों पर राजसिंह मंदिरों की खासियत वाले बोल्ड उभरे हुए व्याल पिलस्टर लगे हैं।



ऊपर वाले तल के कोनों पर भूत की आकृतियाँ हैं। इसके अलावा, दीवारों पर मुकुंदनयनार मंदिरों जैसी मूर्तियाँ नहीं हैं, ज़ाहिर है कि इसे बनाने में इस्तेमाल होने वाला मटीरियल सख्त है। अंतराल की अंदर की दीवारों पर सिर्फ़ द्वारपाल और ब्रह्मा और विष्णु की मूर्तियाँ हैं जो असली त्रिमूर्ति कॉन्सेप्ट को बनाए रखती हैं, लेकिन ब्रह्मा और विष्णु को कम जगह दी गई है। उत्तरी बाहरी मंदिर में पल्लव म्यूरल पेंटिंग के बचे हुए हिस्से हैं जिसमें शिव और पार्वती को नाचते हुए दिखाया गया है।

महाबलीपुरम का मुकुंदनयनार मंदिर भी लाल ग्रेनाइट से बना है। यह ज़्यादा सादा और गंभीर बनावट वाला है, जिसमें एक द्वितल विमान है, जो नीचे से चौकोर है लेकिन आठ कोनों वाला ग्रीवा-शिखर है, और इसलिए यह द्रविड़ है। इसमें सामने विमान और मंडप हैं। शिखर और स्तूप के ऊपरी हिस्से खो गए हैं। दीवारें सादी हैं, खंभे सादे हैं, बेढंगे आकार के हैं और उनमें व्याल बेस नहीं हैं। इसमें गर्भगृह की पिछली दीवार पर मुख्य देवता के रूप में सोमस्कंद की नक्काशी है।

कांची में कैलाशनाथ कॉम्प्लेक्स राजा-सिंह और उनके बेटे महेंद्र III का मिला-जुला काम है।

मुख्य विमान, राजसिंहेश्वर (जिसे अब कैलाशनाथ कहा जाता है) जो पूरब की ओर है, चार मंज़िला है, और असल में ग्रीवा तक एक चौकोर बनावट है, जो और ऊपर का शिखर आठ कोनों वाला है। आदितल दोहरी दीवारों वाला है और इसका ढाला हुआ बेस चारों तरफ और चारों कोनों पर खास तौर पर झुका हुआ है - क्योंकि उनके ऊपर छोटे मंदिर हैं जिनमें तहखाना है, जो मुख्य आदितल की बाहरी दीवार से सटे हुए हैं और उसमें शामिल हैं। यह पनमलाई मंदिर में पाए जाने वाले फीचर का विस्तार है। जबकि चारों कोनों पर अधिष्ठान के ऑफसेट चौकोर हैं और उनमें चार तरफ वाले कूट शिखरों के साथ चौकोर प्लान के छोटे दो मंज़िला विमान हैं, चारों तरफ वाले आयताकार हैं और उनमें दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में शाला शिखरों के साथ आयताकार प्लान के छोटे द्वितल विमान हैं। पूरब की तरफ़ वाला भी आयताकार है, जिसमें शाला का ऊपरी हिस्सा है, जिसमें सेला की जगह एक रास्ता है और यह मुख्य पवित्र जगह तक जाने के लिए अंतराल रास्ते का काम करता है। आस-पास के मंदिरों के कूट और शाला-शिखर बड़ी चतुराई से अंदर की ओर हैं।





पनमलाई की तरह आदितल की बाहरी दीवार के प्रस्तर के ऊपर हारा स्कीम में शामिल किया गया है। इन सटे हुए विमानों के निचले मंज़िल के कमरों में शिव के रूप हैं। दक्षिण-पूर्व, दक्षिण, उत्तर और उत्तर-पूर्व में सटे हुए विमान मुख्य गर्भगृह की तरह पूर्व की ओर हैं, जबकि दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में पश्चिम की ओर हैं। मुख्य गर्भगृह में एक बड़ा, सोलह-मुखी, पॉलिश किया हुआ, बेसाल्ट लिंग है, जिसके साथ एक विशाल गोलाकार लिंग-पीठ है जो गर्भगृह के लगभग पूरे फर्श पर फैला हुआ है। पीछे की दीवार पर, एक खास जगह पर, हमेशा की तरह सोमस्कंद पैनल खुदा हुआ है, जिसमें शिव और उमा, छोटे स्कंद को उमा की गोद में बैठाए हुए हैं और ब्रह्मा और विष्णु दोनों तरफ पीछे खड़े हैं। गर्भगृह की अंदर की दीवार सादी और चौकोर है, जबकि बाहरी दीवार, जो आस-पास के विमानों के बीच के हिस्सों में दिखाई देती है, उस पर देवी-देवताओं की नक्काशी की गई है, जैसा कि आस-पास के स्ट्रक्चर की दीवारों पर भी है। अंदर की दो दीवारों के बीच एक पतला, ढका हुआ, चक्कर लगाने वाला रास्ता है। सुपरस्ट्रक्चरल तल आदितल की दो बड़ी दीवारों के ऊपर स्लैब के पुल पर बने हैं। दोहरी दीवारें और किनारों और कोनों पर छोटे विमानों द्वारा अतिरिक्त सहारा देना, ज़ाहिर है, इस विमान के सुपरस्ट्रक्चर के वज़न को सहारा देने के लिए सही है, जो उस समय का सबसे बड़ा है, और साथ ही ऊंचाई के अनुपात को एक अच्छा बेस और इमारत को एक संतुलित अनुपात देने के लिए भी। जबकि आदितल-प्रस्तर के ऊपर हारा एलिमेंट्स में पंजर नहीं हैं, जो कोने के कूट और सटे हुए मंदिरों के साइड वाले सला शिखरों के अलावा, आदितल की बाहरी दीवार के बीच के हिस्सों पर सला रखता है, दूसरे तल के हारा में कूट, सला और पंजर की पूरी रेंज है। तीसरी मंज़िल के ऊपर फिर से कूट और सला का एक हारा है, और चौथी मंज़िल के ऊपर चारों कोनों पर सिर्फ़ चार नंदी हैं। आदितल की दीवार और सटे हुए मंदिरों को कंधा देने वाले पिलस्टर्स में राजसिंह मंदिरों की खासियत, पीछे की ओर व्याल

बेस हैं। सामने एक अलग कई खंभों वाला आयताकार मंडप है, जो अपने उत्तर-दक्षिण एक्सिस पर लंबा है और इसके कैंटनिंग पिलस्टर्स व्याल-बेस्ड हैं, जबकि बाकी हैं



आधार और शीर्षस्थ वर्गाकार खंडों और बीच-बीच में अष्टकोणीय पट्टियों वाला सादे प्रकार का। पूरा क्षेत्र एक प्रकार से घिरा हुआ है जिसके पूर्व की ओर बीच में एक अंतराल है और चारों ओर एक खुला प्रांगण है। बड़ा पूर्वी द्वार एक उचित आकार के आयताकार द्वितल शाला-प्रकार के विमान से घिरा है, जिसमें दूर से देखने पर अर्धमंडप गोपुर जैसा प्रतीत होता है। इसके दोनों तल हार से रहित हैं। राजसिंह के पुत्र के नाम पर महेंद्रवर्मेश्वर कहलाने वाले इस विमान के गर्भगृह में सामान्य नालीदार लिंग और सोमस्कंद पैनल हैं, इसके अलावा अर्धमंडप की भीतरी दीवार पर ब्रह्मा और विष्णु की मूर्तियां हैं, साथ ही बाहरी दीवार और देवकोष्ठों में अन्य मूर्तियां भी हैं। छावनी के स्तंभ ऊंचे व्याल-आधारित हैं। प्रकार का एक और प्रवेश द्वार पश्चिम में बीच में यह साइज़ में छोटा है। प्रकार के अंदर के हिस्से के चारों ओर अट्ठावन छोटे द्वितल विमानों की एक लाइन बनी हुई है, जिनमें से दो को छोड़कर बाकी सभी चौकोर और कूट टाइप के हैं। ये सभी शिव को समर्पित हैं, सिवाय उन दो के जो आयताकार हैं और मुख्य राजसिंहेश्वर गर्भगृह के उत्तर और दक्षिण की ओर हैं और जिनमें विष्णु और ब्रह्मा की मूर्तियों के समूह हैं जो क्रमशः दक्षिण और उत्तर की ओर हैं। लेकिन परिवार मंदिरों के मालिका के कूट विमानों में, पूर्व की ओर वाले पश्चिम की ओर, पश्चिम की ओर वाले पूर्व की ओर, जबकि उत्तर और दक्षिण दोनों की ओर वाले पूर्व की ओर हैं। इनमें से कई के सेल में सादी दीवारों पर पुरानी पेंटिंग या उभरी हुई दीवारों पर पेंट किए गए प्लास्टर के निशान हैं। मालिका के इन परिवार मंदिरों की बाहरी दीवारों पर अलग-अलग तरह की मूर्तियां हैं, शैव और वैष्णव दोनों तरह की, जिनमें अलग-अलग तरह की मूर्तियां हैं, जिससे यह मंदिर परिसर मूर्तियों और प्लास्टिक आर्ट का एक असली म्यूज़ियम बन जाता है। मूर्तियों में दिक्पाल और गणेश शामिल हैं, जो पल्लव मंदिरों में पहली बार दिखाई देते हैं, साथ ही सप्तमातृका समूह, चंदेसा और दूसरे परिवार देवता भी हैं। महेंद्रवर्णेश्वर के सामने एक छोटा सा घेरा है जिसके साथ एक छोटा गोपुर या द्वारशाला है और दो सामने के दरवाजों के पास दो साइड के दरवाज़े भी हैं। अंदर बीच में उत्तर की ओर दो साइड के आयताकार मंदिर हैं और



दक्षिण में। पूरे कॉम्प्लेक्स के सामने आठ छोटे द्वितल चौकोर कूट विमानों की एक लाइन है, जिनमें आठ कोनों वाले ग्रीवा और शिखर हैं, ये सभी यादगार मंदिर हैं और, अंदर के मालिका

के महेंद्रवर्मेश्वर और परिवार मंदिरों की तरह, इनके तलों पर हारा एलिमेंट नहीं हैं। इन सभी की पिछली दीवारों पर सोमस्कंद पैनल और बाहर की दीवारों पर अलग-अलग तरह की मूर्तियां हैं।

कांची में नंदीवर्मन पल्लवमल्ला (731-796 A.D.) का बनाया हुआ और विष्णु को समर्पित वैकुंठपेरुमल मंदिर, पश्चिम की ओर मुख करके बलुआ पत्थर से बना एक और पल्लव ढांचा है, जिसके अधिष्ठान के ऊपर और नीचे ग्रेनाइट का मिश्रण है। इसमें एक चौकोर चार मंज़िला मुख्य विमान है, जिसमें सबसे ऊपर वाले को छोड़कर सभी तल हैं, जिसमें एक-दूसरे के ऊपर गर्भगृह हैं, जिसमें विष्णु के तीन रूप, खड़े (स्थानक), बैठे (आसन), और लेटे (सयाना) हैं। इस तरह यह कई ऐसे विष्णु मंदिरों से आगे है जो बाद में, यहाँ तक कि हाल के समय तक भी बने, जैसे, उत्तिरामेरुर में सुंदरवरदापेरुमल मंदिर, मदुरै में चित्रकूट, और मन्नारकोविल में विष्णु मंदिर, ये तो बस कुछ ही उदाहरण हैं। तिहरी मंजिल तीन संकेंद्रित दीवारों की एक प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई है जो तीन संकेंद्रित वर्ग बनाती हैं, एक दूसरे के अंदर और उनके बीच में संधार शैली में चलने-फिरने के रास्ते हैं। वे एक साहसिक रूप से ढाले गए अधिष्ठान के ऊपर स्थापित हैं, सबसे अंदर की दीवार तीन मंजिलों की ऊंचाई तक उठती है, तीन स्तरों के कक्षों को घेरती है, मध्यवर्ती दीवार दूसरी मंजिल की छत के स्तर तक बढ़ती है, और सबसे बाहरी दीवार पहली मंजिल की छत के स्तर से पहले ही रुक जाती है। इस प्रकार आदितल का गर्भगृह दो ढके हुए प्रदक्षिणा मार्गों से घिरा है, बाहरी मार्ग उस रूप में कार्य करता है जबकि आंतरिक मार्ग दूसरे तल तक पहुँच प्रदान करता है। उत्तर और दक्षिण में चढ़ाई और उतराई के लिए सीढ़ियों की एक उड़ान है जो दूसरे तल में प्रवेश और निकास प्रदान करती है, भीतरी ढका हुआ एम्बुलेटरी सिर पर होता है



नीचे से दो सीढ़ियों की उड़ान का। यह हार आदितल के सामने स्तंभित अर्धमंडप के ऊपर फैला हुआ है। दूसरे तल के शीर्ष तक फैली और बंद प्रदक्षिणा पथ को घेरने वाली मध्यवर्ती दीवार के ऊपर एक समान हार है जो तीसरे स्तर के कक्ष के चारों ओर खुले प्रदक्षिणा पथ के किनारे की दीवार का निर्माण करता है। तीसरे स्तर के कक्ष के शीर्ष तक पहुँचने वाली सबसे भीतरी दीवार में भी इसी तरह कूटों और शालाओं का एक हार है। प्रत्येक स्तर के कूट, शाला और पंजर दीवारों के तदनुरूप उभरे हुए खांचों और अवकाशों को सुशोभित करते हैं। चौथा तल, जो एक छोटा वर्ग है, चारों ओर से बंद है और इसमें अष्टकोणीय ग्रीवा और शिखर है जिसके ऊपर धातु की स्तूप है, और इसके चारों कोनों पर मूल रूप से चार सिंह (जिन्हें अब प्लास्टर में गरुड़ की आकृतियों से बदल दिया गया है) हैं। आदितल की बाहरी दीवार के बीच के हिस्सों में छोटे दरवाज़े हैं, जबकि साइड वाले हिस्सों में देवकोष्ठ हैं जिनमें मूर्तियां हैं, और बीच के कोनों में छेद वाली खिड़कियां हैं। ऊपरी तल की बाहरी दीवारों के कोनों और कोनों में एक जैसी मूर्तियां हैं, जो सभी वैष्णव हैं। सबसे निचली मंज़िल और सामने का अर्ध-मंडप, अधिष्ठान के बेस के लेवल पर एक खुले पतले घेरे से घिरे हैं। पूरा हिस्सा फिर से एक ऊंचे प्लेटफॉर्म पर चारों ओर बने खंभों वाले मठ से घिरा है, जिसके किनारे पर व्याल-आधारित

खंभे हैं जो बीच की इमारत की ओर हैं और बाहरी किनारे पर एक दीवार है जिसके ऊपर कूटों और शालाओं की एक लाइन है, जो आदितल से थोड़ा नीचे के लेवल पर है। यह अरेंजमेंट बाहर से देखने पर पंच-तल जैसा दिखता है, जैसा कि पहले बताए गए शोर टेम्पल के मामले में है। विमान और अर्ध-मंडप पर बनी कई दिव्य मूर्तियों और उस समय के शिलालेखों के अलावा, इस मंदिर का सबसे दिलचस्प हिस्सा पैनल वाली मूर्तियों की एक सीरीज़ होगी, जो पल्लवों के इतिहास को उनके महान पूर्वजों से लेकर मंदिर बनाने वाले नंदीवर्मन II पल्लवमल्ला के समय तक बताती है, यह एक अनोखी खासियत है जो शायद ही कहीं और देखने को मिले।

कांची में इस समय के दूसरे मंदिर, हालांकि साइज़ में छोटे हैं, लेकिन अपनी आर्किटेक्चर और





आइकॉनोग्राफी। ये मुक्तेश्वर, मतंगेश्वर, ऐरावत-स्वरा, वालिस्वर, इरावतनेश्वर और परिवतनेश्वर मंदिर हैं, जो ज़्यादातर बलुआ पत्थर से बने हैं, जिसमें ग्रेनाइट स्लैब अधिष्ठान का बेस और टॉप बनाते हैं, और अगर इमारत की ऊंचाई बढ़ाने के लिए इसे जोड़ा जाता है तो इसके नीचे उपपीठ प्लेटफॉर्म होता है। ये सभी चौकोर विमान की मिली-जुली किस्में हैं जिनमें अलग-अलग संख्या में तल हैं, ऊपरी मंजिलें काम नहीं करतीं और नीचे की मंजिल के प्रस्तर के ऊपर हारा से घिरी हुई हैं, और ग्रीवा-शिखर वाले हिस्से में अलग-अलग प्लान हैं। इरावतनेश्वर और त्रिपुरांतकेश्वर द्वितल हैं, ग्रीवा और शिखर सहित पूरे चौकोर हैं, और इसलिए नागर हैं। मतंगेश्वर और मुक्तेश्वर मंदिर जो त्रितल हैं, उनमें भी वैसे ही चौकोर तल हैं, लेकिन वेसर के हिसाब से गोल ग्रीवा और शिखर हैं। परिवत्नेश्वर और वालिश्वर क्रमशः दो और तीन मंज़िला हैं, उनके तल चौकोर हैं, लेकिन ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं, जिससे वे द्रविड़ बन जाते हैं। ऐरावत्नेश्वर का ऊपरी ढांचा खो गया है। तिरुप्पत्तूर (तिरुचिरापल्ली ज़िला) का कैलाशनाथ बलुआ पत्थर का एक बड़ा विमान है और कांची के कैलाशनाथ जैसा ही है। यह आठवीं सदी के आखिर का है और पल्लव विमान की प्रांतीय किस्म का एक उदाहरण है।

लेकिन नंदीवर्मन II पल्लव के लंबे राज के बीच में, आठवीं सदी के बाद के हिस्से में, मंदिर पूरी तरह से ग्रेनाइट ब्लॉक से बनने लगे, जिन्हें काटा, ढाला, तराशा और तराशा गया, जैसा कि कुछ छोटे मंदिरों और उनके बाद आए दंतिवर्मन के समय के उत्तिरामेरुर (चिंगलेपुट ज़िले) में वैकुंठपेरुमल और सुंदरवरदा-पेरुमल के बड़े ईंट के मंदिरों के ग्रेनाइट अधिष्ठानों में देखा जा सकता है। पहले वाले में, आलों का मकसद प्लास्टर की मूर्तियां रखना था और बाद वाले में स्लैब-रिलीफ। सुंदरवरदापेरुमल का मौजूदा तीन मंज़िला ईंट का ढांचा, जो उसके पत्थर के अधिष्ठान पर है, फिर से अनोखा है क्योंकि तीनों मंज़िलें काम कर रही हैं और तहखाने विष्णु के खड़े, बैठे और लेटे हुए रूपों को समर्पित हैं, जबकि इसके दो निचले तलों के तीन तरफ दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में सटे हुए छोटे मंदिरों में छह अन्य मुख्य मंदिर हैं।

विष्णु के रूप - सत्य, अच्युत, अनिरुद्ध, नर-नारायण, नरसिंह, और वराह - इस तरह वैखानस आगम के अनुसार नौ रूप या नवमूर्तियाँ शामिल हैं। ये दो मंदिर और तिरु-वदिगई (दक्षिण अर्काट जिला) में पत्थर के अधिष्ठान पर बना बड़ा और बढ़िया रेनोवेट किया हुआ ईंट का मंदिर इस बात को साबित करते हैं कि पत्थर के आने के बाद भी ईंट और लकड़ी का इस्तेमाल होता रहा, और बड़े कंस्ट्रक्शन में उनके इस्तेमाल के हुनर को बढ़ावा दिया गया और बनाए रखा गया।

तिरुत्तनी (चिंगलेपुट ज़िले) का विराटनेश्वर मंदिर, अपने अधिष्ठान और आदितल में एक मंज़िला विमान चौकोर होने का बहुत अच्छा उदाहरण देता है, जिसमें एक अर्द्धवृत्ताकार ग्रीवा शिखर सुपरस्ट्रक्चर है। इसे नौवीं सदी में पल्लव अपराजितवर्मन के समय में कड़े काले पत्थर से बनाया गया था, जो राजवंश के आखिरी शासकों में से एक थे। इसकी दीवार के आलों में कुछ अच्छी उभरी हुई आकृतियाँ हैं जो विमान और अर्ध-मंडप देवकोष्ठों में देवताओं के साफ़ ध्रुवीकरण को दिखाती हैं, यानी गणेश और दुर्गा, क्रमशः अर्ध-मंडप के दक्षिणी और उत्तरी बाहरी दीवार के आलों में और दक्षिणामूर्ति, विष्णु और ब्रह्मा, क्रमशः आदितल की दीवार के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर बाहरी दीवार के आलों में। गर्भगृह के फ़र्श के उत्तरी हिस्से से एक उभरी हुई गार्गोयल जैसी पानी की नाली, जिसे प्रणाल कहते हैं, का इस्तेमाल अभिषेक के पानी को निकालने के लिए किया गया है, जो अब तक पहले के मंदिरों में नहीं देखा गया था, यह एक और खास बात है। प्रणाल बाद में बने सभी मंदिरों का एक ज़रूरी हिस्सा बन गया।

हालांकि, छोटे, कठोर पत्थर के बढ़िया विमान बनाने और उन्हें बेहतर बनाने का क्रेडिट दक्षिण के उस समय के पांड्यों को जाता है, जिन्होंने अपने पत्थर से बने मंदिरों और कलुगुमलाई (800 A.D.) में एक ही पत्थर से बने वेट्टुवन-कोविल विमान के बाद, दक्षिणी जिलों में कई छोटे कर्राली, या पूरी तरह से पत्थर के मंदिर बनवाए। दक्षिण मैसूर इलाके में तालकाड के उस समय के पश्चिमी गंगा, और कावेरी के दोनों किनारों पर मुत्तरैयार, इरुक्कुवेल और दूसरे सरदार, पल्लव और पांड्य साम्राज्यों के बीच की सीमा रेखा पर,



इसके बाद शुरुआती चोल वंश (जो तब तक शांत थे, नौवीं सदी के आखिर में तंजावुर में अपनी राजधानी बनाकर शाही ताकत में आ गए थे, और जल्द ही पल्लव और पांड्या इलाकों में फैल गए थे) ने भी 1000 A.D. से पहले के ग्रेनाइट के कई अच्छे मंदिर छोड़े हैं।

कालियापट्टी, तिरुप्पुर, विसलूर और पनंगुडी (तिरुचिरापल्ली ज़िला) में छोटे और सुंदर, पूरी तरह से पत्थर के मंदिरों की सीरीज़ में चौकोर एकतल विमान हैं, जिनके नीचे 2 m से भी कम चौकोर आकार के साधारण ढले हुए अधिष्ठान हैं, और तहखाने के ऊपर एक चौकोर ग्रीवा और शिखर है। ऊपर बताए गए क्रम में विमान कोष्ठ देवताओं के अलावा, तिरुत्तनी विराटनेश्वर के संदर्भ में, उनके पास आठ छोटे उप-मंदिर हैं, अष्ट-परिवार, जो कोनों और किनारों पर और न्यूक्लियर विमान और उसके एक्सियल एडजंक्ट्स को घेरने वाली प्रकार की दीवार के अंदर मौजूद सहायक देवताओं को समर्पित हैं। बाकी सभी आठ उप-मंदिर मुख्य विमान की तरह चौकोर हैं, लेकिन दक्षिण की तरफ बीच में सप्तमातृकाओं को समर्पित मंदिर, एक सही सला शिखर के साथ आयताकार है, जैसा कि तिरुक्कट्टलाई (तिरुचिरा-पल्ली ज़िले) में सुंदरेश्वर के खास मंदिर-कॉम्प्लेक्स में दिखाया गया है। ऐसे आयताकार या अंडाकार लीनियर पैटर्न वाले मंदिर उन मामलों के लिए बताए गए हैं और इस्तेमाल किए जाते हैं जहाँ देवता लेटे हुए होते हैं, या जहाँ एक से ज़्यादा देवता (जैसे सप्तमातृकाएँ) एक लाइन में स्थापित होते हैं, या कोई देवता अपनी पत्नियों (जैसे विष्णु के लिए श्री और भू देवियाँ) के साथ होता है, और सेवक गर्भगृह में विराजमान होते हैं। सला शिखर के साथ आयताकार आकार, नियम और चलन के अनुसार, सभी देवी मंदिरों के लिए हमेशा का नियम बन गया। कभी-कभी, बाकी सात परिवार मंदिरों में से एक या ज़्यादा का रूप अलग होता है, जैसे, नंगवरम (तिरुचिरापल्ली ज़िले) के सुंदरेश्वर मंदिर में गजानन या गणेश के लिए बना अप्साइडल या गजपृष्ठ (हाथी की पीठ वाला) उप-मंदिर। चंदेसा का पंथ, जो शिव मंदिर के मूलभृत्य या मुख्य सेनेशल के तौर पर था, जो राजसिंह पल्लव के समय में भी शुरू हुआ था, जैसा कि कांची में उनके कैलाशनाथ में देखा जा सकता है, अब क्रिस्टलाइज़ हो गया था।



और उत्तर में अष्टपरिवार के उप-मंदिरों में से एक उन्हें लगभग 1000 A.D. तक सौंपा गया था। इसके बाद शाही चोल काल के मंदिरों में, उन्हें, पहले के समय के नंदी और शिव के दूसरे बराबर के साथी, चंदेसा की तरह, मुख्य विमान के ठीक उत्तर में मुख्य विमान के करीब आने से ज़्यादा सम्मानजनक जगह मिली, जो अब तक मुख्य विमान के उत्तरी तरफ बन चुका था। ये दक्षिणी मंदिरों, खासकर तमिलनाडु के मंदिरों की खास बातें हैं।

मैं

!

कन्ननूर का बालसुब्रमण्य मंदिर और विरालुर का शिव मंदिर (दोनों तिरुचिरापल्ली जिले में) इस तरह के उदाहरण हैं, जहाँ ग्रीवा और शिखर गोल होते हैं, जो एकतल विमान के चौकोर हिस्से पर लगे होते हैं। पहले वाले में आदितल के चारों कोनों पर सुब्रह्मण्य-कार्तिकेय के प्रतीक के तौर पर चार हाथी की आकृतियाँ होती हैं, न कि बाद की और आम मोर की आकृतियाँ।

तिरुप्पत्तूर (रामनाथपुरम ज़िला) का द्वितल तलिनाथ मंदिर और तिरुवलीश्वरम (तिरुनेलवेली ज़िला) का ऐसा ही शिव मंदिर थोड़े बड़े उदाहरण हैं। पहले वाले में सबसे ऊपर वाले तल के कोनों पर नंदियों की जगह चार कर्णकूट छोटे मंदिर हैं। दूसरा वाला अपनी दीवारों और ऊपरी हिस्से पर उभरी हुई अच्छी मूर्तियों और कैमियो के लिए जाना जाता है, जिनमें शिव नटराज का मशहूर आनंद-तांडव भी है, जो शायद तमिलनाडु के इस खास तौर पर क्रिस्टलाइज़्ड और सब्लिमेटेड कॉन्सेप्ट और भारतीय और दुनिया की कला में इसके खास योगदान का सबसे पहला चित्रण है।

नर्ततमलाई (तिरुचिरापल्ली ज़िले) में विजयालय चोलिसवरम, हालांकि चोल वंश के संस्थापक तंजा-वूर के नाम पर रखा गया है, एक दिलचस्प और बढ़िया मुत्तरैयार उदाहरण है। इस त्रिताल स्ट्रक्चर का संधार आदितल बाहर से चौकोर है, जिसके सामने लगभग बराबर साइज़ का बंद मंडप है, जबकि पवित्र जगह को घेरने वाली इसकी अंदर की दीवार गोल है, जिससे चारों ओर एक रास्ता बनता है। अंदर की गोल दीवार के ऊपर उठने वाला दूसरा तल चौकोर है, जबकि तीसरा, साथ ही ऊपर ग्रीवा और शिखर, सेक्शन में गोल हैं। आदितल हार, जो सामने वाले मंडप के ऊपर फैला हुआ है,



इसमें डांस-मूर्तियों की एक सीरीज़ भी दिखाई गई है। लेकिन इनके अलावा, मंडप के एंट्रेंस पर द्वारपाल, ऊपर चार चेहरों पर मूर्तियां और गर्भगृह में गोल पीठ वाला बेलनाकार लिंग, ज़्यादा मूर्तियां नहीं हैं। पश्चिम की ओर वाला कॉम्प्लेक्स अष्टपरिवार और एक प्रकार से घिरा हुआ है, जिसके पूरब में एक छोटा गोपुर-एंट्रेंस है, जो उत्तर-पूर्व कोने के पास उस चट्टान पर ढलान वाली चढ़ाई के ऊपर है जिस पर मंदिर बना है।

कोडुम्बलूर (तिरुचिरापल्ली ज़िला) में मुवरकोविल इरुक्कुवेल का है और इसमें तीन बराबर साइज़ के द्वितल विमान हैं जो बेस से शिखर तक चौकोर हैं। इनके अर्ध-मंडप उत्तर-दक्षिण लाइन में पश्चिम की ओर हैं, और सामने एक आम बड़ा और आयताकार महा-मंडप है। इनमें से दो पूरे हैं और तीसरा सिर्फ़ इसके मौजूदा बेसमेंट से ही दिखता है। पूरा मंदिर सोलह उप-मंदिरों और एक प्रकार से घिरा हुआ था, और छोटा एंट्रेंस गोपुरम पूरब की ओर था। यह मंदिर महान दक्षिण भारतीय मंदिरों की लाइन में एक और ज़रूरी जगह है। यह बारीक दाने वाले और साफ़-सुथरे ग्रेनाइट से बना है, और अपनी शानदार मूर्तियों के लिए जाना जाता है -

खासकर विनाधारा, दक्षिणामूर्ति, कलारी-शिव, और कुछ स्त्री रूपों के लिए।

इसी तरह, श्रीनिवा-सनल्लूर (तिरुचिरापल्ली ज़िले) में कोरंगानाथ के शुरुआती चोल मंदिर, कुंभकोणम में नागेश्वरम, पुंजई में नलतुनई ईश्वर और पुलमंगई में ब्रह्मपुरीश्वर, दूसरे शुरुआती पूरी तरह से पत्थर के मंदिर हैं जो अपनी अच्छी क्वालिटी और खूबसूरती वाली मूर्तियों के लिए मशहूर हैं, जिनमें पुरुषों और महिलाओं की पोर्ट्रेट मूर्तियां भी शामिल हैं। 1000 A.D. से पहले और बाद की सदियों में तमिलनाडु में ऐसे सैकड़ों पत्थर के मंदिर बनाए जा रहे थे, जो पहले की ईंट और लकड़ी की इमारतों की जगह पर बनाए गए थे, और उन जगहों पर बनाए जा रहे थे जो शैव और वैष्णव संतों - नयनमार और अलवार - की यादों से पवित्र थीं।

इसी तरह की एक्टिविटी, हालांकि कम लेवल पर, दक्षिणी मैसूर इलाके में भी मिलती है, जहाँ तालकड के पश्चिमी गंगा ने कुछ उस समय के हार्ड-स्टोन मंदिर छोड़े हैं। सबसे पहले छोटे साइज़ के जुड़वां एकताल विमान बने होंगे।



श्रवणबेलगोला (हासन ज़िले) में चंद्रगिरी पहाड़ी पर बाद के जैन मंदिर का एक हिस्सा। लेकिन उसी पहाड़ी पर ज़्यादा शानदार जैन मंदिर चामुंडराय बस्ती (लगभग 982-85) होगा, जिसमें तीन मंज़िला पूरब की ओर मुख वाला विमान और सामने बंद मंडप और खुला बरामदा है। इसके दो चौकोर निचले तल, जो एक दूसरे के ऊपर रखे पवित्र स्थान जैसे हैं, और दीवारों के बीच एक रास्ता छोड़ते हुए दोहरी दीवारों वाला चौकोर संधार आदितल है, काम के हैं और उनके पवित्र स्थानों में तीर्थंकर के रूप बने हैं। तीसरा तल, जो चौकोर है, काम का नहीं है, और ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं। बाहरी दीवार के ऊपर आदितल का हारा, जिसमें कूट, शाला और पंजर जैसे हिस्से हैं, सामने के मंडपों के ऊपरी किनारों पर बना हुआ है। इस तरह दूसरी मंज़िल के चारों ओर एक खुला रास्ता है। हारा में कई अच्छी मूर्तियां हैं।

लेकिन श्रवणबेलगोला में सबसे दिलचस्प स्मारक गोम्मटेश्वर कोलोसस का हाइपेथ्रल मंदिर है, जो 17.5 मीटर ऊंचा है, और इंद्रगिरी पहाड़ी की चोटी पर एक खड़े टॉवर से गोल आकार में बनाया गया है। यह गंगा रचा-मल्ल (974-84) के मंत्री चावुंदराय का काम था। बढ़िया अनुपात और पॉलिश किए हुए ग्रेनाइट की एक अलग खड़ी मूर्ति होने के कारण, यह मिस्र में अबू सिंबल में रामसेस II के कोलोसस से भी ज़्यादा दिलचस्प है। कोलोसस का बेस ग्रेनाइट की एक मालिका से घिरा हुआ है, जिसे होयसल विष्णुवर्धन (1110-52) के मंत्री गंगाराय ने बनवाया था, और कोलोसस के निचले हिस्से से पीछे से जुड़ा मंडप बारहवीं सदी में एक और मंत्री, बलदेव ने बनवाया था।

श्रवणबेलगोला के पास कंबदहल्ली में जैन धर्म का गंगा मंदिर भी दिलचस्प है क्योंकि इसके तीन मुख्य विमान, जो ठीक-ठाक साइज़ के हैं और पूरी तरह ग्रेनाइट से बने हैं, एक कॉमन मंडप के तीन तरफ खुलते हैं; जिसकी उत्तर दिशा में चौथी तरफ कॉमन बाहरी एंट्रेंस है - जिसे

त्रिकूट कहते हैं। तीन स्क्वायर बेस वाले विमानों में क्रम से स्क्वायर, ऑक्टागोनल और सर्कुलर ग्रीवा-शिखर हैं, जो शिल्पा टेक्स्ट में बताए गए नागर-द्रविड़-वेसर टाइप को दिखाते हैं। इस कॉम्प्लेक्स में कॉमन मंडप के सामने दो और साइड वाले विमान जोड़े गए हैं।





त्रिकूट न्यूक्लियस का मंडप। पूरा मंडप एक प्रकार से घिरा हुआ है, जिसके उत्तर में एक छोटा गोपुर-एंट्रेंस है।

बनास की राजधानी, नंदी (कोलार ज़िले) के ग्रेनाइट मंदिर गंगा-नोलम्बा से बने हैं। पहाड़ी की चोटी पर बना छोटा और पहले का योगनंदीश्वर आर्किटेक्चर के हिसाब से उतना शानदार नहीं है, जबकि पहाड़ी के नीचे चौकोर आकार के भोग नंदीश्वर और अरुण-चैलेश्वर के बड़े जुड़वां मंदिर शानदार हैं। इस न्यूक्लियर ट्विन को बाद में एक्सियल मंडप और बाहरी स्ट्रक्चर जोड़कर बड़ा किया गया है, जिससे पूरब में प्रकार और गोपुर वाला एक कॉम्प्लेक्स बन गया है। दोनों में से पहले वाला भोगनंदीश्वर, साफ़ तौर पर पहले से मौजूद स्ट्रक्चर का रेनोवेशन है, और यह अपने स्ट्रक्चर की बारीकी और अपनी मूर्तियों की सुंदरता के लिए जाना जाता है। अरुणाचलेश्वर, भोग नंदीश्वर की लगभग बाद की कॉपी लगता है। हेमावती (अनंतपुर ज़िले) में टूटे-फूटे मुलायम पत्थर से बने मंदिर, जो अपनी बेहतरीन मूर्तियों के लिए जाने जाते हैं, प्योर नोलम्बा आर्किटेक्चर और कला के उदाहरण हैं।

चालुक्य-राष्ट्रकूट श्रृंखला

शुरुआती चालुक्यों के स्ट्रक्चरल एक्सपेरिमेंट उनकी राजधानी वातापी (बादामी), पास के महा-कुटेश्वर और ऐहोल और पटदकल (सभी बीजापुर जिले में) के जुड़वां व्यापारिक शहरों तक ही सीमित पाए जाते हैं। उन सभी में बारीक दाने और क्वालिटी वाले देसी मुलायम बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है, जो सबसे आसानी से इस्तेमाल होने वाला था। सिर्फ़ इसी वजह से बड़े-बड़े स्ट्रक्चर बने, जिनमें बनाने में बड़े ब्लॉक का इस्तेमाल हुआ और फिगर स्कल्पचर की रिचनेस हुई। इस सीरीज़ के मंदिरों के जाने-माने और खास विमान और प्रसाद रूपों पर विचार करने से पहले, सीरीज़ में शुरू में आए कुछ मंडप-टाइप मंदिरों पर संक्षेप में विचार करना अच्छा होगा, जो शुरुआती गुफा-मंदिर मॉडल के बाद बनाए गए थे। वे ज्योतिर्लिंग ग्रुप के छोटे मंदिर हैं, ऐहोल के लाडखान, कोंटगुडी और मेगुती मंदिर। ज्योतिर्लिंग ग्रुप के दो मंदिर बंद दीवारों वाले सिर्फ़ मंडप से ज़्यादा कुछ नहीं हैं और

फ्लैट टेरेस-टॉप, जिसके बाहरी हिस्से में उसी साइज़ का नंदी-मंडप है। लाडखान एक भारी-भरकम बनावट है, असल में यह एक बड़ा मंडप है जो चार बीच के खंभों वाले एक ढले हुए अधिष्ठान पर खड़ा है, जो एक के बाद एक कम ऊंचाई की दो एक के बीच की लाइनों से घिरा है, ताकि बीच में फ्लैट छत एक ऊंचा क्लेरेस्टोरी हो, जिसमें स्लैब की छतें छोटे खंभों के बाहरी रिंग के ऊपर चारों तरफ से नीचे की ओर झुकी हुई हैं। प्लिंथ के किनारे पर खंभों की सबसे बाहरी लाइन के बीच की जगहें स्लैब-स्क्रीन वाली दीवारों से बंद हैं, जिनमें से कुछ में छेद वाली खिड़की का पैटर्न है, दीवारें दोनों तरफ सामने की तरफ फैली हुई हैं और बीच में एक दरवाज़ा है। पीछे के सिरे पर ढलान वाली छत वाला सेंट्रल बे एक प्लिंथ और स्लैब की दीवारों के साथ एक मंदिर-कक्ष में बदल गया है। सेंट्रल क्लेरेस्टोरी के ऊपर भारी स्लैब का एक ऊपरी सेल बनाया गया है जिसकी छत फ्लैट है। बाद में, पूरे हिस्से में खुले खंभों वाला मुख-मंडप जोड़ा गया, जो आड़ा-तिरछा, मंडप टाइप के नक्काशीदार खंभों वाला था, जिसके बेस एक सीट से जुड़े थे जिसके पिछले किनारे पर एक झुका हुआ बैक-रेस्ट था - चालुक्य मंदिरों और उनसे मिलते-जुलते कक्षों जैसा। इस तरह यह एक बड़े असेंबली हॉल से ज़्यादा कुछ नहीं लगता था जिसे मंदिर में बदल दिया गया था और पीछे की तरफ एक मंदिर था। कोंटगुडी में भी हॉल की पिछली दीवार पर एक मंदिर है और सुपरस्ट्रक्चरल स्कीम बाद में जोड़ी गई क्योंकि छत-मंदिर में एक ज़्यादा बेहतर चालुक्य विमान की छत की खासियतें हैं। जैन समर्पण की मेगुती, जिस पर 634 A.D. का एक शिलालेख है, बेहतर तरीके से विकसित है। यह असल में एक बंद मंडप है जो एक उभरे हुए और ढले हुए चबूतरे पर है, जिसमें चार बीच के खंभे और चबूतरे के किनारे पर चारों तरफ बाहरी दीवारें हैं और इसमें नौ हिस्से हैं, एक बीच का और आठ बाहर का। दीवारों वाला बीच का हिस्सा मुख्य पवित्र जगह बनाता है और इसके ऊपर छत-मंदिर भी है। दोनों तरफ़ पीछे की दीवारें, पिछली दीवार के कोनों के पास, ग्राउंड फ़्लोर के दो साइड वाले मंदिरों के लिए हैं। सामने बीच की लाइन पर दो साइड वाले मंदिरों में सेंट्रल सेल की तरह चपटी छतें हैं, जिससे उनके अपने-अपने अर्ध-मंडप बनते हैं। सामने के तीन हिस्से तीनों मंदिरों के लिए एक आड़ा-तिरछा आयताकार मुख-मंडप बनाते हैं।





सामने के मुख-मंडप खाड़ियों और पीछे के तीन संगत खांचों की छतें ढलान वाली हैं। बाहरी दीवारें भित्तिस्तंभों द्वारा तीन खांचों से उभरी हुई हैं, उभरे हुए हिस्सों में देवकोष्ठ के ताखे हैं। कुछ खांचों में छिद्रित खिड़कियाँ हैं। हालाँकि, इन अजीब दिखने वाले मंदिरों की योजना और डिज़ाइन पश्चिमी तट पर बाद के समय के समान मंदिरों का अनुमान लगाती हैं जहाँ उच्च वर्षा के कारण ढलान वाली छतें बेहद उपयुक्त थीं। इस प्रकार, इस प्रकार के मंदिर वहाँ आम हो गए। केंद्रीय खाड़ी में स्थित मंदिर की छत ऊँची थी और चारों ओर ढलान वाली पार्श्व छतें थीं। केंद्रीय मंदिर अक्सर चतुर्मुख प्रकार का होता था जैसा कि करकला के चतुर्मुख जैन मंदिर में है। इस तरह के व्युत्पन्न अन्य मंदिरों के लिए, किसी को केवल गोवा और मैंगलोर के बीच के

क्षेत्र में पाए जाने वाले कई उदाहरणों को देखना होगा,

बादामी के चालुक्यों के खास विमान मंदिरों की बात करें तो, हम पाते हैं कि शुरुआती लेख राजधानी बादामी और उससे सटे महाकूटेश्वर के बाहरी इलाकों तक ही सीमित थे।

महाकुटेश्वर में दीवार से घिरे उत्तरी और दक्षिणी तरह के मंदिरों के ग्रुप में मुख्य मंदिर, मकुतेश्वर मंदिर, असल में मंगलेश के समय से था - छठी सदी के आखिर में - इसके सामने खड़े एक ढीले खंभे (विजय स्तंभ) पर लिखे एक लेख के अनुसार और अब यह बीजापुर म्यूज़ियम में रखा है। मंदिर को शायद पत्थर से दोबारा बनाया गया है और बाद में इसकी मरम्मत की गई है, लेकिन इसमें अभी भी पहले की कई खासियतें हैं। विमान का आदितल दोहरी दीवारों वाला है जिसके बीच में एक बंद रास्ता है। बाहरी दीवार और नीचे का अधिष्ठान भी हर तरफ के बीच में देवकोष्ठों के साथ खांचों में उभरा हुआ है। हर तरफ के खाली हिस्सों में छेद वाली खिड़कियां हैं जो साइड के पिलस्टर के फ्रेम के अंदर लगी हैं और एक प्रस्तर का टॉप कॉर्निस या कपोत है जिसमें छोटे मंदिर के एलिमेंट हैं, जैसा कि दक्षिणी विमान टाइप या उत्तरी प्रसाद टाइप के हारा में पाया जाता है, यह एक काफी एडवांस्ड फीचर है जैसा कि ऐहोल के दुर्गा मंदिर के देवकोष्ठ में भी पाया जाता है। चौकोर आदितल की बाहरी दीवार ऊपर की ओर है।

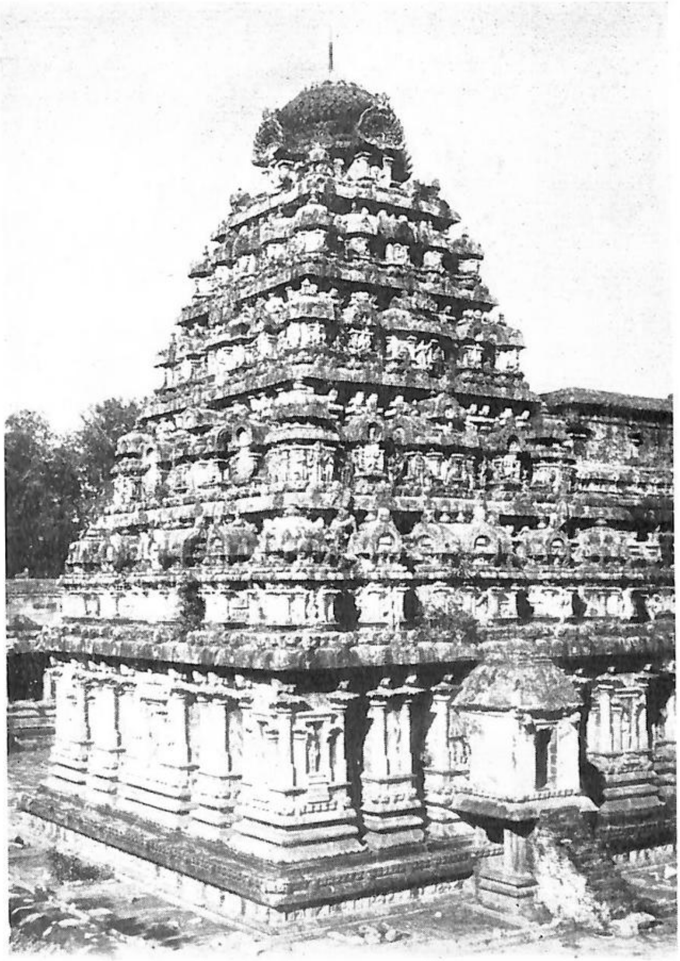

*Plate 14.* DARASURAM—AIRAVATESVARA VIMANA *(See page 145)*

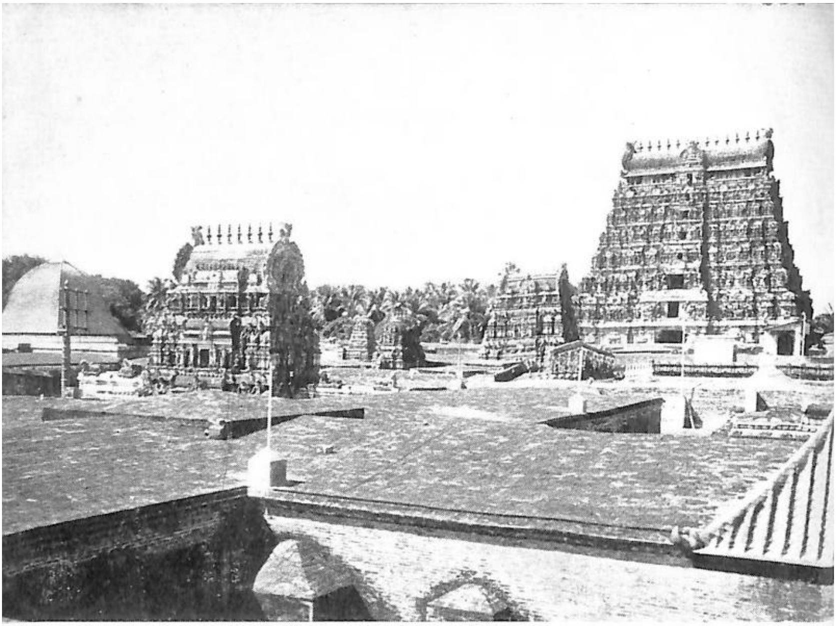

*Plate 15.* CHIDAMBARAM—NATARAJA TEMPLE GOPURAMS *(See page 148)*

इसके प्रस्तर में कोनों पर चार कर्णकूट और दीवार के बीच के खांचों के ऊपर बीच में चार शालाएँ हैं। नीचे का अधिष्ठान आगे की ओर बढ़ाया गया है और सामने चौड़े चौकोर मंडप का बेस बनाने के लिए चौड़ा किया गया है। इसकी दीवारों के बीच के खांचों में शिव की मूर्तियों के लिए देवकोष्ठ हैं, जैसा कि विमान की दीवार पर है, और खांचों में छेद वाली खिड़कियाँ हैं। अंदर के आदितल की दीवार का ऊपर की ओर बढ़ा हुआ दूसरा तल ऊँचा है और उसमें चार कर्णकूट और चार शालाओं का वैसा ही हार है, जबकि ऊपर के अष्टकोणीय ग्रीवा और शिखर में तिरछे चेहरों पर चार बड़े उभरे हुए कूट अप्लीक हैं और उनमें से ज़्यादातर को छिपाते हैं, जबकि बीच के मुख्य चेहरों में नासिका के सामने वाले हिस्से हैं।

महाकुटेश्वर घेरे के दक्षिणी छोर पर और पूरब की ओर मुख करके मल्लिकार्जुन मंदिर है, जिसका संधार विमान, द्वितल, मकुटेश्वर जैसा ही है, बस आर्किटेक्चरल डिटेल और मूर्तिकला में कुछ मामूली अंतर हैं। इस चौकोर विमान का ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाला है। इन दोनों मंदिरों में कुछ एडवांस्ड फीचर्स दिखते हैं, जैसे मंदिर के एंट्रेंस के ऊपर का दरवाज़ा जिस पर पहले से ही नक्काशी की गई है, और मंदिर के फर्श पर एक पानी का ढलान या चैनल है, जिसका आउटलेट उत्तर की ओर खुलता है।

बादामी की पहाड़ियों के बीच एक बाहरी चट्टान पर बना मालेगिट्टी शिवालय सबसे आसान स्ट्रक्चर है। इसमें एक भारी-भरकम, एक दीवार वाला निरंधर विमान है जो बलुआ पत्थर के बड़े-बड़े ब्लॉक से बना है। इसके सामने लगभग उतनी ही चौड़ाई का एक बंद मंडप है, जिसके आगे कम चौड़ाई का एक खुला चार खंभों वाला बरामदा है। ये सभी एक आम ढले हुए अधिष्ठान पर खड़े हैं। विमान के आदितल के चार कर्णकूटों और चार शालाओं का हार सामने वाले मंडप के ऊपर फैला हुआ है। आगे के दो विमान कर्णकूट मंडप के पीछे के कर्णकूट भी हैं। विमान के दूसरे तल में भी चार कूटों और चार शालाओं का ऐसा ही हार है। चार और बड़े कर्णकूट ग्रीवा-शिखर से अच्छी तरह जुड़े हुए हैं और आठ कोनों वाले ग्रीवा के कोनों को छिपाते हैं, और कुछ हद तक ऊपर की ओर ढके हुए हैं।





आठ कोनों वाले शिखर का छोटा गुंबद इस विमान को एक खास लुक देता है। ग्रीवा के मुख्य

हिस्सों में बराबर साइज़ की चार नासिकाएँ हैं। विमान की दीवार पर हर हिस्से पर तीन खांचे, क्रम से, दो सबसे बाहरी कर्णकूट और बीच के शाला से मेल खाते हैं, जिनमें देवताओं की मूर्तियों के लिए सादे आयताकार ताखे हैं। इसी तरह, मंडप की दो साइड की दीवारों पर पाँच बार उभार है, जो हारा एलिमेंट्स से मेल खाता है, हर तरफ बीच वाला एक देवकोष्ठ है जो फिर से मंदिर के एंट्रेंस के दोनों तरफ सामने की पूर्वी दीवार के किसी भी हिस्से पर पाया जाता है। मंडप की दीवार के हर साइड वाले हिस्से के उत्तर और दक्षिण में सबसे बाहरी खांचों में छेद वाली खिड़कियाँ हैं।

बादामी किले में निचला शिवालय (कोई और नाम न होने की वजह से ऐसा कहा जाता है), जो शायद असल में भगवान विष्णु को समर्पित था, एक छोटी सी बनावट है जो लगभग मालेगिट्टी शिवालय जैसी ही है, लेकिन एक ज़रूरी बात में उससे अलग है, यानी इसका आदितल दोहरी दीवारों वाला, या संधार है। हारा एलिमेंट सभी तलों पर मौजूद हैं और ग्रीवा और शिखर अष्टकोणीय हैं जिन पर एप्लीक कूट लगे हैं।

बादामी के किले के अंदर पहाड़ी पर थोड़ा ऊपर ऊपरी शिवालय में, प्लान के हिसाब से एक संधार विमान चौकोर है, जिसमें विमान आदितल की बाहरी दीवार को उसी तरह फैले हुए अधिष्ठान के ऊपर आगे बढ़ाया गया है ताकि एक बड़ा मंडप घेर सके। मंडप बंद है और अंदर से खंभों वाला है, जिसमें पीछे के मंदिर जितनी चौड़ाई की एक सपाट छत के नीचे एक बीच का हिस्सा है। विमान आदितल की दोहरी दीवारों के बीच परिक्रमा मार्ग को आगे बढ़ाने के लिए दो साइड के रास्ते बने हैं, जिनकी छतें ढलान वाली हैं, जैसा कि परिक्रमा मार्ग के मामले में भी है। आदितल और सामने के मंडप की बाहरी दीवारें बारी-बारी से उभरी हुई और धंसी हुई हैं और खांचों को पिलस्टर से घेरा गया है, ताकि उनके प्रस्तर के ऊपर दूर-दूर तक फैले हारा एलिमेंट से मेल खा सकें। खांचों में छोटे पिलस्टर हैं, जिनके ऊपर प्रस्तर के कॉर्निस के कुडू आर्च हैं। दूसरा ताल ऊंचा है, जो आदितल की अंदरूनी दीवार के ऊपर की ओर बढ़ा हुआ है। इसके ऊपर हारा नहीं है।



इसके ऊपर कम ऊंचाई वाला तीसरा तल भी हारा एलिमेंट से रहित है। ग्रीवा और शिखर नीचे के बाकी विमान की तरह चौकोर हैं, और दूसरे मामलों की तरह एप्लिक कूटों से घिरे नहीं हैं।

सातवीं सदी में विकास के अलग-अलग स्टेज दिखाने वाले पहले के विमान-फॉर्म के इस ग्रुप के उलट, हमें पटडकल में संगमेश्वर, विरुपाक्ष और मल्लिकार्जुन के मंदिरों में पूरे विमान-फॉर्म मिलते हैं, जो काफी हद तक आज के पल्लव स्ट्रक्चरल मंदिरों और उनके पहले के मोनोलिथिक रथों में क्रिस्टलाइज़ हुए विमान-फीचर्स को दिखाते हैं। संगमेश्वर इन तीनों में

सबसे पुराना है और इसे चालुक्य विजयादित्य (697-733 A.D.) ने बनवाया था और यह किसी भी दूसरे मॉडल की तुलना में पल्लव मॉडल के ज़्यादा करीब है क्योंकि इसमें विमान के ऊपरी तल और ग्रीवा-शिखर इलाके के सामने से नीचे मंदिर के सामने वाले अंतराल या अर्ध-मंडप के ऊपर कोई शुक-नासिका या त्रिकोणीय आकार का निकला हुआ हिस्सा नहीं है। बाकी दो, यानी विक्रमादित्य I (733-746 A.D.) की रानी का बनाया विरुपाक्ष, और उसके तुरंत बाद दूसरी रानी का बनाया मल्लिकार्जुन, में शुक-नासिका है जो चालुक्य विमान सीरीज़ का सबसे पुराना हिस्सा है, जिसमें यह खास आर्किटेक्चरल हिस्सा है, जैसा कि एलोरा में बाद के कैलाश मोनोलिथ में है। संगमेश्वर और विरुपाक्ष दोनों एक जैसे हैं, क्योंकि उनका प्लान बेस से टॉप तक स्क्वायर है, और इसलिए वे नागर ऑर्डर के हैं। मल्लिकार्जुन में स्क्वायर तल के ऊपर एक गोल ग्रीवा और शिखर है, और इसलिए यह वेसर ऑर्डर का है।

संगमेश्वर विमान, जो त्रितल है, में दोहरी दीवारों वाला संधार आदितल है, जिसकी बाहरी दीवार आगे की ओर फैली हुई है ताकि उसी तरह फैले हुए अधिष्ठान के ऊपर अर्ध-मंडप बन सके और आगे चौड़ी होकर बंद महा-मंडप बन सके, जिसके अंदर पाँच-पाँच खंभों की चार लाइनें हैं। महा-मंडप के उत्तरी हिस्से के बीच में एक खुला खंभों वाला बरामदा जुड़ा हुआ है। इस दीवार के बाहरी हिस्से में उभरी हुई और धंसी हुई जगहों पर बारी-बारी से देव-कोष्ठों की एक सीरीज़ है जिसमें अलग-अलग तरह की मूर्तियों वाले देवताओं की मूर्तियाँ हैं। विमान की इस बाहरी दीवार के ऊपर प्रस्तर और इसके आगे के मंडप की दीवार के विस्तार में कर्णकूटों का हार है और





नीचे उभरी हुई खाड़ियों के हिसाब से शालाएँ हैं। हर तरफ के बीच में छत के पानी के आउटलेट से हारा छेदा गया है। उनके ऊपर हारा वाला हिस्सा शुरुआती पंजर लिए हुए है, शायद चालुक्यों के विमानों और उनसे मिलते-जुलते विमानों में इस तीसरे खास सदस्य की पहली मौजूदगी। दूसरा तल भी, जो आदितल की अंदर की दीवार का ऊपर की ओर निकला हुआ हिस्सा है, उसमें चार कर्णकूट और चार शालाएँ हैं, जबकि तीसरे तल में सिर्फ़ मुख्य किनारों पर चार शालाएँ हैं, जो ग्रीवा और शिखर-क्षेत्र के नासिका उभारों के सामने आती हैं। सबसे ऊपर वाले तल के हारा में कर्णकूटों का न होना, हारा को पूरी तरह खत्म करने की तरफ पहला कदम है, और उसकी जगह कोनों पर मुख्य देवता के वाहन और लंछनों को रखना है। यह एक बड़ा बदलाव है जो पल्लव मंदिरों में लगभग उसी समय हुआ, अगर थोड़ा पहले नहीं तो, जैसे शोर मंदिर और कांची के कैलाशनाथ में हुआ था। संगमेश्वर एक और खास बात यह है कि इसके डिज़ाइन में अर्ध-मंडप में दो साइड-मंदिर हैं, जो गर्भगृह के एंट्रेंस के दोनों तरफ दुर्गा और गणपति को समर्पित हैं।

विरुपाक्ष शुरुआती चालुक्यों का सबसे बड़ा स्ट्रक्चरल मंदिर-कॉम्प्लेक्स है, जिसमें एक ऊँचा चार मंज़िला विमान है, जिसके बीच में मंडप हैं और आंगन के चारों ओर कूट और शाला टाइप

के दो मंज़िला परिवार उप-मंदिर हैं। यह पूरा मंदिर एक प्रकार की दीवार से घिरा है, जिसके आगे और पीछे पूरब और पश्चिम में गोपुर-एंट्रेंस हैं, जो फिर से चालुक्य सीरीज़ में सबसे पुराने हैं। चौकोर विमान में एक संधार आदितल है, जिसकी बाहरी दीवार, और नीचे का अधिष्ठान भी, पाँच खांचों और हर तरफ चार खांचों में फैला हुआ है। वे कोने के कर्णकूटों, बीच के शालाओं और उस तरफ के प्रस्तर के ऊपर हारा के बीच के पंजरों के हिसाब से अलग-अलग चौड़ाई के हैं। मंडप कई खंभों वाला है जिसमें बड़े-बड़े नक्काशीदार खंभे हैं और इसके तीन तरफ पूरब, उत्तर और दक्षिण में उभरे हुए खंभों वाले बरामदों के साथ तीन खुलने की जगहें हैं। मंडप प्रस्तर के ऊपर हारा की शालाएँ, जो इन तीन प्रवेश द्वारों के ऊपर आती हैं, एलोरा के कैलाश की तरह, प्रस्तुत की गई हैं



छोटे गोपुर-द्वारों की नकल करने के लिए, बाकी हारा एलिमेंट्स के मुकाबले साइज़ में बड़े हैं। उभरे हुए हिस्सों पर बने पिलस्टर्स के बीच बने देवकोष्ठ के आलों में कूट, पंजर या तोरण फ्रेम के अंदर अलग-अलग मूर्तियां हैं। अर्ध-मंडप के अंदर दुर्गा और गणेश के लिए मंदिर हैं। दूसरे तल में तीन तरफ उसके प्रस्तर के ऊपर चार कर्णकूट और तीन शालाएं हैं। कम ऊंचाई वाली छोटी मंजिल में भी चार कर्णकूट और तीन शालाएं हैं, दोनों तलों का अगला हिस्सा अंतराल के ऊपर टियर वाली शुक-नासिका के रूप में निकला हुआ है, जिसका डिज़ाइन एक सही सामने वाले हिस्से के साथ कई मंजिलों वाले अपसाइडल मंदिर जैसा है। चौथी मंज़िल, जो और भी छोटी है, उसके हारा में सिर्फ़ चार कर्णकूट हैं, जहाँ से चार शालाएँ हटा दी गई हैं, जैसा कि तिरुपत्तूर के पांड्या तलिनाथ मंदिर में है, जिससे ग्रीवा-शिखर क्षेत्र की चार नासिकाएँ पूरी तरह से दिखाई देती हैं। प्रकार की दीवार के ऊपर कूटों और शालाओं की एक सीरीज़ है, जैसा कि पल्लव शोर मंदिर के बड़े विमान के प्रकार के ऊपर है।

विरुपाक्ष के पास बना मल्लिकार्जुन एक छोटा मंदिर है जिसके सभी तलों में चार मंज़िला विमान चौकोर है। ऊपर का ग्रीवा और शिखर गोल हैं। इसके ऊपरी तलों से आगे की ओर निकली हुई एक प्रमुख शुक-नासिका भी है। सबसे ऊपर वाले तल में कोई हारा नहीं है, जो इस तत्व के पूरी तरह खत्म होने की स्टेज को दिखाता है, और खास वाहनों, या मुख्य पवित्र जगह के समर्पण के लिए सही निशानों के आने का संकेत देता है।

ऐहोल का दुर्गा मंदिर असल में दक्षिणी तरह का अप्साइडल या गजपृष्ठ है, जिसमें एक अजीब, बेढंगा उत्तरी-टाइप का चौकोर शिखर है, जो अगर ओरिजिनल डिज़ाइन का हो तो अलग होगा या अगर बाद में बनाया गया हो तो बेमेल और बेकार होगा। मंदिर और उसके एक्सियल मंडप ऊपर उठे हुए हैं और उनका अधिष्ठान एक सब-बेस पर बना है, यह एक ऐसी खासियत है जो ऊपर बताए गए पहले के मंदिरों में आम नहीं है, लेकिन चालुक्य और पल्लव-पांड्य दोनों तरह के बाद के मंदिरों में आम है। मोल्डेड उपपीठ प्लान में अप्साइडल है और इसके किनारे पर भारी मंडप-टाइप पिलर की एक बाहरी लाइन है जो मोल्डेड अधिष्ठान और बाहरी दीवार को घेरे हुए है।

विमान का अपसाइडल संधार आदितल और उसका आगे का भाग

प्रक्षेपण, समान चौड़ाई के बंद अंतराल मंडप के रूप में, और भी

उसी अधिष्ठान के आगे विस्तार पर अग्र-मंडप

स्थाना जिस क्षेत्र में यह संकरा होता है। इस प्रकार, मंच के ऊपर

उपपीठ एक ढलान वाली छत के साथ एक ढका हुआ बाहरी प्रदक्षिणा पथ बनाता है, फैलाव-

विमान की बाहरी दीवार और अक्षीय मंडपों के बीच की खाई को भरना

एक तरफ और दूसरी तरफ किनारे पर लगे खंभे। उपपीठ

सामने एक और भी संकरे लैंडिंग प्लेटफ़ॉर्म के रूप में समाप्त होता है जिसमें पार्श्व होता है

सीढ़ियों की उड़ानें और सामने की रेलिंग। ये बाहरी खंभे

सामने का मंडप खंड और सामने या पूर्वी छोर पर

लैंडिंग के अंदरूनी किनारे पर बड़ी मूर्तियाँ खुदी हुई हैं

उनमें से, जबकि बाकी में ऐसी कोई सजावट नहीं है। वे सभी

कक्षासन या पीठ के बल आराम करने वाली सीटों से जुड़े हुए, जैसा कि है

चालुक्य संरचनाओं में आम। अधिष्ठान, साथ ही बाहरी

इसके ऊपर की दीवार, अंतराल पर ग्यारह खाड़ियों में फेंकी जाती है, तीन पर

प्रत्येक रैखिक साइड-दीवारें, पीछे के एप्स छोर के चारों ओर तीन और, और दो

सामने, जहाँ दीवार सामने के दरवाज़े को गले लगाने के लिए मुड़ती है

एंट्रेंस के दोनों ओर अंतराल मंडप है। इन ग्यारह हिस्सों में

देवकोष्ठ, जिनके आले सभी मंदिरों के अग्रभागों से बने हैं

दक्षिणी शैली के विमानों और उत्तरी शैली के प्रसादों के पैटर्न-

सच आस थे कुता, साला ओर कोष्ठा, पंजारा, उद्गम (कोलिसेड कुडू-

मेहराबों की तरह, और तोरण, और देवताओं की बोल्ड मूर्तियां शामिल हैं। यह

बहुत विकसित विशेषता एक आशाजनक की उपस्थिति के साथ जुड़ी हुई है-

धीरे से प्रणाल या गार्गॉयल जैसी पानी की टोंटी को ऊपर की ओर फैलाना

बाहरी हिस्से के ऊपरी सिरे पर उत्तरी तरफ अधिष्ठान स्तर

दीवार। यह पानी के चैनल के आगे की ओर है जो दीवार से जाता है।

सेला के फर्श से होकर भीतरी दीवार के आधार से होकर गुजरना और

संधारा एम्बुलेटरी। यह सब इसके लिए बाद की तारीख का संकेत देता है

मंदिर जितना माना जाता है, उससे कहीं ज़्यादा, दूसरे एडवांस्ड मंदिरों की तो बात ही छोड़िए

विविध कोरबेल रूप, मूर्तिकला की शैली जैसी विशेषताएं,

उपपीठ की उपस्थिति, आदि। ये और एक शिलालेख की उपस्थिति-

चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीय (733-746 ई.) के शासनकाल के दौरान खंडहरों पर

प्रकार के दक्षिण-पूर्वी भाग में बाहरी गोपुर एक का संकेत देते हैं

1



आठवीं शताब्दी की पहली तिमाही की शुरुआत में। एक विशिष्ट छोटे एप्स या चाप रूप की आंतरिक दीवार तहखाने को घेरती है। इसकी दो सीधी पार्श्व-दीवारों के साथ आगे की ओर

संरेखण में अंतराल मंडप के अंदर चार स्तंभों की दो पंक्तियाँ हैं जो स्थान को एक केंद्रीय गुफा में विभाजित करती हैं जिसमें एक उठी हुई सपाट क्लेरेस्टोरी छत और दो पार्श्व गलियारे हैं जिनमें बाहरी सर्किट की और भी निचली ढलान वाली छत पर निचली ढलान वाली स्लैब की छतें हैं। आदिताल की आंतरिक दीवार के चाप छोर अंतराल मंडप के संकीर्ण सामने के प्रवेश द्वार को बनाने के लिए अंदर की ओर मुड़े हुए हैं। अग्र-मंडप में चार स्तंभ हैं जो अधिष्ठान के आगे के छोर के किनारे पर स्थापित हैं और इसके पीछे की छत के विस्तार में एक उठी हुई क्लेरेस्टोरी छत है। अंतराल के गलियारे गर्भगृह के चारों ओर दो दीवारों के बीच आंतरिक प्रदक्षिणा के साथ निरंतर हैं। गर्भगृह एक गोलाकार पीठ को छोड़कर खाली है। इसका मूल समर्पण अनिश्चित है। मंदिर का नाम दुर्गा रखना गुमराह करने वाला है, क्योंकि साफ़ है कि यह उस देवी को समर्पित नहीं था। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि पिछली सदी के पहले हिस्से तक, मंदिर एक किले (दुर्गा या दुर्गम) का हिस्सा था, जिसके ऊपर मलबे का बचाव का काम था, जो शायद मराठों का था। अगर उत्तरी प्रसाद टाइप का अजीब सा सुपरस्ट्रक्चर असली नहीं है, तो पवित्र जगह या तो सपाट छत वाली रही होगी या उसमें टेर और चेज़रला के ऊपरी हिस्से वाले मंदिरों की तरह ऊपरी हिस्से वाली छत रही होगी।

आठवीं सदी के आखिरी चौथाई से शुरू होने वाले इस शुरुआती दौर के राष्ट्रकूट दौर की बात करें, तो हमारे पास पटडकल के बाहरी इलाके में बना खंडहर जैन विमान मंदिर एक अच्छा उदाहरण है। यह असल में तीन मंज़िला संधार विमान है, जो अपने बेस से शिखर तक चौकोर है, और नीचे की दो मंज़िलें काम की हैं। अधिष्ठान के कॉर्निस या कपोत टियर पर कुडू मोटिफ्स ने अपना असली नासिका शेप खो दिया है और वे चपटे तिकोनी उभरी हुई आकृतियाँ बन गई हैं, जो बाद के चालुक्य और होयसल मंदिरों की डेंटिल उभरी हुई आकृतियों से पहले की हैं। पिलर कैपिटल भी अपना असली शेप और मज़बूती खो चुके हैं और बाद के चालुक्य मंदिरों में पाए जाने वाले आम शेप में बदल गए हैं।





आदितल के सामने नवरंग मंडप है, जो एक छोटे अंतराल से जुड़ा है। इसकी दीवारों पर सात हिस्से हैं, जिनके बीच में छह खाली जगहें हैं। ये नासिका आकृतियों से सजी हैं, जिनमें बैठे हुए जिन और दूसरी आकृतियाँ हैं। प्रस्तर में कूट, शाला और पंजर का हार है। दूसरे तल में एक पवित्र जगह है, जो आदितल की अंदर की दीवार के ऊपर की ओर बने हिस्से से घिरी हुई है। इसका अंतराल का अगला हिस्सा शुकनासिका के निचले हिस्से से ढका हुआ है, जबकि बाकी तीन तरफ के प्रस्तर में चार कर्णकूट और तीन शालाएँ हैं। शुकनासिका की वजह से सामने की तरफ शाला बनाने की कोई गुंजाइश नहीं है। तीसरी मंज़िल, जो थोड़ी कम चौड़ी है, उसके सामने या शुकनासिका की तरफ को छोड़कर बाकी सभी तरफ से उभरी हुई है। इन हिस्सों में उत्तरी स्टाइल के मंदिरों की तरह उद्गम डिज़ाइन हैं। इसी तरह की ऑफसेटिंग वाला चौकोर शिखर बारह पसली वाले हिस्से की नकल करता है, जो बाद के चालुक्य मंदिरों में इसी

तरह के बदलावों की ओर इशारा करता है। नवरंग के सामने खुला कई खंभों वाला मुख-मंडप है, जिसके आस-पास की लाइन में बीच-बीच में कक्षासन हैं। नवरंग के सामने से सटे हुए आस-पास की सीरीज़ के दो सबसे अंदर के खंभों को छोड़कर, बाकी सभी, साथ ही बीच के चार खंभे, हालांकि बलुआ पत्थर के हैं, थोड़े-बहुत खराद से बने हैं, जो बाद के चालुक्यों और उनके बाद के राजाओं के शिस्ट या सोप स्टोन के पूरी तरह से खराद से बने खंभों की ओर इशारा करते हैं।

हालांकि, बादामी के शुरुआती चालुक्यों की एक ब्रांच, वेंगी के पूर्वी चालुक्यों ने बलुआ पत्थर से बने कई स्ट्रक्चरल मंदिर बनाए हैं, जो अपने स्टाइल में दक्षिण में तोंडईमंडलम के पल्लव स्टाइल से ज़्यादा मिलते-जुलते हैं। इनमें से, बिक्कावोलू (पूर्वी गोदावरी ज़िला) के मंदिर खास हैं। बिक्कावोलू सीरीज़ दो ग्रुप में आती है। पहले वाले में कंसरगुडी, नक्कलगुडी नाम के मंदिर और एक तीसरा ग्रुप शामिल है जिसका कोई लोकल नाम नहीं है, ये सभी शायद गुनागा विजयादित्य (848-891) और उनके बाद आने वालों के समय में बने थे। ये सभी प्लान में चौकोर, तीन मंज़िला त्रितल नागर विमान हैं जिनमें चार कर्णकूट और चार शाला हैं जो आदितल और दूसरे तल प्रस्तर के बीच में हैं, बिना पंजर और बिना शुकनासिका के। ये खासियतें जुड़ाव दिखाती हैं और

?



पल्लव टाइप के करीब, हालांकि उनके अलग-अलग क्षेत्रीय और पैतृक चालुक्य लक्षण दूसरी खासियतों और विमान के आम कद से साफ़ दिखते हैं। मकर तोरण अपनी डिटेल में बहुत ज़ोर देते हैं, खासकर कलश के दोनों तरफ आर्च के ऊपर मकर-सिर की एक जोड़ी जोड़कर। पिलस्टर हमेशा की तरह सभी शुरुआती मंदिरों में चार-तरफ़ा होते हैं, जिनमें 'ऑर्डर' के पूरे कैपिटल होते हैं। मुड़े हुए कॉर्निस, या कपोत में कुडू, पल्लव और शुरुआती चालुक्य उदाहरणों की तरह घोड़े की नाल के आकार के होते हैं। गाँव के अंदर बाकी तीन मंदिर - गोलिंगेश्वर, चंद्रशेखर, और राजराजेश्वर - दूसरे और बाद के ग्रुप (लगभग 950-1050) के होंगे, और आखिरी शायद राजराज नरेंद्र (1019-60) के समय का होगा। ये दो या तीन मंज़िला नागर विमान भी हैं, जो प्लान में चौकोर हैं, लेकिन उनके सुपरस्ट्रक्चर बाद के समय में पूरी तरह या कुछ हद तक ठीक किए गए हैं और उन पर भारी प्लास्टर किया गया है, जिससे कई असली खासियतें छिप गई हैं। इन सभी मंदिरों में आम तौर पर चालुक्य प्लिंथ का रूप है, जिसमें निरंधर या एक दीवार वाला आदितल और सामने एक पतला अर्ध-मंडप है। सभी आला मूर्तियां शैव हैं। शिखर चौकोर है और ग्रीवा भी। कुछ मामलों में, जैसे राजराजेश्वर में, तलों में प्रस्तर के ऊपर हारा नहीं है, यह एक ऐसी खासियत है जो आंध्र तट के बाद के मंदिरों में आम हो गई। पहले ग्रुप का शिखर रूप बादामी के ऊपरी शिवालय रूप से मिलता-जुलता है।

अध्याय VII

संरचनात्मक पत्थर मंदिर-मध्य चरण

लगभग 1000 A.D. तक शाही चोल ताकत अपने चरम पर पहुँच गई थी, उसका अधिकार पूरे तमिल क्षेत्र और केरल, दक्षिण मैसूर और तटीय आंध्र के कुछ हिस्सों और यहाँ तक कि सीलोन, अंडमान, लक्षद्वीप और मालदीव तक फैल गया था। उस समय की दुश्मन ताकत, दक्कन में राष्ट्रकूट, जल्द ही कल्याणी के फिर से उभरते चालुक्यों, पश्चिमी चालुक्यों या बाद के चालुक्यों, जैसा कि उन्हें अक्सर कहा जाता है, के आगे झुक गए। पत्थर बनाने, तकनीक और डिज़ाइन में मिले अनुभव और जानकारी के साथ, और आगम और शिल्प मैनुअल में रूप और नियमों को क्रिस्टलाइज़ करने के बाद, आने वाले समय में मंदिरों के निर्माण में बहुत काम हुआ, खासकर दक्षिण भारत और सीलोन के बड़े मंदिरों में। चोल सम्राट राजराजचोल I महान (985-1014), उनकी बड़ी बहन, रानियों और जागीरदारों ने बहुत सारे नए मंदिर बनवाए, और कुछ और मंदिर विधवा रानी सेम्बियन महादेवी ने भी बनवाए, जो राजराज I के दादा, पवित्र गंदारादित्य चोल की रानी थीं।

चोल और बाद के पांड्य श्रृंखला

तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर, जिसके ठीक बाद गंगई-कोंडाचोलपुरम (तिरुचिरापल्ली ज़िला) का बृहदीश्वर मंदिर है, दक्षिणी विमान आर्किटेक्चर की ऊंचाई, डिज़ाइन की क्वालिटी, तकनीक और सजावट को दिखाता है। तंजावुर का महान मंदिर, जिसे इसके बनाने वाले राजराज I के नाम पर बृहदीश्वर या राज-राजेश्वर कहा जाता है, जिसे बनाने वाले ने बड़े पैमाने पर एक पूरे कॉम्प्लेक्स के तौर पर सोचा था और पूरा किया था, तमिलियन का सबसे बड़ा काम और कामयाबी है।



आर्किटेक्ट। इसमें मंदिर बनाने की परंपरा की सभी बेहतरीन चीज़ें शामिल हैं - आर्किटेक्चर, मूर्तिकला, पेंटिंग और उससे जुड़ी कलाएँ। यह एक बड़ा कॉम्प्लेक्स है जिसमें विमान और उसके साथ के एक्सियल मंडपों के सामने एक ऊँचे चबूतरे पर एक बहुत बड़ा मोनोलिथिक नंदी लेटा हुआ है, लेकिन अब यह बहुत बाद के एक मंडप में छिपा हुआ है। इसमें सबसे ऊँचा ज्ञात या हासिल किया गया विमान है, जो 66 m ऊँचा है, जो एक बेसल स्क्वायर पर खड़ा है, जिसकी एक तरफ लगभग 28 m लंबाई है और जो ऊँचाई के हिसाब से, एक सही चौड़ा, ऊँचा और अच्छी तरह से ढाला हुआ उपपीठ प्लेटफॉर्म बनाता है, जिस पर पूर्व की ओर मुख वाले पिरामिड जैसे विमान का मज़बूती से ढाला हुआ अधीश-थान रखा है। वही उपपीठ और

अधिष्ठान, एक्सिलरी में रखे अर्ध-, महा- और मुख-मंडप के बेसल स्ट्रक्चर के तौर पर आगे की ओर फैले हुए हैं, जो अर्ध-मंडप के पार एक उत्तर-दक्षिण ट्रेसेप्ट से मुख्य विमान से जुड़े हैं, जहाँ दोनों तरफ से उपपीठ और अधिष्ठान की ऊंचाइयों पर सीढ़ियों की उड़ानों से पहुँचा जा सकता है। खंभों वाले महा- और मुख-मंडप अपने किनारों पर बंद हैं, अंदर खंभों की लाइनें एक सेंट्रल नेव और साइड में गलियारे बनाती हैं, जो महा-मंडप वाले हिस्से में, नेव से बने सेंट्रल पैसेज के दोनों तरफ एक लगातार प्लेटफॉर्म के रूप में उठे हुए हैं। सामने की लैंडिंग पर खंभों और छत का स्ट्रक्चर, जो एक खुला पोर्च, या अग्र-मंडप बनाता है, बाद में ओरिजिनल अधिष्ठान और उपपीठ के बदले में बनाया गया है, जिसमें दोनों तरफ ओरिजिनल सीढ़ियों के सामने एक और सीढ़ी जोड़ी गई है। आड़े डिज़ाइन वाला मुख-मंडप और कनेक्टिंग ट्रेसेप्ट चार मंज़िला हैं, जबकि महा-मंडप असल में तीन मंज़िला था। सबसे ऊपर की मंज़िल साफ़ तौर पर एक खुली छत थी, जिसकी दीवारों पर नंदियों की एक लाइन लगी हुई थी।

गर्भगृह को घेरने वाले विमान का निचला हिस्सा दो तलों का है और संधार तरीके से दोहरी दीवारों वाला है। बाहरी और अंदरूनी, दोनों दीवारें एक जैसी मोटाई की और बहुत बड़ी हैं। बाहरी दीवार, जो सीधी खड़ी होकर लगभग 15 m की ऊंचाई तक जाती है, बाहर की तरफ दो मंजिलों, निचली और ऊपरी, में एक बांटने वाली प्रस्तर लाइन से बनी है, जो आड़ी-तिरछी मोटी कॉर्निस और बीच में बने दरवाजों से बनी है, जिनमें से हर एक पर जाम्ब, लिंटेल और सिल लगे हैं।



दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की तरफ, विमान पूर्व की ओर है। ये दो दीवारें अंदर के परिक्रमा पथ को दो मंज़िल में घेरती हैं, क्योंकि गर्भगृह की अंदर की दीवार भी दो मंज़िल की ऊँचाई तक सीधी खड़ी है, ताकि गर्भगृह में विशाल लिंग और उसके उतने ही बड़े लिंग-पीठ को रखा जा सके। बाहरी दीवार, नीचे के अधिष्ठान की तरह, हर तरफ पाँच हिस्सों में बंटी हुई है, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की बीच की दीवारों में अंदर के परिक्रमा पथ की दोनों मंज़िल के लिए दो मंज़िल में बड़े दरवाज़े हैं, एक के ऊपर एक। ये, पूर्व की ओर दो ऊपर लगे बड़े या मुख्य दरवाज़ों के साथ मिलकर विमान को एक चौमुखा या चतुर्मुख स्ट्रक्चर बनाते हैं, जिसे किताबों में सर्वतोभद्र कहा गया है। सामने, पूर्व की ओर मुख्य दरवाज़े के पीछे बनी दीवारों की भारीपन, संधार सर्किट के पार एक अंतराल रास्ता देती है जो गर्भगृह के अंदर के दरवाज़े तक जाता है। इस अंतराल के सामने उत्तर-दक्षिण दिशा में एक अनुप्रस्थ भाग बना है, जिसके दोनों सिरों पर उत्तर और दक्षिण में सीढ़ियाँ हैं, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

बाहरी दरवाज़े के दोनों ओर दो बड़े द्वारपाल हैं, जैसे दूसरे दरवाज़े भी हैं। बाहरी दीवारों के बीच के हिस्से, जो दरवाज़े के खुलने के साथ सबसे चौड़े हैं, उनके ऊपर, दूसरे तल के प्रस्तर के ऊपर, उस तरफ के हारा का सबसे बड़ा सेंट्रल शाला है। सबसे बाहरी हिस्से जो अपने-अपने कोने बनाते हैं और जिनकी चौड़ाई ठीक-ठाक है, उनके ऊपर कर्णकूट हैं। सबसे कम चौड़ाई

वाले बीच के हिस्सों के ऊपर पंजरा हैं, इस तरह दूसरे तल प्रस्तर के ऊपर पूरा हारा बनता है। इस तरह आदितल के ऊपर का हारा खत्म हो जाता है। दरवाज़े के खुलने वाले बीच वाले हिस्से के दोनों ओर के हिस्से पूरी तरह से देवकोष्ठ हैं जिनमें अलग-अलग देवताओं की बढ़िया और बोल्ड मूर्तियां हैं। हर आले की मूर्ति की मूर्ति से जुड़ी पौराणिक कहानी को मुख्य मूर्ति के दोनों तरफ के चौखटों पर छोटे-छोटे कैमियो से दिखाया गया है, यह एक नई चीज़ है जो यहां पहली बार देखी गई है। बीच के चार खाली हिस्से, या दीवार की जगहें, हर एक 'डेकोरेटिव पिलस्टर' मोटिफ से भरी हुई हैं, जो एक छोटा पिलस्टर है, जिसके ऊपर एक श्राइन मोटिफ - पंजारा सामने की तरफ है, जो उस समय की खासियत है। मुख्य पिलस्टर-



खाड़ी के कोनों और दीवारों के साथ उनके एंगल पर बने स्टर्स पूरे कैपिटल के साथ चौकोर सेक्शन में हैं। एबेकस, या फलक, जैसा कि पहले के पल्लव कैपिटल में था, बड़ा, भारी और चौकोर है, लेकिन कॉर्बेल या पोटिका आर्म्स बेवेल वाले चेहरे पर एक बीच का त्रिकोणीय टेनन के साथ बेवेल किए गए हैं।

निचली मंज़िल की अंदर की दीवार के तीन तरफ़, बड़े-बड़े पिलस्टर के बीच की खाली जगह में और बाहरी दीवार के खुलने के सामने, दक्षिण में बैठे शिव, पश्चिम में नाचते हुए, और उत्तर में बैठी देवी की आदमकद से भी बड़ी मूर्तियाँ हैं। इस नीचे के एम्बुलेटरी में बाकी अंदर की दीवार, पिलस्टर और छतों के ऊपर और बाहरी दीवार के अंदर की तरफ़ चोल काल की बहुत सारी म्यूरल पेंटिंग हैं, जिन पर सत्रहवीं सदी में नायक काल के बाद के पैलिम्प्सेस्ट लगे हैं। जहाँ भी चोल परत मौजूद है, उसे खराब नायक परत को हटाकर उसकी रिचनेस को दिखाया गया है। अंदर की दीवार के लगभग पूरे हिस्से पर सबसे ज़रूरी थीम हैं - शिव को त्रिपुरांतक के रूप में दिखाने वाला पैनल (त्रिपुरा के राक्षसों से लड़ने के लिए निकलते हुए), शैव संत सुंदरमूर्ति नयनार की कहानी बताने वाला पैनल, और चिदंबरम में नटराज के मंदिर में राजा को उनकी रानियों और उनके साथियों के साथ पूजा करते हुए दिखाने वाला पैनल। डांसर, म्यूज़िशियन, पक्षी, जानवर वगैरह की दूसरी पेंटिंग भी दिलचस्प हैं। अजंता की बौद्ध गुफाओं में पहले की बड़ी पेंटिंग और सित्तन्ना-वसल में जैन गुफा-मंदिर में पेंटिंग के छोटे एरिया के बाद, ये क्वालिटी की दूसरी बड़ी सीरीज़ हैं जो भारतीय म्यूरल पेंटिंग के इतिहास में एक ज़रूरी लैंडमार्क बनाती हैं। दूसरा तल परिक्रमा पथ भी उतना ही दिलचस्प है, क्योंकि इसकी अंदरूनी दीवार पर बीच की ऊंचाई पर एक सौ आठ चौकोर पैनल बने हैं जो एक बेल्ट की तरह चारों ओर फैले हुए हैं, आखिरी सत्ताईस को छोड़कर बाकी सभी पर पूरी नक्काशी है जिसमें शिव, चार भुजाओं वाले, भरत के नाट्यशास्त्र में बताए गए अलग-अलग करण या डांस-पोज़ दिखाते हुए दिख रहे हैं।

क्रमिक के आवक कॉर्बेलिंग या ऑफसेटिंग की एक प्रणाली द्वारा

दो दीवारों के दो आमने-सामने वाले हिस्सों के अंदरूनी हिस्से, या कदलिका-करण, एक सिस्टम है जिसे आम तौर पर भारतीय आर्किटेक्चर में असली आर्च या वॉल्टिंग के ऑप्शन के तौर पर जगहों को जोड़ने के लिए अपनाया जाता है। दो दीवारें तीसरी मंज़िल के सबसे ऊपरी लेवल पर मिलती हैं, जहाँ से इस ऊँचे विमान के धीरे-धीरे पीछे हटते हुए तलों का बाकी पिरामिड जैसा सुपरस्ट्रक्चर ऊपर उठता है। कुल सोलह स्टेज हैं, जो लगभग ट्रेडिशनल मैक्सिमम हैं। हर तल अपने प्रस्तर के ऊपर कूट, शाला और पंजर का हार लिए होता है। सबसे ऊपरी तल के चारों कोनों पर चार नंदी रखे हैं, जिनके बीच से अष्टकोणीय ग्रीवा और शिखर ऊपर उठे हुए हैं। अकेले आखिरी गैप को बंद करने वाले सबसे ऊपरी पत्थर का वज़न उसके साइज़ से 80 टन (81.3 मीट्रिक टन) होने का अंदाज़ा है। स्तूप, जैसा कि मूल रूप से राजराजा का इरादा था, और जैसा कि मंदिर में उनके शिलालेख में बताया गया है, तांबे का है, सोने से मढ़ा हुआ है और 3.82 m ऊँचा है। पिरामिड का पूरा अंदरूनी हिस्सा, उसके बेस से लेकर टॉप तक, कदलिका-करण स्टाइल में चिनाई की एक के बाद एक परतों के धीरे-धीरे अंदर की ओर मुड़ने से खोखला हो गया है। सामने की तरफ, पांचवें तल के लेवल तक की मंज़िलों को दो सबसे नीचे के सीधे तलों के अंतराल के ऊपर थोड़ा आगे बढ़ाया गया है, जिसे मुख-शाला या मुख-भद्र कहा जाता है, ताकि इन रास्तों को भी विमान की ऑर्गेनिक स्कीम में शामिल किया जा सके, जो द्रविड़ ऑर्डर का सबसे बड़ा मुख-विमान है।

अधिष्ठान के ऊपर से, उत्तरी तरफ के लगभग बीच में, एक बहुत बड़ा और नक्काशीदार पानी का नल निकला हुआ है, जो पवित्र जगह के फर्श से अभिषेक का पानी बाहर निकालता है। पानी दोनों दीवारों के बेस से होकर ढलानों से और बीच में संधार परिक्रमा के फर्श से होकर जाता है। लंबा प्रणाल, या नल, एक भूत के सिर पर टिका होता है जो उपपीठ प्लेटफॉर्म पर बैठा होता है और शंख बजाता है। इस प्रणाल के सामने और थोड़ा पूरब में शिव मंदिर के सेनेशल, चंडिकेश्वर के लिए पुराना चौकोर विमान बना हुआ है। राजराजा द्वारा अपने बड़े मंदिर में बनाई गई यह जगह बाद के समय के सभी शिव मंदिरों के लिए आम हो गई।





विमान और उसके एक्सियल मंडपों, जिसमें नंदी मंडप भी शामिल है, के चारों ओर खुले आंगन को घेरते हुए, उसी समय की दो-मंज़िला प्रकार की दीवार है। मंज़िलें बाहर से बीच की ऊंचाई पर बने एक हॉरिजॉन्टल कपोत से अलग की गई हैं, जबकि दोनों मंज़िलें कुछ-कुछ दूरी पर नक्काशीदार पिलस्टर से बंटी हुई हैं। प्रकार के पूर्वी हिस्से के बीच में पूरी तरह से पत्थर से बना एक बहुत बड़ा गोपुर है। प्रकार की दीवार के अंदर और उसके सहारे एक लगातार दो-मंज़िला क्लोस्टर, या मालिका बना हुआ है, जिसके ऊपर एक तीसरा खुला टेरेस है, जो चारों कोनों और तीनों तरफ के बीच में आठ कोनों वाले ग्रीवा-शिखर वाले सात चौकोर त्रितल

विमानों से रुका हुआ है। ये दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पूर्व की ओर आठ दिक्पालों, या दिशाओं के रक्षकों, अग्नि, यम, निरुति, वरुण, वायु, सोम और इसान को समर्पित हैं। आठवें दिक्पाल, इंद्र, और सूर्य के लिए एक और मंदिर, पूरब में गोपुर के सीधे बेस के अंदरूनी हिस्से में मिलते हैं। बाकी के लिए, मठ को सामने के खंभों के पीछे लगे खंभों की एक लाइन से बांटा गया है, जो सामने के लगातार गलियारे में और पीछे के हिस्से में छत्तीस, दो और तीन मंज़िला मंदिरों की एक लाइन है, जिसमें दिक्पालों के मंदिरों को छोड़कर बाकी सभी मंदिर हैं, जिनकी छतें मान-दापा टाइप की सपाट हैं। प्रकार की दीवार के ऊपर नंदियों की एक लाइन लगी है। गोपुर के सामने और उससे कुछ दूरी पर एक दूसरा बाहरी और बड़ा गोपुर है, जो शायद मूल रूप से बाहरी प्रकार की दीवार के साथ था, लेकिन अब बहुत बाद के समय में इसे रक्षात्मक किले की दीवार में शामिल कर लिया गया है। अंदरूनी गोपुर के अलावा, प्रकार की दीवार में तोरण-गेट जैसे तीन और छोटे दरवाज़े हैं, जो मुख्य विमान के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर के बीच में बने हैं। ये सखाओं वाले साधारण ओवरडोर से बने हैं और इनके ऊपर हॉरिजॉन्टल लिंटेल हैं।

बृहदीश्वर मंदिर हर तरह से सचमुच महान है, जैसा कि इसके भक्त और विजयी शाही बिल्डर ने सोचा था। इस तरह यह आर्ट-आर्किटेक्चर, पत्थर और तांबे की मूर्ति, आइकॉनोग्राफी, पेंटिंग, डांस और म्यूजिक, ज्वेलरी, लैपिडरी वगैरह की हर ब्रांच का भंडार है। इस पर खुदे हुए कई संस्कृत और तमिल शिलालेख बहुत अच्छे हैं।





कैलिग्राफी। उनमें से कुछ अलग-अलग देवी-देवताओं की मेटल की मूर्तियों के समर्पण से जुड़ी हैं, जिसमें उनके रूप और रूप, उनके माप और वज़न की डिटेल्स हैं। इनमें से कुछ तस्वीरें अभी भी मौजूद हैं। दूसरी तस्वीरों में अलग-अलग गहनों के बारे में बताया गया है, जिसमें सोने और रत्नों के वज़न, उनकी वैरायटी और क्वालिटी, उन्हें लगाने का तरीका, लाख का वज़न और इस्तेमाल किए गए धागों की डिटेल्स हैं। दान में दी गई ज़मीनों का माप यूनिट के हिस्से में दिया गया है। इन सबसे पता चलता है कि सम्राट अपने बड़े मंदिर से जुड़े मामलों में कितना ध्यान रखते थे।

इस मंदिर के कोर्ट के अंदर दूसरी बनावटें हैं - दक्षिण की ओर वाला अम्मन मंदिर, या बृहदिश्वर की पत्नी बृहन्नायकी का देवी-मंदिर, जो नंदी के उत्तर में है, जिसके विमान में सला-शिखर और एक्सियल मंडप हैं, नटराज के लिए पास का सभा-मंडप भी दक्षिण की ओर है, और कोर्ट के दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में पूर्व की ओर वाले गणेश और सुब्रह्मण्य मंदिर यूनिट हैं। ये सभी इस कॉम्प्लेक्स में बाद में जोड़े गए हैं, आखिरी वाला नायक काल का है।

चोलों की यह सबसे बड़ी रचना 1003 में शुरू हुई थी, और इसकी कुछ डिटेल्स अभी भी अधूरी थीं। इसके ठीक बाद, लगभग बीस साल के अंदर, एक और शानदार चोल स्ट्रक्चर

बनाया गया, जिसे बृहदीश्वर भी कहा जाता है। इसे लगभग उसी प्लान और डिज़ाइन पर राजेंद्र प्रथम चोल (1012-14) ने बनवाया था, जो राजराजा के महान बेटे और काबिल वारिस थे। इस महान मंदिर की जगह नई बनी राजधानी गंगई-कोंडा-चोल-पुरम (तिरुचिरापल्ली ज़िले) में चुनी गई थी, जिसका नाम राजा के टाइटल के नाम पर रखा गया था, जो उनकी जीत और गंगा तक सफल अभियान को दिखाता था। इस मंदिर-कॉम्प्लेक्स में सिर्फ़ दो एंट्री थीं, पूरब में एक गोपुर (अब टूटा हुआ) और उत्तर में एक सादा दो मंज़िला तोरण गेट। पिछली सदी में पड़ोस में नदी का बांध बनाने के लिए पत्थर जुटाने के लिए पत्थर की दीवार, गोपुर, दो मंज़िला मालिका, और उप-मंदिरों और मंडपों का एक बड़ा हिस्सा ब्लास्ट करके गिरा दिया गया था, लेकिन खुशकिस्मती से मुख्य विमान और उसके बीच के मंडप, और कोर्ट में दो या तीन छोटे विमान यूनिट बच गए हैं और

*Plate 16.* LAKKUNDI—KASI VISVESVARA TEMPLE *(See page 153)*

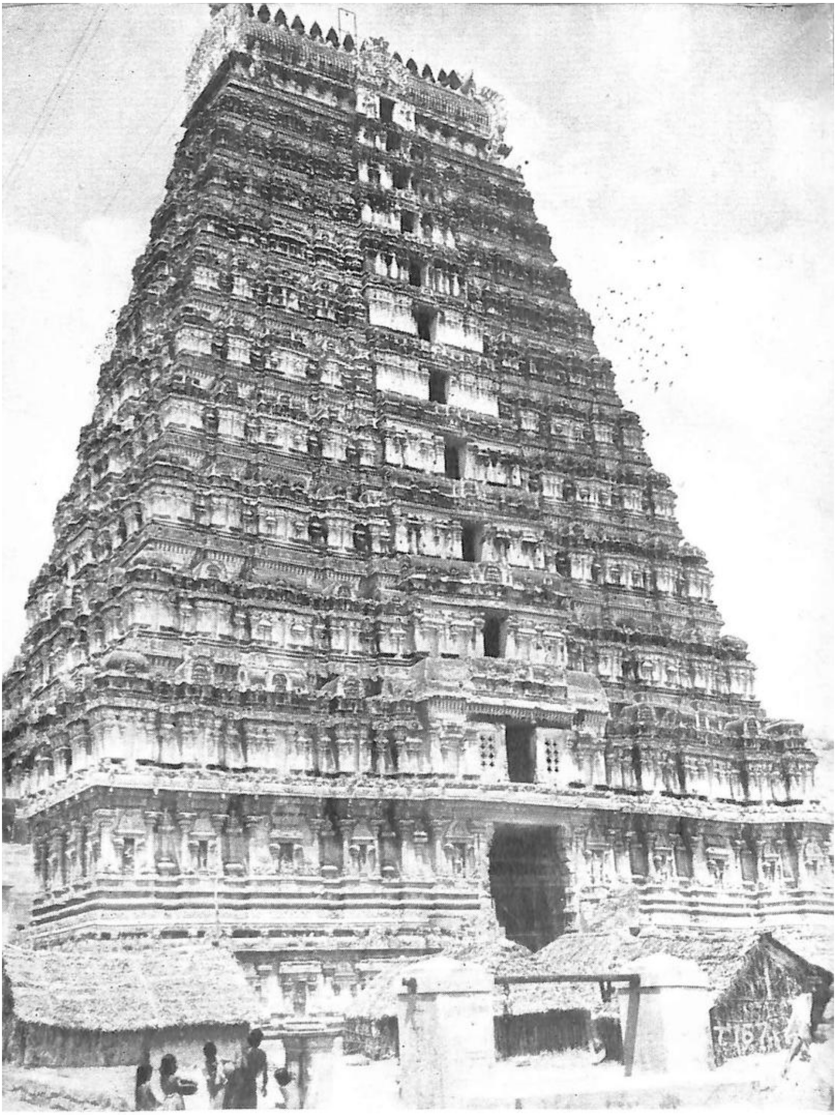

*Plate 17.* TIRUVANNAMALAI—ARUNACHALA TEMPLE MAIN (EAST GOPURAM)
*(See page 168)*

अभी भी लगभग सही-सलामत हैं। यह विमान अपने पहले वाले और तंजावुर के मॉडल से कम ऊंचाई और छोटे साइज़ का है, लेकिन दीवार के आलों पर बनी मूर्ति, जो बोल्ड और लगभग गोल कटी हुई है, शायद ज़्यादा बेहतरीन है। एक ऊँचे उपपीठ के ऊपर बोल्ड तरीके से ढाले गए अधिष्ठान वाला चौकोर विमान भी अपने दो सीधे निचले तलों में संधार है। तीसरे तल पर टिके हुए आगे के तलों का पतला सुपरस्ट्रक्चर, जो इसी तरह के कदलिकाकरण तरीके से बनाया गया है, तंजावुर विमान की सीधी कोने की लाइनों के उलट कोनों पर एक उभरी हुई आउटलाइन बनाता है। यह एक खूबसूरती की कामयाबी है, जो ऊपरी तलों के हारा एलिमेंट्स में कोनों पर कर्णकूट के तौर पर अष्टकोणीय कूटों के चालाकी से बीच-बीच में लगाने से मिली है। बाहर से यह विमान क्वालिटी, बारीकी और बोल्ड मूर्ति की वैरायटी के साथ-साथ अपने सुपरस्ट्रक्चर के ज़्यादा खूबसूरती भरे डिज़ाइन के मामले में अपने पहले वाले से बेहतर कहा जा सकता है। लेकिन अंदर से, इसमें दूसरी सजावट, जैसे पेंटिंग और डांस की तस्वीरें नहीं हैं। मेन विमान के दोनों तरफ उत्तर कैलाश और दक्षिण कैलाश नाम के छोटे मंदिर भी लगभग उसी समय के हैं।

मद्रास के पास तिरुवोरियूर मंदिर का काले पत्थर से बना पूरी तरह से एप्सिडल और कई मंज़िला मुख्य विमान एक और बढ़िया मंदिर है, हालांकि यह राजेंद्र प्रथम चोल का एक छोटा स्ट्रक्चर है। नींव का शिलालेख दिलचस्प है क्योंकि यह कृष्ण-शिला (काला पत्थर) के रूप में इस्तेमाल किए गए पत्थर के प्रकार को बताता है, विमान के उन अंगों या हिस्सों का ब्यौरा देता है जिनसे इसे सजाया गया था, और आर्किटेक्ट-डिज़ाइनर का नाम भी देता है। इसके बाद, तमिलनाडु के इस हिस्से तोंडईमंडलम में बाद के चोल काल और उसके बाद के समय में कई पूरी तरह से एप्सिडल मंदिर या चार-तरफा आदितल और एप्सिडल सुपर-स्ट्रक्चर और ग्रीवा-शिखर वाले मंदिर बनते रहे। ऐसे मंदिर दक्षिण में चोल और पांडी-मंडलम में काफी कम हैं।

दारासुरम में राजराजेश्वर, जिसे अब ऐरावतेश्वर कहा जाता है, चोल राजराजा II (1146-1173) द्वारा बनवाया गया था, और त्रिभुवनम में कम्पहारेश्वर, चोल कुलोत्तुंग III (1178-1223) द्वारा बनवाया गया था (दोनों





तंजावुर ज़िले के मंदिर बाद के चोलों के आखिरी बड़े मंदिर हैं, जिनमें पूरी तरह पत्थर के

विमान हैं। ये विमान तेरहवीं सदी के बीच में बाद के पांड्यों के आने से पहले बनाए गए थे। ये दोनों असल में दो बृहदीश्वर विमानों के छोटे वर्शन हैं, लेकिन इनके डिज़ाइन में कुछ बदलाव और नएपन हैं, जिससे चालुक्य-राष्ट्रकूट का असर दिखता है। ऐरावा-तेस्वर अपने पाँच तल विमान के सुपरस्ट्रक्चर में तल हार के कोने के हिस्सों में एक चालाकी भरा बदलाव दिखाता है। ये चौकोर, आठ कोनों वाले और गोल कर्णकूट हैं जो नागर, द्रविड़ और वेसर टाइप के हैं; इसके अलावा, ये निचले तल के कोनों में से एक में मुड़े हुए अपसाइडल वेसर टाइप के पंजरा भी हैं। सबसे ऊपर वाले तल में चार चौकोर कर्णकूट हैं, जिनके दोनों तरफ लेटे हुए नंदी हैं। यह खासियत चोल राजेंद्र I ने अपने बाद के मंदिरों में एक नयापन दिखाया है। यह कुछ मंदिरों में लगभग एक सदी तक रहा और फिर पहले की तरह गायब हो गया, जिससे जगह सिर्फ़ नंदियों के लिए रह गई। लेकिन साथ ही, राजराज II का यह मंदिर जोड़े में नंदी, या दूसरे मंदिरों में सही वैसे ही वाहन या लंचन रखने के विचार की शुरुआत करता है - जिन्हें बाद के समय में एक-दूसरे से सटाकर, या एक गर्दन और सिर के साथ एक कोने पर रखा जाता था, जिसके दोनों तरफ़ दो अलग-अलग शरीर होते थे। एक और खासियत जो पल्लव के बाद के मंदिरों और पहले के चोल मंदिरों में छोड़ी हुई पाई गई, लेकिन चालुक्य मंदिरों की सीरीज़ में बनी रही, और इस मंदिर में फिर से मिली, वह है आदितल के सामने के हिस्से से आगे एक्सियल मंडपों के ऊपर कूट, साल और पंजर के हार का विस्तार। विमान और मंडपों का मुख्य एक्सियल कॉम्प्लेक्स बृहदीश्वर के प्लान जैसा ही है। हालांकि यह साइज़ में छोटा है, लेकिन यह छोटे पैनल से बने आलों और पौराणिक दृश्यों के कैमियो में बोल्ड और गोल मूर्तियों के साथ ज़्यादा सजा हुआ है। विमान की दीवारों के बेस के चारों ओर एक बेल्ट बनाने वाली मूर्ति खास है क्योंकि यह पेरिया-पुराणम नाम की किताब के अनुसार 63 शैव नयन-मार्स के जीवन की कहानियों को एक साथ बताती है। दीवार के आलों और मालिका कॉरिडोर में लगी बड़ी ढीली मूर्तियां हैं।



एक नए मीडियम में, यानी, काले, पॉलिश किए हुए बेसाल्ट जैसे पत्थर में, जो स्ट्रक्चर के ग्रेनाइट के उलट है। ये सभी अच्छी क्वालिटी की मूर्तियां हैं और उनमें से ज़्यादातर को अब निकालकर तंजावुर आर्ट गैलरी में दिखाया गया है। इस पूरब की ओर वाले कॉम्प्लेक्स के बंद महा-मंडप के दक्षिण में एक खुला पोर्च जैसा अग्र-मंडप है, जिसमें पैनल मूर्तियों वाले खूबसूरत नक्काशीदार खंभे हैं। पोर्च मंडप को खुद हाथियों द्वारा खींचे जा रहे पहियों वाले रथ की नकल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

महा-मंडप के उत्तरी हिस्से में देवी के लिए बनाया गया अम्मान मंदिर है, जो मुख्य देवता की पत्नी हैं। पूरा मंदिर एक प्रकार से घिरा हुआ है, जिसके अंदर एक मंज़िला मालिका कॉरिडोर है और सामने एक मंज़िला गोपुर है। इस गोपुर के बाहर सजा हुआ लेकिन छोटा नंदी मंडप है। इसके आगे एक और बाहरी गोपुर है जिसके सामने एक बाहरी प्रकार था जो अब मौजूद नहीं है।

ऐरावतेश्वर कॉम्प्लेक्स के उत्तर में सामने गोपुर के साथ एक अलग घेरे में बना देवनायकी अम्मन मंदिर भी आज का है, और विमान के बड़े सुपरस्ट्रक्चर में देवी मंदिरों के हिसाब से एक शाला शिखर है। आदिताल की दीवारों पर बने खंभे व्याल पर बने हैं, जैसा कि बहुत पहले के राजसिंह पल्लव मंदिरों में था।

कम्पहारेश्वर मंदिर ऐरावतेश्वर मंदिर से काफी मिलता-जुलता है, जिसमें इसका पहिए वाला बरामदा मंडप, विमान आदितल के सामने एक्सियल मंडपों पर हारा एलिमेंट्स का एक्सटेंशन, और अम्मन या देवी और चंडीकेश्वर विमान एक-दूसरे के समय के हैं। यह मंदिर भी अलग-अलग तरह की मूर्तियों का एक असली म्यूज़ियम है, जिसमें कुछ बेहतरीन डांस पोज़ भी शामिल हैं। उस समय के मुख्य गोपुरों में से, अंदर वाला सामने वाला और पीछे वाले ऊपर से टूटे हुए हैं, और लंबा बाहरी सामने वाला गोपुर उस समय का खास छोटा आकार का है।

बाद के चोल और बाद के पांड्या काल के मंदिरों की सीरीज़, जो छोटे मुस्लिम हमले से आई रुकावट और दक्षिण के विजयनगर साम्राज्य के तहत फिर से शुरू होने की वजह से खत्म हो गई, अक्सर ऊपरी ढांचे के लिए ईंट बनाने के सिस्टम पर वापस आ जाती है।





विमान और गोपुर के पत्थर के हिस्से पर तल, सिर्फ़ मंडप ही पूरी तरह पत्थर के हैं। इस और बाद के समय के मंदिरों में मंदिर-कॉम्प्लेक्स के ओरिजिनल प्लान और बनावट में राजेंद्र प्रथम चोल के समय में लाए गए नए और ज़रूरी हिस्से को शामिल किया गया है, यानी तिरुक्कट्टा-कोट्टम, या शैव मंदिरों में अम्मन मंदिर, या वैष्णव मंदिरों में तायर सन्निधि, जो तमिलनाडु के सभी मंदिरों और दूसरी जगहों पर तमिलों द्वारा बनाए गए मंदिरों की खास पहचान थी। उदाहरण के लिए, काशी-वाराणसी में भगवान विश्वेश्वर की पत्नी के लिए तमिलों द्वारा बनाया गया एक विशालाक्षी मंदिर है। ये भी पहले बने उन मंदिरों के आस-पास या उनके आस-पास बनाए गए थे जिनमें मूल रूप से ये नहीं थे; जैसे, तंजावुर बृहदीश्वर। कॉम्प्लेक्स में एक तय जगह पर, यह एक अलग विमान है जिसमें एक सला शिखर है जो मुख्य विमान में मुख्य देवता की दिव्य पत्नी के रूप में देवी को समर्पित है, और पूजा की रस्मों और त्योहारों में इसे बराबर महत्व मिलता है। इस तरह, मुख्य देवता के स्थानीय नामों के अनुसार, देवी पत्नी का एक सही नाम है, जैसे, बृहदीश्वर-बृहन्नयाकी, सुंदरेश्वर-मीनाक्षी, वगैरह।

मंदिर परिसर के गोपुर, आगे और पीछे, और अक्सर कई प्रकार के गोपुरों के किनारों पर, अपने बड़े आकार के कारण और भी खास हो जाते हैं, और अक्सर ऊंचाई में मुख्य विमान से भी ऊपर निकल जाते हैं। बाद के चोलों, बाद के पांड्यों, और उस समय के पल्लवराय सरदारों और दूसरों ने पहले से मौजूद मंदिरों में कई गोपुर बनवाए। होयसल भी, जब बाद के चोलों के आखिरी दिनों में तमिलनाडु के एक हिस्से पर कब्ज़ा करने आए, तो उन्होंने कुछ खास गोपुर छोड़े, जैसे, तिरुवन-नामलाई में बल्लाल गोपुर। चिदम-बरम, वृद्धाचलम और दूसरी जगहों पर

को-पेरुंजिंगा के पल्लवराय गोपुर अपनी मूर्तियों के लिए जाने जाते हैं, खासकर उन पर नाट्यशास्त्र के सही श्लोकों के साथ एक सौ आठ डांस पोज़ को लेबल के तौर पर दिखाया गया है। सजावटी पिलस्टर-मोटिफ, जो असल में एक पिलस्टर है जिसके ऊपर एक मंदिर-मोटिफ होता है, अक्सर एक नासिका सामने, जो सजा हुआ होता है



विमान आदितालों, मंडपों और गोपुरों की दीवारों के खांचों में एक पूर्णघट या पूर्ण-कुंभ का आधार बन गया, जो ऐसा प्रतीत होता था मानो भित्तिस्तंभ किसी भरे हुए घड़े या भरपूर घड़े से निकला हो, जो उसके मुंह से निकलती पत्तियों से पता चलता है। ये कुंभ-पंजर एक आम विशेषता बन गए। कोरबेल के आकार भी बदलते हैं, और पहले के चोल मंदिरों के साधारण बेवेल्ड कोरबेल का केंद्रीय टेनन, कमोबेश एक घंटी के आकार के पेंडेंटिव का रूप ले लेता है, जो धीरे-धीरे फूलों वाला और फैला हुआ हो जाता है, जो विजयनगर काल और उसके बाद की विशिष्ट पुष्प-पोटिका के शुरुआती मदलाई, या घुमावदार डंठल का अनुमान लगाता है। पल्लव और पहले के चोल काल के बड़े, मोटे और चौकोर रूपों के विपरीत, स्तंभ और भित्तिस्तंभ के शीर्ष का शीर्ष पतला, छोटा और बहुकोणीय हो जाता है। दक्षिणी स्टाइल के आठ कोनों वाले ग्रीवा और शिखर, जो पहले के समय में ज़्यादा आम थे, अब दक्षिणी मंदिरों के आम तौर पर आम हो गए हैं, हालांकि चौकोर और गोल आकार कभी-कभी, और ऊपरी हिस्से वाली स्टाइल और भी कम देखने को मिलती है।

ऐरावतेश्वर पोर्च मंडप जैसे मंडप, जो घोड़ों या हाथियों या दोनों से खींचे जाने वाले पहियों वाले रथ के रूप में होते थे, मुख-मंडप के सामने या उसके एक तरफ मुख्य द्वार बनाते हुए जोड़े जाते थे, काफी आम हो गए थे। ये कुंभकोणम (तंजावुर जिला) के सारंगपानी और नागेश्वर मंदिरों में पाए जाते हैं, जहाँ नागेश्वर के मामले में यह नटराज के सभा-मंडप के सामने है, जो बाद के चोल काल के मंदिरों में जोड़ी गई एक और खासियत है। ये तिरुवरूर, कुडुमियामलाई, वृद्धाचलम, चिदंबरम और कई दूसरी जगहों पर भी मिलते हैं। इससे पूर्वी गंगा राजा नरसिंह को उत्तरी तटीय आंध्र में अपने सिंह-चलम मंदिर में और खासकर कोणार्क में अपने महान सूर्य मंदिर में ऐसा मंडप बनाने की प्रेरणा मिली।

देवी मंदिर के जुड़ने से कल्याण उत्सव, या देवी-देवता का वार्षिक औपचारिक विवाह उत्सव और अधिक आम प्रचलन में आया, जिसके लिए विशेष कल्याण डोलोत्सव (झूला) की व्यवस्था की जाती है।



त्योहार) मंडप बनाए गए, जिनके साथ यज्ञ-मंडप भी जुड़े थे। शिव मंदिरों में सभा-मंडप या

नृत्त-मंडप के हिस्से के तौर पर खास नटराज मंदिर के आने का ज़िक्र पहले ही किया जा चुका है। दूसरे तरह के मंडप अलग-अलग समय के त्योहारों के लिए उत्सव-मंडप थे, जब उत्सव-मूर्तियों को सजाया जाता था, उनकी पूजा की जाती थी और जुलूस निकाला जाता था। स्नेपना- या अभिषेक-मंडप (स्नान की रस्मों के लिए हॉल), व्याकरण-मंडप (प्रदर्शनी और पढ़ाई-लिखाई के मकसद से हॉल), डांस और संगीत के लिए रंग- और नाट्य-शाला, और यहाँ तक कि आतुरा शाला (अस्पताल मंडप) भी मंदिर-कॉम्प्लेक्स में जोड़े गए। इन सभी ने तमिल देश के मध्ययुगीन मंदिर को न केवल धार्मिक बल्कि समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और दूसरी दुनियावी गतिविधियों का भी केंद्र बना दिया, जो हमेशा मंदिर के आस-पास ही केंद्रित रहती थीं।

बाद की (पश्चिमी) चालुक्य-होयसल श्रृंखला

राष्ट्रकूट, जिनके दो महत्वपूर्ण मंदिर, एलोरा में कैलाश मोनोलिथ और पातडकल के बाहरी इलाके में जैन मंदिर, पर पहले विचार किया गया है, को दक्कन में कल्याण के पुनरुत्थानशील पश्चिमी चालुक्यों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था, जो ग्यारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के बीच सबसे महत्वपूर्ण शक्ति बन गए थे। उन्होंने अपने स्वयं के महत्वपूर्ण संशोधनों के क्रमिक परिचय के साथ चालुक्य-राष्ट्रकूट परंपराओं को जारी रखा। उनके शुरुआती मंदिर जैसे नवलिंग समूह और गडग (धारवाड़ जिले) के पास कुक्का-नूर में कल्लेश्वर, जिन्हें दसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सौंपा जा सकता है, संभवतः बलुआ पत्थर से निर्मित संरचनाओं में अंतिम हैं, और बलुआ पत्थर-जाल चट्टान परंपरा के अंत को चिह्नित करते हैं। उन्होंने अपनी अवधि के मध्य में अपने मंदिरों के लिए क्लोरिटिक-शिस्ट जैसे विभिन्न नरम पत्थरों को अपनाया।

नवलिंग मंदिर नाम के ग्रुप में नौ मंदिरों का बढ़िया ग्रुप है। इसमें नौ दो या तीन मंज़िला चौकोर विमान हैं, जिनकी एक दीवार है, और ये तीन मंडपों की एक सीधी लाइन के किनारों और सिरों पर बने हैं। ये सभी खराब क्वालिटी के बलुआ पत्थर से बने हैं। आम तौर पर ऐसा लगता है-



लेकिन खास शुकनासिकाओं के लिए, वे पूर्वी चालुक्यों के बिच्चावोलु मंदिरों जैसे दिखते हैं। ऊपर के तलों में हार नहीं है, सबसे ऊपर के शिखर का किनारा या किनारा साफ़ तौर पर फैला हुआ है, और किनारे बार-बार एक-दूसरे से अलग किए गए हैं। कुडू अभी भी अपने मेहराबदार आकार बनाए हुए हैं। हार के हिस्सों ने भी अपने खास आकार बनाए रखे हैं, और आदितल की दीवार के उभरे हुए हिस्सों में देवकोष्ठ के ताख हैं जो छोटे स्तंभों के जोड़ों पर

लगे कूट के अगले हिस्सों या मकर-तोरणों से बने हैं। दरवाज़े के चौखट भी बड़े आकार के मकर-तोरण हैं, जिनमें अक्सर ललताभिंब के रूप में गजलक्ष्मी की शिखा होती है। मंडप के खंभे अपने ऊपरी हिस्सों के हिसाब से थोड़े खराद से बने हैं, जबकि शाफ्ट चौकोर और कोणीय है, जो बाद के समय के खास और लगभग पूरी तरह खराद से बने खंभों की शुरुआत को दिखाता है। ग्रुप से थोड़ी दूर महामायी मंदिर है, जिसमें देवी विमानों के लिए एक आयताकार मंदिर है, और सामने दो मंडप भी आयताकार हैं। नवलिंग क्लस्टर के बगल में एक और आयताकार मंदिर है, जिसके सामने संकरा मंडप है। इसके एक कोने में एक तालाब है। बाकी सभी खंडहर इमारतें एक प्रकार से घिरी हुई हैं, जिसके चारों तरफ दो-दो रास्ते हैं। जुड़े हुए शिलालेखों में गंगा, कालिका, सरस्वती और महामायी जैसी देवियों का ज़िक्र इस सेंटर में एक मज़बूत देवी पंथ का संकेत देता है।

कल्लेश्वर में एक चौकोर तीन मंज़िला निरंधर विमान है जिसके सामने एक अंतराल और एक्सियल लाइन में एक बंद मंडप है, जिसके ऊपर आदितल लेवल का हारा भी फैला हुआ है। सबसे ऊपर वाले तल में हारा नहीं है; ऊपरी तल से अंतराल के ऊपर एक शुकनासिका निकली हुई है। हालाँकि, मंज़िलों को पहले के टाइप की तरह मोटे तौर पर मार्क नहीं किया गया है, और अलग-अलग साइड वाले चौकोर शिखर का किनारा अच्छी तरह फैला हुआ है। कॉर्निस पर कुडू अपना घोड़े की नाल जैसा आकार खोने लगे हैं और चपटे पहलू या एंटीफिक्स बन गए हैं। आदितल के उभरे हुए हिस्सों के बीच की दीवारों की जगहें दक्षिणी विमान पैटर्न या उत्तरी प्रसाद पैटर्न के सुपरस्ट्रक्चर के साथ मंदिर के सामने के हिस्सों की उभरी हुई नक्काशी से सजी हैं। मंडप के चौकोर पिलर कुछ हद तक लेथ-टर्न्ड हैं, खासकर





फलक के नीचे के ऊपरी हिस्से, इस मामले में पहले के नवलिंग उदाहरणों की तुलना में कुछ बेहतर दिखाते हैं। मंडप के चार बीच के खंभों के सामने दो आयताकार मंदिर हैं, जो शायद मूल रूप से गणपति और दुर्गा को समर्पित थे। मंडप की दीवार के कोनों में छेद वाली खिड़कियाँ हैं। लेकिन बनाने के नज़रिए से ज़्यादा दिलचस्प बात यह है कि दीवारें, हालांकि आम मोटाई की हैं, पत्थर के छोटे ब्लॉक से बनी हैं, जो ईंट के काम जैसा लगता है, जबकि चालुक्यों और राष्ट्रकूटों के पहले के बड़े या लगभग बड़े कंस्ट्रक्शन में बड़े ब्लॉक इस्तेमाल किए गए थे।

गडग के पास लक्कुंडी के मंदिरों की बात करें, तो ऐसे मंदिर मिलते हैं जिनके बनाने में बलुआ पत्थर, जो तब तक आम था, को पूरी तरह से हटाकर बारीक बनावट वाला, मुलायम, क्लोराइट शिस्ट पत्थर इस्तेमाल किया गया है, जो कम मोटाई में कुदरती तौर पर निकाला जाता है। नया मटीरियल, अपनी कम मोटी खदान के साइज़ और ज़्यादा आसानी से काटे जाने की वजह से, कारीगरी पर कुदरती तौर पर असर डालता है, जिससे चिनाई के कोर्स का साइज़ कम हो जाता है और ऐसे आकर्षक मुलायम और चिकने मटीरियल पर बारीक और

नाजुक नक्काशी की मात्रा बढ़ जाती है। इस जगह पर ऐसे मटीरियल के कई दिलचस्प मंदिरों में से, जैन मंदिर सबसे बड़ा और सबसे खास है जो शायद ग्यारहवीं सदी के दूसरे हिस्से में बना होगा। इसमें एक चौकोर पांच मंज़िला निरंधर विमान है, जिसमें एक चौकोर ग्रीवा और शिखर है। शुरू में इसके सामने एक बंद नवरंग मंडप था, हालांकि बाद में एक खुला मंडप जोड़ा गया था। चार बीच के खंभों के अंदर शामिल नवरंग का बीच का हिस्सा आसपास के आठ बाहरी हिस्सों से एक चौकोर बड़ा है। एक आदितल की दीवार मोटी और बड़ी बनाई गई है ताकि हार और काम करने वाले ताला को सहारा दिया जा सके, जिसके ऊपर एक मंदिर है (जैसा कि पट्टडकल के जैन मंदिर में है, जो हालांकि, संधार है) और इसके किनारों पर बाहर की तरफ भी बार-बार अलग-अलग उभार दिए गए हैं। इसके अलावा, गर्भगृह के चार अंदरूनी कोनों पर चार सपोर्टिंग पिलर हैं। आदितल हार हमेशा की तरह अंतराल और बड़े नवरंग के ऊपर फैला हुआ है। ऊपरी तल, काफी कम ऊंचाई के हैं और धीरे-धीरे

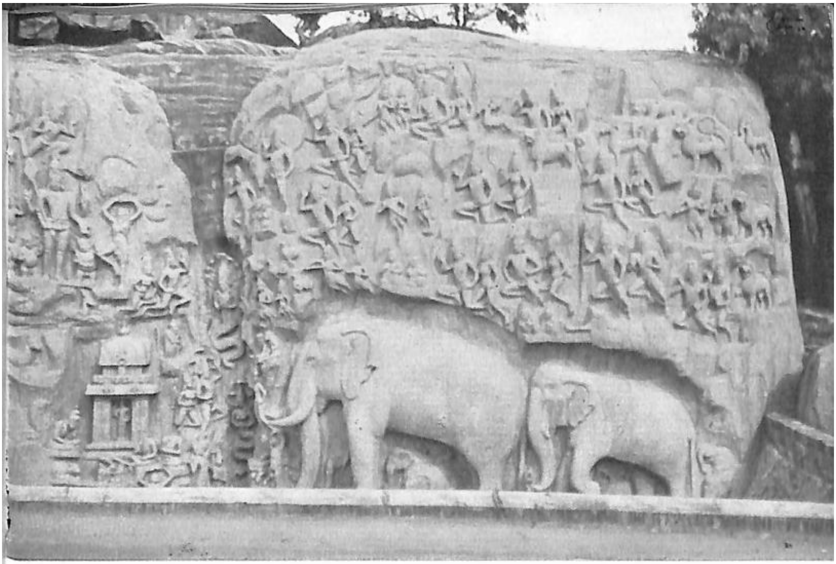

*Plate I.* MAHABALIPURAM—ARJUNA'S PENANCE, SCULPTURE AND MINIATURE VIMANA RELIEF *(See page 50)*

*Plate II.* KANCHIPURAM—KAILASANATHA TEMPLE *(See page 115)*

*Plate III.* BELUR—CHENNAKESAVA TEMPLE *(See page 155)*

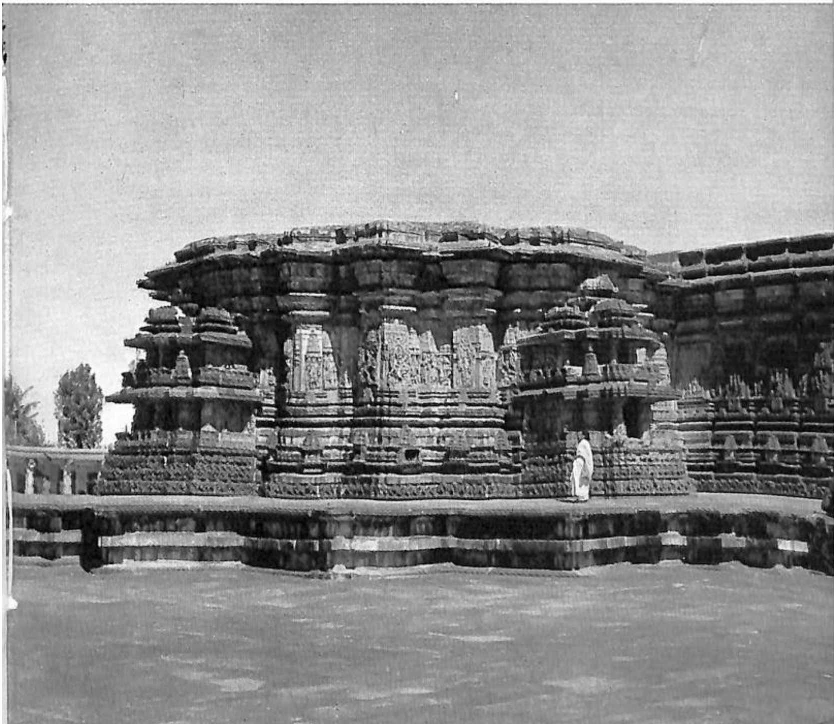

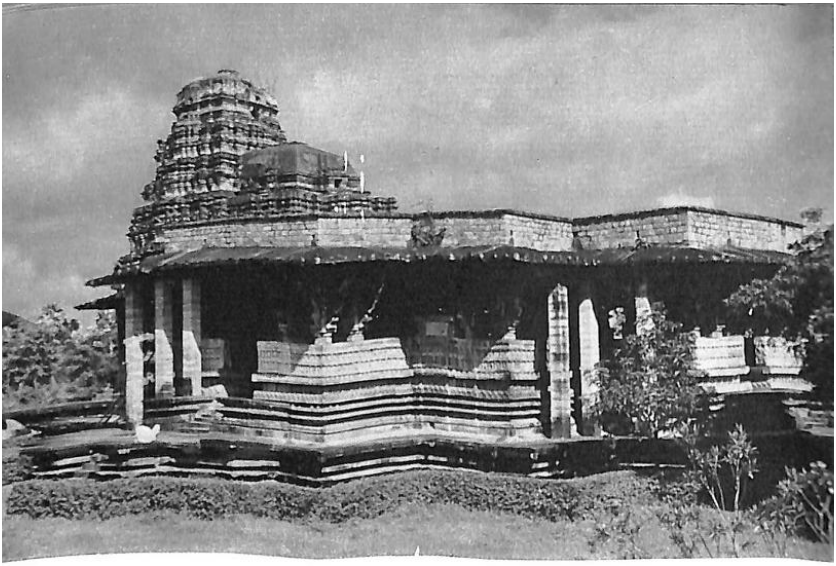

*Plate IV.* Palampet, AP—Ramappa Temple *(See page 160)*

चौड़ाई कम होने पर, सबसे ऊपर वाले को छोड़कर, उन सभी के ऊपर हारा होता है। ग्रीवा भी बहुत छोटी होती है और उभरे हुए छोटे शिखर का किनारा अच्छी तरह फैला हुआ होता है। कॉर्निस पर कुडू, हालांकि सपाट होते हैं, लेकिन उनका आर्च शेप बना रहता है, और उनमें सिंह-मुख फिनियल होते हैं। दीवारों पर लगे पिलस्टर पतले होते हैं जिनके ऊपरी हिस्से अपना मज़बूत शेप खो चुके होते हैं। उनके हिस्सों का सही साइज़ खो जाता है और एबेकस, या फलक, छोटा और पतला होता है। दीवारों पर जोड़े वाले पिलस्टर के बीच की जगहों में नासिका-फ्रंट मोटिफ बने होते हैं। दीवार के खांचों के बीच की खाली जगहों में 'डेकोरेटिव पिलस्टर' होता है - एक पिलस्टर जिसके ऊपर एक मंदिर-फ्रंट या पैवेलियन होता है, जैसा कि ग्यारहवीं सदी के तंजावुर और गंगई-कोंडा-चोल-पुरम के चोल मंदिरों में पाया जाता है। डेकोरेटिव पिलस्टर को दो छोटे पिलस्टर सपोर्ट के ऊपर एक तोरण के अंदर फ्रेम किया जाता है। लंबा काम करने वाला दूसरा तल और पांच मंज़िला ऊंचाई इस बढ़िया विमान को बड़ा बनाते हैं।

लक्कुंडी में काशी-विश्वेश्वर मंदिर और गडग से ज़्यादा दूर नहीं, इट्टागी में महादेव मंदिर, पश्चिमी चालू-क्या के तहत इस इलाके में आर्किटेक्चर और कला के शिखर को दिखाते हैं। बाद वाले मंदिर की तारीख उसके शिलालेख से ठीक-ठीक पता चलती है, जो 1112 A.D. है। मुख्य विमान, जो सिर्फ़ ग्रीवा तक मौजूद है, शिखर और स्तूप खो गए हैं, एक चौकोर पाँच मंज़िला ढांचा है जो एक बारीकी से बने अधिष्ठान पर खड़ा है, जिसमें चौथे तल के लेवल से अंतराल की छत पर एक शुकनासिका निकली हुई है। हर तरफ़ पूरा विमान पाँच खास खांचों में फैला हुआ है, बीच वाला सबसे ज़्यादा निकला हुआ है, जिसके बीच में चार पतले खांचे हैं, खांचों को बार-बार ऑफसेट किया गया है, जिससे यह प्लान साफ़ तौर पर एक स्कैलप्ड है। तल के दोनों तरफ के हारा, खाड़ियों की चौड़ाई के हिसाब से दो कर्णकूट से बने हैं, एक दोनों सिरों पर, एक बीच का शाला, और दो बीच के पंजरा। आदितल के दोनों तरफ का सबसे बाहर निकला हुआ बीच का शाला सुपरस्ट्रक्चर वाला हिस्सा गहरे और चौड़े ताकों को घेरता है जो छोटे पवित्र स्थान बनाते हैं, जिससे पूरा हिस्सा अपने खंभों, प्रस्तर और सुपरस्ट्रक्चर के साथ छोटे विमानों जैसा दिखता है।



बीच वाले के बेस के चारों ओर गुच्छे बने हुए हैं, जबकि कोने वाले, जो कर्णकूटों से मिलते-जुलते हैं, उनके सामने के हिस्से पतले और उथले हैं। नवरंग सामने एक बड़ा चौकोर आकार बनाता है, इसकी बाहरी दीवारें और अधिष्ठान भी वैसे ही उभरे हुए और धंसे हुए हैं, और उन पर भी वैसी ही बाहरी सजावट है। इससे भी ज़्यादा दिलचस्प है इसकी बहुत ज़्यादा सजी हुई और ऊँची बीच की छत, और इसके टीयर स्लैब पर बारीक नक्काशी, खासकर वे जो चौकोर

खांचों की छतों के कोनों को काटती हैं। इस मंडप में तीन दरवाज़े हैं, पूरब, दक्षिण और उत्तर, जिनमें खंभों वाले बरामदे हैं, सामने वाला इसे सामने की तरफ एक खुले कई खंभों वाले अग्र-मंडप से जोड़ता है, जिसके तीन तरफ भी तीन बरामदे हैं। इस मंदिर के बहुत ज़्यादा सजावटी एलिमेंट, साथ ही इसका प्लान और दूसरी खासियतें, समय के हिसाब से इसके होयसल और काकतीय राजाओं के खास मंदिरों के करीब होने का इशारा करती हैं, जो उनके बाद बारहवीं सदी के आखिर और तेरहवीं सदी की शुरुआत में इस इलाके में सत्ता में आए थे।

साउथ डेक्कन और मैसूर में होयसल वंश के या उनकी देखरेख में बने मंदिर बहुत ही आसान, घने और बारीक दाने वाले, मुलायम क्लोराइटिक शिस्ट या टैल्क के बने होते हैं, जिन पर बारीक और बारीक नक्काशी की जा सकती है। मंदिर यूनिट में आम तौर पर एक विमान होता है जो अपने छोटे अंतराल से एक बंद नवरंग से जुड़ा होता है, जिसके पहले अक्सर एक और मंडप होता है। यह भी कोई अजीब बात नहीं है कि मंदिर यूनिट में एक कॉमन नवरंग के तीन तरफ तीन मुख्य विमान होते हैं, जिनमें से हर एक कनेक्टिंग अंतराल से उसमें खुलता है, नवरंग के चौथे तरफ मुख्य एंट्रेंस या पोर्च होता है। इसे त्रिकुटाचल कहते हैं। पूरा कॉम्प्लेक्स एक कॉमन चौड़े टेरेस या उपपीठ पर बना होता है, जो पूरे यूनिट के सबसे ऊपरी प्लेटफॉर्म पर एक खुला सर्कम-बुलेटरी बनाता है। न सिर्फ़ साइड्स बल्कि एंगल्स को भी बार-बार ऑफसेट करने से, जो प्लान बनता है वह स्टार-शेप का हो जाता है, ठीक वैसा ही प्लान जैसा कि एक स्क्वायर को उसके सेंटर पर घुमाकर बनाया जाता है ताकि उसके कोने, या उसके डायगोनल के सिरे, उसके चारों ओर बने सर्कल पर सोलह या बत्तीस या उससे ज़्यादा पॉइंट्स को टच करें। यह स्टार-शेप का बाहरी डिज़ाइन उपपीठ से विमान के ऊपरी हिस्से तक फैला हुआ बनाया गया है-



स्ट्रक्चर। वैसे, इससे होयसल मंदिरों में बहुत ज़्यादा मूर्तिकला और नक्काशी बनाने के लिए एक बड़ा सरफेस एरिया मिला, जिसके लिए वे जाने जाते हैं। अधिष्ठान पैटर्न उत्तरी स्टाइल जैसा ज़्यादा है, जिसमें हाथियों, योद्धाओं, घोड़ों, हंसों, मकरों वगैरह की एक-दूसरे पर बनी हुई फ्रिज़ की परतें हैं, और चौड़ी पट्टी जैसी सबसे ऊपर की परत पौराणिक दृश्यों को कहानी के छोटे-छोटे हिस्सों में दिखाती है। दीवारों को पिरामिड जैसे ऊपरी ढांचे और अलग-अलग तरह की मूर्तियों से सजाए गए आलों से सजाया गया है। बीच के हिस्सों को ऊपर पिरामिड जैसे ऊपरी ढांचे के डिज़ाइन वाले पिलस्टर से और सजाया गया है। प्रा-स्तर में एक खास छज्जा जैसा कॉर्निस है। सुपरस्ट्रक्चर पास-पास लगे हारा एलिमेंट्स का एक डिज़ाइन है, जो असल में कूटों का है, जो एक के पीछे एक उठते हैं, हर एक मंज़िल को दिखाता है, सबसे ऊपर वाले में एक छोटा ग्रीवा और आठ कोनों वाला शिखर है जो एक स्तूप में खत्म होता है। ऊपरी तलों के सामने के हिस्से का बीच का हिस्सा नीचे के अंतराल के ऊपर एक शुकन-शिका में आगे की ओर खींचा गया है। मंडप के अंदर के खंभों के बेस चौकोर हैं। शाफ्ट और चौड़े चौकोर एबेकस तक का कैपिटल एरिया आसानी से गोल होता है, लेथ पर घुमाया जाता है और

पॉलिश किया जाता है, जिससे उभार और घुमावदार गर्दन, मनके वगैरह की एक सीरीज़ बनती है, जिन्हें बाद में अक्सर बारीक सजावट से सजाया जाता है। अक्सर मंदिर यूनिट की एक्सियल सीरीज़ एक खुले आंगन और प्रकार की दीवार के अंदर खंभों वाले क्लोस्टर से घिरी होती है, जिसका महा-द्वार का एंट्रेंस सिर्फ़ एक तरफ, यानी सामने की तरफ होता है।

सैकड़ों होयसल मंदिरों में से, जिनकी कीमत कम या ज़्यादा है, सबसे मशहूर और खास हैं हालेबिड के कई मंदिरों में से होयसलेश्वर मंदिर, बेलूर का चेन्नाकेशव मंदिर (दोनों हासन ज़िले में; ये दोनों शहर होयसल की शुरुआती और बाद की राजधानियाँ थीं), और सोमनाथपुर (मैसूर ज़िला) का केशव मंदिर।

बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर यूनिट को होयसल विष्णुवर्धन ने 1117 में बनवाया था और इसे विजय नारायण नाम से भगवान विष्णु को समर्पित किया था। यह अब बाद के मंदिरों के कॉम्प्लेक्स में मुख्य यूनिट है, जो एक क्लोइस्टर और प्रकार से घिरा हुआ है, और इसमें एक गोपुर भी है।



मुख्य इकाई की अक्षीय रेखा पर पूर्व में प्रवेश द्वार, और एक मैदान

उसी तरफ इसके दक्षिण में साइड-एंट्रेंस है। मौजूदा ईंट-वर्क

गोपुर का सुपरस्ट्रक्चर बहुत बाद में बनाया गया है। जैसा कि डिज़ाइन किया गया है

और विष्णुवर्धन द्वारा पूरा किया गया यह एक सुंदर विमान था

ताराकार योजना और एक अलंकृत गर्भगृह द्वार जिस पर शानदार नक्काशी की गई है

ओवर-डोर, और एक अंतराल जिसके सामने एक समान सजावटी द्वार है।

सजावटी दरवाज़े से पहले एक बड़ा नवरंग था

जिसके तीन तरफ़ पूर्व की ओर बड़े रास्ते या बंद बरामदे थे,

दक्षिण और उत्तर, बाहरी रूप से विस्तृत नक्काशीदार में समाप्त होता है

ओवर-डोर्स के साथ एंट्रेंस। पूरा एक उपपीठ पर बना है,

1.5 m ऊँचा, इसके खुले परिक्रमा पथ का प्लान

विमान और उसके अक्षीय मंडपों की ताराकार योजना।

मंडप के तीन बाहरी उद्घाटन दो छोटी उड़ानें हैं

क्रमशः अधिष्ठान और उपपीठ की ऊँचाइयों से नीचे उतरते हैं

ज़मीन पर दोनों सिरों पर दो छोटे विमान मॉडल रखे गए हैं

लेवल पर और उपपीठ प्लेटफॉर्म के ऊपर बनी दो सीढ़ियों के ऊपर।

नवरंग के परिधीय स्तंभों और उसके तीन स्तंभों के आधार

बरामदे कक्षों से जुड़े हुए थे, जिन पर कक्षों के ऊपर

कुछ पीढ़ियों बाद (बल्लाला द्वितीय के समय में जिन्होंने टैंक का निर्माण किया था)

उत्तर-पूर्व कोने और प्रकार पर), छिद्रित स्क्रीन-दीवारें

खंभों के बीच में फिट किए गए थे, जिससे मंडप बंद हो गया।

विमान अंतराल और मंडप के अधिष्ठान स्तर समर्थक हैं-

जानवरों, इंसानों और कहानियों की लंबी-लंबी लाइनों वाली नक्काशीदार नक्काशी

दीवारों पर आइकॉनिक दिलचस्पी की मूर्तियां हैं।

विमान आदितल के तीनों ओर उभरी हुई खाड़ियाँ हैं, जो

लगभग छोटे विमानों को सहारा देने वाले, अंदर गहरी कोशिकाएँ होती हैं

देवी-देवताओं की मूर्तियां। मंडप का ऊपर लटका हुआ कपोत

सुंदर मुद्राओं में कई बारीक नक्काशीदार महिला आकृतियों द्वारा समर्थित

मुख्य विमान का ऊपरी ढांचा अब

खो गया। मंडप के अंदर के खंभे बहुत ही खूबसूरती से खराद से बने हैं

या जटिल रूप से नक्काशीदार, और उनमें से कुछ में अच्छी बोल्ड आकृति की मूर्तियां हैं-

मंडप की उठी हुई संदूक जैसी बीच की छत, ऊपर उठती हुई

कोनों को काटते हुए ऊपर की ओर त्रिकोणीय स्लैब द्वारा आठ स्तरों में



एक के बाद एक, एक तरह का आठ कोनों वाला खोखला गुंबद बनता है, जिसके सभी लेवल पर बारीक नक्काशी की गई है। ऊपर का ढकने वाला पत्थर बीच में एक बड़े, बारीक नक्काशी वाले लालटेन जैसे या पिंजरे जैसे पेन-डेंटिव या कर्णिका के रूप में फैला हुआ है। छत का सबसे निचला लेवल भी, मानो, मदनिकाओं से टिका हुआ है, जो बाहर वालों से ज़्यादा सुंदर हैं, और खराद से बने खंभों के चौकोर एबेकस से निकले हैं। इस तरह यह मंदिर बड़ी और छोटी मूर्तियों, और बारीक पेड़-पौधों, फूलों और जानवरों की नक्काशी का एक असली म्यूज़ियम है।

होयसलेश्वर, जो लगभग 1150 में हैलेबिड में उस समय के कई दूसरे मंदिरों के बीच बना था, दो एक जैसे विमान यूनिट का मिला-जुला रूप है। दोनों शिव को समर्पित हैं और एक ही ऊंचे प्लेटफॉर्म पर अगल-बगल खड़े हैं, यह दो ताराकार उपपीठों का मेल है। हर यूनिट में एक तारे के आकार का विमान होता है जिसके सामने अंतराल और नवरंग होते हैं, जो पूरब की ओर होते हैं। हर नवरंग में क्रूसिफ़ॉर्म तरीके से तीन निकले हुए एंट्रेंस होते हैं, जिसमें दक्षिणी नवरंग का उत्तरी हिस्सा उत्तरी नवरंग के दक्षिणी हिस्से से जुड़ा होता है, जिससे दोनों के बीच एक कॉमन रास्ता बनता है। दोनों यूनिट के अधिष्ठान जानवरों या कहानी वाले बड़े-बड़े फ्रिज़ से बने होते हैं जो अपने-अपने लेवल बनाते हैं। बाहर की तरफ, निकले हुए पोर्च के बीच के कॉलम वाली जगहों को कक्षासन प्लेटफॉर्म के लेवल से ऊपर छेद वाली खिड़कियों से ढका जाता है जो पिलर के बेस को एक साथ जोड़ते हैं। विमान की दीवारें, आपस में जुड़े हुए ट्रेसेप्ट, और मंडप की दीवारें बाहर से बहुत ही सुंदर नक्काशी वाली बड़ी-बड़ी नक्काशी से ढकी हुई हैं। बरामदों, अंतराल और मंदिर-कक्ष के एंट्रेंस पर बारीक नक्काशी वाले ऊपरी दरवाज़े बने हैं, जिनके ऊपर सुंदर मकर-तोरण लिंटेल हैं। दोनों विमानों के सुपर-स्ट्रक्चर खो गए हैं। उपपीठ प्लेटफॉर्म दोनों यूनिट के चारों ओर एक चौड़ा खुला चक्कर लगाता है। दोनों मंदिर यूनिट के सामने, और उनसे कुछ दूरी पर दो खुले खंभों वाले नंदी-मंडप हैं, दोनों ही टेढ़े-मेढ़े हैं और बाद में बनाए गए हैं, हालांकि एक ही समय के हैं, दक्षिणी वाले के पीछे एक छोटा मंदिर है। हालांकि अभी यह अधूरा है, होयसलेश्वर इसे दिखाता है।

होयसल कला और आर्किटेक्चर का चरम।

सोमनाथपुर का केशव मंदिर होयसल की बनाई नई चीज़ों में से एक का बढ़िया उदाहरण है। इसे 1268 में होयसल राजा के एक सेनापति सोमनाथ ने बनवाया था। यह छोटे साइज़ का सबसे खूबसूरत नक्काशी वाला मंदिर है, जो रत्नों के बक्से जैसा दिखता है।

यह एक त्रिकूट मंदिर है जिसमें बराबर साइज़ के तीन मुख्य विमान हैं, जो क्रमशः उत्तर, पूर्व और दक्षिण की ओर हैं, जो उत्तर, पश्चिम और दक्षिण की ओर एक बड़े और बंद आम मंडप में खुलते हैं। इसके पूर्व में एक बड़ा नवरंग मंडप है जो कक्षसन लेवल पर छेद वाली स्क्रीन की दीवारों से बंद है। तीनों मंदिर अलग-अलग रूपों में विष्णु को समर्पित हैं। पूरा मंदिर एक तारकीय योजना के उपपीठ मंच पर स्थापित है, जैसा कि आधार से शीर्ष तक तीन विमान और मंडप हैं। मंच एक व्यापक प्रदक्षिणा पथ प्रदान करता है। यह अक्षीय श्रृंखला एक खुले आंगन से घिरी हुई है जिसके चारों ओर प्रकार दीवार के अंदर चौंसठ मंदिरों का एक परिधीय मठ है। मंदिर प्रकार के करीब मठ के पिछले आधे हिस्से में स्थित हैं, जबकि आगे का आधा हिस्सा एक खंभों वाले अग्रभाग के साथ एक निरंतर गलियारा बनाता है। सामने एक खंभों वाला प्रवेश मंडप है जिसमें शायद गोपुर के पैटर्न का एक अधिरचना थी। अधिष्ठान की ढलाई पर पुरुषों, योद्धाओं, हाथियों, घोड़ों, हंसों और मकरों की सुंदर नक्काशी की गई है, सबसे ऊपरी स्तर पर रामायण और भागवत की घटनाओं को दर्शाने वाले कथात्मक पैनलों की एक श्रृंखला है। दीवार के आलों में देवी-देवताओं की साहसिक रूप से ढली हुई आकृतियाँ हैं। मंडप के अंदर के सभी खंभे सुंदर नक्काशीदार ढलाई के साथ बारीक खराद से बने हैं। हालांकि, अधिक दिलचस्प हैं नवरंग की संदूक वाली छतें, साथ ही आंतरिक मंडप और बाहरी बरामदे की, जो उलटी टोकरी की तरह दिखते हैं, जिसमें विस्तृत नक्काशी, फूल, वनस्पति, सर्पाकार, आदि विभिन्न पैटर्न और दिक्पालों की छोटी मूर्तियां शामिल हैं

ओरंगल्लू या वारंगल के काकतीय मंदिरों में से हनमकोंडा और पालमपेट के मंदिर सबसे मशहूर हैं।



और उनके आर्किटेक्चर और आर्ट की खासियत है। हनमकोंडा (वारंगल ज़िले) में तथाकथित 'हज़ार खंभों वाला मंदिर', जिसे राजा प्रतापरुद्र ने 1162 में बनवाया था, पश्चिमी चालुक्य स्टाइल से काकतीय स्टाइल में बदलाव को अच्छी तरह दिखाता है। मुख्य हिस्सा एक त्रिकूट या तीन मंदिरों वाला है, जिनका साइज़ काफी बड़ा है और जो शिव, विष्णु और सूर्य को समर्पित हैं, तीनों ही क्रमशः पश्चिम, उत्तर और पूर्व में एक कॉमन मंडप में खुलते हैं, और पूरा एक कॉमन प्लेटफॉर्म पर खड़ा है। मंडप में तीनों मंदिरों के बीच और दोनों तरफ खुले कोने हैं, और अंदर के खंभे लेथ से बने हैं। अधिष्ठान, पिलस्टर वाली दीवारें और प्रस्तर बार-बार बाहर निकले हुए हिस्सों के साथ ऑफसेट हैं, हर तरफ बीच वाला हिस्सा सबसे ज़्यादा बाहर

निकला हुआ है और अपने आप में एक छोटा साइड-विमान है जिसमें एक तहखाना है। तीनों विमानों के सुपरस्ट्रक्चर खो गए हैं। सबसे दिलचस्प हिस्सा जो अभी भी मौजूद है, वह है कई खंभों वाला मंडप जिसमें लगभग तीन सौ खंभे हैं, और सभी पर बहुत अच्छी नक्काशी की गई है। यह यूनिट के सामने एक बीच में बने नंदी-मंडप से जुड़ा हुआ है। किले के अंदर इस टूटे-फूटे मंदिर की एक और दिलचस्प बात है एंट्रेंस पर बने बड़े, अलग-अलग तोरण।

पालमपेट (वारंगल ज़िला) के मंदिर एक और दिलचस्प ग्रुप बनाते हैं। ग्रुप का मुख्य मंदिर 1215 में बना था और यह एक ऊँचे चबूतरे पर है, जिसके सामने एक नंदी-मंडप है। यह एक बड़ी दीवार से घिरा हुआ है। मुख्य विमान, जो प्लान में लगभग चौकोर है, उसके तीन किनारे पाँच हिस्सों में बँटे हुए हैं, हर तरफ का बीच वाला हिस्सा आगे की ओर झुका हुआ है और छोटे पैमाने पर मुख्य विमान की तीन-लेयर वाली रेप्लिका बनाता है। दूसरे हिस्सों में ऊँचे, पास-पास लगे पिलस्टर के जोड़े हैं जिनके ऊपर मंदिर के डिज़ाइन बने हैं जो बारी-बारी से दक्षिणी-टाइप के विमानों और उत्तरी-टाइप के प्रसादों के सुपरस्ट्रक्चर की रेप्लिका हैं। तलों के हार साफ़ नहीं हैं, जिनमें कूट एलिमेंट ज़्यादा साफ़ दिखता है। ग्रीवा भी छोटा और कम साफ़ है और लगभग गुंबद वाले शिखर जितनी ही चौड़ाई का है। पूरा सुपरस्ट्रक्चर ईंटों के काम का है। अक्षीय रूप से, एक बंद वर्ग अंतराल या अर्ध-मान-





दापा, विमान को सामने एक बड़े नवरंग से जोड़ता है, जो एक बाहरी प्लेटफॉर्म से घिरा है, जिसके बाहरी हिस्से में बत्तीस खंभों की एक सीरीज़ और एक परिक्रमा पथ है। सबसे खास बात महिला आकृतियों के रूप में ब्रैकेट की लाइन है, जो खंभों के ऊपरी हिस्से से उठकर बीम और कॉर्निस पर ऊपर की ओर झुकी हुई हैं। इनमें से बारह लगभग आदमकद आकृतियाँ हैं, जो दुबली-पतली हैं और सुंदर मुद्रा में हैं। बाकी पीछे की ओर उठे हुए व्याल हैं, जिनके पिछले पैर हाथी के सिर पर रखे हैं। मंडप के बाहरी खंभों के बेस भी एक वेदी और एक रेलिंग से जुड़े हुए हैं जो कक्ष के पीछे की ओर झुकी हुई जगह बनाते हैं। मंडप का अंदरूनी हिस्सा भी मूर्तियों से भरा है, और खांचों की छतें सजावटी हैं। विमान के आदितल का हार भी मंडप की छत पर फैला हुआ है। अंदर प्लेटफॉर्म पर नवरंग के चारों कोनों से सटे चार जोड़ों में आठ उप-मंदिर हैं। हालांकि मुख्य बनावट लाल बलुआ पत्थर की है, लेकिन सजावट पॉलिश किए हुए बेसाल्ट या हॉर्नब्लेंड की है, जो सख्त किस्म के पत्थर होते हैं।

पिल्लालमरी (नलगोंडा ज़िले) के तीन मंदिरों में से, एरकेश्वर, जिसे अब सोमेश्वर कहा जाता है, 1208 में पवित्र किया गया था। यह पालमपेट के बड़े मंदिर जैसा है, जो काकतीय पैटर्न का एक पूरा यूनिट है। इसमें एक विमान है जिसके सामने एक मुख-मंडप है, जिसमें तीन बाहर निकले हुए पोर्च-एंट्रेंस हैं, जिनके आगे उत्तर, पूर्व और दक्षिण में सीढ़ियाँ हैं, जबकि गर्भगृह पश्चिम में एक कनेक्टिंग अंतराल से जुड़ा हुआ है। यह पूरा एक उभरे हुए और अच्छी तरह से बने उपपीठ पर खड़ा है। हर तरफ अधिष्ठान के ऊपर गर्भगृह की दीवार पर पाँच उभरे

हुए पिलस्टर हैं, बीच वाला साइड वाले जोड़ों से चौड़ा है, और ऊपर प्रस्तर में एक ढलान वाला सपाट सादा कॉर्निस है। पिलस्टर के बीच की खाली जगहों में आम तौर पर छोटे और पतले पिलस्टर मोटिफ हैं, जिसके ऊपर एक मंदिर का सुपरस्ट्रक्चर है। मुख्य विमान का सुपरस्ट्रक्चर, जो अब टूट चुका है, चार तल या मंज़िल का लगता है, जिसके सामने की तरफ अंतराल के ऊपर एक खास तौर पर निकला हुआ शुकन-शिका है, जिसके ऊपर एक नंदी रखा हुआ है। ऊपर का शिखर भी चौकोर लगता है। मंडप

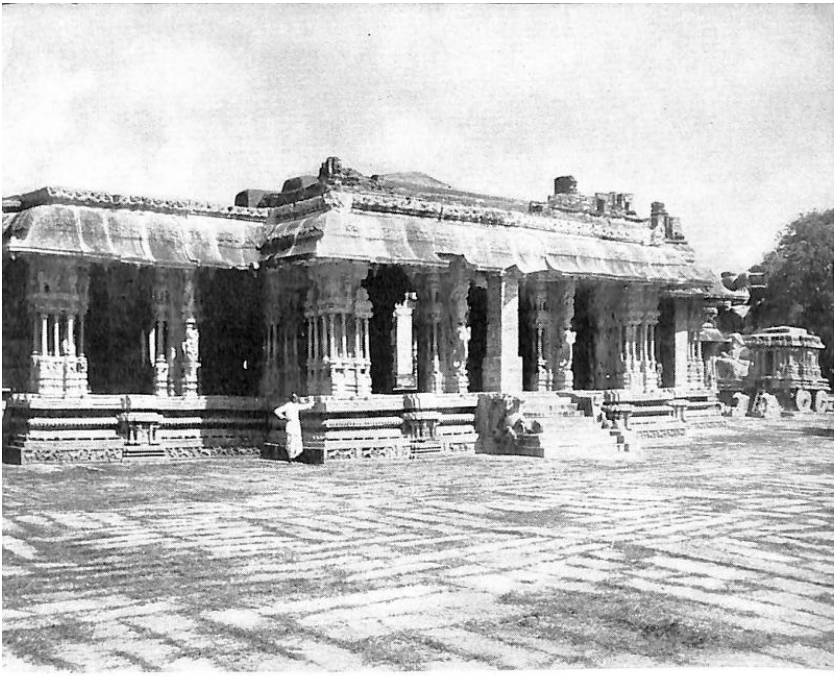

*Plate 18.* HAMPI—VITTHALA TEMPLE *(See page 169)*

*Plate 19.* VELLORE—JALAKANTHESVARA TEMPLE—KALYANA MANDAPA INTERIOR
*(See page 171)*

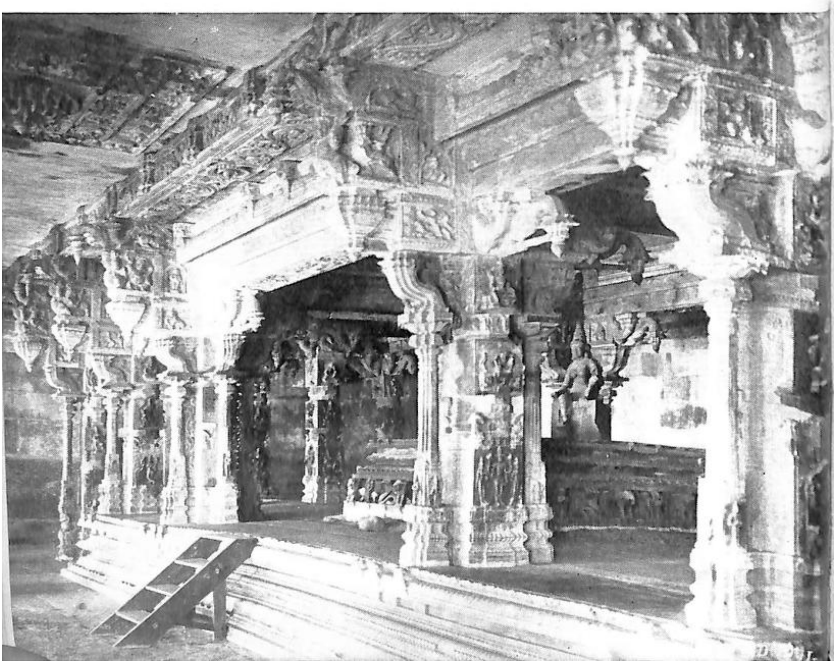

इसके बीच में चार नक्काशीदार खंभे हैं, जो एक ऊँची ज़मीन पर बने हैं और इसकी छत नौ चौकोरों का एक ग्रिड है, जिनमें से हर एक में एक कमल है।

गाँव के दूसरे हिस्से में नामेश्वर मंदिर, जिसे लगभग 1202 में नामी रेड्डी ने पवित्र किया था, एक ज़्यादा सुंदर स्ट्रक्चर है जिसमें बड़े एरकेश्वर की तुलना में ज़्यादा नक्काशी और मूर्तिकला है। इसमें पूर्व की ओर मुख वाला विमान और एक अंतराल से जुड़ा खुला मुख-मंडप है। उपपीठ नहीं है। मुख-मंडप में सामने की ओर एक बरामदा है। मंडप नवरंग पैटर्न का है जिसमें फर्श के बीच में चार सेंट्रल पिलर और किनारे पर बारह और पिलर हैं। नामेश्वर के पास एक तीन मंदिरों वाला यूनिट है जिसमें एक कॉमन मुख-मंडप के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में तीन मंदिर खुलते हैं। तीनों मंदिर, एक जैसे, तुलनात्मक रूप से सादे स्ट्रक्चर हैं जो पत्थर के बड़े स्लैब से बने हैं और उनके बाहर कोई सजावट नहीं है। नामेश्वर, कामेश्वर और काचेश्वर नाम के मंदिर (जिन्हें अब मुक्कंती शिव मंदिर कहा जाता है) तेरहवीं सदी की शुरुआत में नामी रेड्डी ने बनवाए थे। ईंटों से बने इस टूटे-फूटे ऊपरी ढांचे की कई खासियतें खत्म हो गई हैं।

गांव के बीच में मिट्टी के किले के अंदर घनापुर (वारंगल जिला) का मंदिर कॉम्प्लेक्स काकतीय मंदिर कॉम्प्लेक्स का एक और उदाहरण है। शिव को समर्पित न्यूक्लियर स्ट्रक्चर बड़ा है, जिसके सामने एक मंडप है और चारों तरफ अलग-अलग आकार के कई छोटे स्वतंत्र मंदिर हैं, जिनमें से कुछ में मंडप हैं और कुछ में ऐसा कोई एक्सियल अपेंडेंस नहीं है। मुख्य स्ट्रक्चर साइज़, प्लान और ऊंचाई में पालमपेट के बड़े मंदिर जैसा है। इसका मुंह पूर्व की ओर है। बेस पर 16.3 मीटर चौड़ा विमान एक बड़े मुख-मंडप के पश्चिमी हिस्से से एक अंतराल के ज़रिए जुड़ा हुआ है, मुख-मंडप में बाकी तीन तरफ, पूर्व, दक्षिण और उत्तर में एंट्रेंस-पोर्च के साथ ओपनिंग हैं। पूरा हमेशा की तरह एक डबल प्लिंथ पर खड़ा है, नीचे चौड़ा उपपीठ प्लेटफॉर्म और ऊपर अधिष्ठान, या स्ट्रक्चर का असली बेस है, जिससे चारों ओर एक खुला एम्बुलेटरी बना रहता है। दुर्भाग्य से विमान का सुपरस्ट्रक्चर खो गया है। मंडप के अधिष्ठान के ऊपर सामान्य बौनी दीवार है,





या वेदी पैरापेट कक्षासन बनाते हैं और हर पोर्च के प्रवेश द्वार के कोनों और दोनों ओर छोटे परिधीय खंभों को सहारा देते हैं। ये खंभे, पालमपेट की तरह, शाफ्ट के ऊपरी घनाकार हिस्से से निकलने वाले बारीक कैरिएटिड ब्रैकेट रखते हैं और कॉर्बेल और कॉर्निस तक पहुंचते हैं। ब्रैकेट-आकृतियां सुंदर मुद्राओं में मदनिकाओं और हाथियों पर सवार व्यालों को दर्शाती हैं, जिनमें से प्रत्येक के मुंह से एक मानव धड़ निकल रहा है। अंतराल और गर्भगृह की दीवारों को

बारी-बारी से सपाट भित्तिचित्रों और धंसे हुए हिस्सों से उभारा गया है, जैसा कि इस प्रकार के अन्य मंदिरों में होता है, इन धंसे हुए हिस्सों में एक भित्तिचित्र आकृति होती है जिसके ऊपर एक मंदिर का अधिरचना होता है जो काकतीय मंदिरों के सामान्य रूपांकन, पत्रलता मेहराब या तोरण के नीचे होता है। मुख्य भित्तिचित्रों के आधार पर देवताओं और नर्तकियों की उभरी हुई मूर्तियां हैं। मंडप के अंदर परिधि पर व्यवस्थित छोटे मंदिर हैं, जिनमें से पांच अभी भी मौजूद हैं, जैसा कि फिर से पालमपेट मंदिर में है। मंडप की छत खो गई है। पूर्वी बरामदे के सामने एक खंडहर मंडप है। आस-पास के परिवार मंदिर अलग-अलग तरह के हैं, जिनमें सामने मंडप हो भी सकता है और नहीं भी। उनमें से कुछ में अभी भी सुकनासिका उभारों के साथ टियर वाले सुपरस्ट्रक्चर हैं, जिनमें से कुछ में दक्षिणी विमान के कूट-शाला एलिमेंट साफ़ दिखते हैं। उनमें से कई में चौकोर शिखर हैं। कम से कम एक मामले में ऊपर का हिस्सा आमलक टाइप का है।

वारंगल किले के अंदर करीब एक दर्जन मंदिर हैं, जो बहुत खास नहीं हैं, उनमें से कई सिर्फ़ छोटे स्ट्रक्चर हैं जैसे वीरभद्र, मंडलम्मा, राम, विष्णु, वेंकटेश, स्वयंभू, नेलसम्भू, जंगमेश्वर और देवी मंदिर। उसी ज़िले में कटाचपुर (कटक्षपुरा) के दो छोटे मंदिर त्रिकूट हैं जिनके ऊपरी स्ट्रक्चर खो गए हैं।

काकतीय मंदिर, हालांकि ज़्यादातर पश्चिमी चालुक्य ग्रुप से लिए गए हैं, एक अलग कैटेगरी बनाते हैं। इनमें सिंगल विमान यूनिट और त्रिकूट यूनिट शामिल हैं। कई मामलों में, खासकर बड़े मंदिरों में, पत्थर से बने मंदिर के ऊपर सुपरस्ट्रक्चर ईंट और गारे का होता है। त्रिकूट यूनिट पनागल में मिलती हैं। हनमकोंडा में रुद्रेश्वर-वासुदेव-सूर्य कॉम्प्लेक्स।



}

इस तरह के सबसे अच्छे उदाहरण हैं। इनमें से एक यूनिट पिल्लालमरी में है। यह और पालमपेटा में मुख्य मंदिर के पश्चिम में स्थित मंदिर भी त्रिकूट हैं। सिंगल-विमान यूनिट, जिसका एक खास उदाहरण पालमपेट का महान मंदिर है, प्लान, ऊंचाई और सजावटी डिटेल्स में अलग-अलग तरह के हैं। आम तौर पर विमान एक अंतराल से सामने वाले मंडप से जुड़ा होता है, जिसके तीन और तरफ तीन पोर्च-एंट्रेंस होते हैं। मंडप में, नवरंग पैटर्न के बाद, चार बीच के पिलर हैं, जो बहुत अच्छे से तैयार किए गए हैं और सजावटी हैं, खराद से बने हैं, शाफ्ट पर बेसल और टॉप क्यूबिकल सेक्शन हैं, जिनके चेहरे पर नक्काशी की गई है, और बीच में एक पॉलीगोनल बेल्ट है। जार जैसे कलश या लहसुन, जिनकी साइडें घुमावदार से ज़्यादा सीधी हैं, अक्सर सेक्शन में पॉलीगोनल होते हैं और कुंभ एक गोल और लेंटिकुलर डिस्क के रूप में चपटा होता है जिसका किनारा लगभग नुकीला या पतला होता है। फलक बड़ा, चौकोर और सेक्शन में पतला होता है। यह सब पश्चिमी चालुक्य मंदिरों में पहले से देखे गए ट्रेंड्स को और बढ़ाता है। पालमपेट के बड़े मंदिर के मंडप और हनमकोंडा के तीन मंदिरों

में खंभे काले ग्रेनाइट के हैं, जो लेथ से बने हैं और बहुत पॉलिश किए हुए हैं, जबकि दूसरे मामलों में वे बलुआ पत्थर के हैं। मंडपों की वेदी के ऊपर इसी तरह के छोटे बाहरी खंभों पर, जैसे घनापुर और पालमपेट में, अक्सर मदनिकाओं या पौराणिक जानवरों के शानदार ब्रैकेट-आकृतियां होती हैं। गर्भगृह और एक्सियल मंडप या मंडप अक्सर एक आम और बड़े उपपीठ के ऊपर अपने खुद के अधिष्ठान पर बने होते हैं, जो पूरे स्ट्रक्चर के चारों ओर एक परिक्रमा वाला प्लेटफॉर्म देते हैं और ऊपर अधिष्ठान के ऊपर ग्राउंड-लेवल से पोर्च-एंट्रेंस तक सीढ़ियों पर पहली लैंडिंग देते हैं। विमान, अंतराल और मंडप का तीन पोर्च-एंट्रेंस वाला प्लान पालमपेट के बड़े मंदिर में, घनापुर के मंदिर में, रेड-डिगुडी और उसी जगह के कुछ दूसरे मंदिरों में, पालमपेट में टैंक बांध पर बने टूटे-फूटे मंदिर में, और पिल्ललमरी के एरकेश्वर में मिलता है। वह प्लान जहाँ गर्भगृह और अंतराल से पहले मंडप में एक ही पोर्च है, वह पिल्ललमरी के नामेश्वर में, घनापुर के एक छोटे मंदिर में और पालमपेट के मंदिर IV में मिलता है। वहाँ





अन्य हैं जिनमें एक गर्भगृह और केवल एक अंतराल है, जैसा कि घनापुर और पालमपेट के छोटे मंदिरों में पाया जाता है। कुछ मामलों में अंतराल अनुपस्थित है। मंदिर सीधे मंडप के पीछे आता है और इसलिए केवल गर्भगृह मौजूद है। गर्भगृह की दीवारें सरल मामलों में कभी-कभी सादी होती हैं जैसे कि पालमपेट में तालाब के बांध पर। पक्षों का ऑफसेट आमतौर पर अधिक स्पष्ट नहीं होता है। जब बारी-बारी से प्रक्षेपित और धंसा हुआ होता है, तो खंड चौड़े, सपाट भित्तिचित्र पैटर्न के होते हैं, जिनके आधार पर अक्सर मंदिर-रूपांकन होते हैं। अवकाशों में एक पतला भित्तिचित्र होता है जिसके शीर्ष पर एक मंदिर-शीर्ष होता है जिसके ऊपर एक लता या पत्रलता तोरण होता है। प्रस्तर का कपोत अनुभाग में घुमावदार नहीं है जैसा कि पल्लवों और चालुक्यों के शुरुआती उदाहरणों में है अंतराल के ऊपर प्रस्तर और सामने के मंडप, विमान के ऊपरी हिस्से के निचले तल की तरह, कूट किस्म के छोटे मंदिरों का एक हार रखते हैं, जो अक्सर ईंट और गारे से बने होते हैं। ये खास मेहराबदार आले जैसे छोटे मंदिरों की सीरीज़ के पहले के रूप हैं, जो बाद के विजयनगर मंडप प्रस्तर के चुंचु हैं। विमान के ऊपरी हिस्से के सामने बना शुकनासिका, एक हमेशा रहने वाली खासियत है, जो मंदिरों के चालुक्य रूप को दिखाता है। अंतराल और पवित्र जगह के दरवाज़े के ऊपर बने पैटर्न से बने हैं, जिनमें सखाओं की बनावट में, एक सीधी छेद वाली जलक खिड़की का पैटर्न शामिल है। चौखट पर गजलक्ष्मी या दूसरे देवताओं का एक ललता बिंब होता है, जो अक्सर दरवाज़े के चौखट के ऊपर लगे मकर सिरों से निकलने वाले लहरदार तोरण के बीच के लूप में होता है। दरवाज़े के फ्रेम के ऊपर प्रस्तर, जैसा कि पहले के चालुक्य मॉडल में था, उसमें छोटे मंदिर के ऊपर की तरफ़ कई छोटे-छोटे टॉप बने हुए हैं। मंदिर की दीवारों के उभरे हुए हिस्सों पर उभरे हुए पिलस्टर में अक्सर जोड़े हुए पिलस्टर के अंदर उथले देवकोष्ठ होते हैं, जिनके ऊपर प्रस्तर और मंदिर के सुपर-स्ट्रक्चर होते हैं, अकेले या एक लाइन में। बड़े विमानों के बहुत ज़्यादा मामलों में, बीच का हिस्सा सबसे ज़्यादा उभरा हुआ होता है, जिसमें देवकोष्ठ का आला और सुपरस्ट्रक्चर मुख्य स्ट्रक्चर से जुड़े एक साइड-विमान जैसा दिखता है। यहाँ ये छोटे मंदिर के

टॉप हैं।



और दूसरी जगहों पर ये विमान टाइप के होते हैं, जिनमें प्रसाद टाइप का चौकोर या गोल शिखर होता है, जिसके ऊपर आमलक होता है। एक और खास सजावटी डिज़ाइन है क्रूसिफ़ॉर्म रोज़ेट, या कमल जिसकी चार पंखुड़ियाँ आड़ी-तिरछी फैली होती हैं, यह पैटर्न विजयनगर साम्राज्य के आखिरी दौर के इक्केरी इलाके और वहाँ के केलाडी नायकों के मंदिरों में भी मिलता है।

काकतीय वंश के लगभग पचास मंदिर हैं, लेकिन वे ज़्यादातर खंडहर होने की अलग-अलग स्टेज में हैं। हालाँकि, इनमें से कुछ मंदिर कदंब-चालुक्य विमान पैटर्न के हैं, जिनके बारे में अलग से बताया गया है।

## अध्याय आठ

## स्ट्रक्चरल स्टोन मंदिर आखिरी चरण

### थे विजयनगर टेम्पल्स

दक्षिण में शुरुआती मुस्लिम हमलों के बाद, जिसने अब तक लगातार मंदिर बनाने के काम को कम कर दिया था, आधी सदी से भी कम समय के लिए कुछ समय के लिए शांति थी। चौदहवीं सदी के बीच में मुस्लिम जीत को रोकने के लिए उग्र विजयनगर साम्राज्य का उदय (जिसने जल्द ही पूरे पेनिनसुला को घेर लिया) ने मौजूदा स्ट्रक्चर की मरम्मत या उनमें कुछ जोड़ने और नए स्ट्रक्चर बनाने के ज़रिए मंदिर आर्किटेक्चर को लगभग एक नया और ज़ोरदार बढ़ावा दिया। अपने उत्तरी इलाके में, विजयनगर या हम्पी में अपनी राजधानी के साथ, शाही शासकों को बाद के चालुक्यों, काकतीय और होयसल द्वारा अपने समय तक चलाए गए आर्किटेक्चरल रिवाज विरासत में मिले, और उनके दक्षिणी प्रांतों में बाद के पांड्यों के समय तक विकसित हुए रिवाज। इस तरह, दक्कन, आंध्र और कर्नाटक इलाकों में उनके उत्तरी इलाकों में बने मंदिरों में चालुक्य-होयसल-काकतीय प्रेरणा से बनी बहुत सी चीज़ें बनी हुई हैं, जबकि तमिलनाडु और दक्षिणी केरल में उनके ज़्यादा दक्षिणी कंस्ट्रक्शन में पल्लव-चोल-पांड्य आर्किटेक्चर की खासियतें बनी रहीं। लेकिन जैसा कि पहले ही बताया गया है, उन्होंने उत्तरी इलाकों के मामले में एक बड़ा बदलाव किया: अपने बड़े साम्राज्य में सभी जगहों पर उन्होंने अब तक के सॉफ्ट-स्टोन कंस्ट्रक्शन को छोड़कर, हार्ड-स्टोन की परंपरा और बनाने की तकनीक को अपनाया और फैलाया। उनकी बड़ी राजधानी हम्पी में, जो अब खंडहर हो चुकी है, हार्ड-स्टोन के बहुत सारे मंदिर हैं, जो दो सोर्स में से एक, चालुक्य-राष्ट्रकूट-होयसल-काकतीय सीरीज़, और पल्लव-चोल-पांड्य सीरीज़ की खासियतें दिखाते हैं।

पेनुकोंडा (अनंतपुर ज़िला), चंद्रगिरी (चित्तूर ज़िला), और वेल्लोर (नॉर्थ अर्कोट) की राजधानियों और उनके आस-पास के इलाकों, और उनकी प्रांतीय राजधानियों या वाइसरायल नायकों की सीटों जैसे वेल्लोर (नॉर्थ अर्कोट), गिंगी (साउथ अर्कोट), तंजावुर, मदुरै, और इक्केरी (शिमोगा ज़िला) में भी अपने समय के मंदिर हैं। असल में, विजयनगर के शासकों के राज में मंदिर बनाने का काम चोलों के समय से कहीं ज़्यादा हुआ था। उनके कुछ मंदिर अपने हिस्से के बड़े आकार, यानी मंडप और गोपुर के लिए खास हैं।

हम्पी के मंदिरों में, जो ज़्यादातर दक्षिणी ग्रुप की खासियतों को फॉलो करते हैं, विट्ठल मंदिर का ज़िक्र किया जा सकता है, जो वहाँ के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है। असल में, यह एक बड़ा कॉम्प्लेक्स है जिसे एक ही समय में प्लान किया गया था और बनाया गया था, जिसमें विमान, एक्सियल मंडप, गरुड़-मंडप, दूसरे मंडप, जिनमें कल्याण मंडप, क्लोइस्टर प्रकार और गोपुर शामिल हैं। इसे कृष्णदेव राय ने 1513 में शुरू किया था और शायद तब भी पूरा नहीं हुआ था जब 1565 में साम्राज्य गिर गया, जिसके बाद राजधानी पेनुकोंडा में शिफ्ट कर दी गई।

सभी विजयनगर मंदिरों की तरह, मंडप और गोपुर अपने बड़े आकार के लिए खास हैं। मंडप अक्सर हज़ार-रेत के खंभों वाले होते हैं। खंभों और पिलस्टर में सुंदर शाफ्ट होते हैं। एबेकस का निचला हिस्सा, पाली, जो पल्लव और शुरुआती चोल मंदिरों में एक सादा डौसीन था और बाद के चोल काल में पंखुड़ियों में बदल गया, पंखुड़ियों के साथ एक फूलों के रूप में और भी विकसित होता है। कोरबेल पुष्प-पोटिका में विकसित होता है, जो विजयनगर शैली की खासियत है, जिसमें एक दोहरी मुड़ी हुई भुजा होती है, जो मुख्य ब्लॉक से निकली होती है और बीच में एक शुरुआती कोनिकल कली के साथ ऊपर की ओर मुड़ी हुई पंखुड़ियों के रूप में मुक्त सिरे पर स्कैलप्ड होती है। नीचे की ओर मुड़ी हुई भुजा के नीचे एक हॉरिजॉन्टल कनेक्टिव बार होता है, जो मुक्त सिरे को मुख्य ब्लॉक से जोड़ता है। विमान, गोपुर और मंडप की दीवार के कोनों पर कुंभ-पंजर की डिज़ाइन को और भी सुंदर और शानदार बनाया गया है। कॉर्निस, जो अब तक मोटा और नीचे की ओर मुड़ा हुआ था, अब बड़ा, बहुत पतला और डबल फ्लेक्सचर वाला हो गया है, और बहुत आगे तक फैला हुआ है, जो अक्सर पत्थर में इसकी नकल दिखाता है।



फ्रेम-वर्क की लकड़ी की पसलियां इसे सहारा देती हैं। मंडपों के मामले में, जैसे कांचीपुरम के वरद राजा मंदिर का कल्याण मंडप, जो इस तरह के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है,

कपोत के कोनों में बड़ी पत्थर की चेन लटकती हैं, सभी लिंक, जिसमें कॉर्निस पत्थर का टुकड़ा भी शामिल है जिससे यह नीचे लटका होता है, एक ही पत्थर से काटे गए हैं। ये मंडप, कल्याण- या उत्सव-मंडप, कठोर पत्थर में अपने बारीक और बारीक काम वाले खंभों के लिए जाने जाते हैं। कुछ खंभों पर छोटे कॉलम की एक सीरीज़ मुख्य सेंट्रल शाफ्ट के चारों ओर काटी गई है, या बड़े जानवरों की मूर्तियां या मूर्तियाँ सभी एक ही तरह से हैं। अणियोट्टिक्कल, जैसा कि उन्हें कहा जाता है, विजयनगर स्टाइल की खासियत हैं। पत्थर के विमान या गोपुरों के ऊपरी ढांचे ईंट और गारे के होते हैं, अक्सर अंदर लकड़ी होती है अगर वे कोरबेल्ड या कदलिका-करण तरीके से नहीं बने होते हैं। ऐसे बड़े गोपुर पहले से मौजूद ज़रूरी मंदिर-कॉम्प्लेक्स के सबसे बाहरी प्रकार में जोड़े गए थे और उन्हें राय-गोपुरम कहा जाता है, कभी-कभी ये ग्यारह मंज़िल तक ऊँचे होते हैं, जैसे कांची में एकाम्रनाथ, तिरुवन्नामलाई (नॉर्थ अर्काट ज़िला) में अरुणाचल, और कालाहस्ती (चित्तूर ज़िला) में बड़ा शिव मंदिर, ये सभी महान सम्राट कृष्ण-देव राय (1509-29) ने बनवाए थे।

विट्ठल मंदिर कॉम्प्लेक्स एक ऊंची दीवारों वाले, पक्के घेरे के अंदर है, जिसमें पूरब, दक्षिण और उत्तर में तीन गोपुर-एंट्रेंस हैं। यहां एक्सियल और एक्सेसरी मंडप और सहायक मंदिर भी हैं।

सामने मंडपों के साथ विमान की एक्सियल सीरीज़ एक सुंदर प्लेटफॉर्म पर खड़ी है, जिस पर आदमियों, घोड़ों, हंसों और छोटे मंदिर के डिज़ाइन की नक्काशी की गई है। सामने वाले अग्र-मंडप तक जाने वाली सीढ़ियों के दोनों ओर बड़े पत्थर के हाथी हैं। अग्र-मंडप में खुद नक्काशीदार कॉलम वाले बड़े मोनोलिथिक पिलर हैं, या बड़े व्याल हैं जिनकी पीठ पर सवार लोग बैठे हैं। हॉल में सामने और किनारों पर क्रूस के आकार के एक्सटेंशन हैं। बीम पर रामायण की नक्काशी दिखती है। विमान का सुपरस्ट्रक्चर ईंटों का है। आदितल का हार सामने वाले मंडपों के ऊपर फैला हुआ है। अग्र-मंडप के सामने गरुड़-मंडप है।

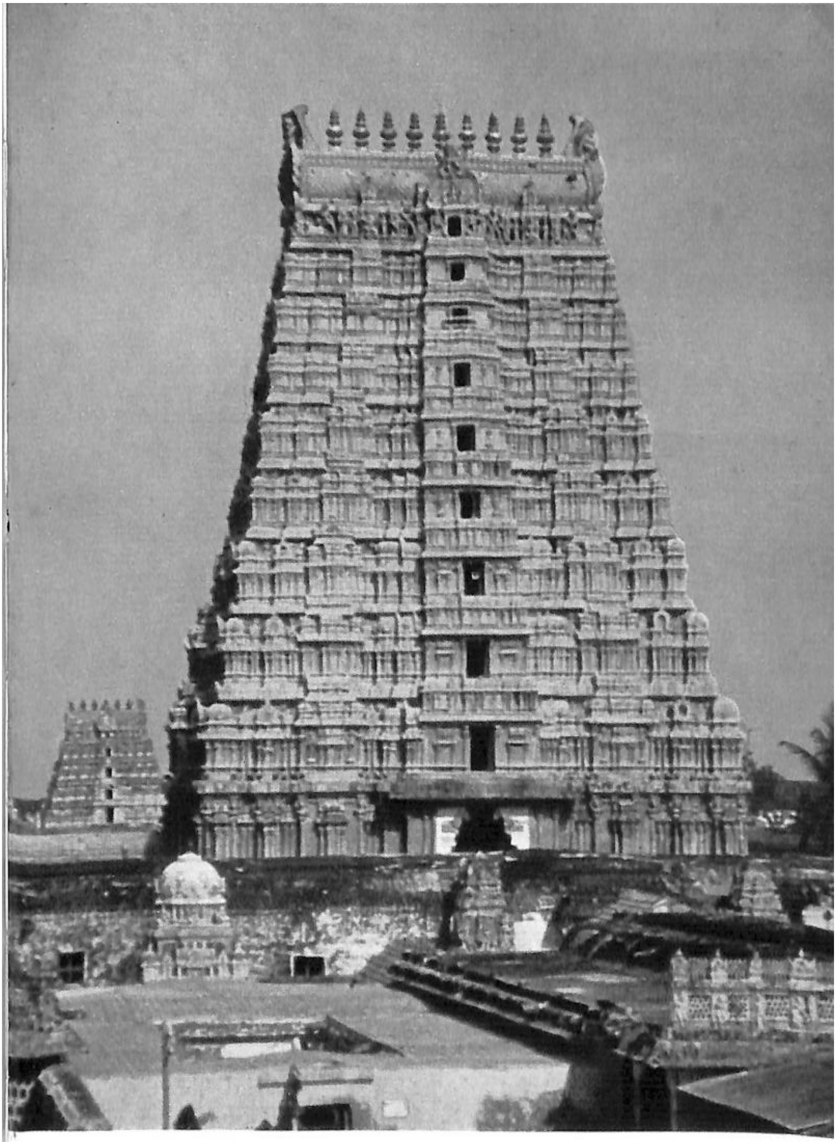

*Plate V.* RAMESVARAM—RAMANATHASVAMI TEMPLE *(See page 171)*

*Plate VI.* VELLORE FORT—JALAKANTHESVARA TEMPLE (KALYANAMANDAPA FACADE PILLARS) *(See page 173)*

जो पत्थर के पहियों पर मंदिर-कार या रथ के रूप में बना एक छोटा विमान है। सामने के आंगन के उत्तरी हिस्से में अम्मन मंदिर है, जबकि दक्षिण में सुंदर लेकिन छोटा कल्याण-मंडप है। आंगन में दूसरे सहायक देवताओं के लिए भी मंदिर हैं। कृष्णदेव राय का 1513 में बनाया गया कृष्ण मंदिर एक और सुंदर मंदिर-कॉम्प्लेक्स है जिसमें सहायक मंदिरों के सामान्य हिस्से, मंडप और खंभों वाली मालिकाएं और गोपुर हैं।

हम्पी का पट्टाभिराम मंदिर इसी तरह का एक और बड़ा मंदिर कॉम्प्लेक्स है। अच्युत राय (1530-42) ने इसे बनवाया था, यह अपने बड़े साइज़ और बड़े साइज़ के लिए जाना जाता है। 1539 में बना अच्युत राय मंदिर एक और बड़ा स्ट्रक्चर है जो डबल प्रकार के अंदर है, जिसमें गोपुर और एक अम्मन मंदिर, मंडप और क्लोस्टर हैं, जिसे मशहूर विट्ठल मंदिर की तरह डिज़ाइन किया गया है, हालांकि इसकी तुलना उस शानदार बनावट से नहीं की जा सकती। हालांकि, इसके पिलर सुंदर हैं और इसमें कुछ बढ़िया मूर्तियां हैं।

हम्पी के रास्ते में होस्पेट के पास अनंतशयनगुडी में अनंतशयन मंदिर एक बड़े आयताकार विमान का उदाहरण है, जिसके ईंटों के काम वाले सुपरस्ट्रक्चर में एक बहुत बड़ा सला शिखर है। इसे एक बड़े खंभों वाले मंडप से एक्सल पर बनाया गया है, और यह दूसरे बाहरी मंडपों और एक अम्मन मंदिर से घिरा हुआ है। पूरा मंदिर एक बड़े गोपुर वाले प्रकार के अंदर बंद है। यह सबसे बड़ा सला-टाइप विमान है। यह मंदिर अनंतशयन-विष्णु को समर्पित था, लेकिन अब देवता गायब हैं। मंदिर के सामने तीन दरवाज़े हैं ताकि अंतराल से लेटे हुए भगवान का सिर, शरीर और पैर दिखाई दें।

मंडपों पर हारा के फैलाव के अलावा – जो चालुक्य वंश की एक आम खासियत है – हम्पी, दक्कन, आंध्र और उत्तरी मैसूर इलाके के कुछ दूसरे मंदिरों में भी चालुक्यों की दूसरी खासियतें हैं। इनमें विमान के ऊपरी हिस्से के सामने शुकनासिका का होना, दरवाज़ों के चौखट पर नदी की देवियों की मूर्तियों का होना, और सजावटी ऊपरी दरवाज़े शामिल हैं, जो अक्सर मुलायम पत्थर पर बारीक नक्काशी करके सादे ग्रेनाइट के दरवाज़ों के चौखट पर लगे होते हैं, जैसा कि ताड़पत्री के मंदिरों में है।



(अनंतपुर ज़िला)। फिर मंडपों का नवरंग पैटर्न है, जो दूर दक्षिण में बने सीधे कई खंभों वाले पैटर्न से अलग है, और चितलदुर्ग (मैसूर राज्य) में पहाड़ी की चोटी पर बने मंदिरों की तरह अलग-अलग तोरण हैं।

हज़ारा राम मंदिर शायद पहले बनना शुरू हुआ था और कृष्णदेव राय ने इसे पूरा किया था। इस मंदिर में खास गोपुर नहीं है, लेकिन इसकी प्रकार की दीवारें फ्रिज़ से सजी हैं, जो बाहर से डांस, संगीत और लोक त्योहारों को दिखाती हैं। मुख्य विमान के सामने महा-मंडप चालुक्य नवरंग पैटर्न का है और इसके चार बीच के खंभे, बाकी पूरे स्ट्रक्चर के ग्रे-ग्रेनाइट के उलट, पॉलिश किए हुए चमकदार काले रंग के हैं, हालांकि चौकोर सेक्शन के हैं, और मूर्तियों और नक्काशी के पैनल से सजे हैं। ईंट के विमान के सुपरस्ट्रक्चर में एक खास शुकनासिका है। इसके उत्तर में एक अम्मन-मंदिर विमान है, जो उसी तरह का है। खुले अग्र-मंडप और विमानों की दीवारों के साथ-साथ इसके उत्तर-पूर्व कोने के आसपास अंदर की तरफ प्रकार की दीवारों पर पैनल मूर्तियां हैं जो कहानी वाली हैं, जिनमें रामायण और कृष्ण-लीला के एपिसोड दिखाए गए हैं।

पंपापति या विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी का सबसे खास मंदिर है, और पूजा के लिए भी, यह एक बड़ा कॉम्प्लेक्स है, जो बाद के चालुक्य मंदिरों के न्यूक्लियस के चारों ओर बना है। विजयनगर काल का इसका अग्र-मंडप अपने नक्काशीदार खंभों और आज की छत की पेंटिंग के लिए मशहूर है। सबसे दिलचस्प पेंटिंग एक पैनल है जिसमें ऋषि विद्यारण्य को दिखाया गया है, जो शंकराचार्य के उत्तराधिकारी और श्रृंगेरी मठ के पुजारी थे, जिन्हें शाही सम्मान और सामान के साथ पालकी में विरुपाक्ष मंदिर ले जाया जा रहा है। खोखला, ऊंचा, मुख्य पूर्वी गोपुर, जो ईंटों से बना है, सबसे बड़े विजयनगर गोपुरों में से एक है। तमिलनाडु में दक्षिण में विजयनगर विमानों में शुकनासिका नहीं है।

वे पल्लव-चोल परंपराओं के ज़्यादा करीब हैं और पहले के ज़माने के मंदिरों से लगातार जुड़े हुए हैं।

थे पोस्ट-विजयनगर टेम्पल्स

विनाशकारी युद्ध के बाद केंद्रीय सत्ता के पतन के बाद



1564 में तालिकोट्टा की तबाही और विजयनगर शहर के बर्बाद होने के बाद, साम्राज्य की राजधानी को पेनुकोंडा, चंद्रगिरी और आखिर में वेल्लोर में शिफ्ट कर दिया गया। सेंट्रल पावर बहुत कमजोर हो गई थी। दक्षिणी इलाकों में विजयनगर के वाइसरॉय, नायक, धीरे-धीरे अलग-अलग ताकतें संभालने लगे। उनमें से कुछ ने मंदिर आर्किटेक्चर को बढ़ावा दिया और कुछ खास मंदिर बनाए। वे वेल्लोर (नॉर्थ अर्काट जिला), गिंगी (साउथ अर्काट जिला), तमिलनाडु में तंजावुर और मदुरै, और नॉर्थ-वेस्ट मैसूर में इक्केरी के नायक थे। तमिलनाडु में नायक काल में सौ खंभों वाले बड़े मंडप और बड़े गोपुर बनाए गए, जिन पर प्लास्टिक के

प्लास्टर की ज़्यादा आकृतियाँ थीं, जैसा कि वेल्लोर और मदुरै में हुआ, उनका सबसे ऊँचा गोपुर सुपरस्ट्रक्चर श्रीविल्लिपुत्तूर (रामनाथपुरम जिला) में वात-पत्रसायिन मंदिर के सामने है। बंद रास्ता, जिसके दोनों तरफ लगातार प्लेटफॉर्म हैं, जिसके किनारों पर धँसे हुए प्रदक्षिणा रास्ते के दोनों तरफ बड़े-बड़े खंभे लगे हैं, और ऊपर की तरफ बड़े-बड़े कोरबेल वाले ब्रैकेट हैं जो ऊपर की खाली जगह को भरते हैं और लगभग एक-दूसरे से मिलते हैं, नायक और बाद के समय में बनाए गए थे, जो रामेश्वरम की तरह मशहूर 'कॉरिडोर' बनाते हैं। वेल्लोर के जल-कंठेश्वर मंदिर का कल्याण-मंडप, और श्रीरंगम के मशहूर रंगनाथ मंदिर के उत्तरी प्रकार में ऐसा ही एक मंडप, कांची के वरदराज मंदिर में पहले के विजयनगर स्ट्रक्चर की तरह, उस समय की दो बेहतरीन कृतियाँ हैं। वे कई खंभों वाले टाइप के हैं, जिनमें सामने की तरफ बहुत खूबसूरत नक्काशी वाले खंभों की एक लाइन है, जिन पर लगभग पूरे साइज़ के मोनोलिथिक फिगर की मूर्तियाँ हैं, जिनमें योद्धा-सवार और उनके दल के साथ घोड़े खड़े हैं और शिकार के दूसरे जानवरों की आकृतियाँ हैं।

मदुरै में बड़े मंदिर-कॉम्प्लेक्स के ज़्यादातर हिस्से, जो न्यूक्लियर मंदिर के चारों तरफ हैं, नायक मूल के हैं, ज़्यादातर तिरुमलाई नायक (1623-59) के समय के हैं, जिसमें चारों तरफ बड़े मंडप और ऊंचे गोपुर शामिल हैं। बड़े खंभों पर राजघरानों के आदमकद चित्र हैं, जिनमें उनकी पत्नियां और अनुचर, या दान देने वाले मुखिया शामिल हैं, मूर्ति को इस तरह काटा गया है कि वह मुख्य शाफ्ट के साथ मिलकर एक आकृति बनाती है।



राजधानी के लिए आम सपोर्ट। खंभों पर बनी बनावट में देवताओं की दूसरी मूर्तियां, सुंदर पोज़ में औरतें, कुरवा और कुरत्ती जैसे आदिवासी लोग - शिकारी और शिकारी - भी मिलते हैं। मदुरै के मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर में पुडु मंडपम, और कृष्णपुरम के मंदिर में सामने का मंडप, सैकड़ों दूसरी मूर्तियों के अलावा इस मामले में खास उदाहरण हैं।

बृहदीश्वर मंदिर कॉम्प्लेक्स के उत्तर-पश्चिम कोर्ट में विमान, अर्ध- और मुख-मंडप के साथ सुब्रह्मण्य मंदिर यूनिट, अलंकृत किस्म के नायक मंदिर का एक खास उदाहरण है और अपनी तरह का एक असली हीरा है। बारीक दाने वाले ग्रेनाइट से बना, यह अपने अधिष्ठान की मोल्डिंग और दीवार के पिलस्टर्स में कुछ बढ़िया और जटिल नक्काशी दिखाता है। पिलस्टर्स के बीच दीवार के खांचों में खास कुंभ-पंजर बहुत अलंकृत है, साथ ही पिलर्स और पॉलीगोनल पिलस्टर्स के ऊपर कैपिटल्स का पुष्प-पोटिका कोरबेल भी, जिसमें घुमावदार भुजा के सिरे पर लटकती हुई कली एक पूरे कमल की कली का आकार लेती है। डबल-फ्लेक्स्ड कपोत पतला और सुंदर है, जिसके नीचे की तरफ रिब्ड सपोर्टिंग फ्रेम-वर्क दिखता है। चौकोर विमान के ग्रीवा और शिखर छह कोनों वाले हैं, जो गर्भगृह में स्थापित सुब्रह्मण्य के छह-मुखी षण्मुख रूप के अनुरूप हैं। इस कई मंज़िला विमान के तलहार के कर्णकूट भी छह कोनों वाले हैं। इस तरह यह और दूसरे मंदिर आसानी से दक्षिण भारत के आधुनिक स्थापति या मंदिर बनाने वालों की

जीवंत कला का नमूना बन गए।

मदुरै के नायकों ने एक और खासियत शुरू की और उसके बाद भी जारी रही, वह है सादे नक्काशीदार या ढाले हुए पत्थरों के बाहरी हिस्से पर पॉलिश किए हुए ग्रेनाइट का इस्तेमाल, जिन्हें चमकदार काले रंग से पॉलिश किया जाता था, और छोटे विमानों और उनके अर्ध-मंडपों को बनाने में इस्तेमाल किया जाता था। ऐसा काम तिरुचिरापल्ली, मदुरै और दूसरी जगहों पर रॉक फोर्ट मंदिर में देखा जा सकता है।

वेल्लोर किले के अंदर पूरा मंदिर-कॉम्प्लेक्स, जिसमें कल्याण मंडप और गोपुर शामिल हैं, और वेल्लोर के पास विरिंचीपुरम मंदिर का ज़्यादातर हिस्सा, वेल्लोर के बोम्मी नायकों का काम है। हालाँकि, हम बड़े किले के अंदर जो मंदिर या उनके खंडहर देखते हैं, वे वेल्लोर के बोम्मी नायकों का काम है।



गिंगी का किला और उसके आस-पास का इलाका गिंगी नायकों की रचना है। इसी तरह, चंद्रगिरी किले के अंदर भी कई छोटे नायक मंदिर हैं।

इक्केरी नायकों ने अपनी राजधानी इक्केरी, केलाडी और अपने इलाके की दूसरी जगहों पर चालुक्यों से जुड़े मंदिर छोड़े हैं। इक्केरी (शिमोगा ज़िला) का अघोरेश्वर मंदिर इक्केरी स्टाइल के मंदिरों में सबसे बड़ा और सबसे अच्छा है। ग्रेनाइट से बना यह मंदिर एक ऊँचे और अच्छी तरह से बने उपपीठ प्लेटफॉर्म पर है। इसका पाँच मंज़िला चौकोर विमान एक दोहरी दीवारों वाला संधार स्ट्रक्चर है, और तल सुपरस्ट्रक्चर में खास शुकनासिका उभार है। ग्रीवा और शिखर आठ कोनों वाले हैं। चौकोर, बंद सामने वाले मंडप में तीन निकले हुए छेद हैं - एक सामने की तरफ और दो साइड में, जिनमें बड़े दरवाज़े हैं, जैसा कि अंदर अंतराल और मंदिर के दरवाज़ों के साथ भी है। इन तक सजावटी रेलिंग वाली सीढ़ियों से पहुँचा जा सकता है। एक हॉरिजॉन्टल बैंड बाहरी दीवार के हिस्से को ऊपरी और निचले हिस्सों में बाँटता है। ऊपरी आधे हिस्से में नुकीले मेहराबों की एक सीरीज़ है, जिसमें जालीदार खिड़कियाँ हैं, जिन पर फूलों की स्पैंड्रिल सजावट और रॉमबॉइड रोज़ेट हैं, जो इंडो-इस्लामिक डिज़ाइन का एक एलिमेंट दिखाते हैं। निचले आधे हिस्से में जोड़े हुए पिलस्टर्स के बीच मंदिर के सामने की एक सीरीज़ है। अंदर, मंडप नवरंगा पैटर्न का है जिसमें सजावटी खंभे हैं, जिनमें से कुछ पर विजयनगर और विजयनगर के बाद के खंभों की खासियत वाली जानवरों की मूर्तियाँ हैं।

पास के केलाडी में रामेश्वर और वीरभद्र के जुड़वां मंदिर, जो राजवंश की पुरानी सीट थी, भूरे-हरे ग्रेनाइट से बने हैं।

दोनों अलग-अलग विमानों के सामने के मंडप आपस में जुड़े हुए हैं। रामेश्वर 1499 और

1513 के बीच बना था, और वीरभद्र 1530 और 1540 के बीच। दोनों संधार विमान हैं जिनकी दीवारें बड़े स्लैब से बनी हैं जो लंबाई में रखे हैं और उन पर कम नक्काशी की गई है, जैसा कि हम्पी और उत्तरी इलाके के कई छोटे मंदिरों में आम तौर पर पाया जाता है। मंडप के अंदर के खंभे खास विजयनगर पैटर्न में हैं और छत के स्लैब पर डिज़ाइन और मोटिफ खुदे हुए हैं, जिनमें से कुछ इंडो-इस्लामिक डिज़ाइन की याद दिलाते हैं।

अध्याय 9

अन्य मंदिर प्रकार

कदम्ब-चालुक्य शैली के मंदिर

शुरुआती चालुक्यों ने विमान आर्किटेक्चर के शुरुआती नियमों को अपनाया, उन्हें अपने इलाके के हिसाब से डेवलप किया और इस तरह के शुरुआती रूप बनाए, साथ ही उन्होंने उस इलाके में ज़्यादा आम रूपों पर भी उतना ही ध्यान दिया, जिस पर पहले बनवासी के कदंबों का दबदबा था। उन्होंने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उत्तर में क्या डेवलप हो रहा था। दक्कन के इलाके में उनकी ज्योग्राफिकल स्थिति, जो पेनिनसुला को सब-कॉन्टिनेंट के उत्तरी हिस्से से अलग करती थी, उन्हें एक से ज़्यादा असर के लिए कमज़ोर बनाती थी। नतीजा यह हुआ कि शुरुआती चालुक-यान आर्किटेक्चर और कला के गढ़, यानी महाकुटेश्वर, ऐहोल, पट्टडकल और बादामी, और नीचे आंध्र कर्नाटक इलाके में कुरनूल के आसपास सत्यवोलू और महानंदी में - जो वेंगी की पूर्वी चालुक्य ब्रांच की सीमा पर थे - कई तरह के मंदिर बने - उत्तरी, दक्षिणी, और जिन्हें स्थानीय तौर पर कदंब के नाम से जाना जाता था।

कदंब-चालुक्य टाइप के सबसे आसान रूप में एक चौकोर विमान होता है जिसमें एक नीचा सुपरस्ट्रक्चर होता है जो एक के बाद एक पीछे हटते हुए टियर का एक सीढ़ीदार पिरामिड होता है, जो असल में छज्जे जैसा या कपोत जैसा होता है, जो अक्सर एक-दूसरे से छोटी धंसी हुई गर्दन से अलग होते हैं जो तल होते हैं। कपोत टियर को उभरे हुए कुडू मोटिफ से सजाया गया है, खासकर हर तरफ बीच में। ये अपने सीधे अलाइनमेंट में उत्तरी स्टाइल के प्रसाद-शिखर की रेखा की नकल करते हैं। अलग करने वाली गर्दन, या गला, पूरी तरह से गायब हो सकती हैं या बहुत छोटी हो सकती हैं ताकि दिखाई न दें। सबसे ऊपरी टियर में एक छोटा ग्रीवा होता है जिसमें एक अलग अमल-शिला, या अमलक होता है, जिसका एक धारीदार गोलाकार या लेंटिकुलर आकार होता है जो उत्तरी प्रसाद सुपरस्ट्रक्चर का खास ऊपरी हिस्सा है या बारी-बारी से



ग्रीवा में दक्षिणी विमान रूपों की तरह एक स्तूप के साथ शिखर हो सकता है। पूर्व वाला

उड़ीसा की वास्तुकला के तथाकथित पीड़ा-देवलों जैसा दिखता है। आमलक शिखा के साथ अधिक विकसित रूपों में, स्तरों के कोनों को अंतराल पर समान छोटे आमलक रूपों, कर्णमलकों के साथ प्रदान किया जाता है, जैसा कि उत्तरी शैली के मंदिरों में होता है। यह स्पष्ट होगा कि ढलान वाली छत-स्लैब या एक के ऊपर एक मुड़े हुए कंगनों की स्तरीय व्यवस्था की यह प्रणाली उच्च वर्षा वाले क्षेत्र के लिए सबसे उपयुक्त थी, जैसा कि पश्चिमी तट पर मूल कदंब क्षेत्र था। इसने तटीय कोंकण के क्षेत्र में और विकास देखा और बाद की शताब्दियों में पूर्व में कृष्णा और तुंगभद्रा की निचली पहुंच तक भी फैल गया। पत्थर में सबसे पुरानी संरचनाएं, जैसा कि ऐहोल के कुछ उदाहरणों में है, यह कहा जा सकता है कि यह रूप, जिसमें ऊपर का हिस्सा हो या शुकनासिका न हो या न हो, कमोबेश आम उत्तरी प्रसाद सुपर-स्ट्रक्चर और दक्षिणी विमान रूप का मिला-जुला रूप है। इस तरह का उदाहरण ऐहोल में गलगनाथ मंदिर के पास मल्लिकार्जुन ग्रुप (लगभग 8वीं सदी), बादामी घाटी में भूत-नाथ ग्रुप के रास्ते में लकुलिसा मंदिर और बादामी चालुक्य-राष्ट्रकूट मूल के महाकुटेश्वर ग्रुप में मिलता है। महानंदी (कुरनूल ज़िला) में महानंदीश्वर मंदिर कॉम्प्लेक्स के पीछे छोटे मंदिरों का ग्रुप, और आलम-पुर में पापनासनम ग्रुप के मंदिर, पूर्वी चालुक्य इलाके में इसी तरह के हैं। डोड्डागड-दवल्ली (हासन ज़िला, मैसूर)[2] में 1113 में बने लक्ष्मीदेवी मंदिर कॉम्प्लेक्स के नौ में से आठ स्ट्रक्चर इसी तरह के हैं-

1 क्युसेंस, कनारेस डिस्ट्रिक्ट्स का चालुक्य आर्किटेक्चर, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, वॉल्यूम XLII, न्यू इंपीरियल सीरीज़, 1926, पेज XXV, जिस पर "गलगनाथ मंदिर का पिछला हिस्सा और मंदिर नंबर 37 और 38" लिखा है। इन्हें गंडारगुडी और गलगनाथ भी कहा जाता है।

नरसिम्हाचर, आर., डोड्डागड्डावल्ली में लक्ष्मी देवी मंदिर, मैसूर आर्कियोलॉजिकल सीरीज़, मैसूर में आर्किटेक्चर और स्कल्पचर, नंबर III, 1919





होयसल काल से जुड़ा हुआ। 1385 में बना गणिगट्टी जैन मंदिर, चिप्पागिरी (बेल्लारी ज़िले) की पहाड़ी पर वैसा ही जैन मंदिर, हम्पी में पंपपति मंदिर से सटे हेमकुटम पहाड़ी पर त्रिकूट मंदिरों का समूह, और उसके गोपुर के पास दो और मंदिर और हम्पी से एक मील उत्तर-पूर्व में एक और मंदिर, विजयनगर काल में बने ऐसे मंदिरों के उदाहरण हैं। शायद इसलिए कि गणिगट्टी और चिप्पागिरी मंदिर जैन धर्म के थे, लॉन्गहर्स्ट ने हेमकुटम पहाड़ी पर बने मंदिरों को भी जैन कहना चुना, हालांकि उन पर मिले सबूतों से पता चलता है कि वे ब्राह्मण धर्म से जुड़े हैं।[1]

इस रूप का एक रूप, जो दक्षिणी विमान के स्तरित तलों और उत्तरी प्रासाद की योजनाबद्ध और समान भूमियों के बीच का मिश्रण जैसा दिखता है, जिसके कोनों पर अक्सर आमलक

संकुचित होते हैं, अलग-अलग समय में एक ही क्षेत्र में वितरित पाया जाता है। इस प्रकार में, प्रत्येक भूमि को सरल, छोटी, स्तंभों वाली और धंसी हुई दीवारों से अलग किया जाता है जो पूरे पिरामिडीय अधिरचना को चौकोर-खंडित परतों में विभाजित करती हैं। शीर्ष पर एक ग्रीवा, अमलशिला और स्तूप होता है - जैसा कि उत्तरी प्रासाद में आम है। इसका उदाहरण ऐहोल में गलगनाथ है, जिसमें कर्णमलकों के साथ एक सादा सीढ़ीदार अधिरचना है (कौसेंस का मंदिर संख्या 10)। ऐहोल में मल्लिकार्जुन मंदिर कर्णमलकों के बिना इस तरह का एक उदाहरण है। महाकुटेश्वर मंदिर कॉम्प्लेक्स के घेरे के अंदर खड़ी दूसरी बनावटें, मकुटेश्वर और मल्लिकार्जुन को छोड़कर, जो दक्षिणी विमान टाइप के हैं और संगमेश्वर जो उत्तरी प्रसाद टाइप का है, चालुक्य-कदंब स्टाइल के अलग-अलग रूप हैं। नागार्जुनकोंडा (गुंटूर ज़िले) के पास टेराला में भी ऐसे ही मंदिर मिलते हैं। कदंब इलाके में ही, हंगल, बेलगामी और दूसरी जगहों की तरह, इस तरह का रूप ऐसा है जिसमें पीछे हटते हुए हॉरिजॉन्टल स्लैब जैसे हिस्सों का एक टियर वाला सुपरस्ट्रक्चर है,

1 लॉन्गहर्स्ट, ए.एच., हम्पी खंडहर, भारत सरकार प्रकाशन दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1933।

वही, पेज XIX, ऐहोल मंदिर नंबर 10 दक्षिण-पश्चिम से।

*Plate 20.* SRIRANGAM—RANGANATHA TEMPLE—SESHARAYYAR MANDAPAM, FACADE PILLARS *(See page 171)*

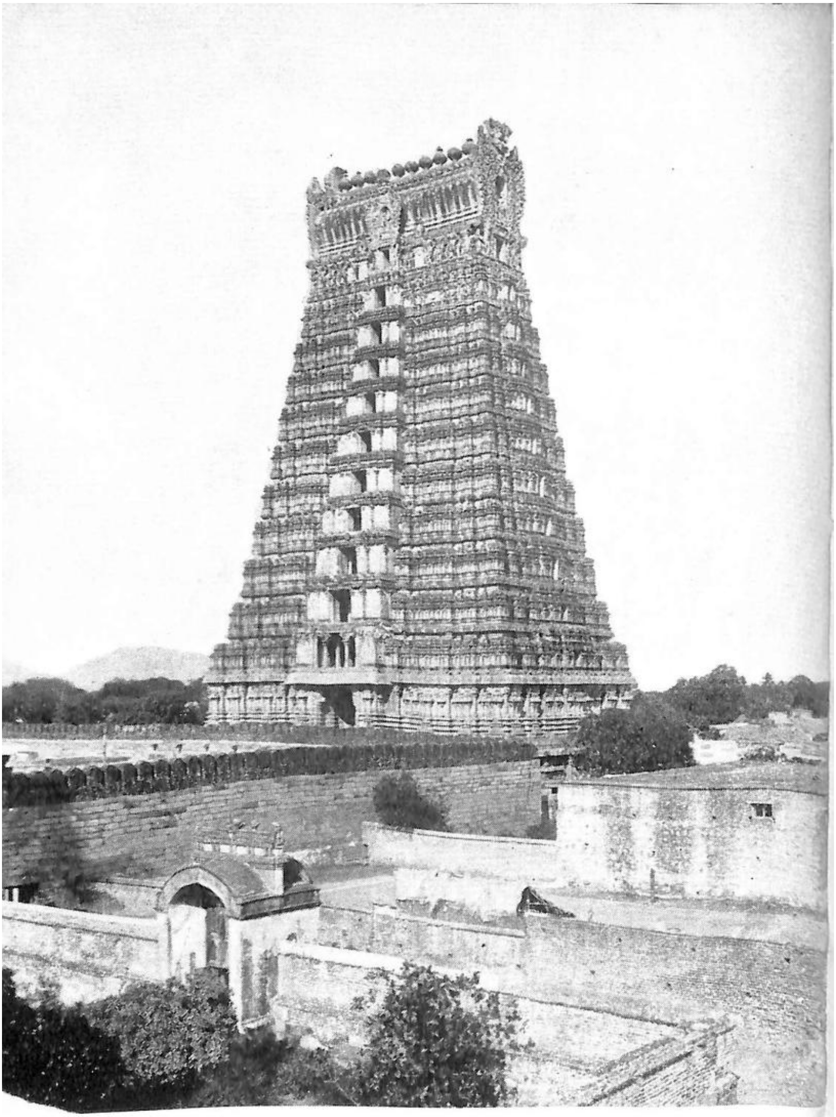

*Plate 21.* SRIVILLIPUTHUR—VATAPATRASAYI TEMPLE MAIN (EAST GOPURAM)
*(See Page 171)*

बीच में कुडू जैसा डेकोरेशन के अलावा, उनके ऊपरी किनारों पर सीधे कमल की कली जैसे उभार या 'डेंटिल्स' की लाइन, ऊपर एक चौकोर विमान जैसा शिखर और सामने एक शुकनासिका। यह टाइप विजयनगर साम्राज्य के उत्तरी इलाकों में ज़्यादा आम हो गया, जैसे हम्पी में।

चालुक्य और राष्ट्रकूटों के उत्तरी शैली के प्रसाद मंदिर

जैसा कि पहले बताया गया है, प्रारंभिक चालुक्यों ने ऐहोल और पट्टदकल में विमानों के हरस वाले स्तरित तलों वाले अधिरचना से रूप और संरचना में काफी भिन्न चौकोर शरीर और आनुपातिक रूप से विशाल वक्रीय अधिरचनाओं के साथ प्रसाद प्रकार की संरचनाएं भी बनाई थीं। इनका निर्माण अन्य प्रकारों के साथ किया गया था। इनका निर्माण कर्नाटक और आंध्र के अन्य भागों में भी हुआ। इन मंदिरों में शिखर गर्भगृह को घेरने वाली संपूर्ण अधिरचना को दर्शाता है, जो अंड नामक एक इकाई का निर्माण करता है, जो कोनों पर छोटे आंवले के आकार के कर्ण-मालकों द्वारा परिभाषित नोड्स में विभेदित होता है, सभी इस तरह से संकुचित होते हैं कि एक स्पष्ट मंजिल वाला विभाजन, जैसा कि दक्षिणी विमान के तलों में होता है, प्रकट नहीं होता है। रेखा-प्रसाद के इस शिखर के ऊपर एक गला या ग्रीवा होता है जो बड़े आमलक के आकार के अमलसर या अमलशिला को थामे रहता है, जिसके ऊपर एक स्तूप या कलश होता है। इस तरह यह साफ़ है कि उत्तरी रेखा-प्रसाद में जिसे शिखर कहा जाता है, उसकी तुलना दक्षिणी टियर वाले विमान में उसी नाम से नहीं की जा सकती। प्रसाद के सुपर-स्ट्रक्चर के कोनों में दबे हुए छोटे आमलक, जिन्हें कर्णमलक कहा जाता है, भूमि में अंतर करने का एकमात्र आधार हैं। प्रायद्वीप के कर्नाटक और आंध्र क्षेत्र में ये उत्तरी-प्रकार के प्रसाद, अपनी खास चालुक्य शैली के साथ, अपनी अलग-अलग भिन्नताओं के बावजूद, एक ऐसा समूह बनाते हैं जो पश्चिमी, उत्तरी या पूर्वी भारत के ऐसे प्रसाद मंदिरों से बिल्कुल अलग है। उनके अधिष्ठान आम तौर पर दक्षिणी विमान में पाए जाने वाले पैटर्न को फॉलो करते हैं, और शरीर





एक स्पष्ट प्रस्तर प्रस्तर के साथ प्रदान किया गया है जो इसके ऊपर अधिरचनात्मक भागों को अलग करता है। वर्गाकार योजना या चतुर्भुज को आधार से ऊपर तक प्रत्येक चेहरे पर तीन या पाँच खंडों द्वारा उभारा गया है, उभारे गए भागों को रथ कहा जाता है, जो मंदिर को त्रिरथ या पंच रथ बनाते हैं, जैसा भी मामला हो। सबसे विशिष्ट और विशिष्ट शुकन-शिका अधिरचना के सामने की ओर अंतराल छत पर प्रक्षेपित है और यह शिखर के सबसे निचले हिस्से में सामने के चेहरे जितनी ही चौड़ी है और आगे की ओर निकली हुई है, जो पहले के उदाहरणों में

शिखर की आधार चौड़ाई के कम से कम आधे या दो-तिहाई के बराबर है। हालाँकि, अक्षीय मंडप क्षेत्र के विमान मंदिरों के समान पैटर्न के हैं, और उनकी सपाट छतें प्रक्षेपित शुकनासिका को अन्यत्र उत्तरी शैली के मंदिरों की तुलना में अधिक स्पष्ट बनाने में मदद करती हैं, मंडपों के अलावा, चालुक्य इलाके के ये उत्तरी स्टाइल के मंदिर, अपने पिलर के आकार, दरवाज़े के फ्रेम, मूर्तियों, खासकर दरवाज़े के दोनों ओर बने द्वारपाल, मूर्ति और सजावट की दूसरी चीज़ों के मामले में लोकल विमान टाइप से बहुत कुछ एक जैसा है।

ऐहोल में हुच्चिमल्लीगुड़ी, हुच्चप्पय्यागुड़ी, और ताराप-गुड़ी, उसके पास सिद्धनकोला, महाकुटेश्वर में मल्लिकार्जुन, और पातडकल में कदासिद्धेश्वर, जम्बुलिंग, पापनाथ, कासिवेश्वर और गलगनाथ बादामी चालुक्य इलाके में पाए जाने वाले ऐसे सबसे ज़रूरी उदाहरण हैं। हुच्चिमल्लीगुड़ी, हुच्चप्पय्या-गुड़ी, और मल्लिकार्जुन इस ग्रुप के सबसे पुराने हैं। ये आम तौर पर सामने मंडप वाले त्रिरथ होते हैं। बाहरी दीवार सादी या सजी हुई होती है और अक्सर उसमें खंभों वाला बरामदा होता है। पहले वाले संधार टाइप के हैं, जबकि बाद वाला निरंधर टाइप का है, हालांकि वे आम तौर पर पहले वाले जैसे ही दिखते हैं।

कदासिद्धेश्वर और पट्टडकल में जम्बुलिंग सबसे सरल हैं। इनमें एक पवित्र स्थान है जिसमें त्रिरथ शिखर और सामने एक मंडप है। काशिविश्वेश्वर पंचरथ है, जबकि



गलगनाथ एक संधार है, जिसके गर्भगृह की बाहरी दीवार के तीन तरफ सपाट छत वाले बरामदे हैं, और एक त्रिरथ शिखर है। पापनाथ का प्लान नीचा और सीधा है, जिसमें मुख्य इमारत के ऊपर एक छोटा शिखर है, जो गर्भगृह के सामने बहुत बड़े अंतराल से बनी पूरी लंबाई के हिसाब से बहुत छोटा लगता है, जिसके सामने एक मंडप और एक पोर्टिको है। सबसे दिलचस्प बात शालाओं का हार है, जिसके सामने के कोनों पर कर्णकूट हैं और बीच में कुछ पंजर हैं जो छत पर लगातार फैले हुए हैं, जो एक्सियल मंडप हैं, यह एक दक्षिणी खासियत है जो सिर्फ़ विमान-टाइप के मंदिरों के लिए सही है। महाकूटेश्वर ग्रुप में संग-मेस्वर एक त्रिरथ ले-आउट है जिसके सामने एक खंभों वाला मंडप है। पवित्र जगह के फर्श से पानी निकलने के लिए, अधिष्ठान के ऊपर उत्तरी तरफ एक आयताकार छेद के रूप में एक खांचे के रूप में एक ढलान का होना एक दिलचस्प बात है।

पूर्वी चालुक्य इलाके में, जिसमें कुरनूल, महबूबनगर और गुंटूर ज़िले आते हैं, हमारे पास सातवीं-आठवीं सदी में बने ऐसे रेखा-प्रसाद-टाइप मंदिर हैं। आलमपुर में नौ मंदिरों के नवब्रह्मा कॉम्प्लेक्स में, दक्षिणी विमान टाइप के तारकब्रह्मा को छोड़कर बाकी सभी इसी तरह के हैं। वे ज़्यादातर 713 A.D. से पहले के हैं, जब, जैसा कि एक शिलालेख में बताया गया है, पूरे ग्रुप को घेरने वाला प्रकार इसानाचार्य ने बनवाया था। वे ज़्यादातर निरंधर हैं जबकि कुछ संधार हैं। हर यूनिट में एक पवित्र जगह है जिसमें एक अच्छे अनुपात वाला त्रिरथ शिखर, एक अंतराल

और दो मंज़िला सपाट छत वाला खंभों वाला मंडप है। पूरी एक्सियल सीरीज़ के सामने एक ही एंट्रेंस है और उसके चारों ओर एक लगातार दीवार है, जो संधार टाइप में सेल की बाहरी दीवार भी बनाती है। बाहरी दीवारों पर बड़े पैमाने पर नक्काशीदार आले बने हैं, जिन पर उदगम डिज़ाइन हैं, जिनमें बढ़िया मूर्तियां और जालीदार खिड़कियां हैं। नक्काशी बढ़िया है, और सेंट्रल इंडियन और राजस्थानी स्टाइल की याद दिलाती है। बालब्रह्म इस ग्रुप का सबसे एडवांस्ड और डिटेल्ड नमूना है।

महानंदी मंदिर समूह भी एक आम मंदिर से घिरा हुआ है।



प्रकार में, दूसरी बनावटों के अलावा, एक ग्रुप में अलग-अलग तरह के छह छोटे मंदिर और दूसरे ग्रुप में मुख्य महानंदीश्वर के पीछे चार छोटे मंदिर हैं, जो एक संधार-रेखा-प्रासाद है जिसमें त्रिरथ टाइप का शिखर है, और यह 750 A.D. का है। सत्यवोलू (कुरनूल ज़िला) के कॉम्प्लेक्स के भीमलिंगेश्वर और रामलिंगेश्वर, जो ग्रुप की मुख्य यूनिट हैं, दोनों ही एक चौकोर बॉडी पर त्रिरथ शिखर के साथ निरंधर हैं। दक्षिणी विमान टाइप के अधिष्ठान के अलावा, उनमें एक व्याल-वारी या व्याल-माला भी है, जो एंटेब्लेचर में व्यालों की एक फ्रिज़ है, जो दक्षिणी विमान मंदिरों के प्रस्तर का एक ज़रूरी हिस्सा है, और बाकी सभी रेखा-प्रासादों में नहीं है। बड़े रामलिंगेश्वर में एक गर्भगृह अंतराल और सामने एक्सियल मंडप हैं। मंदिर की दीवार सादी है, बस दोनों तरफ एक देवकोष्ठ का ताक है। छोटे मंदिरों में चौकोर, आयताकार और ऊपरी हिस्से के प्लान वाले नमूने मिलते हैं। चौकोर मंदिर हुच्चिमल्लीगुडी जैसा ही है, जिसमें छह आड़े कपोत जैसे टीयर हैं, जिनके ऊपर अमलसर बना है, जो कदंब-चालुक्य मॉडल का एक उदाहरण है।

कुरनूल के पास पंचलिंगेश्वर भी है, जिसे काफी रेनोवेट किया गया है, लेकिन यह भी इसी क्लास का है। यह प्लान में संधार है और इसका अभी का सुपरस्ट्रक्चर कदंब-चालुक्य स्टाइल में एक मॉडर्न रेनोवेशन है। इसके सामने खंभों वाला मंडप है, जिसके बीच में एक ऊँची क्लियर-स्टोरी वाली छत है और साइड में ढलान वाली छतें हैं। इसमें विजयादित्य के समय का एक शिलालेख है, जो लगभग 750 A.D. का है। इस तरह का एक और अच्छी तरह से बचा हुआ मंदिर पास के बांदी तंद्रपाडु में मिलता है, जिसका शरीर निरंधर है, जिसके किनारों पर उभरे हुए भद्र आलों पर गणेश, दुर्गा और कार्तिकेय की नक्काशी है। शिखर के सामने शुकनासिका खास है।

चेब्रोलू में सोमेश्वर और पंचलिंगुला में पंचलिंगेश्वर भी इसी कैटेगरी में आते हैं। येलेश्वरम की खुदाई में मिले छोटे मंदिर सत्यवोलू और महानंदी कॉम्प्लेक्स में मिले छोटे एक्सपेरिमेंट जैसे ही हैं।

इस प्रकार के रेखा-प्रसाद जल्द ही इन क्षेत्रों में प्रचलन से बाहर हो गए;



यह तमिल क्षेत्र में और आगे दक्षिण में विस्तार नहीं कर सका।

केरल के मंदिरों के प्रकार

केरल के मंदिर अपने आप में एक अलग क्लास बनाते हैं क्योंकि उन्हें बनाने में लकड़ी का इस्तेमाल होता है, जिसमें ज़्यादातर लकड़ी शामिल है, जैसा कि पत्थर के विमानों के आने से पहले दक्षिण भारत में हर जगह होता था। हालांकि कुछ जगहों पर मिडिल और लेट मिडिल पीरियड और स्टाइल (जैसे तमिलनाडु में) के विमान मंदिर मिलते हैं, लेकिन ज़्यादातर मंदिरों के बेस और दीवारें ग्रेनाइट और लेटराइट से बनी हैं, जिनकी छत लकड़ी के तख्तों, टाइलों या लकड़ी के फ्रेम पर शीट मेटल की है, और उनके आकार को उस इलाके की ज़्यादा बारिश के हिसाब से बदला गया है। जबकि विमान या श्री कोयल का अधिष्ठान ढले हुए पत्थर का है, जिसके सभी हिस्से दक्षिणी मंदिरों के अधिष्ठान जैसे हैं, दीवारें आमतौर पर लेटराइट ब्लॉक की होती हैं जो इस इलाके में बहुत ज़्यादा मिलते हैं, और ताज़ा खुदाई के बाद आसानी से काटे और आकार दिए जा सकते हैं। उनकी खुरदरी और गड्ढेदार सतह के कारण, दीवारों पर बहुत ज़्यादा प्लास्टर किया गया है और कुछ सजावट प्लास्टर से की गई है। दीवारें म्यूरल पेंटिंग के लिए एक अच्छी जगह बनाती हैं जो रिलीफ मूर्तियों की जगह लेती हैं। केरल के मंदिर इसलिए चूने के प्लास्टर वाली दीवारों पर फ्रेस्को टेक्निक से की गई अपनी गहरी रंगीन पेंटिंग के लिए जाने जाते हैं। छत की लकड़ी सीधे दीवारों के ऊपर दीवार की प्लेट पर टिकी होती है, और ऊपर मिलने के लिए एक कोने में मिलती है। लकड़ी के फ्रेम-वर्क को ढकने वाला छत का मटीरियल क्लिंकर से बना होता है। यह एक-दूसरे पर चढ़े हुए लैमिनेटेड लकड़ी के तख्तों से बना होता है और ऊपर क्लिंकरटाइल या भट्टियों में बहुत ज़्यादा गरम की गई टाइलों से ढका होता है, जिनकी सतह कांच जैसी या कांच जैसी चिकनी होती है जो उन्हें वॉटरप्रूफ बनाती है। यह मछली के स्केल जैसा ओवरलैपिंग पैटर्न वाली टाइलें हैं जो दक्षिणी विमानों के ईंट-और-गारे के शिखरों के कवरिंग प्लास्टर में दोबारा मिलती हैं। छत मेटल शीट-कॉपर या पीतल की भी हो सकती है, जिसकी नकल महाबलीपुरम के सबसे पुराने मोनोलिथिक मॉडल, जैसे द्रौपदी रथ में भी मिलती है।



द्रौपदी रथ, केरल के मंदिरों में उनके सबसे आसान रूप में साधारण विमान के छह के बजाय सिर्फ़ चार ज़रूरी हिस्से होते हैं, यानी, अधिष्ठान या बेस, भित्ति या दीवार, शिखर या छत, और स्तूपी या कलश। सबसे ऊपरी छत के नीचे प्रस्तर और ग्रीवा हटा दिए जाते हैं। एंटेब्लेचर और हारा सिर्फ़ मंज़िल के रूप में देखे जा सकते हैं। श्री कोयल या विमान के लिए आम तौर पर

प्लान चौकोर या गोल और ऊपरी होता है। मंडप और गोपुर के लिए रेक्टेंगल ज़्यादा आम है जिन्हें पडी-प-पुरा कहा जाता है। छत की शहतीरें दीवार से बाहर निकली होती हैं, जिससे कपोतों जैसे अच्छे छज्जे बनते हैं। इन्हें अक्सर दीवारों से निकले हुए नक्काशीदार लकड़ी के ब्रैकेट के साथ नक्काशीदार लकड़ी के फ्रेम-वर्क से भी सपोर्ट दिया जाता है, जो कैरिएटिड जैसे होते हैं। बड़े विमानों में शरीर संधार या दोहरी दीवारों वाला होता है, जिसमें मंदिर-कक्ष के चारों ओर एक परिक्रमा पथ, या इदाई-नाली होती है, अंदर की दीवार ऊपर उठकर दूसरा तल बनाती है, और उस पर शंक्वाकार या पिरामिड जैसी त्रिकोणीय छत होती है। परिक्रमा पथ में एक कम ऊंचाई पर छत होती है जो अंदर की दीवार की बीच की ऊंचाई से नीचे की ओर झुकती है और बाहरी दीवार के ऊपर छज्जे की तरह निकली होती है। शंक्वाकार या ढलान वाली मुख्य छत में डॉर्मर, या नासिका, उभार होते हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से किलि-वसल कहा जाता है, जिनके सामने बारीक नक्काशी वाले लकड़ी के तोरण-फ्रेम होते हैं। उनके पूरे रूप, या कम से कम उनके सामने के हिस्से-मुखपट्टी, ज़्यादातर मामलों में मेहराबदार या घोड़े की नाल के आकार के होते हैं, जबकि कुछ में वे सिर्फ़ तिकोनी होती हैं। स्थानीय नाम किलिवसल (तोते जैसा प्रवेश द्वार) सुकनासिका नाम का संकेत है। यह भी कोई अजीब बात नहीं है कि बाहरी दीवार गोल हो, और अंदर वाली पवित्र जगह के चौकोर हिस्से के चारों ओर हो, या इसका उल्टा हो। आम तौर पर, श्री कोयल के पूरब या पश्चिम में सिर्फ़ एक ही दरवाज़ा होता है। बाकी तीन तरफ़ ताखे या नकली दरवाज़े होते हैं। कुछ मामलों में, दरवाज़े पूरब और पश्चिम दोनों तरफ़ होते हैं, मंदिर-कक्ष के अंदर की जगह एक आड़ी दीवार से पूरब और पश्चिम आधे हिस्से में बंटी होती है, हर आधे हिस्से में एक अलग देवता होता है। दरवाज़े के सामने पत्थर की सीढ़ियाँ होती हैं जिनके दोनों ओर पत्थर के साइड-स्लैब या रेलिंग होती हैं, जिन पर शानदार उभरी हुई मूर्तियाँ होती हैं, रेलिंग या कोपिंग को व्याल के मुँह से निकलती हाथी की सूंड के आकार का बनाया जाता है,

▼



या इसी तरह के दिलचस्प पैटर्न। उत्तर की ओर से निकला हुआ प्रणाल, या पानी का आउटलेट, एक खास आकार का, मोटा, लंबा, बेलनाकार और ट्यूब जैसा होता है, जिसमें एक पतला छेद बना होता है, जो एक व्याल के मुंह से निकलती हुई सीधी हाथी की सूंड जैसा दिखता है। बाहर से, यह अक्सर धारीदार होता है और कुछ दूरी पर गोल गांठों में बंटा होता है और नीचे एक भूत या गण से सपोर्टेड होता है। श्री कोयल के सामने एक अलग छोटा मंडप होता है, जो अक्सर ढलान वाली छत के साथ चौकोर होता है, जिसे नमस्कार मंडप कहा जाता है। बाहर से, खुला आंगन एक प्रकार से घिरा होता है जिसमें एक क्लोस्टर, या मालिका होता है, जिसे स्थानीय रूप से नालम्बलम या चुट्टम्बलम कहा जाता है, जिसके सामने मुख्य गोपुर-एंट्रेंस या पाडी-प-पुरा होता है, कभी-कभी पीछे और किनारों पर और भी होते हैं। भीतरी प्रकार के अलावा, जो सरल है, त्रिचूर के वडक्कुनाथ मंदिर जैसे बड़े मंदिर परिसरों में चारों तरफ मंजिला गोपुर-प्रवेश द्वारों वाला एक बाहरी प्रकार है, और दरबार में अलग हॉल या

मंडप हैं, जैसे रंग-शाला या कुट्टम्बलम, ओपेरा, नृत्य और इसी तरह के प्रदर्शनों के लिए, जिनके लिए केरल प्रसिद्ध है, विशेष रूप से नृत्य-नाटक और मूकाभिनय शो, जैसे कथकली, ओटंटुल्लाल आदि। वडक्कुनाथ मंदिर में, बाहरी दरबार के उत्तर-पूर्व कोने में सस्ता के लिए सहायक मंदिर लकड़ी और धातु की चादर की छत के साथ अर्द्धवृत्ताकार है।

केरल के ज़्यादातर मंदिर जो अभी हैं, वे बहुत पुराने नहीं हैं, सबसे पुराने मंदिर मिडिल एज या पोस्ट-मिडिल एज के हैं। सबसे पुराने मंदिर, बनावट की खराब होने वाली बनावट की वजह से, खो गए हैं, लेकिन उनके पत्थर के अधिष्ठान और देवताओं, द्वारपालों वगैरह की मूर्तियों को छोड़ दें। इनसे हमें कम से कम दसवीं सदी A.D. से, अगर उससे पहले नहीं तो, उनके कंटिन्यूटी का अंदाज़ा मिलता है।

ऐसे मंदिर जिनकी छतें ढलान वाली या पक्की होती हैं, या जिनकी छतें ढलान वाली होती हैं, दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में दक्षिण कनारा और गोवा तक, पूरे मानसून में बहने वाले तटीय इलाके में बड़े पैमाने पर पाए जाते हैं। उनके श्री कोयल या विमान प्लान में गोल, जो ज़्यादातर होता है, चौकोर, आयताकार और ऊपरी होते हैं, और वे अक्सर एक से ज़्यादा मंज़िल के होते हैं। जब मंज़िलें होती हैं, तो निचली मंज़िलों की ढलान वाली या पक्की छतें टिकी होती हैं।





बाहरी दीवारों पर उनके लटकते छज्जों के साथ शहतीर पर, बाहरी दीवार से निकले ब्रैकेट द्वारा और अधिक सहारा दिया जाता है और आंतरिक दीवार पर एक उच्च लीवर पर तय हुक पर बीम से नीचे की ओर झुकता है। सबसे आंतरिक दीवार के ऊपर सबसे ऊपरी मंजिल एक शंक्वाकार या चार-तरफा कूट छत से ढकी होती है, जिसमें गोलाकार, अष्टकोणीय और चौकोर संरचनाओं के मामले में एक ही कलश होता है, या त्रिकोणीय दीवारों पर एक रिज वाले शाला या सभा प्रकार से, आयताकार और अर्धवृत्ताकार संरचनाओं के मामले में स्तूपियों की एक पंक्ति होती है। अधिष्ठान हमेशा ग्रेनाइट पत्थर का होता है, जबकि दीवारें और अधिरचना ग्रेनाइट, लेटराइट या ईंट और लकड़ी की हो सकती है। छत तख्तों, धातु की चादर या टाइलों, या बहुत ही साधारण मामलों में छप्पर से बनी होती है। इनमें से ज़्यादातर मंदिर, जिनमें से कुछ की असली नींव दसवीं-ग्यारहवीं सदी की है, हाल की सदियों में उनके ऊपरी हिस्सों में काफ़ी मरम्मत और फिर से बनाया गया है और इस वजह से उनमें ऐसा कुछ नहीं दिखता जिसे विकास के ट्रेंड के तौर पर देखा जा सके।

शायद मंदिरों की इस सीरीज़ में सबसे बड़े कॉम्प्लेक्स में से एक वडक्कुनाथ, या दस-कैलासम, या श्री मूलनाथ मंदिर है, जो त्रिचूर शहर के बीच में एक नीची पहाड़ी चोटी पर खूबसूरती से बना है, जो खुद केरल इलाके के लगभग बीच में है। इसके शिलालेखों से पता चलता है कि यह मंदिर बारहवीं सदी से मौजूद था, हालांकि इसकी नींव इससे भी पुरानी हो सकती है। नल-अम्बलम, या अंदरूनी मालिका-प्रकार के अंदर न्यूक्लियर स्ट्रक्चर, तीन

अलग-अलग मंदिर हैं जो लगभग एक लाइन में उत्तर-दक्षिण में खड़े हैं, और सभी पश्चिम की ओर हैं। वडक्कुनाथ का गोल श्री कोयल, जो लाइन में सबसे उत्तर में है, उसका पवित्र कमरा एक तिरछी दीवार से बंटा हुआ है। शिव की मूर्ति वाले पश्चिमी हिस्से का अपना दरवाज़ा है और सामने सीढ़ियाँ हैं, जिसके सामने एक अलग नमस्कार मंडप है। पूर्वी हिस्सा देवी-पार्वती को समर्पित है जिसका दरवाज़ा पूर्व की ओर खुलता है। उत्तरी और दक्षिणी चेहरों पर नकली दरवाज़े, या घनद्वार हैं। ढले हुए पत्थर के अधिष्ठान के ऊपर, संधार स्ट्रक्चर की बाहरी दीवार और उसके प्रस्तर पर पिलस्टर की खास उभरी हुई नक्काशी, और कूट, शाला और पंजरा मॉडल के छोटे मंदिर दिखते हैं, जैसा कि इसमें है।

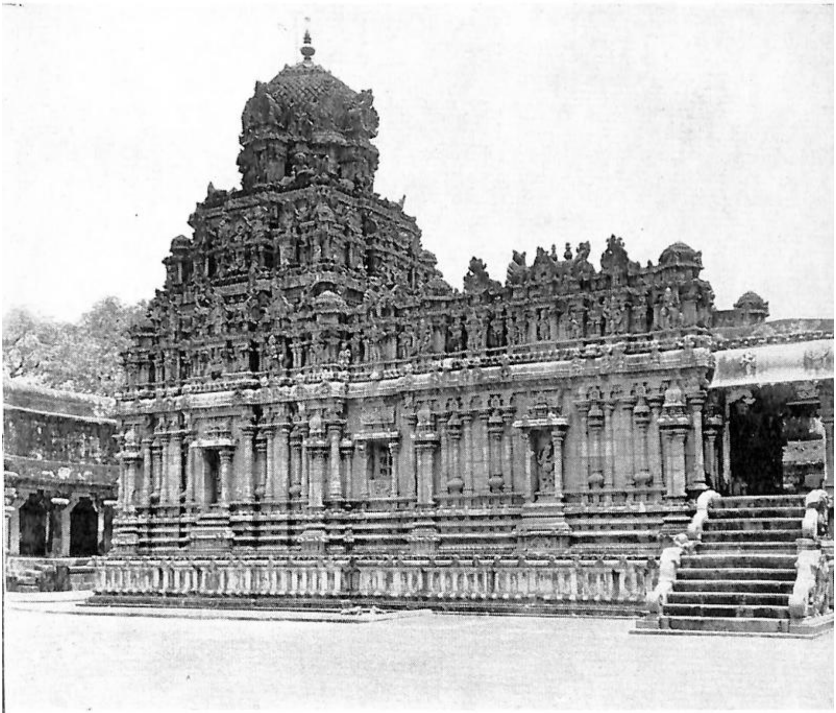

*Plate 22.* THANJAVUR—SUBRAHMANYA TEMPLE IN THE BRIHADISVARA COMPLEX
*(See page 172)*

Plate 23. IKKERI—AGHORESVARA TEMPLE (See page 173)

*Plate 24.* ALAMPUR—VISVA BRAHMA TEMPLE IN THE NAVA BRAHMA COMPLEX
*(See page 179)*

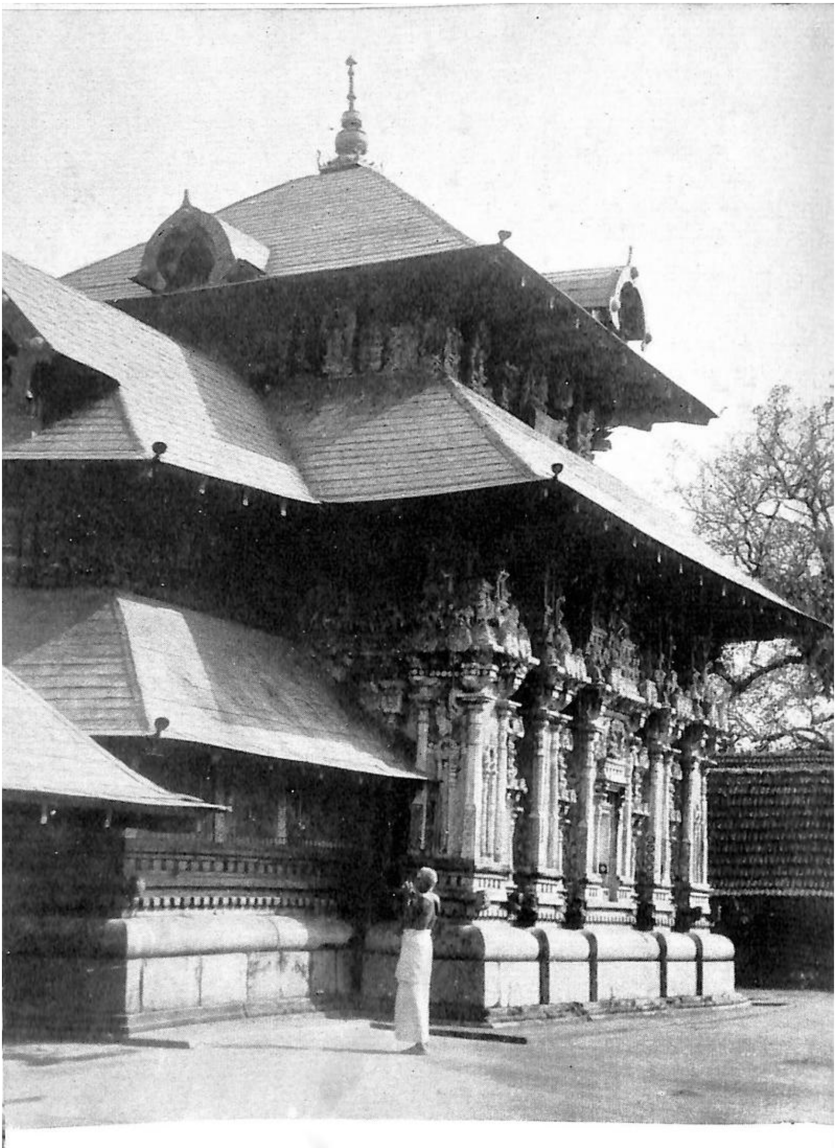

*Plate 25.* TRICHUR—VADAKKUNNATHAR TEMPLE *(See page 184)*

तमिलनाडु के मंदिर। मेटल शीट की ढलानदार कोन के आकार की छत इन मंदिरों को अपने ऊपर लटके हुए छज्जों से ढकती है, जिन्हें दीवार से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर निकले ब्रैकेट से सहारा मिलता है। अंदर की दीवार जो और ऊपर उठती है, असल में इस विशाल कोन के आकार की छत, या शिखर को सहारा देती है, जिसके ऊपर एक मेटल की स्तूप है। ग्रुप में सबसे दक्षिण में राम का दो मंज़िला मंदिर है, जो प्लान में चौकोर है, जिसके चारों चेहरों पर अधिष्ठान, दीवारें और प्रस्तर पाँच बार उभरे हुए हैं। साइड और पीछे के चेहरों पर बीच की उभरी हुई आकृतियाँ, जो पश्चिम में दरवाज़े के खुलने के हिसाब से हैं, उनमें पिलस्टर के बीच नकली दरवाज़े लगे हैं जिनके ऊपर शाला का डिज़ाइन है। कोने के खांचों में कोनों पर कर्णकूट और बीच के खांचों में पंजरा हैं। पतली खांचों में जोड़े हुए पिलस्टर पर छोटे मंदिर के डिज़ाइन हैं। ये कूट, शाला, पंजारा उभरी हुई चीज़ें, हुक और बीम से नीचे की ओर झुकी हुई, अंदर की दीवार पर ऊपर की ओर लगी हुई, और बाहरी दीवार की दीवार-प्लेट पर टिकी हुई, ऊपर की ओर लटकती हुई छज्जों से ढकी हुई हैं, बाहरी दीवार के ऊपरी हिस्से से निकली हुई बारीक नक्काशीदार कैरिएटिड जैसे लकड़ी के ब्रैकेट से लटकती हुई छज्जों को और सहारा मिलता है। अंदर की दीवार एक और लेवल तक ऊपर उठती है, जिस पर चार तरफ़ वाली गुंबद जैसी आखिरी छत, या शिखर है, जो मेटल शीट का बना है, और जिसके ऊपर एक स्तूप है। शिखर की छत के चारों तरफ़ बीच में चार नासिकाएँ, या डॉर्मर हैं। राम और शिव के मंदिरों के बीच, शंकरनारायण, या हरिहर को समर्पित तीसरा मंदिर है, जो गोल है और ऊपर की ओर दो मंज़िला है। इसके अधिष्ठान और दीवार पर भी इसी तरह उभार है, उत्तर, पूर्व और दक्षिण की तरफ बीच में बड़े हिस्से शाला पैटर्न के हैं, जिसमें स्तंभ तोरण के सामने एक नकली दरवाज़ा है जिसके ऊपर मकर आर्च है। दूसरे हिस्से कूट या पंजर पैटर्न के हैं - सभी दो-मंज़िला मॉडल हैं - जबकि खाली जगहों में फिर से छोटे साइज़ के ऐसे दो-मंज़िला मॉडल हैं जिनके ऊपर शाला शिखर के डिज़ाइन हैं, जो छोटे और पास-पास लगे पिलस्टर के जोड़ों पर हैं। वडक्कुनाथ मंदिर के दक्षिण की ओर, खुले आंगन के फ़र्श पर, सप्तमातृका समूह है, जिसमें मुख्य देवताओं को सिर्फ़ पद्म-पीठों की एक लाइन से दिखाया गया है, जो केरल के मंदिरों की एक खासियत है। तीनों केंद्रीय



मंदिरों के पश्चिम में मुख-मंडप हैं। शिव और हरिहर मंदिरों के बीच गणपति के लिए एक छोटा मंदिर भी है। मंदिरों की दीवारों पर बहुत अच्छे से पेंट किया गया है और लकड़ी के काम और ब्रैकेट पर सुंदर नक्काशी की गई है। नल-अंबलम या खंभों वाला गलियारा, जो न्यूक्लियर ग्रुप को घेरे हुए है, उसके बाहर एक बड़ा, चौड़ा खुला कोर्ट है, जिसके ठीक बाहर एक पक्का चक्कर लगाने का रास्ता है। कृष्ण, नंदी, परशुराम और सस्ता जैसे सहायक देवताओं के लिए

छोटे मंदिर भी बाहरी कोर्ट में हैं। दक्षिण-पश्चिम में सस्ता का मंदिर एक सुंदर, छोटा, पूर्व की ओर मुख वाला एकताल, अपसाइडल स्ट्रक्चर, गजपृष्ठ-कार है, जो सस्ता के लिए सही है, जिनका वाहन हाथी है। यह शायद केरल के कंस्ट्रक्शन के तरीके में सबसे छोटा अपसाइडल स्ट्रक्चर है। बाहरी कोर्ट के उत्तर-पश्चिम कोने में बड़ा कुट्टंबलम या ओपेरा-हॉल है, जो आयताकार है, और खास केरल स्टाइल में बना है। अंदर एक सेंट्रल पवेलियन है जिसमें बहुत अच्छे से खराद से बने खंभे हैं, जो हॉल के नक्काशीदार खंभों और छत की लकड़ी के काम के अलावा, स्ट्रक्चर की शान को और बढ़ाते हैं। पूरा कॉम्प्लेक्स एक बड़े पत्थर के प्रकार से घिरा हुआ है, जिसके चारों तरफ चार मंज़िला गेटवे हैं और ढलान वाली गेबल छतें हैं, जो केरल स्टाइल में गोपुर कंस्ट्रक्शन के अच्छे उदाहरण हैं।

केरल के दक्षिण में एक और बड़ा और ज़रूरी मंदिर कॉम्प्लेक्स त्रिवेंद्रम में पद्मनाभस्वामी या अनंतशयनम मंदिर है, जिसे पिछली दो सदियों में पूरी तरह से फिर से बनाया गया था। पत्थर से बना बीच का मंदिर, अनंतशयन विष्णु के लेटे हुए रूप को रखने के लिए प्लान के हिसाब से सही तरह से आयताकार है। यह दो मंज़िला है और इसकी मंज़िलों पर पंच और गेबल-रूफ़ पैटर्न हैं। दीवारें पेंट की हुई हैं और कृष्ण, क्षेत्रपाल, नरसिंह, सस्ता, गरुड़, वगैरह जैसे देवताओं के लिए छोटे मंदिर हैं। कॉम्प्लेक्स के चारों ओर पत्थर के खंभों वाला खुला खंभों वाला मंडप, और पत्थर के ढांचे और ईंटों के ऊपरी हिस्से का पूर्वी गोपुर तमिलनाडु के मंदिरों की स्टाइल में है, जबकि गोपुर के उत्तर में एक छोटा एंट्रेंस पारंपरिक केरल पैटर्न में है जिसमें गेबल-रूफ़ और किलिवासल नासिकाएँ हैं।

अन्य मंदिर प्रकार

1.87

कृष्ण को समर्पित मशहूर गुरुवायुर मंदिर का पवित्र स्थान चौकोर और दो मंज़िला है, जिसकी छतें मेटल शीट की बनी हैं, जैसा कि ऊपर दिए गए दो मामलों में है। इसके चारों ओर चुट्टम्बलम और प्रकार हैं। दूसरे खास मंदिर, जो एक या ज़्यादा मंज़िला हैं, और लेटराइट, ईंट और लकड़ी से बने हैं, और जिनकी छतें मेटल शीट या टाइलों से बनी हैं, वे हैं तिरुवंचिकालम, ताली (कोझी-कोड के पास), तलीपरम्बा, तिरुप्रांगोडे, पेरुमानम, त्रिक्कंडियूर, त्रितला और सुकपुरम के शिव मंदिर, त्रिचंबरम और तिरुनावे के राम मंदिर, और कोडुंगल्लूर का भगवती मंदिर। तिरुवंचिकालम मंदिर प्लान में चौकोर है और पत्थर से बना है, दोहरी दीवारों वाला और दो मंज़िला है, निचली ढलान वाली छत बाहरी दीवार पर और ऊपरी छत उठी हुई अंदर की दीवार पर टिकी हुई है, दोनों मेटल शीटिंग की हैं। ऊपर की छत के ऊपर लटके हुए छज्जे, जो लकड़ी के ब्रैकेट से और सपोर्टेड हैं जिन पर बहुत ज़्यादा नक्काशी की गई है, में ढलान वाली तरफ से चार किलिवासल नासिकाएं निकली हुई हैं। दीवारों पर कुछ अच्छी मूर्तियां और नक्काशी है। सबसे ऊपर की स्तूप सोने की परत चढ़ी तांबे की है।

तलिपरम्बा मंदिर भी लगभग ऐसा ही है, प्लान में चौकोर और दोहरी दीवारों वाला, जिसकी छत दो मंज़िला है। निचली छत छोटी बाहरी दीवार के ऊपर नीचे की ओर झुकी हुई है और ऊपरी पिरामिड जैसी या कूट छत अंदर की दीवारों के ऊपर है। सामने नमस्कार मंडप है

जिसकी छत ढलान वाली है और दोनों सिरों पर दो उभरी हुई छतें हैं। टीपू सुल्तान के हमलों के दौरान तोड़े गए एक बड़े गोपुरम के बचे हुए हिस्से अभी भी मौजूद हैं।

कोझिकोड के पास ताली मंदिर भी इसी तरह का एक और स्ट्रक्चर है, चौकोर, दोहरी दीवारों वाला और दो मंज़िला, जिसकी छतें मॉडर्न टाइलों से बनी हैं। अधिष्ठान और दीवारों पर साइड और पीछे दोनों तरफ़ हमेशा की तरह पाँच उभरी हुई आकृतियाँ दिखती हैं, बीच वाली सबसे चौड़ी जिसमें प्रस्तर के ऊपर एक शाला है, और एक तोरण में लगा एक नकली दरवाज़ा, जो नीचे दीवार के पिलस्टरों के बीच रखा गया है; सबसे बाहरी हिस्से कर्णकूटों से जुड़े हैं, जबकि बीच वाले, जो सबसे छोटे हैं, प्रस्तर के पंज-रस से जुड़े हैं। खांचों में पिलस्टरों के पास-पास लगे जोड़ों के बीच पतली खिड़कियाँ दिखती हैं जिनके ऊपर पंजरा है और जो प्रस्तर के कपोत के लेवल तक पहुँचते हैं। इसकी पत्थर की मूर्तियाँ बहुत अच्छी क्वालिटी की हैं।



साथ ही नमस्कार मंडप की छत पर लकड़ी की नक्काशी भी।

उत्तरी केरल में तिरुवंगड का राम मंदिर एक रेक्टेंगुलर श्री कोयल होने के कारण अनोखा है, जिसका ओरिएंटेशन लीनियर है, यानी, आयताकार स्ट्रक्चर के छोटे साइड में से एक पर एंट्रेंस है। यह दो मंज़िला है। मेन दरवाज़े के साथ सामने का हिस्सा लगभग सीधा है, जबकि दो लंबे साइड और छोटे पिछले साइड में निचले लेवल पर ढलान वाली छत है, और ऊपरी लेवल पर रिज पर लंबाई के एक्सिस के साथ एक सीधी लाइन में तीन स्तूपों के साथ रिज वाली गेबल छत है। छतें कॉपर शीट की हैं। सामने एक मुख-मंडप है, जो आयताकार भी है, लेकिन इसका लंबा एक्सिस श्री कोयल के एक्सिस से आड़ा है और इसके आड़े-तिरछे ओरिएंटेड रिज पर स्तूपों से बना है। चारों ओर कम ऊंचाई का एक नल-अम्बलम है।

त्रिचंबरम का कृष्ण मंदिर, जो भागवत के सीन दिखाने वाली अपनी बेहतरीन लकड़ी की नक्काशी के लिए मशहूर है, उसके प्लान में श्री कोयल स्क्वायर और मेकअप में संधार है, और दोनों मंज़िल की छत कॉपर प्लेट से ढकी हुई है। निचली पंच छत आगे की ओर फैली हुई है, जिसके सामने इदैकली या लीनियर अंतराल मंडप के ऊपर एक तिकोनी गेबल फेस है, जिसके सामने एक अलग नमस्कार मंडप है। ऊपरी चार-तरफा पिरामिड जैसी छत के चारों तरफ किलिवासल नासिकाएं निकली हुई हैं, जिनका फ्रंट आर्च या घोड़े की नाल के आकार का है; ऊपर एक स्तूप है। तिरुनावे विष्णु मंदिर भी इसी कैटेगरी में आता है। एरट्टयप्पन को समर्पित पेरुमानम शिव मंदिर इसी तरह का तीन-मंज़िला वर्शन है, जिसके सामने दो मंज़िल का अंतराल प्रोजेक्शन है, और ऊपर की पिरामिड जैसी छत अष्टकोणीय होने के कारण यूनिक है। यह आठ कोनों वाली गर्दन पर बना है, जिसके आठ अष्टकोणीय चेहरों में से हर एक से किलिवासल नासिकाएँ निकली हुई हैं। निचली छतें टाइलों से बनी हैं और अष्टकोणीय शिखर मेटल शीट से बना है।

तिरुविलवमलाई में राम और लक्ष्मण के दो मंदिर, जो साथ-साथ बने हैं, दिलचस्प हैं। पहला मंदिर पूरब की ओर और दूसरा पश्चिम की ओर है। दोनों एक ही प्लान और ऊंचाई के हैं, चौकोर, संधार, और नीचे के टीयर से एक सीधी लाइन पर निकली हुई गेबल छत के साथ।

मैं



सामने अंतराल मंडप है। छतें मेटल शीटिंग से बनी हैं और चार तरफ़ वाले पिरामिड जैसे शिखरों पर चार किलिवासल नासिकाएँ और ऊपर एक मेटल की सोने की परत चढ़ी स्तूपियाँ हैं। दीवारों को मूर्तियों से सजाया गया है, लक्ष्मण मंदिर पर दशावतार की मूर्तियाँ खास तौर पर ध्यान देने लायक हैं। राम मंदिर का हाल ही में रेनोवेशन हुआ है।

तिरुप्रयार के राम मंदिर में एक गोल एकताल श्री कोयल है और यह अपनी पुरानी लकड़ी की नक्काशी के लिए मशहूर है। नमस्कार मंडप में लकड़ी की बहुत सारी नक्काशी है, जबकि मंदिर की दीवार पर दिलचस्प म्यूरल पेंटिंग हैं। वैकोम का श्री कोयल भी ऐसा ही है, गोल और एकताल, जिसमें एक बड़ी कोन जैसी तांबे की चादर की छत और एक ही स्तूप है। त्रिकोटिथानम का श्री कोयल, एक और पुरानी बनावट, भी गोल है लेकिन दो मंज़िला है, जैसा कि पय्यानूर का श्री कोयल भी है, जिसमें पत्थर का एक मज़बूती से ढाला हुआ अधिष्ठान और बारीक नक्काशी वाले कैरिएटिड ब्रैकेट हैं जो निचली छत के छज्जे को सहारा देते हैं। एट्टुमानूर का शिव मंदिर, जो अपनी पेंटिंग, खासकर नटराज की पेंटिंग के लिए मशहूर है, में एक साधारण एकताल श्री कोयल है, जो प्लान में भी गोल है।

त्रिचूर में वडक-कुन्नाथन मंदिर के बाहरी हिस्से में छोटा सस्ता मंदिर एक साधारण एकतल अपसाइडल, या गजपृष्ठ विमान का उदाहरण है, वहीं तिरुवन्नूर का शिव मंदिर इस तरह के दो-मंज़िला और बड़े वर्शन का उदाहरण है। नीचे की मंज़िल को ढकने वाली पंच छत और ऊपर अपसाइडल रिज्ड छत, जिसका सामने का हिस्सा त्रिकोणीय है, के ऊपर तीन स्तूपों की एक लाइन है। पय्यानूर का सुब्रह्मण्य मंदिर गजपृष्ठ क्लास के दो-मंज़िला स्ट्रक्चर का एक और उदाहरण है, जिसमें एक चौकोर नमस्कार मंडप और सामने एक आड़ा-तिरछा आयताकार मुख-मंडप है, जिसकी पूरी छत मेटल शीट की है, और जिसके चारों ओर कम ऊंचाई का टाइल वाला नल-अंबलम है। त्रिप्परांगोडे का टूटा-फूटा मंदिर, और कोझिकोड के पास तिरुवन्नूर का मंदिर, इसी क्लास के और भी उदाहरण हैं। उत्तरी मालाबार के मधुर में तुलनात्मक रूप से आधुनिक अनंतविनायकर मंदिर, जो गजपृष्ठ भी है, की छत तीन मंज़िलों में है, दो सबसे निचली मंज़िलों पर पक्की छत और टाइलें हैं; ऊपरी मंज़िलों पर झुकी हुई छत और सबसे ऊपरी मंज़िलों पर छत है।

मेट एप्सिडल छत कॉपर-शीटिंग की है।

कोडुंगल्लूर का भगवती या दुर्गा मंदिर, जो बहुत पुराना है, अब पूरी तरह से मॉडर्न रेनोवेशन है, बेशक देसी स्टाइल में। मुख्य श्री कोयल दो मंज़िला है जिसके बाईं ओर एक छोटा शिव मंदिर है। दक्षिणी स्टाइल के विमान वाले मंदिरों में, जो तमिलनाडु के आस-पास के ज़िलों जैसे हैं, और कमोबेश दक्षिण त्रावणकोर और कन्याकुमारी इलाकों में ज़्यादातर हैं, उनमें बीच के चोल काल का कन्याकुमारी का पत्थर का गुहानाथस्वामी मंदिर शामिल है, जिसका सुपरस्ट्रक्चर खो गया है; पार्थी-वसेखरपुरम मंदिर, जो चार मंज़िला है और जिसका सुपरस्ट्रक्चर चोल या पांड्या काल के आखिर के पत्थर के ऊपर ईंट और गारे का है; और बनतीर्थ मंदिर जिसमें विजयनगर काल के आखिर का त्रितल विमान है, जिसके सभी विमान प्लान में चौकोर हैं। तिरुवल्लम मंदिर कॉम्प्लेक्स में परशुराम मंदिर और पत्थर की बॉडी और ईंट के काम वाले सुपरस्ट्रक्चर वाला वालिया उदययादिचापुरम मंदिर, सोलहवीं सदी और उसके बाद के वृत्त या गोल प्लान वाले द्वितल और त्रितल विमानों के उदाहरण हैं। इस तरह का सबसे बड़ा मंदिर कॉम्प्लेक्स सुचिन्द्रम का है, जिसके अंदर के स्ट्रक्चर नौवीं-दसवीं सदी A.D. के हैं, 1410 में बनी एक चित्र-सभा, 1471 में बना एक मंडप, जिसे चेम्पकरमन मान-दापा कहते हैं, और लगभग 1545 में बना गोपुर।

कनारा मंदिर, जैसा कि कूसेन उन्हें कहते हैं, एक दिलचस्प ग्रुप बनाते हैं, हालांकि संख्या में कम हैं, जिनकी खासियत पत्थर के स्लैब की सादी ढलान वाली छतें हैं जिनके किनारों को बंद करने का एक खास इंतज़ाम है। यह उस जगह की ज़्यादा बारिश के हिसाब से है जिससे छत का ढलान गहरा होता है, और तेज़ बारिश को रोकने के लिए इसका बहुत नीचे तक फैला होना। अंदर के हॉल के किनारे स्क्रीन से बंद होते हैं और अक्सर वे मंज़िल वाले होते हैं। अंदर उनमें अक्सर खराद से बने खंभे होते हैं, लेकिन आम तौर पर खंभे छोटे, मोटे और बेढंगे होते हैं, बल्कि चालुक्य शैली के बिगड़े हुए होते हैं। उनके जुड़ाव के बारे में पहले बताया जा चुका है और केतापी नारायण मंदिर के अलावा, हमें भटकल में, मुदाबिद्री और उसके आस-पास ऐसे मंदिरों के उदाहरण मिलते हैं।

भारतीय स्थापत्य शब्दावली

अधिष्ठान: किसी विमान, मंडप या इसी तरह की संरचना का तहखाना, जो दीवारों और स्तंभों को सहारा देने वाला एक विशिष्ट वास्तुशिल्पीय विशेषता बनाता है, और जिसमें अलग-अलग ढाले हुए स्तर होते हैं।

अल्प-नासिका: एक अर्द्धवृत्ताकार मंदिर का आगे का हिस्सा जो खंभों के ऊपर कुडू-आर्च जैसा दिखता है, असल में एक छोटे से छेद या अंदर जाने वाली खिड़की की तरह काम करता था, जो आमतौर पर कूट, कोष्ठ और पंजर में होता था।

अल्प-विमान: छोटा, एक मंज़िला विमान। इसके हिस्से हैं: अधिष्ठान, भित्ति या पाद, प्रस्तर, ग्रीवा, शिखर और स्तूपी। इसमें आमतौर पर हारा नहीं होता।

आमलक, अमलसर, अमलशिला: उत्तरी स्टाइल के शिखर के ऊपर आमलक (आंवले का फल) जैसा दिखने वाला धारीदार, लेंटिकुलर या गोलाकार हिस्सा इसकी खासियत है; इसे कदंब-चालुक्य रूपों के शीर्ष के रूप में भी अपनाया गया, कभी-कभी दक्षिणी विमान रूप के ग्रीवा-शिखर हिस्से के विकल्प के रूप में।

अनर्पित-हारा: हर विमान तल के किनारे पर छोटे मंदिरों (हारा) की लाइन, जो ऊपरी तल या मंज़िल से अलग होती है, और बीच में जगह होती है (अर्पित के उलटा)।

अंतर-भित्ति: इनर वॉल ऑफ मल्टीप्ले-वॉल्ड गर्भ गृह, ओर सैंक्चुम, ओर स्टोरी.

अर्पित-हारा: हर विमान तल के किनारे पर छोटे मंदिरों की एक लाइन का हारा जो ऊपरी तल या मंज़िल के शरीर (हरम्य) पर बिना किसी बीच की जगह के लगाया जाता है (अनारपिता का उल्टा)।

अष्ट-परिवार: बीच के मंदिर का लेआउट, जिसके चारों ओर आठ सब-मंदिर (नंदी मंदिर सहित) मुख्य और कोने की दिशाओं में हैं।

अर्ध-मंडप: मुख्य मंदिर के ठीक सामने खंभों वाला हॉल या मंडप का बाहरी आधा हिस्सा जिसमें दो सीध में खंभे होते हैं, जैसा कि चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा-मंदिरों में होता है।

आयतान: तीर्थ, विमान।

आयतस्र-विमान: यह विमान आयताकार होता है और गाड़ी के ऊपर की छत से ढका होता है।

बाह्य-भिट्टी: कई दीवारों वाले पवित्र स्थान या मंज़िल की सबसे बाहरी दीवार (अंतर-भिट्टी के विपरीत)।

भद्र: शरीर के प्रत्येक तरफ से उभरे हुए हिस्से पर केंद्रीय राहत

!



विमान या प्रसाद, जो कोने के प्रक्षेपण (कर्ण) से अलग है।

भद्र-शाला: विमान की मंज़िलों के ऊपर हारा के दोनों तरफ़ के बीच में आयतसर टाइप का आयताकार गाड़ी के ऊपर बना छोटा मंदिर।

भित्ति: वॉल.

भित्ति-तोरण: दीवार पर सजावटी तोरण, आमतौर पर दो स्तंभों पर टिका हुआ एक मकर-तोरण। तोरण, मकर-तोरण देखें।

भूमि: उत्तरी स्टाइल के मंदिर के घुमावदार सुपरस्ट्रक्चर (शिखर) या अंडा में स्टेज, जिसे अक्सर कोनों पर दबे हुए आमलक - कर्णमलक या भूमि-आमलक से मार्क किया जाता है।

भूत: भूत।

चतुर्मुख: चारों तरफ खुलने वाला मंदिर या विमान।

चित्र-पौतियाँ: बेलों, फूलों वगैरह की उभरी हुई नक्काशी या पेंटिंग वाले कॉर्बल।

देवकोष्ठ: मंदिरों और मंडपों की दीवार पर बना आला जिसमें देवता की मूर्ति होती है; अक्सर इसके ऊपर तोरण या मंदिर का डिज़ाइन, कूट शाला, पंजर, या कुडू, या उद्गम होता है।

गला, ग्रीवा: गर्दन; आमतौर पर विमान टाइप में छत (शिखर) को ऊपर उठाती हुई क्लेरेस्टोरी, जिसके किनारों पर रोशनी और हवा के छेद (नासिकाएँ) होते हैं। प्रसाद टाइप में गर्दन आमलक के नीचे होती है, लेकिन बिना नासिका के।

गर्भगृह: मंदिर-कोठरी, या पवित्र स्थान, या सेला।

गोपुर: मेन गेट; किसी मंदिर, महल या शहर की दीवारों से होकर जाने वाले एंट्रेंस या एंट्रेंस के ऊपर बनी मंज़िल की बनावट।

हारा: एक मंज़िला विमान के हर छत (तला) पर छोटे मंदिरों की एक लाइन, जिसमें कूट, कोष्ठ, या शाला और पंजर होते हैं, जो एक-दूसरे से मठ की लंबाई या मठ (हरंतर) की तरह दिखने वाले रेलिंग से जुड़े होते हैं।

हरांतरा: सी हर.

कदलिकाकरण: दीवारों पर छत के स्लैब या ईंटों को एक के बाद एक अंदर की ओर ऑफसेट करना या कोरबेलिंग करना, ताकि छत बनाने की जगह कम होकर ऊपर एक छोटा सा छेद बन जाए, जिसे केले के गुच्छे की तरह ओवरलैप करने वाले स्लैब से ढका जा सके।

कदंब-चालुक्य: यह मुख्य रूप से रेखा-नागर स्टाइल के प्रसाद या मंदिर का एक प्रकार है, जिसमें ऊपरी ढांचे में कपोत (कॉर्निस) और कंठ (गर्दन) होते हैं और आखिर में एक गोल ग्रीवा या गला (गर्दन), और एक अमलसर से ढका होता है, जिसमें अक्सर शुकनासिका नहीं होती।

कलश: चौड़े मुंह वाला फूलदान; पिलर के ऊपरी हिस्से का सबसे निचला हिस्सा, जिसे इसके आकार के कारण यह नाम दिया गया है। उत्तरी मंदिरों के आमलक के ऊपर फूलदान के आकार का कलश भी होता है।

कल्याण मंडप: मंडप या हॉल जिसमें उत्सव-मूर्तियों या जुलूस के कांसे के प्रतीकों के रूप में देवी-देवताओं की रस्मी शादी दक्षिण भारतीय मंदिरों में हर साल मनाई जाती है।

कपोत: कबूतर; ऊपर लटका हुआ कॉर्निस, जो आमतौर पर मुड़ा हुआ होता है, मुख्य बीम से बाहर निकला होता है ताकि छत से पानी को बीम और जॉइस्ट के सिरे या अधिष्ठान के अंदर के हिस्सों जैसे कुमुद और पद्म के पार फेंका जा सके।

कर्णकूट: विमान की हर मंज़िल के कोने पर प्रस्तर के ऊपर छोटा सा सम-चतुराश्र (स्क्वायर) मंदिर, जिसमें एक स्तूप है। प्लान में यह शायद ही कभी वृत्त (गोल) या अष्टकोणीय (अष्टकोणीय) होता है।

कर्ण-शाला: गोपुरों में आम तौर पर, एक स्ट्रक्चर के हर तल के कोने पर बैरल-वॉल्ट छत वाला छोटा आयतश्र (आयताकार) मंदिर होता है।

कट्ट: किसी खंभे के निचले और ऊपरी हिस्सों के बीच का आठ कोनों वाला या कई कोनों वाला हिस्सा।

:

किलिवासल: नासिका के लिए इस्तेमाल होने वाला केरल का शब्द। नासिका और सुकनासिका देखें।

कोष्ठा: सेम आस  साला.

क्षुद्र-नासिका: छोटी नासिका: एक छोटे से अर्द्धगोलाकार (एक या दो मंज़िला) मंदिर का आगे का हिस्सा, जिसके खंभों के ऊपर मेहराब होती है और जो एक छोटे से छेद का काम करता है, जो आमतौर पर हरंतर में पाया जाता है।

कुडू: 'घोंसला'; एक मुड़े हुए कॉर्निस (कपोता) से निकला हुआ मेहराबदार या घोड़े के आकार का छेद, जो शायद शुरू में बसे हुए पक्षियों (कपोता) के आने के लिए होता था, लेकिन बाद के उदाहरणों में इसे इंसानी आकृतियों (मिथुना, वगैरह) से भर दिया गया, जिसके ऊपर एक कलश लगा होता है। मेहराब आमतौर पर एक मकर-तोरण होता है।

कुड्या-स्तंभ: दीवार की सतह पर उभरी हुई नक्काशी के रूप में दिखाया गया स्तंभ।

कुंभ: कलश और ताड़ी के ऊपर आने वाले पिलर-कैपिटल का सदस्य, और बल्ब जैसा। असल में यह एक चपटा, कैरिनेट फूलदान होता है जिसका मुंह छोटा और पतला होता है।

कूट: चौकोर प्लान (सम-चतुरास) का मंदिर जिसमें चार तरफ़ से मिलती हुई छत और एक ही कलश हो, या गोल या अष्टकोणीय जिसमें गुंबद जैसी छत और एक ही कलश या स्तूप हो।

ललता-बिम्बा: 'क्रेस्ट फिगर': किसी भी एंट्रेंस या दरवाज़े के आगे की तरफ़ मुख्य सजावटी डिज़ाइन या आकृति, जो कभी-कभी ओवरडोर तक फैली होती है।

महा-मंडप: गुफा-मंदिरों में अर्ध-मंडप, या अंतराल, या मंडप के पास वाले आधे हिस्से के ठीक सामने खंभों वाला हॉल, जिसमें दो सीरियस खंभे होते हैं, बंद या खुले।

महा-नासिका: ग्रीवा और शिखर के किनारों से निकला हुआ नाक जैसा हिस्सा, जो अर्धवृत्ताकार विमानों के आगे के पहलुओं को दिखाता है और जिसमें





ऊपर मेहराबदार तोरण वाले खंभे।

मकर-तोरण: एंट्रेंस की सजावट जिसमें एक तोरण सीधा या धनुषाकार होता है, जो दो खंभों के ऊपर फैला होता है। तोरण या तोरण एक सजावटी माला या स्क्रॉल होता है जो मकरों (मगरमच्छ) के मुंह से निकलता है और सपोर्टिंग खंभों के ऊपर रखा जाता है। ऐसे मकर-तोरण देव-कोष्ठ या मंडप-एन-ट्रांस, या दीवारों (भिट्टी-तोरण) पर पाए जाते हैं।

माला-स्थान: पिलर या पिलस्टर शाफ्ट का ऊपरी हिस्सा, जिसके नीचे पद्म बंध से लटकी हुई माला होती है।

मंडप, मंडकम: खुला या बंद खंभों वाला या स्तंभयुक्त हॉल।

मुख-मंडप: मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक सीरीज़ का पहला या सामने वाला मंडप, जो अक्सर पहले के मंदिरों में महा-मंडप का ही दूसरा नाम होता था।

नासिका: 'नोज'; प्रोजेक्टेड आर्केड ओपनिंग (विंडो). सी अल्प-नासिका, क्षुद्र नासिका, महा-नासिका एंड सुका-नासिका. इन केरल टेम्पल्स आईटी इस कॉल्ड किली-वसल, ओर पैरट-बेक एंट्रेंस.

नाट्य मंडप: नृत्त-मंडप देखें।

नवरंग: मंडप जिसमें बीच के हिस्से को घेरे हुए चार खंभे होते हैं, बीच के खंभों के साथ किनारे पर बारह और खंभे होते हैं, जो बीच वाले खंभे को घेरे हुए आठ और खंभों को घेरते हैं और कुल मिलाकर नौ खंभे बनाते हैं; चालुक्य मंदिरों और उनसे मिलते-जुलते मंदिरों की खासियत।

निदा: छोटा सा मेहराबदार मंदिर। पंजारा जैसा ही।

निरंधरा: सेला के चारों ओर बंद सर्किट या एम्बुलेटरी का न होना, सेला की दीवार सिंगल और मोटी होती है (संधरा के विपरीत)।

नृत्त-मंडप: नाट्य-मंडप देखें।

ओमा: पिलर या पिलस्टर का बेसल पिथा।

पड़ा: पिलर (स्तंभ).

पद्म: कमल; फलक (अबेकस) के नीचे मुख्य भाग (डौसीन), पंखुड़ियों वाले कमल जैसा आकार।

पद्म-बंध: चौड़ी पट्टी, जो खंभे के शाफ़्ट के ऊपर लगी होती है, कमल की पंखुड़ियों की लाइनों के बीच सजावटी पट्टियों से बनी होती है, जो शाफ़्ट को सिर से अलग करती है।

पाली: मुख्य सदस्य, पद्म के समान, लेकिन बिना स्कैलप्ड पंखुड़ियों के।

पंजारा: छोटा सा मेहराबदार मंदिर। निदा जैसा ही।

परिवार-देवता: इन्हें आवरण देवता भी कहा जाता है, या परिवारालय या परिवार कहे जाने वाले मंदिरों में सहायक देवता भी कहा जाता है।

पट्टा: सादा या सजा हुआ बैंड जो कोरबेल के बीच वाले हिस्से पर होता है, जैसे कि कोरबेल के तरंगा-मोल्डिंग के रोल को बांध रहा हो।

पट्टिका: मंच या अधिष्ठान का प्रक्षेपित शीर्ष स्लैब ऊर्ध्वाधर मानदंड या मानसूत्र के साथ एक पंक्ति में एक प्रमुख मोल्डिंग

काफी मोटाई.

फलक: अबेकस; पिलर के आखिरी सादुरम या ढले हुए टॉप के ऊपर चौड़ा तख्ता, जो कोरबेल या पोटिका को सहारा देता है।

पीडा-देउल: कदंब-चालुक्य मंदिरों की तरह गर्भगृह के ऊपर सीढ़ीदार या टियर वाला सुपरस्ट्रक्चर। यह शब्द उड़ीसा (कलिंग) आर्किटेक्चर में मुख्य प्रसाद के सामने मंडप के लिए इस्तेमाल होता है, जिसे जगमोहन कहते हैं, या ऐसे सुपरस्ट्रक्चर वाले छोटे अलग-अलग मंदिरों के लिए (रेखा-देउल से अलग)।

पीठा: आधार, आधार।

पोतिका: पिलर के ऊपर कॉर्बेल-ब्रैकेट। तरंग पोतिका, मकर-पोतिका, चित्र-पोतिका देखें।

प्राणाल: पानी निकालने के लिए गार्गॉयल की तरह निकली हुई टोंटी।

प्रसाद: उत्तरी शैली का मंदिर, जो दक्षिण के विमान रूप से अलग है।

प्रस्तर: दीवारों और खंभों पर ढलाई से बना एंटेब्लेचर, जैसे उत्तिर (बीम), वजन, वल्लभी, कपोत, अलिंग और अंतरी।

रथ: 'रथ': अखंड विमान।

रंग-मंडप: नवरंग के बराबर, जो दक्षिणी विमान मंदिरों के महा-मंडप जैसा है।

रेखा-प्रसाद: उत्तरी स्टाइल का खास पवित्र स्थान जिसमें घुमावदार ऊपरी ढांचा या अंडा होता है, जिसे किनारों पर भद्र उभार और रेखाओं (घुमावदार रेखाओं) से और उभारा जाता है, जिसके ऊपर गर्दन और आमलक और ऊपर कलश होता है।

सभा-मंडप: दक्षिणी मंदिरों में नटराज के मंदिर वाला मंडप, जो आम तौर पर दक्षिण की ओर होता है।

सदुरम: अष्टकोणीय, बहुकोणीय, या गोलाकार मध्यवर्ती भागों से पृथक् एक स्तंभ का वर्गाकार आधारीय, मध्यवर्ती या अंतिम भाग।

संधार: बंद या ढके हुए सर्किट पैसेज या एम्बुलैटरी के साथ स्ट्रक्चर, जो सेला या गर्भगृह के चारों ओर होता है, जैसा कि दोहरी दीवार वाली संरचनाओं में होता है (निरंधरा के विपरीत)।

शाला-मंदिर: आयतसर टाइप का विमान (प्लान में आयताकार) जिसकी छत बैरल-वॉल्ट

जैसी है और इसके रिज पर स्तूपों की एक सीरीज़ है।

सला-शिखर: सला-मंदिर, बैरल-वॉल्ट, वैगन-टॉप या उल्टे, कील-आकार के लिए खास शिखर।

स्नेपना-मंडप: वह मंडप जिसमें त्योहारों के दौरान कांसे की मूर्तियों का अभिषेक (या स्नेपना) या रस्मी स्नान किया जाता है।

शिखर: ग्रीवा के ऊपर विमान की छत, एकल कलश के साथ गुंबददार या चार-तरफा, रिज पर कई कलशों के साथ गुंबददार, या अर्धवृत्ताकार





पूरे हॉरिजॉन्टल हिस्से पर कई फिनियल। उत्तरी प्रसाद का पूरा सुपरस्ट्रक्चर (अंडा)।

शुकनासिका (सुकनास भी): उत्तरी प्रसाद में ग्रीवा और आमलक लेवल के नीचे, सुपरस्ट्रक्चर के टियर का आगे की ओर निकला हुआ हिस्सा, जो अंतराल के ऊपर आता है और इसकी छत बनाता है; इसमें एक नासिका फ्रंट होता है, जो आर्च के अंदर बेस-रिलीफ मूर्तियां घेरता है। दक्षिणी विमान टाइप में बदलावों में, जैसे कि चालुक्य और उससे मिलते-जुलते, छोटे सिंपल विमान टाइप में मुख्य रूप से सामने की नासिका या महा-नासिका या ग्रीवा-शिखर क्षेत्र के डॉर्मर का आगे का हिस्सा और मंज़िला टाइप में तलों के आगे के हिस्से के साथ, पूरा हिस्सा अंतराल या अर्ध-मंडप की छत के ऊपर आता है।

स्तंभ: पिलर (पड़ा).

स्तंभ तोरण: एंट्रेंस की सजावट या बिना दरवाज़े वाला अलग से खड़ा सजा हुआ एंट्रेंस और दो कॉलम के ऊपर एक तोरण होता है, तोरण मुख्य रूप से पत्तों और फूलों की माला होती है, जो बाद में एक या ज़्यादा घुमावदार और सजे हुए क्रॉस-बार का रूप ले लेती है, या मकर-सिर से निकलने वाला फूलों और पत्तियों वाला तोरण आर्क, जिसे सपोर्टिंग कॉलम के ऊपर रखा जाता है।

स्तूपी, स्तूपिका: अंतिम, आकारिक रूप से उष्णीश, बाद के समय में पूर्ण-घट या पूर्ण-कुंभ का रूप ले लेता है, जो विमान, गोपुर या किसी अन्य संरचना का सबसे ऊपरी या अंतिम सदस्य बनता है।

ताड़ी: कलश के ऊपर और कुंभ के नीचे गद्दे के आकार का कैपिटल-मेंबर।

तल: विमान या गोपुर की मंजिल।

तरंगा: 'लहर'; कोरबेल का लहरदार रोल-आभूषण जो यूरोपियन क्लासिकल आर्किटेक्चर की 'रीड' मोल्डिंग या 'रीडिंग' जैसा दिखता है।

रोल या ट्रस-मोल्डिंग के साथ कॉर्बेल-ब्रैकेट।

तोरण: अलग खड़ा सजावटी पत्तों और फूलों की झालर वाला एंट्रेंस जो दो सीधे खंभों से टिका होता है और अक्सर सीधा जुड़ा होता है (जल-तोरण): लकड़ी और पत्थर से ज़्यादा बारीकी और नक्काशी के साथ बनाया गया, या मकर-तोरण का रूप लेता है, जो दो खंभों पर लगा होता है। यह शहरों, महलों और मंदिरों के मुख्य गेट (गोपुर) से पहले होता है। इसे अक्सर त्योहारों के मौकों पर (जैसा कि दक्षिण भारत में आम है) शहरों, महलों और मंदिरों की ओर जाने वाली सड़कों पर कुछ समय के लिए लगाया जाता है। जब दरवाज़े को द्वार-शोभा के रूप में सजाया जाता है, तो इसे गृह-द्वार-तोरण, या दीवार के सामने (भिट्टी) तोरण कहा जाता है, जहाँ यह अक्सर एक जगह या देव-कोष्ठ बनाता है या एक खुला घनद्वार दिखाता है। जब यह अलग खड़ा होता है, तो



डेजिग्नेटेड स्तंभ-तोड़ना.

तोरण-स्तंभ: पिलर ओर पॉलिस्टर सपोर्टिंग तोरण.

त्रिकुटा, त्रिकुटाचल: तीन विमान जो एक लाइन में एक कॉमन अधिष्ठान से जुड़े होते हैं या एक कॉमन मंडप के चारों ओर रखे जाते हैं, जैसा कि चालुक्य टाइप में होता है।

उद्गम: कुडू जैसे मेहराबों और आधे मेहराबों का बना हुआ पैटर्न, जो उत्तरी स्टाइल के मंदिरों की खासियत है और बौद्ध गुफा-मंदिरों के सामने वाले मेहराबों में पाया जाता है; उत्तरी मंदिरों में देवकोष्ठों के ऊपर शिखर के तौर पर भी इस्तेमाल होता है, साथ ही मंदिरों और मंडपों की दीवारों पर ऐसे आकार के ताकों के छोटे मंदिर के ऊपरी हिस्से की जगह भी।

उपन: बेसमेंट या अधिष्ठान का सबसे निचला हिस्सा या नींव, जो सीधे नॉर्म से आगे निकला होता है और जिसके ऊपर जगती होती है। यह विमान का सबसे निचला दिखने वाला हिस्सा बनाता है, जिसकी सबसे ऊपरी सीमा स्तूपी होती है।

उपपीठ: बेसमेंट या अधिष्ठान के नीचे अतिरिक्त ढाला हुआ प्लेटफॉर्म या सब-बेस, जिसमें अधिष्ठान की तरह ही ढलाई होती है, या अक्सर संख्या में कम होती है, या सरल होती है।

उत्सव मंडप: मंडप जिसमें उत्सव के दौरान कांस्य के देवताओं को रखा जाता है।

वेदिका: रेलिंग।

विमान: उपन से स्तूप (बेस से फिनियल) तक मंदिर, पूरे मंदिर में अधिष्ठान (बेसमेंट), पाद (पिलर) या भित्ति (दीवारें), प्रस्तर (एंटेब्लेचर), ग्रीवा (गर्दन या क्लेरेस्टोरी), शिखर (सिर या छत), और सिंपल विमानों (एकतल) के मामले में स्तूप (फिनियल) होता है; मंजिला विमानों में सबसे नीचे वाले प्रस्तर और ऊपर ग्रीवा, शिखर और स्तूप के बीच तल (मंजिलें) होती हैं।

व्याल: सिंह जैसी आकृति।

व्याल-माला, व्याल-वारी: व्याल के साथ सजावटी फ्रिज़, जो आमतौर पर अधिष्ठान के हिस्से के रूप में और हर ताल के एंटेब्लेचर के ऊपर होता है, जिसमें असली लकड़ी के काम में क्रॉस-जॉइस्ट के सिरों को दिखाया जाता है।

सुधार नोट

छोटा कैलासा, एलोरा

'छोटा-कैलास' नाम का एक पत्थर का मंदिर कॉम्प्लेक्स, इंद्र-सभा के सामने वाले कोर्ट में बना एक पत्थर का चौमुक्ति विमान नहीं है (पेज 74 और 109 देखें)। छोटा कैलास ज़्यादा दूर और ऊपर है। यह कैलास (शिव मंदिर कॉम्प्लेक्स) की एक जैन कॉपी है, जिसमें एक द्वितल विमान है जिसमें आठ कोनों वाला शिखर, शुकनासा है, जो आदितल के ऊपर दूसरे तल में एक ऊपरी मंदिर की ओर जाता है। तल-प्रस्तर में कूट और शालाओं का एक हार है और विमान के सामने एक्सियल एक्सटेंशन मुख और महा-मंडप बनाते हैं जिनमें तीन एंट्रेंस हैं; और एक द्वार-मंडप है जिसमें मज़बूत कोर्ट के एंट्रेंस पर मूर्तियां हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया को 1957 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तहत एक ऑटोनॉमस ऑर्गनाइज़ेशन के तौर पर बनाया गया था। इसका बड़ा मकसद अच्छा साहित्य पब्लिश करना और उसे सही दामों पर उपलब्ध कराना और देश में किताबों के प्रति रुझान को बढ़ावा देना था।

ट्रस्ट ने अब तक अलग-अलग भारतीय भाषाओं में 700 से ज़्यादा किताबें पब्लिश की हैं। ट्रस्ट के अभी के पब्लिकेशन प्रोग्राम में मुख्य रूप से किताबों की ये सीरीज़ शामिल हैं:

(1) भारत-भूमि और लोग: एक सीरीज़ जिसका मकसद आम पढ़े-लिखे आदमी और आम लोगों को देश के सभी पहलुओं, जैसे भूगोल, खेती, कला, साहित्य वगैरह के बारे में जानकारी देना है। संक्षेप में, इस सीरीज़ की किताबें भारत के बारे में आसान और आसानी से

समझ में आने वाली भाषा में एक तरह की एनसाइक्लोपीडिया लाइब्रेरी बनाएंगी।

(2) नेशनल बायोग्राफी: इस सीरीज़ का मकसद लगभग 100 किताबों के सेट में, भारत की उन जानी-मानी हस्तियों की बायोग्राफी देना है, जिन्होंने समय-समय पर धर्म, फिलॉसफी, इतिहास, साहित्य, कला, संगीत और विज्ञान जैसे अलग-अलग फील्ड में काम किया है।

(3) पॉपुलर साइंस: इस सीरीज़ का मकसद आम पढ़ने वालों को साइंस के विकास और तरक्की के बारे में बताना है और आज के समय में रोज़मर्रा की ज़िंदगी में साइंस की अहमियत बताना है।

(4) दुनिया की बेहतरीन किताबें: यह सीरीज़ आम पढ़ने वालों को अलग-अलग भारतीय भाषाओं में उन किताबों का आसान ट्रांसलेशन उपलब्ध कराने के लिए बनाई गई है, जिन्होंने अलग-अलग फील्ड में दुनिया की सोच में बहुत अच्छा योगदान दिया है।

(5) आज की दुनिया: इस सीरीज़ का मकसद दुनिया के अलग-अलग देशों के इतिहास और दूसरी खास बातें बताना है। इस सीरीज़ की किताबें आम पढ़ने वाले के लिए आसान स्टाइल में लिखी जाएंगी।

(6) भारत के लोकगीत: इस श्रृंखला में प्रयास किया जाएगा

भारत के ज़रूरी इलाकों की लोककथाओं पर किताबें पब्लिश करना, जो देश की ज़रूरी एकता पर ज़ोर देती हों।

(7) यंग इंडिया: यह सीरीज युवाओं की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाई गई है।

भारतीय युवाओं की। यह आज दुनिया में साइंस और टेक्नोलॉजी के बारे में अप-टू-डेट जानकारी देने के अलावा हमारे देश के जीवन में बहादुरी और शानदार पलों की प्रेरणा देने वाली तस्वीरें भी दिखाएगा।

(8) नेहरू बाल पुस्तकालय: थिस प्रोजेक्ट विल प्रोवाइड सप्ले-

बच्चों के लिए मेंटल रीडिंग मटीरियल, जिसमें नेशनल इंटीग्रेशन मुख्य आइडिया हो।

(9) आदान प्रदान: इस श्रृंखला में, प्रत्येक भारतीय भाषा में उपलब्ध 10 से 20 उत्कृष्ट पुस्तकों का संविधान में मान्यता प्राप्त अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन किया जा रहा है।

ट्रस्ट उन शानदार कामों के एड-हॉक टाइटल्स का पब्लिकेशन भी करता है जो अब छपना बंद हो चुके हैं, और खास महत्व की नई मैन्युस्क्रिप्ट्स का भी।

इन सीरीज़ की किताबें अलग-अलग फील्ड के एक्सपर्ट्स लिख रहे हैं और इस बात का ध्यान रखा जाता है कि प्रोडक्शन का एक मिनिमम स्टैंडर्ड बना रहे और उसी के हिसाब से किताबें जहाँ तक हो सके सही कीमतों पर उपलब्ध कराई जाती हैं।

भारत-भूमि और लोग

तैयारी के अंतर्गत पुस्तकें

1. सिंचाई बालेश्वर नाथ

2. भारत के लोग - एस. सी. सिन्हा

3. आंध्र प्रदेश- वी. आर. नरला

4. भारत के त्यौहार - एस. सी. दुबे

5. भारतीय रेलवे - एम. ए. राव

6. बुक पब्लिशिंग - रूसी जल तारापोरवाला

7. पंजाब कुलदीप नायर

8. मैसूर का भूगोल - आर. पी. मिश्रा

9. मैसूर* एम. एस. रामचंद्रैया

10. हिमालय का भूगोल एस. सी. बोस

11. कॉमन इंडियन फ़र्न - एस. सी. वर्मा

12. म्यूजिक ठाकुर जयदेव सिंह

13. भारत सरकार और प्रशासन वी. के. एन. मेनन

14. शिक्षा - जे. पी. नाइक

15. टेक्सटाइल्स इन इंडिया - जसलीन धमीजा

16. इंडियन प्रेस - एम. चलपति राव

17. फ़िल्में- अमिता मलिक

18. आर्थिक विकास - वी. के. आर. वी. राव

19. मास कम्युनिकेशन्स - आर. के. चटर्जी

20. हिमाचल प्रदेश - एच. के. मिट्टू

21. मराठी रंगमंच डी. जी. नाडकर्णी

22. कुछ भारतीय जनजातियाँ - एन. के. बोस

23. नागालैंड पैनोरमा* - प्रकाश सिंह

24. बंगाली थिएटर किरणमय राहा

25. भारत में भोजन और भोजन की आदतें - बी. के. मालवीय

* मुद्रणालय में

(दूसरे असाइनमेंट पर बातचीत चल रही है)

तैयारी के अंतर्गत पुस्तकें

1. सिंचाई — बालेश्वर नाथ
2. भारत के लोग - एस. सी. सिन्हा
3. आंध्र प्रदेश- वी. आर. नरला
4. भारत के त्यौहार - एस. सी. दुबे
5. भारतीय रेलवे - एम. ए. राव
6. बुक पब्लिशिंग - रूसी जल तारापोरवाला
7. पंजाब कुलदीप नायर
8. मैसूर का भूगोल - आर. पी. मिश्रा
9. मैसूर* एम. एस. रामचंद्रैया
10. हिमालय का भूगोल एस. — सी. बोस
11. कॉमन इंडियन फ़र्न - एस. सी. वर्मा
12. म्यूजिक ठाकुर जयदेव सिंह
13. भारत सरकार और प्रशासन वी. के. एन. मेनन —
14. शिक्षा - जे. पी. नाइक
15. टेक्सटाइल्स इन इंडिया - जसलीन धमीजा
16. इंडियन प्रेस - एम. चलपति राव
17. फ़िल्में- अमिता मलिक
18. आर्थिक विकास - वी. के. आर. वी. राव
19. मास कम्युनिकेशन्स - आर. के. चटर्जी
20. हिमाचल प्रदेश - एच. के. मिट्टू
21. मराठी रंगमंच डी. जी. नाडकर्णी
22. कुछ भारतीय जनजातियाँ - एन. के. बोस
23. नागालैंड पैनोरमा* - प्रकाश सिंह
24. बंगाली थिएटर किरणमय राहा
25. भारत में भोजन और भोजन की आदतें - बी. के. मालवीय

* मुद्रणालय में

(दूसरे असाइनमेंट पर बातचीत चल रही है)

## प्रकाशित पुस्तकें

| | | जल्दी से आना। एडन. रु. पी. | लिब. एडन. रु. पी. |
|---|---|---|---|
| 1. फूलों वाले पेड़ - एम. एस. रंधावा | | 6·50 | 9·50 |
| 2. असमिया साहित्य —हेम बरुआ | | 7·25 | 10·25 |
| 3. कॉमन ट्रीज़ —एच. सांतापौ | ... | 5·25 | 8·25 |
| 4. भारत के साँप —पी. जे. देवरस | ... | 6·50 | 9·50 |
| 5. लैंड एंड सॉइल - एस. पी. रायचौधरी | | 5·25 | 8·25 |
| 6. भारतीय खनिज — श्रीमती मेहर डी. एन. वाडिया ... | ... | 5·25 | 8·25 |
| 7. पालतू जानवर - हरबंस सिंह | | 4·25 | 8·00 |
| 8. वन और वानिकी के. पी. सागरेया | | 5·25 | 8·50 |
| 9. राजस्थान का भूगोल - वी. सी. मिश्रा | | 6·00 | 8·25 |
| 10. गार्डन फूल — विष्णु स्वरूप | | 8·25 | 12·00 |
| 11. जनसंख्या - एस. एन. अग्रवाल | ... | 3·75 | 7·00 |
| 12. निकोबार द्वीप समूह — के. के. माथुर | | 5·50 | 9·00 |
| 13. कॉमन बर्ड्स सलीम — अली और श्रीमती लईक फुटेहली ... | ... | 9·00 | 15·00 |
| 14. सब्ज़ियाँ - बी. चौधरी | ... | 5·25 | 8·25 |
| 15. भारत का आर्थिक भूगोल वी.एस. — गणनाथन ... | ... | 5·25 | 8·25 |
| 16. भारत का भौतिक भूगोल — सी.एस. पिचमुथु ... | ... | 8·25 | 11·50 |
| 17. औषधीय पौधे - एस. के. जैन | ... | 5·75 | 9·00 |
| 18. पश्चिम बंगाल का भूगोल - एस. सी. बोस | | 6·00 | 9·00 |
| 19. भारत का भूविज्ञान ए. के. डे | ... | 5·25 | 8·50 |
| 20. मानसून - पी. के. दास | ... | 4·25 | 7·50 |
| 21. राजस्थान - धर्म पल | ... | 4·50 | 7·75 |
| 22. इंडिया - जनरल सर्वे - जॉर्ज कुरियन | | 7·50 | 11·00 |
| 23. उत्तर भारत के मंदिर - कृष्ण देव | | 4·00 | 7·50 |
| 24. पौधों के रोग आर. एस. माथुर | ... | 4·75 | 8·00 |

| | पॉप. एडन. रु. पी. | लिब. एडन. रु. पी. |
|---|---|---|
| 25. असम संकलनकर्ता एस. बरकातकी | 4·50 | 8·00 |
| 26. असम की जनजातियाँ — एस. बरकातकी द्वारा संकलित ... ... | 4·75 | 8·00 |
| 27. फल रणजीत — सिंह ... | 5·75 | 9·25 |
| 28. फसलों के कीट-पतंगे - एस. प्रधान | 7·50 | 11·00 |
| 29. कॉइनस- परमेश्वरी लाल गुप्ता ... | 6·75 | 9·50 |
| 30. असम का भूगोल - एच. पी. दास | 6·00 | 9·00 |
| 31. भारतीय चित्रकला - सी. शिवराममूर्ति | 7·00 | 11·00 |
| 32. भारत की नदियाँ - एस. डी. मिश्रा ... | 6·50 | 9·50 |
| 33. गुजरात का भूगोल - के. आर. दीक्षित | 9·25 | 12·50 |
| 34. मछलियाँ- मिस एम. चांडी ... | 6·00 | 9·00 |
| 35. भारत का चिकित्सा भूगोल - आर. पी. मिश्रा | 7·50 | 10·50 |
| 36. भारतीय संसद - एन. एन. माल्या | 4·75 | 8·00 |
| 37. इंडियन फॉक आर्ट्स & क्राफ्ट्स - मर्स. जसलीन धमीजा ... ... | 7·25 | 10·25 |
| 38. भारत में आदिवासी जीवन - निर्मल कुमार बोस | 4·75 | 8·50 |
| 39. जम्मू और कश्मीर का भूगोल - ए. एन. रैना ... ... | 5·75 | 8·75 |
| 40. उत्तर प्रदेश का भूगोल - ए. आर. तिवारी | 5·25 | 8·25 |
| 41. औद्योगिक विकास - एम. आर. कुलकर्णी | 7·25 | 10·50 |
| 42. भारतीय रंगमंच - आद्या रंगाचार्य | 5·25 | 8·25 |
| 43. उड़ीसा का भूगोल बी. एन. सिन्हा | 7·25 | 10·25 |
| 44. महाराष्ट्र का भूगोल सी.डी. — देशपांडे ... ... | 8·00 | 11·25 |
| 45. केरल कृष्ण चैतन्य ... | 6·25 | 9·50 |
| 46. कीड़े - एम. एस. मणि ... | 5·25 | 9·00 |

राष्ट्रीय जीवनी श्रृंखला

प्रकाशित पुस्तकें

| | | रु. पी. |
|---|---|---|
| 1. गुरु गोबिंद सिंह | गोपाल सिंह | 2·00 |
| 2. गुरु नानक | गोपाल सिंह | 2·25 |
| 3. कबीर | पारसनाथ तिवारी | 1·75 |
| 4. गर्भाशय | समर बहादुर सिंह | 2·00 |
| 5. महाराणा प्रताप (हिंदी) | आर. एस. भट्ट | 1·75 |
| 6. अहिल्याबाई | हीरा लाल शर्मा | 2·25 |
| 7. त्यागराज | पी. सांबमूर्ति | 2·00 |
| 8. पीटी. भातखंडे | स. एम. रत्नजनकर | 1·25 |
| 9. पीटी. विष्णु दिगंबर | वी. आर. आठवले | 1·25 |
| 10. शंकरदेव | महेश्वर नियोग | 2·00 |
| 11. रानी लक्ष्मी बाई (हिंदी) | वृंदावन लाल वर्मा | 1·75 |
| 12. सुब्रमण्यम भारती | प्रेमा नंदकुमार | 2·25 |
| 13. हर्ष | वी. डी. गंगल | 1·75 |
| 14. चंद्रगुप्त मौर्य | लल्लांजी गोपाल | 1·75 |
| 15. काज़ी नज़रुल इस्लाम | बासौदा चक्रवर्ती | 2·00 |
| 16. शंकराचार्य | टी. एम. पी. महादेवन | 2·00 |
| 17. नाना फडणवीस | वाई. एन. देवधर | 1·75 |
| 18. रंजीत सिंह | डी. आर. सूद | 2·00 |
| 19. आर. जी. भंडारकर | ह. आ. फड़के | 1·75 |
| 20. समुद्रगुप्त | लल्लांजी गोपाल | 2·00 |
| 21. अमीर खुसरो | सैयद गुलाम समनानी | 1·75 |
| 22. मुथुस्वामी दीक्षितार | टी. ल. वेंकटरामा अय्यर | 2·00 |
| 23. मिर्ज़ा ग़ालिब | मलिक राम | 2·00 |
| 24. हरी नारायण आप्टे | एम. ए. करंदीकर | 1·75 |
| 25. रामानुजाचार्य | आर. पार्थसारथी | 2·00 |
| 26. ईश्वर चंद्र विद्यासागर | एस. के. बोस | 2·00 |
| 27. सूरदास (हिंदी) | व्रजेश्वर वर्मा | 1·75 |
| 28. स्वामी दयानंद | बी. के. सिंह | 2·50 |
| 29. जगदीश चंद्र बोस | एस. एन. बसु | 2·00 |

| | | |
|---|---|---|
| 30. स्वामी राम तीर्थ | डी. आर. सूद | 2·50 |
| 31. चैतन्य | दिलीप कुमार मुखर्जी | 2·50 |
| 32. मोतीलाल घुसे | एस. एल. घोष | 2·75 |
| 33. श्यामा शास्त्री | एसएमटी. विद्या शंकर | 2·00 |
| 34. नागार्जुन | के. सच्चिदानंद मूर्ति | 2·25 |
| 35. कृष्णदेव राय | एम. रामा राव | 2·25 |
| 36. पुरंदरादासा | वी. सीतारमैया | 2·75 |
| 37. तुलसीदास | देवेंद्र सिंह | 2·00 |

24635
पुस्तकालय, कोविलूर

अनुक्रमणिका


अबेकस, 47
अभिषेक, 56, 66, 121, 142, 195
अभिषेक मंडप, 150
अबू सिंबल, 125
अच्युत (दैत्य), 121
अच्युत राय (राजा), 169
अच्युत राय मंदिर, 169
अधिष्ठान, 21, 40, 46, 47, 49, 50, 85, 86, 91, 93, 98, 99, 100-02, 108, 112, 114, 115, 118-21, 122, 126, 128-30, 132-35, 139, 140, 142, 145, 153-61, 163, 172, 177, 179-85, 187, 189, 191, 193, 194, 197
अडिगैमन, अतियमन, अतियेन्द्र, अतिया किंग, 52, 58, 59, 60
आदिशेष, 49
आदितल, 87, 88, 90, 98-105, 107, 109, 112-16, 118, 119, 121, 123, 125, 128-30, 132, 133, 135, 136, 137, 140, 146, 147, 151, 153, 160, 168
वहाँ मिलते हैं, 152
प्राचीन आदिताल, 103, 116
आदिवारहा केव-टेंपल, 48, 49
अद्वैत (दर्शन), 19, 37
अद्वी सोमनपल्ली, 62
धर्म, अगामिक, 2, 11, 19, 66, 78, 84, 85, 88, 94, 138।
अघोरेश्वर मंदिर, इक्केरी, 173
अग्नि, 143
आगरा मंडप, 31, 63, 64, 68, 74-76, 94, 133, 135, 139, 147, 154, 168, 170
अहाननुरु, 8
ऐहोल, 35, 61-64, 67, 69, 79, 81, 126, **128, 133, 174-78**
ऐलुरपारा गुफा-मंदिर, 60, 61
ऐरावत, 19
ऐरावतेश्वर टेंपल, कांची, 120
ऐरावतेश्वर मंदिर, दारासुरम, 145-**47, 149**
आइल्स, 95, 135
अजंता, 27, 28, 30-33, 73, 78, 141
अजंता विहार, 67
आजीविकास, 8, 15, 18, 26
इस प्रकार-मदन्ना गुफा, 80, 106
अक्षकरीदामूर्ति, 79
अल (पूजा किया जाने वाला वृक्ष), 8
आलमपुर, 106, 175
जैसे, 195
सभी पत्थर के मंदिर/विमान, 122, 146
अल्पनासिका, 93, 191, 194
अल्पविमान, 87, 89, 96, 191
अलवर, 4, 19, 37, 124
अमरावती, 9, 10, 13, 20
अमलका अमलसर अमलसिला, 5, 32, 162, 165, 174-77, 180, 191, 192, 195
अम्माँ, देवी को देखो
अम्मान तीर्थ/मंदिर, 143, 147, 148, 169, 170
अमरा (वृक्ष, पूजा में), 11
अमरुनरी मुत्तरैयार (मुखिया), 58
अनाइमलाई गुफा-मंदिर, 53, 56
आनंद तांडव, 123
अनंतासायनगुडी (केव-टेंपल), उंडावल्ली, 33, 81, 106
अनंतसयनगुडी मंदिर (होस्पेट), 169
अनंतशयनम मंदिर, त्रिवेंद्रम, 186
अनंतसायी (विष्णु), 59, 77, 79-81, 169, **186**
अनंतविनायकर टेंपल, 189
अनर्पित हारा, 89, 90, 103, 191
आप (स्तूप के), 11, 12, 13, 14
अण्डा (उत्तरी मंदिर का), 177, 192, **195, 196**
अंडमान, 138
अंधकारी (सिवा), 79, 80
आंध्र, 3, 4, 14, 15, 19, 21, 24, 34, 38, **62, 80, 166, 169, 177**
आंध्र बौद्ध स्थल, 21

आंध्र तट, 61
आंध्र-कर्नाटक क्षेत्र, 174
ओपनिंग, 47, 87, 98, 101, 145
पशु आकृतियाँ, 95
एनिमिस्टिक पूजा, 8
अनिरुद्ध (भगवान), 121
आठ वर्षीय, 95
अंतरा-भिट्टी, 191
अंतराल, 21, 85, 94, 107, 108, 114, 115, 131, 133, 135, 136, 140, 142, 151-57, 159-64, 169, 173, 178-80, 188
अंतराल-मंडप, 133-35, 188, 189
सदस्य, 195
एंटेफिक्सेस, 151
अपराजितवर्मन (पल्लव राजा), 121
अप्सिडल, 21-24, 28, 86, 88
अप्सिडल चैत्यास/गर्भगृहस/श्रींस, 22-24,
अप्सिडल योजना, 86, 88
अपसाइडल छत, 88
अप्सिडल मंदिर, 135
अरगनदनल्लूर (केव-टेंपल), 39, 41
अरासु (पूजित वृक्ष), 8, 10n
अर्चमूर्ति, 84
धनुषाकार डॉर्मर, 89
स्थापत्य मूर्तिकला, 26
अर्ध मंडप, 23, 30, 31, 40, 41, 45, 48, 63, 64, 68, 77, 84, 85, 86, 94, 101, 102, 106, 107, 109, 112-14, 117, 119; 121, 124, 127, 131, 132, 133, 137, 139, 159, 172, 191, 193, 196
अर्धनारीश्वर (शिव), 56, 79, 80
अरिट्टापट्टी केव-टेंपल, 55
अर्जुन, 51
अर्जुन की तपस्या, 50, 51, 98, 101, 106
अर्जुन रथ (महाबलीपुरम), 100, 102

अर्पिता-हारा, 90, 101, 191
आर्ट गैलरी, तंजावुर, 147
अरुणाचलेश्वर (मंदिर), नंदी हिल्स, 126

अरुणाचल मंदिर (तिरुवन्नामलाई), 168

अर्वेलम (गोवा), गुफा-मंदिर, 62, 77
आसन (रूप), 118
अष्टभुजास्वामिन (नागार्जुनकोंडा), 23
अष्टादिकपलास, 66
अष्टांग अष्टवर्ग-विमान, 87, 101, 102

अष्टपरिवारा, 108, 123, 191
अष्टारक, 193
अशोक (राजा), अशोकवर्धन, 2, 9, 10, **15, 26**
अशोक के शिलालेख, 15
एस्टिलर, 29, 76, 94
अश्वत्त-नारायण-प्रदक्षिणा, 10n
अतिवनचंद-मंडप (गुफा-मंदिर), सलुवाकुप्पम, 43, 44, 50
अट्टी (पूजित वृक्ष), 11
अतिया राजा (देखें अदिगैमन), 59
अतियमन (सी आदिगैमन), 59
एतीयेंद्र-विष्णुगृहम (केव-टेंपल) नमक्कल, 59
अतुरासला, 150
अत्यंत काम पल्लव गुफा-मंदिर, 43, 45

औरंगाबाद (डेक्कन), 62, 77
औरंगाबाद (दक्कन), गुफाएँ, 27, 31, 33
अवनिपासेखर श्री वल्लभ (पांड्या) राजा), 54
अवरण-देवता, 194
अवनिभाजन पल्लवेश्वरगृह (केव-टेंपल) सियामंगलम, 39, 40
अयाका-प्लेटफ़ॉर्म/पिलर, 12, 13, 14
आयतन, 29, 191
आयतासरा-विमानस 96, 103, 191, 192, 195
ऐ-वेल (सरदार), 54

बादामी (वाटापी), 34, 35, 61-67, 69, 71, **78, 79, 81, 97, 126, 128-30, 136, 137, 174, 175, 178**
बहुपुत्र-चैत्य, 10
बलभद्र (गोद), 19
बलब्रह्मा मंदिर, आलमपुर, 179
बलदेव (मंत्री), 125

बलराम (भगवान), 77, 79
बालासुब्रह्मण्य टेंपल, कन्नूर, **123**
बलि (प्रसाद), 16
बल्लाला द्वितीय (होयसल राजा), 156
बल्लाला-गोपुरा, तिरुवन्नामलाई, 148
रेलिंग, 182
बनास (सरदार), 126
बनातीर्थ टेंपल, 190
बनवासी, 174
बांदी तंद्रापड्ड मंदिर, 180
बैनिस्टर, 182
बरबाव गुफाएँ/पहाड़ियाँ, 126, 36
बरहुत (स्तूप), 20, 26, 28
बेसाल्ट (पत्थर), 113, 116, 147, 160
बौद्धस, 18
बेलगामी, 176
चोटिल, 155
भद्रा, 91, 178, 180, 191, 195
भद्र-शाला, 192
भागवत, 158, 188
भगवती (गॉडेस), 190
बाह्य-भित्ति, 191
भैरत, 21, 28न
भैरव कोंडा केव-टेम्पल्स, 62, 80, 81
भज (केव्स), 28
भक्ति कल्ट, 19, 37
भारत, 141
भट्टिप्रोलु (स्तूप), 13
भरवी, 51
भटकल (टेम्पल्स), 128, 190
भीमलिंगेसवारा (टेंपल), सत्यावॉलू, 180
भीमरथ (महाबलीपुरम), 98, 100, 103, 104, 109
भित्ति, 87, 98, 101, 182, 191, 192, 196, 197
भित्ति-तोरण, 93, 192, 194
भोग नंदीश्वर मंदिर, नंदी हिल्स, 126
भोकरदन (केव-टेंपल), 62, 72, 77
भुबनेश्वर, (तोरण), 92
भू-देवी, 122
भूमिस, 176, 177, 192
भूमि-अमलका, 192
भूत, 112, 114, 115, 142, 183, 192
भूत-गण, 71
भूतनाथ ग्रुप (टेम्पल्स), बादामी, 175
भुवनेश्वरी, 53, 54
भू-वराहा, 48, 59
बिक्कावोलु (मंदिर), 136, 151
बीजापुर म्यूजियम, मंगलेश इनस्क्रिप-**tions, 128**
काला ग्रेनाइट (कृष्ण शिला), 163
बोध-गया, 9
बोधि-गृह, 8; -मंदा, 9, 20; -ट्री, 9
बोम्मी नायक (राजा), 172
ब्रैकेट, 184, 185, 186, 187
ब्रैकेट-आंकड़े, 160, 162
ब्रह्मा, 35, 36, 40, 44, 45, 49, 56, 66, 77, 78, 79, 82, 99, 103, 110, 115, 116, **117, 121**
ब्रह्म-भगा, 61
ब्रह्मण्य, 78, 99
ब्रह्मपुरीसवारा, (पुल्लमंगई), 124
ब्रह्मशास्ता, 99
ब्राह्मण/ब्राह्मणवादी, 18, 176,
-क्रीड्स, 34,
-देवता, 34
-मंदिर वास्तुकला, 37
ब्राह्मणिक गुफा-मंदिर, 70
ब्रांथनपारा गुफा मंदिर, 60
ईंट, 147, 170; -और मोर्टार, 114, 162, 168, 181, 190 और लकड़ी, 98, 121, **124, 184**
ईंट-निर्माण, 147
-चैत्य, 21, 22
-श्राइन, 23, 24
-स्तूप, 14, 29एन, 120
-संरचना, 120
ईंट का काम, 152, 156, 159, 161, 168, 169
ईंट का काम अधिरचना, 190
बृहदेश्वर टेंपल, तंजावुर, 86, **87, 97, 138, 143, 144, 146, 148, 172**
बृहदीश्वर मंदिर, गंगई-कोंडा-चोलापुरम, 138, 144, 146

बृहन्नायकी (गॉडेस), 144, 148
बुद्ध, 4, 9, 13, 17, 22, 27; -चैत्य, 22
—images, 20, 22, 29, 30
-लघुचित्र, 32
-बैठे, 32
-मंदिर 31; 10 की यात्रा
बुद्ध-पाद, 16, 17
बुद्ध-पिटिकाई, 16, 17
बुद्ध-घोष, 10
बौद्ध, 3, 4, 15, 16, 63, 72, 78, 81, 83
बौद्ध-वास्तुकला, 2, 23, 62
-गुफाएँ, 27, 31, 141
-गुफा कला, 62
-खुदाई, 27, 70
-अवशेष, 20, 24
-स्तूप, 15, 20
-मंदिर, 20, 22, 86

कंबोडिया, 5, 18
राजधानियाँ (स्तंभों पर बनी हुई), 91
नक्काशी 17; -नीचे, 109
नक्काशीदार अखंड विमान, 121
नक्काशीदार स्तंभ, 186
कैरिएटिड, 68, 82, 162, 185
- कोष्ठक, 189
गुफा कला, 63
गुफा-कोशिका प्रकार, 53
गुफा-मंडप, 67
गुफा-मंदिर (बौद्ध)
अजंता 27
गुफा 6 (दो मंजिला)
केव्स 9, 10 (चैत्यास): 28
गुफाएँ 8, 12, 13, 30 (विहार): 28
केव्स 19, 26 (चैत्यास): 29
गुफा 27: 30; खंडहर/बिना साज-सज्जा के
गुफाएँ, 29
औरंगाबाद, 33
भाजा, 28
एलोरा, गुफा 1, 2, 3:31; गुफा 4:32; गुफा 5:31; गुफा 6:31, 32; गुफा 7 10:31, 32; गुफाएँ 11 और 12:32, 81
गुंटूपल्ले, 27; जुन्नार, 27, 28; चार्ल्स, 28; कन्हेरी, 28; कंडेम्ड, 28; कंडक्ट, 27; नासिक, 27, 28; पूना, 27
गुफा-मंदिर (हिंदू)
ऐहोल, 62, 64, 69 (रावलगुडी), 81
अद्वी सोमनपल्ले, 62
ऐलुरपारा, 60
अनैमलाई, 53, 56
अरगनदनल्लूर, 39, 41
अरिट्टापट्टी, 55
अर्वेल, 62, 77
बादामी, 35, 61, 62, 64, 66, 67, 81
गुफा I: 67, 69
गुफा II: 67, 69
गुफा III: 67, 69
भैरवाकोंडा, 62, 80, 81
भोकरदान, 77
भूतपंडी, 60
दलवाणुर, 39, 41, 43, 48
देवरमलाई, 55, 58
एलीफेंटा, 62, 64, 74
एलोरा-गुफाएँ 13 और 14:70
गुफा 15:70, 72, 79
गुफा 16:70, 73, 79
गुफा 17:70, 71, 77
गुफा 18:70
गुफा 19:70
गुफा 20:70, 71
गुफा 21:70, 71, 73, 77
गुफा 22:64, 70, 71
गुफाएँ 23 और 24: 70, 71
गुफा 25:70, 72
गुफा 26:70,71,72
गुफा 27:70, 72
गुफा 28:70
गुफा 29:63, 64, 70, 72, 76
इरुनिलंकोडु, 58, 60
जोगेश्वरी, 62, 63, 64, 76
प्रिय, 60
कालुगुमलाई, 121
कवियुर, 58, 60, 61
किल्माविलंगई, 46

कोट्टक्कल, 58, 60, 61
कुड़ूमियामलाई, 55
कुन्नाक्कुडी, 53, 55
नगर पालिकाएँ, 52, 55, 58
कुन्नाथुर, 55, 56, 61
कुरंगानिल मुत्तम, 38, 42
महाबलीपुरम, 4, 43, 46,
आदिवराह गुफा-मंदिर
(परमेश्वर-महावराह-विष्णुगृहम),
48, 49
धर्मराज मंडपम, 43
कोनेरी मंडपम, 47, 48
कोटिकल मंडपम, 43, 44, 46
महिषमर्दिनी मंडपम, 47, 48, 49

पंच-पांडव मंडपम, 47, 48
रामानुज मंडपम, 48, 49
अधूरा गुफा-मंदिर, 47
वराह मंडपम, 47, 48
महेन्द्रवादी, 39, 41
माहुर, 62
मलैयादिक-कुरिची, 53, 55
मलैयाडिप्पट्टी, 55, 58, 59
मलैयाकोइल, 54, 55
मामांदुर, 38, 39, 41, 42, 54
मंडागप्पट्टू, 35, 36, 38, 40-42, 53, 57

शिकायत, 54
मेलकोटे, 62
मोगलराजपुरम, 62, 80; गुफाएँ I-IV, 80

मुवरैवेन्ड्रण, 55
नमकल, 52, 59, 60
नर्त्तामलाई, 52
पल्लवरम, 38, 41, 42, 43
पातालेश्वर-पूना, 76
साहूकार, 62
पिल्लैयारपट्टी, 53
पिरानमलाई, 56
पुवलाईक्कुडी, 52, 58
सालुवंकुप्पम, 43, 50
सेविलिप्पट्टी, 55
सिंगापेरूमलकोइल, 43, 44
सिंगावरम, 43, 44
सीतारामपुरम, 62, 80
सित्तानवासल, 53, 141
तिरुचिरापल्ली, 39, 42, 43, 52, 55
(निचली गुफा), 56
थिरुगोकर्ण, 55, 57
तिरुक्कलकुडी, 55, 56
तिरुक्कलु-के-कुनराम, 43
तिरुमाला, 56
तिरुमलापुरम, 54, 55
तिरुमैयम, 54, 57, 58
तिरुनन्दिक्कारा, 58, 60, 61
तिरूपनकुंरम, 42, 52, 53, 55-57, 59

तिरुत्तंगल, 59
तिरुवेल्लारई, 52, 55, 58
त्रिकुर, 54, 58, 60
तुवरंगडु, 60
उंडावल्ली, 33, 62, 80
वल्लम, 39, 42, 46
विजयवाड़ा, 62, 80, 81
विझिनम, 54, 60
गुफा-मंदिर (जैन)
ऐहोल, 69
बादामी (केव इव), 68, 69
एलोरा (गुफाएँ 31 से 34), 74, 109
खंडगिरि, 27
सित्तानवासल, 53, 54, 58, 141
उदयगिरि, 27
चैत्यास, 2, 3, 10, 21, 24, 27, 28, 29,
30, 32, 33, 83
चैत्य-मंदिरा, 31
चैत्य-वृक्षास, 9
चालुक्य (वंश), चालुक्य, 3, 30,
**31, 34-36, 38, 52, 55, 56, 59-63, 66, 67, 70, 72, 73, 82, 107, 108, 111, 112, 127, 131-34, 136, 137, 146, 152, 164, 169, 170, 173, 174, 177, 178, 190, 196, 197**
चालुक्य-प्रारंभिक या बादामी, 97, 106,
111, 128, 136; पूर्वी या वेंगी, 69,
77, 80, 106, 126, 136, 151, 175, 177,
179; बाद में या पश्चिमी या कल्याणी,
69, 138, 150, 153, 166, 169

चालुक्य-होयसल-काकतीय, 166
चालुक्य-कदंब, 176
चालुक्य-राष्ट्रकूट, 41, 59, 62, 79, 95, 146, 150
चालुक्य-राष्ट्रकूट-होयसल-काकतीय सीरीज, 166
चामुण्डराय (चावुंदरया) बश, 125 :
चंदेसा/चंडीकेश्वर, 82, 117, 122, 142, 147
चंद्रगिरी (चित्तूर जिला), 167, 171, 173
चंद्रगिरी पहाड़ी (श्रवणबेलगोला), 124
चंद्रगुप्त, 83
चंद्रशेखर मंदिर (बिक्कावोलू), 137
प्लेट (अप्सडल प्लान), 28, 88, 104, 134, 135
पहियों पर रथ (मंडप रूप), 149, 169
चरणोकिते (हार्ड रॉक), 97, 111, 121, 145
चतुर्भुजजी मंदिर (ग्वालियर), 105n
चतुरासरा, 87
चतुर्मुख (चौमुख)-मंदिर विमान, 72, 74, 75, 76, 109, 128, 140, 192
चतुर्वर्ग (विमान), 101
चतुष्टला, 108 (चार मंजिला देखें)
चावुंडराया (चामुंडाराया), 125
चेंपकरमण, 190
चेन्न केशव टेंपल (बेलूर), 155
चेहरा (डायनेस्टी), 11, 15, 58, 59
चेज़रला (एप्सिडल, ईंट संरचना), 21, **24, 25, 106, 135**
छाया-खबास (-खंबास), 15
चिदंबरम, स्थल वृक्ष, 11; मंदिर परिसर, 86; गोपुरा, 96, 148, 149
चिदंबरम नटराज, पेंटिंग, 141
चिप्पागिरी जैन मंदिर, 176
**Chitaldrug-*toranas*, 170**
चित्रकूट टेंपल (मदुरई), 118
क्लोरिटिक-शिस्ट (सॉफ्ट-रॉक), 150, 152, 154
चोल (राजवंश), 4, 11, 15, 51, 122, 123, 144, 145, 147, 167:-मंडलम, 39, 51, 145, -अवधि, 190; बंदरगाह शहर 16; मंदिर, 153, 167
चोल चित्रकला की परत, 141
चुन्चस, 164
छुट्टंबलम, 183, 187
परिपत्र (योजना) 86, 88; -चैत्य, 21, 28; गर्भगृह, 28; -छत 20
क्लिंकर, -निर्मित, -टाइलयुक्त, 181
कोलगोंग (अखंड मंदिर), 105n
कॉरिडोर, 171
कोनों को काटना (छत बनाना), 156
नक्काशीदार गुफा-मंदिर, 111
नक्काशीदार अखंड/विमान मंदिर, 111
दक्षिणा कैलाश टेंपल, 145
दक्षिणामूर्ति, 19, 110, 114, 121, -विनाधारा, 124
दलवाणुर (केव-टेंपल), 39, 41, 43, 48
धामा (टेंपल), 29
डांस, 170; -पोज़, 141, 148; -मूर्तियां 124; नाचते हुए शिव, 81, 115, 141
दंतिदुर्ग (राजा), 72, 109
दंतिवर्मन (राजा), 58, 120
दरअसुरम (टेंपल अत), 145
दशरथ (किंग), 26, 36
दशावतार (केव 15-एलोरा), 72
दशावतार स्कल्पचर्स, 189
'डेकोरेटिव पिलस्टर', 153.
देवा नायकी (मंदिर), 147
'डेंटिल', 177
देवा कोष्ठा, 86, 91, 93, 101, 106, 117, 119, 127, 128, 130-32, 134, 140, 151, **164, 180, 192, 194, 196, 197**
देवकुल (मंदिर), 29
देवरमलाई (गुफा-मंदिर), 55, 58
देवसेना (देवी), 22
देवी (अम्मान), 19, 141, 147, 148, 151, 184; -विमान, 151,
देवी पंथ, 151
देवी (मंदिर), 88, 122, 144, 147, 162
धमनार (अखंड मंदिर), 105n

धारा-लिंगा, 44, 79
धर्मा-पिटिकाई, 16
धर्मराज मंडप (गुफा-मंदिर), 43, 45

धर्मराज रथ (अखंड विमान),
84, 89, 100, 102, 103, 105
धुमेरलेना (गुफा 29-एलोरा), 63, 65, 72, 76, 77, 79
डिएंग वैली (इंडोनेशिया, मंदिर), 56, 66

दिगंबर (जैन), 4, 15, 19
दिकपालास, 117, 143, 158
डोड्डागड्डावल्ली (लक्ष्मीदेवी मंदिर में), 175
दो-ताल (केव 11, विहार, एलोरा), 32, 33, 81
द्रौपदी रथ (मोनोलिथिक विमान), 84, 100, 101, 181, 182
द्रविड़ (विमान शैली), 88, 98, 102, 108, 109, 115, 120, 142, 146
दुर्गा, 19, 44, 48, 49, 50, 56, 57, 59, 64, 71, 75, 77-79, 81, 99, 101, 121, 128, 132, 133, 135, 152, 180, 190
दुर्गा मंदिर (ऐहोल), 128, 133
द्वैत (फिलासफी), 19, 53
द्वाजस्तंभा, 23, 24, 50
द्वारा-गोपुरा, 96; साला, 113, 117;
-सोभा, 85, 96, 196
द्वारा-पलास, 40, 42, 43, 45, 48, 49, 57, 60, 61, 65, 69, 71, 72, 77, 78, 99, 103, 104, 115, 124, 140, 178, 183
द्वारा-पालिकाएँ, 44, 101
द्वयास्र (संरचना की योजना), 104
द्वितला, 87, 99, 101, 104, 120, 123, 129, 190; -विमान, 87, 99, 108, 109, 115, 117, 124;
-कुटविमान, 108, 118
-शाल-विमान, 108, 117।

पूर्वी (वेंगी) चालुक्य (वंश), 38, 61
एकताला, 87, 101, 105, 186, 189
-अल्पविमान, 98
-विमान देश, 98, 106
-श्रीकोयिल, 189
-विमान, 86, 98, 122, 123, 124
एकाम्रनाथ (शिव), 11; -मंदिर गोपुरा, 168.
एलीफेंटा (गुफा-मंदिर), 62-65, 72, 73, 74, 79
दीर्घवृत्ताकार/अण्डाकार (प्लान), 86, 88
एलोरा, 25, 30, 31, 61, 64, 65, 67, 69-75, 77, 78, 81, 107, 109, 131, 190
एरकेश्वर (पिल्ललमरी में सोमेश्वर मंदिर), 160, 161, 163
एरट्टैयप्पन (पेरुमनम का मंदिर), 188

एट्टमानूर (मंदिर), 189
खुदाई (चट्टान में), 20, 27, 28, 30, 31, 33, 35, 52, 54, 58-60, 69, 71, 72, 79; बुद्धिस्ट, 70; हिंदू, 70; जैन, 74
खुदाई (साइटों की), बैराट, 28एन; जयपुर, 28n; नागार्जुनकोंडा, 20, 21, 22; सालिहुंडम, 21

अग्रभाग, 52, 54, 55, 58, 60, 61, 63, 67-71, 73, 76, 81, 82, 97, 103, 105
पांच-(पंच) ताला विमान, 146
धारा लिंग, 117
फोर-स्टोरआइड (चतुष्टला), 106, 113, 114, 118, 186, 189
नींव शिलालेख, 53, 145
फ्री-कटिंग, 109
फ्रेस्को-पेंटिंग/तकनीक, 58, 181

गेबल, 189;-फेस, 188; गेबल्ड-रूफ, 20, 186, 187, 188
बड़ा, 150, 152, 153
गजलक्ष्मी, 48, 49, 53, 54, 59, 78-80, 151

गजपृष्ठा (गजपरिष्ठा-करा), 23, 88, 104, 122, 133, 186, 189; -विमान, 189

गलगनाथ टेंपल, 175, 175, 176,
**178, 179**
घाना, 60, 69, 93, 183
गणपति (गणेश देखें)
गणपत्य, 37, 56
गंडरादित्य (चोला किंग), 138
गंदारागुड़ी (टेंपल), 175न
गणेश (गजानन), 55, 56, 57, 64, 76, 79, 80, 82, 117, 121, 122, 132, 133, 144, 152, 186
गणेश रथ (मोनोलिथिक विमान), 99, 100, 103, 104, 109
गणेशलेना (एलोरा), 73, 79
गंगई-कोंडा-चोलपुरम (शहर और मंदिर), 138, 144, 153
गाला, 174, 177
गंगा (नदी), 105n, 144; (देवी), 65, 151
तलकड़ (राजवंश) के गंगा (पश्चिमी), 55, 59, 62, 121, 124, 125
गंगाधर (सिवा), 43, 49, 79, 80
गंगा-नोलम्बा (राजवंश), 126
गंगाराया (मंत्री), 125
गणिगट्टी जैन मंदिर, 176
गर्भ गृह, 22, 27, 28, 30, 42, 66, 90, 94, 102, 104, 113, 116, 118, 121, 139, 152, 160, 164, 191, 192
गरिकापाडु (स्तूप), 13
गरुड, -मंडप, 60, 88, 167, 168, 186
शैली, 2, 26, 27, 36
घनदवारा, 184
ज्ञानपुर (टेंपल अत), 161, 163, 164
घंटसमावरण, 94
घंटाशाला (स्तूप), 13
गिंगी (मंदिर), 173, (नायकों के अंतर्गत देखें)
नीस (हार्ड रॉक), 27, 83; -गुलाबी 111; -लाल 111; -क्वार्टज़ोज़, 26
गोवा, 77, 128, 183
गोकर्णेश्वर (मंदिर), 57
गोलिंगेश्वर (मंदिर), 137
गोम्मटेश्वर (कोलोसस), 125
गोपीलेना (मिल्कमेड्स गुफा, एलोरा, 27), **72**
गोपुरा, 4, 5, 17, 22, 85, 86, 92, 93, 96, 97, 107, 108, 112, 113, 117, 124, 126, 132, 143, 144, 147-49, 155, 156, 167-71, 176, 182; -द्वारा, 96, 132
गोवर्धना-दारी, -कृष्ण, 50, 79
ग्रेनाइट (हार्ड रॉक); 27, 35, 60, 62, 83, 97, 105n, 111, 114, 118, 120, 122, 124, 169, 173, 181, 184; -बारीक दाने वाला, 172; -ग्रे-सफ़ेद, 111, 170; -गुलाबी-लाल 111; -पॉलिश किया हुआ, 125, 172; -लाल, 115
ग्रेनाइट (निर्मित) मंदिर, 126
ग्रीवा, 24, 87, 88, 98, 101-03, 105एन, 108, 109, 112-14, 119, 120, 122, 123, 125, 129, 130, 131, 132, 137, 142, 149, 152, 153, 155, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 182
ग्रीवा-शिखर, 88, 89, 101, 102-04, 110, 120, 125, 129, 131, 145, 196
ग्रीवा-शिखर-स्तूपी, 87
गुच्छास, 4, 37
गुहानथस्वामी (मंदिर), 190
गुनागा (विजयादित्य देखें)
गुणसेना, 57, 59
गुंटुपल्ले (गोलाकार मंदिर), 21, 27
गुंटूर, 80, 179
गुप्ता, 35एन, 48
गुरुवायूर (कृष्ण मंदिर), 187
ग्वालियर, 105, 105एन

हालेबिड (शहर और मंदिर), 155, 157
हम्पी (शहर और मंदिर), 166, 167, 169, **170, 173, 176, 176n, 177**
हंसा, 155, 158, 168
हनमकोंडा (मंदिर), 158, 159, **162, 163**
मूर्ख (मंदिर और), 176
हनुमान, 61
हारा, 47, 87, 89, 90, 91, 93, 99, 101-05, 108, 109, 112-14, 116, 117, 118, 119, 120, 125, 128-33, 135, 137, 140, 142, 145-47, 151-53, 155, 159, 160,

**164, 168, 169, 177, 179, 182, 191, 192**
हरांतरा, 89, 104, 192, 193
हड़प्पा, 8
हार्ड रॉक्स, 36, 52, 59, 109, 111, 112, 121, 124, 166
हरिहर, 49, 60, 79, 84, 185, 186
हरम्या, 87, 89, 101, 191
हस्तिपरिष्ठा (गजपृष्ठा), 88, 104
हजारा राम मंदिर, 170
हेमकुट्टम हिल्स (मंदिर), 176
हेमवती, 126
हेक्सागोनल (शादसरा) प्लान, 86, 88, 98
हिंदू धर्म, 8, 15, 18, 62; हिंदू, 3, 20, 37, 62, 69, 74; आर्किटेक्चर, 63; पंथ, 24; देवता, 35n; चट्टान से बने गुफा मंदिर, 30; मूर्तियां, 35; मंदिर, 3, 4, 20
हिंदू ट्रिनिटी, 77
हॉर्नब्लेंड (रॉक), 160
होस्पेट (मंदिर के पास), 169
होयसल (राजवंश), 148, 154, 158, 166, 176
होयसल-कला, 157; मंदिर, 135, 155
होयसलेश्वर मंदिर, 155, 157
हाउदा, 50
हुच्चप्पय्यागुडी मंदिर, 178
हुच्चिमल्लीगुडी, मंदिर, 178, 180
सौ-स्तंभों वाले हॉल, 96, 171
हाइपेथ्रल-स्तूप के रूप 83; मंदिर 8, 11, 16, 22, 125

चिह्न, 99
इडल, 167
इडाइची मंडपम (गुफा-मंदिर), 95
इडाइकली, 188
इदैनाली, 182
गैर-लाभकारी, 165, 167, 171, 173 (नीचे देखें नायक्स)
इक्केरी शैली (मंदिरों की), 173
इक्ष्वाकुस (डायनेस्टी), 13, 22, 30
इलान गौतमान, 54
इलांजी (पूजित वृक्ष), 8
इंपीरियल चोल, 123, 128
इंडो-इस्लामिक डिज़ाइन, 173
इंडो-इस्लामिक रूपांकन, 173
इंडोनेशिया, 18, 56, 66
इंद्र, 19, 51, 143
इंद्रगिरी पहाड़ी (श्रवण बेलगोला), 125
इंद्र सभा (एलोरा गुफा 32), 63, 74
शिलालेख, 4, 10, 11, 23, 24, 29, 36, 39, 48, 50, 53, 54, 57, 59, 72, 83, 109, 119, 127, 128, 134, 142, 145, 151, 153, 180, 184; अष्टभुजस्वामी मंदिर में, 23; शंख पर, 23; मंडा-गप्पट्ट गुफा-मंदिर, 36; पुष्प-भद्रास्वामिन-टेंपल, 23
(वृक्ष की पूजा)
इरावतनेश्वर, टेंपल, 120
इरुक्कुवेल (सरदार), 121, 124
इरुनिलमकोडु (गुफा-मंदिर), 58, 60
इसाना (देवता), 143
इससे पहले, 179
ईश्वर, 36
इत्तगी (मंदिर), 153

जगन्नाथ सभा (एलोरा, केव 33), 74
विंभाजित, 93, 197
जग्गय्यापेट (स्तूप), 13
जगमोहन (मंडप), 195
जैन धर्म, 1, 2, 3, 8, 15, 18, 19, 37, 62, 70
जैन-वास्तुकला, 37, 63
जैन गुफा/गुफा-मंदिर, 27, 30, 53, 69; ऐहोल में, 69; बादामी में; 68, 69, एलोरा में, 74, 109; खंडगिरी में, 27; सित्तनवसल में, 53, 54, 58, 141; उदयबारी, 27
जैन चौमुख, 63, 74
जैन-पंथ, 34, 62; देवता, 34; मूर्तियाँ, 69; संप्रदाय, 37; मंदिर, 3, 20, 69, **88, 124, 128, 150, 152, 176**
जैन अखंड मंदिर, 64, 109
जयपुर, 28
एल्म, 164

जलकंठेश्वर मंदिर, 171
थकान, 196
जम्बू (पूजा का पेड़) 11
जम्बूकेश्वर मंदिर 11
जम्बुलिंग मंदिर, 178
जनार्दन (विष्णु), 10n
जंगमेश्वरा टेंपल, 162
जाति-विमान, 87, 89, 91, 96, 135
जावा, 5, 56, 66
जोगेश्वरी (गुफा-मंदिर), 62, 63, 64, 65, 72, 76, 79
जुन्नर (केव्स), 27, 28
ज्येष्ठा, 53, 54, 55
ज्योतिर्लिंग टेम्पल्स, 126

कच्छेश्वर मंदिर, 161
कदलीकाकरण, 25, 142, 145, 168, 192
कदंब (पूजा का वृक्ष), 8, 11
कदंब (राजवंश), 174, 175, 176
कदंब-चालुक्य, 174
कदासिद्धेश्वर मंदिर, 178
कदवुल (देवता), 17
कडुकल (देवी), 18
कैलासा (एकाश्म मंदिर परिसर एलोरा, 16), 63, 64, 70, 73, 107, 109, 131, 132, 150
कैलाशनाथ मंदिर परिसर (कांची), 55, 112, 115, 120, 122
कैलाशनाथ टेंपल, तिरिप्पुत्तूर, 120
कैलाशटोलना, 79
काकतीय (राजवंश), 154, 158, 165,
काकतीय पैटर्न, 160; स्टाइल, 159; मंदिर, 161, 162
कक्षासन, 127, 134, 136, 156, 157, 158, 160, 162
कालाहस्ती (राय गोपुरम), 168
कलामुखस, 37
कलरी (शिवा), 124..
कक्षा, 47, 55, 68, 92, 163, 177, 192, 193, 195
कालिका (देवी), 151
कालियादमन (कृष्ण), 79
कालियापट्टी मंदिर, 122
कल्लेश्वर मंदिर (कुक्कनूर), 150, 151
प्रिय (गुफा-मंदिर), 60
कल्लमथा मंदिर (बादामी), 67
कलमंडपम (कुरान-गनिलमुत्तम में गुफा-मंदिर, 38, 40, 41
कल्पतरु (वरदान वृक्ष), 19
कलुगुमलाई (वेट्टुवनकोविल मोनोलिथ), 109, 121
कल्याण/कल्याणी (पश्चिम चालुक्य राजधानी), 138, 150
कल्याण उत्सव/कल्याण डोलोत्सव (त्योहार), मंडप, 149, 167, 168, 169, 171, 172, 193
कल्याणसुंदरा, 79, 80
कंबादहल्ली (पंचकूट बस्ती, जैन मंदिर), 125
कामेश्वर, टेंपल, 161.
कम्पहारेश्वर टेंपल, 145, 147
कनारा मंदिर, 190
कांची/कांचीपुरम, 11, 34, 39, 55, 111, 112, 115, 118, 120, 122, 168, 171
कंडू (पूजा की वस्तु), 16
***Kandudai-p-podiyil*, 16**
कन्हेरी (बौद्ध गुफा), 28
कन्नूर (मंदिर), 123
कंसरगुडी मंदिर (बिक्कावोलू), 136
कांथा, 69, 93, 192
बोनट, 23, 34, 40, 45, 47, 52, 68, 70, **74, 81, 82, 87, 91, 93, 98, 99, 106, 128, 135, 137, 143, 156, 168, 172, 174, 180, 182, 192, 193, 195**
कपोतेश्वर मंदिर (चेजेरला), 24, 106
करण (नृत्य मुद्राएँ), 141
कारकुला, चतुर्मुख जैन टेंपल, 128
कार्ले (बौद्ध गुफा), 28
कर्ण, 192
कर्णकुता, 89, 91, 93, 102, 105, 109, 113, **114, 123, 128, 129, 131-33, 136, 145, 146, 153, 154, 172, 179, 185, 187, 193**
कर्णमलाका, 175, 176, 177, 192
कर्नाटक/कन्नड़ क्षेत्र, 3, 4, 15, 18, 19, 20, 37, 62, 65, 166, 177

कर्णिका, 157
कर्ताली, 121
कार्तिकेयस्वामी मंदिर, नागार्जुन-कोंडा, 23
कार्तिकेय (भगवान), 8, 9, 20, 23, 78, 79, 80, 123, 180
कसी-वाराणसी, 148
लक्कुंडी में काशी-विश्वेश्वर मंदिर, 153; पटडकल, 178
कटचपुर/कटाक्षापुरा, 162
कथकली (डांस), 183
कवर, 45, 193
कॉमरेड, 37, 56
कवल-मरम (शाही कुलदेवता वृक्ष), 11
कावेरी (नदी), 16, 39, 51, 121
कावेरी-प-पट्टिनम (बंदरगाह शहर) बुद्ध-अर्थव्यवस्था और, 16
कवियुर (केव-टेंपल अत), 58, 60, 61
केलाडी (शहर का मंदिर), 173
केलादी नायक (इक्केरी नायक), 165
केरल, 4, 7, 18, 20, 38, 46, 51, 54, 58, 59, 138, 183, 184, 186, 188
केरल-शैली, 186; मंदिर, 181, 183 185
केरी (गोवा-वैताल मंदिर), 128
केशव टेंपल, सोमनाथपुर, 155, 158
भटकल में केतपी नारायण मंदिर, **128, 190**
खंडगिरी (जैन गुफा), 27
किलिवासल (नासिका), 182, 186, 187, 188, 189, 193, 194
किलमाविलंगई (गुफा-मंदिर), 46
किन्नारी, 42
मेरा कॉल/कॉल, 51, 60
कीर्तिवर्मन (राजा), 35
कोडंबलुर (टेंपल अत), 124
कोडुंगल्लूर मंदिर, 187; 190
कोणार्क, सूर्य मंदिर, 149
कोंडाने (बुद्धिस्ट केव), 28
कोनेरी-मंडपम (गुफा-मंदिर), 47, 48
कांगो, 52
कोंकण, 67
कोंटगुडी मंदिर, 126, 127
को-पेरुंजिंगा (मुखिया), 148
कोरंगानाथ मंदिर, 124
कोर्रावाई (देवी), 18, 19
कोष्ठा, 88, 89, 103, 134, 191, 192, 193
कोट्टम (मंदिर), 17, 19
कोट्टापल्ले, 81
कोटि-काल-मंडपम (गुफा-मंदिर), 43 44, 46, 95
कोट्टक्कल (गुफा-मंदिर), 58, 60, 61
कॉइल (-मंदिर), 17, 19
कोझिकोड (कालीकट), 187, 189
कुब्जा-विष्णुवर्धन (किंग), 61
खुम्बरवाड़ा (गुफा 25, एलोरा), 72
कृष्णा-जिला, 80; गोड़, 4, 18, 51, 79; नदी, 33, 83; घाटी, 12
कृष्ण प्रथम (राजा), 107
कृष्ण देवा राय (किंग), 167, 168, 169, 170
कृष्ण लीलास, 170
कृष्ण-नप्पिनै-थीम, 51
कृष्णापुरम-टेंपल अत, 172
कृष्ण-शील (कठोर, काला पत्थर) 121, 145
कृष्ण मंदिर-हम्पी में, 169; अत तिरुच्चंबरम, 188
क्षत्रियसिंहेश्वर-बड़ा विमान शोर टेंपल, महाबलीपुरम, 112
क्षेत्रपाल, 186
क्षुद्र-विमान, 89, 93, 193, 194
कुडू, 40, 47, 70, 81, 82, 93, 99, 130, 134, 135, 137, 151, 153, 174, 177, 191, 192, 193, 197
55, 57 में मंदिर गुफा का निर्माण, 59; रथ मंडप, 149
कुड्यास्तंभ (दीवार स्तंभ), 47, 193
कुक्कनूर मंदिर, 150
क्लोई तृतीय, चोल (राजा), 145
कुंभ, 47, 55, 68, 70, 71, 72, 92, 163, **193, 196**
कुंभाभिषेकम, 84
कुम्भकोणम, 124, 149
कुम्भा-पंजारा, 149, 167, 172
कुंभ-वल्ली, 70, 71, 95

कुमारा, 78
उससे प्यार करना, 93, 193
कुन्नाक्कुडी (गुफा-मंदिर) 53, 55
कुन्नांदरकोविल (गुफा-मंदिर), 55, 58
कुन्नथुर (गुफा-मंदिर) 55, 56, 61
कुरंगानलुट्टम (गुफा-मंदिर), 38, 40, 42
क्यूरेट्स, 172
रीडिंग, 172
दीवारें, 20, 47, 89, 91, 100-06, 108, 113, 116-19, 125, 129, 130, 132, 134, 135, 142, 145, 146, 151, 155, 159, 164, 184, 185, 187, 191, 192, 193
कुता-सिखारा, 88, 115
कटा-विमान, 88, 117
कुट्टम्बलम (मंदिर में थिएटर), 183, 186

लादन-कोविल (गुफा-मंदिर), 56
लाड-खान मंदिर (ऐहोल), 67, 126
लक्कुंडी, मंदिर, 152, 153
लक्षित (टाइटल ऑफ महेंद्र पल्लव), 36
लक्षिताटन (गुफा-मंदिर), 38
लक्ष्मण टेंपल (तिरुविल्वमलाई), 188, 189
लक्ष्मी, 79
लक्ष्मी-देवी-मंदिर (डोड्डा-गड्डा-वल्ली में), 175
लाकुलिसा, 79, 80
ललता-बिम्बा, 65, 151, 164, 193
ललिता (देवी), 19
ललितांकुरा (पल्लव राजा महेंद्र प्रथम की उपाधि), 41, 43
ललितांकुरा-पल्लवेसवारा-गृह (केव-टेंपल), 39, 41
लंचना (विमान के शीर्ष पर संज्ञानात्मक प्रतीक), 87, 88, 109, 132, 146
लंकेश्वर (गुफा 16ए, एलोरा), 64, 70, 73
लासुना, (-राजधानी स्तंभ की श्रेणी), 92,

बाद के चालुक्य (चालुक्य देखें), 166, 169

बाद के चोल (देखें चोल), 167
बाद के पांड्य (पांड्य देखें), 106
लैटेराइट (सॉफ्ट-रॉक), 62, 77, 181, 184
'लेथ-टर्न्ड' (सॉफ्ट स्टोन पिलर), 136, 151, 156, 157, 158, 163, 186, 190
जालीदार खिड़की, 179
Layana (Lena), (गुफा), 26, 34
लीन-टू-रूफ, 189
लेप्टिनाइट (कठोर पत्थर), 111
चूना पत्थर (पलनाड), 12, 13, 16, 22, 35
लिंग (शिव लिंग), 42, 44, 54, 56, 60, 66, 70-73, 75, 77, 78, 79, 80, 81, 114, 117, 124, 140; बेसाल्ट का 113, 116; गुफा के साथ मोनोलिथिक, 66
लिंग-पीठ (अवुदैयार), 42, 56, 61, 66, 69, 73, 78, 79, 116, 140; अखंड गुफा के साथ, 66, 79
लिंगोद्भव, 60, 80
शेर-आधारित स्तंभ, 87, 113
लोमस ऋषि गुफाएँ, 26, 27
कमल पदक, 66
'लोअर शिवालय' (बादामी में), 130

माचेर्ला, 22
मंडली, 149
मैडम (मंजिला इमारत), 17
मदनिका, 156, 157, 162, 163
मधुर (अनंत विनायक मंदिर), 189

माधव, 19
मदुरै, 4, 5, 11, 34, 51-53, 61, 86, 96, **118, 167, 171, 172**
मदुरै असीरियन, 54
महाबलीपुरम (मामल्लापुरम), 4, 5, 26, 39, 43, 46, 50, 54, 59, 60, 78, 84, **97-100, 102, 106, 111, 112, 115, 181**
महा-चैत्य, 11, 12, 13, 22; अमरावती में, 13; घटाशाला, 13; जग्गय्या-पेट्टा, 13; नागार्जुनकोंडा, 13; पेड्डा गंजम, 13

इट्टागी में महादेव मंदिर, 153
महादेव पुष्पभद्र-स्वामिन, 23
महाद्वारा, 76, 85, 96
महाकूटेश्वर (मंदिर), 126, 128, 129, 174, 175, 176, 178, 179
महामंडपा, 23, 24, 30, 31, 63, 64, 68, 72, 74, 75, 94, 108, 124, 131, 139, 147, 170, 193, 194, 195
महामाई टेंपल, 151
महानंदी, 106, 175, 179, 180
महानंदीसवारा टेंपल, 175, 180
महानासिका, 89, 93, 193, 194, 196
महेंद्र प्रथम (पल्लव राजा) एम-वर्मन I, 35, 36, 38, 39, 43-46, 49, 56, 99
महेन्द्रवर्मन ई (पल्लव किंग), 43, 97
महेंद्र तृतीय (पल्लव राजा), 115
महेंद्र शैली के गुफा मंदिर, 38, 39, 42, 43, 46, 48, 52, 54, 55, 59, 60, 99
महेन्द्रवादी (केव-टेंपल), 39, 40, 41, 42
महेंद्रवर्मेश्वरा (टेंपल), 117, 118
महेंद्र विष्णुगृह (महेन्द्रवादी), 39
महसमूर्ति, 73, 75, 78, 79
माहेश्वरस, 37
महिष्मरदिनी, 49, 50, 59, 77, 79
महिष्मरदिनी-केव-टेंपल/मंडपम, 47, 48, 49
महिषमर्दिनी रॉक, 50
महिषासुर, 49, 99
माहिर (केव-टेंपल), 62, 65, 77, 80
मकर, 42, 93, 137, 155, 158, 164, 185
टूटा हुआ दिल, 195; बेहोशी, 136, 151, 157, 192, 193, 194
मकुटेश्वर मंदिर, 128, 129, 176
माला, 194; -स्थान, 47, 91, 194
मलाई-के-कोलुंडीश्वरम (गुफा-मंदिर), 54, 58
मलाई-यादि-क-कुरिची (गुफा-मंदिर), 53
मलाई-यद्यपति (केव-टेम्पल्स), 55, 57, 58, 59
मलाई-यक्कोविल (केव टेम्पल्स), 54-57
मालेगिट्टी शिवालय (बादामी), 129, 130 मलिका मालिकाई, 11, 23, 86, 125, 143, 144, 146, 147, 169, 183
मालिका-प्रकार, 184
मल्लिकार्जुन मंदिर - ऐहोल में, 175, 176; महाकुटेश्वर में, 129, 178; पटडकल में, 131, 133
मामल्ल (पल्लव नरसिंह-वर्मन द्वितीय की उपाधि), 43, 46, 84, 97, 103
मामल्लपुरम (-महाबलीपुरम), 25, 39, 46
मामल्ला शैली के गुफा-मंदिर, 46, 48, 82, 89, 99
मामंदुर (गुफा-मंदिर), 38-43, 54
मानसूत्र, 194
स्पॉट, 93
मंडगप्पट्टू-गुफा-मंदिर, 35, 36, 38, 40, 42, 43, 53, 56, 99
मंदाकाम, 194
मंडलम्मा मंदिर (वारंगल), 162
मंडप, 4, 5, 22-24, 27,28,30-32,38-50, **52-56, 58, 60, 63-65, 67, 68, 71-77, 81, 82, 85, 86, 94-96, 99, 102-08, 112, 116, 123-27, 129-34, 139, 143-52, 154-64, 167-73, 178-80, 182, 183, 186, 191-93**
मंडप-प्राचीन, 132, 164
मंडप-प्रकार गुफा-मंदिर, 53, 70
मंदसौर (अखंड मंदिर), 105, 105n
मंदिरम (-मंदिर), 29
मंगडू (गुफा-मंदिर), 54, 58, 60
मंगलेश (चालुक्य किंग), 35, 67, 281
मणिमेकलाई, 16, 17
मन्नारकोविल मंदिर, 118
मनराम, 16
मान्यखेता (राजधानी), 34, 61
मरन सदायन (पांड्या राजा), 53
मारन सेनदान (पांड्या राजा), 53
मसती-काल (महा-सती-काल), 15
मसिलीश्वरम (गुफा-मंदिर III, और

कुन्नाक्कुडी), 53
मसरूर (अखंड मंदिर), 105n
मतंगा-नकरा, 42
मतंगेश्वर मंदिर (कांडी), 120
मथास, 37
मौर्य साम्राज्य, 14, 15, 18,
19, 35
मेयोन, 18
16 मई
मेधी, 11, 12, 13, 14
मेगालिथिक-पंथ/स्मारक/स्थल, 7, 14, 15
मेगुती मंदिर (ऐहोल), 126, 127
मेले-के-कोविल (केव-टेंपल), 55, 87
मेलकोट (गुफा-मंदिर), 59, 62
स्मारक मंदिर, 17, 82, 118
मेनहेइर, 16
धातु-शीट-छत, 181, 184, 185, 187-89
मिल्कमेड्स केव (गोपीलेना-केव
27, एलोरा), 72
मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर, 172
मिथुन, 193
मोगलराजपुरम (गुफा-मंदिर), 62, 80
मोनोलिथिक नक्काशी, 63; -लिंग,
66, 69; -लिंग-पीठ, 69; -पिलर, 168;
-पीठ, 73; -रथ, 131; -श्राइन, 106; -स्तूप,
27; -मंदिर, 74; विमान, 106
मुदाबिद्री (जैन टेम्पल्स), 190
'मिट्टी और घास' निर्माण, 17
मुख-भद्र, 142
मुख-मंडप, 29, 40, 45, 48, 49, 54, 63,
64, 68, 70, 71, 75, 77, 85, 86, 94,
101, 103-05, 105, 106, 127, 136,
139, 149, 160, 161, 186, 188, 189, 194
मुख-पट्टी, 182
आमने-सामने, 142
मुक्कंती शिव मंदिर, 161
मुख्य विमान, 87, 89, 90, 91, 142
मुक्तेश्वर मंदिर (कांची), 120
मुकुंदनयनर टेंपल, 111, 115
मुलभृत्य, 122
मूलनाथ मंदिर (त्रिचूर), 184
कई तीर्थ कक्ष, 72
बहु-स्तंभ वाले मंडप, 96
बहुमंजिला, 88, 89, 133, 145
मुर्राम, 16
मुरुगन (कार्तिकेय), 8, 19
मुस्लिम, 38, 147
मुत्तरैयार (चीफ्टेंस), 38, 46, 51, 58, 121, 123
मुवराई-वेन्द्रण (केव-टेंपल अत), 54, 55
मुवारकोविल (कोडुंबलुर), 124
मैसूर, 2, 15, 59, 62, 67, 121, 124, 138,
154, 171
नादुकाल, 7, 15, 16
नाग, नागदेव, 92, 114; -राजा, 49
नागर (विमान की शैली), 88, 98, 101,
102, 120, 125, 131, 136, 137, 146
नगरम (मंदिर), 17, 19
नागार्जुन हिल्स, एन. कोंडा, 13, 14,
15, 20-22, 24, 26, 30, 45, 176
नागेश्वर टेंपल (अत कुम्भकोणम),
124, 149
नक्कलगुडी मंदिर (बिक्कावोलू), 136
नकुल-सहदेव रथ (अखंड)
विमान), 25, 89, 98, 100, 104
नल-अम्बलम, 184, 186, 188, 189
नालंदा, 29एन
नलतुनई ईश्वर मंदिर (पुंजई में), 124
नमक्कल (गुफा मंदिर), 52, 57, 59, 60
नमस्कार-मंडप, 183, 184, 187-89
नामेश्वर मंदिर (पिल्ललमरी), 161, 163
नामी रेड्डी (मुखिया), 161
नंदी (बाना राजधानी शहर), 126
नंदी (शिव मंदिरों में), 73, 75, 77, 80,
**87, 100, 107-09, 112, 116, 123, 142,
143, 144, 146, 147, 157, 159, 160, 186;**
रॉक-कट, 70, 82
नंदिवर्मन ई पल्लवमल्ला (किंग),
**118, 119, 120**
नंगवरम (मंदिर), 122

नप्पिन्नई (कृष्ण की पत्नी), 51
नारा-नारायण, 121
नरपति-सिंह पल्लव विष्णुगृह (इन शोर
टेंपल कॉम्प्लेक्स, महाबली-पुरम),
112
नरसिंह, 48, 53, 57, 59, 60, 79, 121, 186
नरसिंह (राजा, पूर्वी गंगा), 149
नरसिंहवर्मन मामला (पल्लव
किंग), 43, 46, 83, 97
नरसिंहवर्मन द्वितीय, राजसिंह
(पाल-लव राजा), 111, 114, 115
नारायण-बलि (समारोह), 35
नर्ततमलाई, गुफा मंदिर, 58, 60,
स्ट्रक्चरल मंदिर, 123
नासिक (निकट बौद्ध गुफाएँ), 27, 28
नासिका, 29, 70, 81, 93, 101-04, 109,
110, 129, 132, 133, 135, 148, 182, 185;
-किलिवासल, 187, 188, 189
नटराज, 19, 141, 144, 149, 150, 189, 195
नाट्य-मंडप, 194; -शाला, 150
नाट्य-शास्त्र, 141, 148
नवब्रह्मा मंदिर परिसर
(आलमपुर), 179
नवलिंग मंदिर (कुक्कनूर), 150, 151, 152

नवमूर्तियाँ (विष्णु रूप), 121
नवरंग (मंडप), 36, 67, 74, 95, 135,
136, 152, 154-57, 160, 161, 163,
170, 173, 194, 195
नेव, 95, 134
गिंगी के नायक (नायक), 167. 171-73;
-इक्केरी (चेलाड) के, 167, 171, 173;
-मदुरई के, 167, 171; तंजावुर के,
167, 171, 172; -वेल्लोर के, 167, 171,
नायक-पेंटिंग्स, 141; पीरियड,
144; -मंदिर, 172, 173
नयनमार (शैव संत), 4, 19, 37, 124, 146

नीलासंभू टेंपल (वारंगल), 162
निदा (-पंजारा), 89, 91, 103, 105, 194
निधिस (द), 69, 79
नीलकंठेश्वर गुफा-मंदिर (कुन्ना-थुर),
55

निरंधार (विमान), 64, 90, 101, 102,
104, 129, 137, 151, 152, 178, 179, 180,
194, 195
निरुति, 143
नोलम्बा (राजवंश)-वास्तुकला, 126
उत्तर भारतीय मंदिर का स्वरूप, 175
नॉर्थ पेन्नार (नदी), 61
उत्तरी (प्रसाद) मंदिर, 108
उत्तरी-रेखा प्रसाद, 105n
उत्तरी शैली/प्रकार प्रसाद, 5, 94,
128, 134, 136, 155, 159, 174, 175, 176, 177
उत्तरी शैली का प्रसाद शिखर, 174
उत्तरी प्रकार के अखंड मंदिर, 105
'उत्तरी' मंदिर (चालुक्य), 174
नृपाटूंगा (पल्लव किंग), 58
नृत्त-मंडप, 150, 194
न्याग्रोदा (सुदामा देखें)

अष्टकोणीय (अष्टकोणीय) छत, 20
ओलक्कन्नेश्वर मंदिर, 111, 114
खुद, 91, 92, 194
ओरंगल्लू (वारंगल), 158
उड़ीसा (कलिंग), 27, 94, 195
उड़ीसा की वास्तुकला, 175
उड़ीसा मंदिर, 105एन
'ऑर्डर' (वास्तुशिल्प), 91, 137
ओरुकल-मंडपम (गुफा-मंदिर), 43, 45,
**46, 95**
**Ottanitulıal (dance), 183**
ओवरडोर, 70, 73, 76, 82, 143, 146, 156,
157, 164, 169

86, 90, 101, 191, 194, 196, 197 पर
पडी-पी-पुरा, 182, 183
पद्मा, 92, 193, 194
पद्मा-बंधा, 47, 91, 92, 194
पद्मनाभस्वामी टेंपल, 186
पद्मनिधि, 69
पद्मा-पिता, 16, 185
पेंटिंग, छत और भित्ति चित्र, 17, 33, 44;
अजंता में, 33, 78

-बादामी, 78
-एलोरा, 78
-एट्टूमन्नूर, 189
-हम्पी, विरुपक्षा, 170
-कांची, कैलाशनाथ, 117
-केरल मंदिर, 181
-पैनामलाई, 115
-सित्तानवासल, 53
-तंजावुर बृहदेश्वर, 141
-तिरुमलापुरम, 58
:-तिरुनन्दिक्कारा, 58
-तिरुप्रायर, 189
चित्रित-चिह्न, 99; प्लास्टर, 84, 117; -कार्य, 186
पाला (जाक वृक्ष), 8
पालमपेट, मंदिर और, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164
पल्लव (राजवंश), 3, 30, 31, 34, 36, 38, 42, 44-46, 51, 55, 56, 59, 60, 66, 79, 83, 105-07, 109, 111, 112, 117, 118, 119, 121, 122, 131, 132, 137, 141, 146, 149, 164, 167
पल्लव-ग्रंथ (स्क्रिप्ट), 57; -इतिहास, 119; -शिलालेख, 4, 39; -आइकनोग्राफी, 103; -मूर्तिकला, 43; -शैली, 136; -तकनीक, 60, 109; -विमान, 120
पल्लव-चोल-पांड्य श्रृंखला, 166
पल्लव-चोल परंपराएँ, 170
पल्लव-पांड्या, 95, 96
पल्लवरम (गुफा-मंदिर), 38, 41, 42
पल्लवराया (चीफ), 148
पाली, 47, 92, 167, 194
पलियिली ईश्वरम (गुफा-मंदिर), 58
बॉल, 17
पल्ली-प-पदाई, 17
पंपपति मंदिर, 170, 176
चालबाज मंदिर, 162
पनाई (पेड़), 11
पनमलाई, मंदिर, 111, 114, 115, 116
प्रश्न, मंदिर, 122
पंचालेश्वरा (-पातालेश्वर), केव-टेंपल, 76
पंचलिंगेश्वर मंदिर, 180
पंचलिंगुला, मंदिर, 180
पंच पांडव गुफा-मंदिर, 38, 89
पंच पांडव मंडपम, गुफा-मंदिर, 48, 54
पांचा रथ, 91, 178
पंचातला, 87, 119
पंडिमंडलम, 51, 145
पांड्य (राजवंश)/पांड्यन, 3, 11, 15, 30, 31, 34, 36, 38, 46, 51, 58, 60, 66, 109, 121, 146, 147; -गुफा-मंदिर, 53, 61; -देश, 42; -बाद में, 148; -मंदिर, 79; -इलाका, 42, 122
पंड्या-मुत्तरैयार, 54, 60, 61
पांड्या-मुत्तरैयार अडिगैमन क्षेत्र, 60
पंजरा (निडा), 89, 91, 103, 105, 109, 116, 118, 119, 125, 132, 134, 136, 140, 142, 146, 153, 179, 184, 185, 187, 191, 192, 194
पापनसनाम टेम्पल्स (आलमपुर), 175
पापनाथ मंदिर (पटडकल), 178, 179
परम महेश्वर, 57
परमेश्वर ई (पल्लव किंग), 43, 44, 97, 103
परमेश्वर- महावराहा- विष्णुगृह (केव-टेंपल), 48
प्रान्तक (चोला किंग), 53
परशुराम, 186, 190
परिवादिनी, 57
परिवार, 194; -डिटीज ओर देवतास, 117, 194; -आलय, 194; तीर्थ या उप-तीर्थ, 24, 90, 105, 117, 118, 122, 132, 162
पार्थिवशेखरपुरम टेंपल, 190
पार्वती, 56, 60, 78, 79, 115, 184
पशुपत (पंथ), 37; (हथियार), 51
पातालेश्वर (पंचालेश्वरा), 76, 80
पत्र-लता, 42, 162; -तोरण, 93, 164
पट्टा, 39, 47, 65, 194
पट्टाभिराम मंदिर, 169
पट्टडकल, 63, 126, 135, 150, 152, 174, 177, 178
पट्टिका, 93, 155, 194

पवदाई, 15
पय्यानूर, मंदिर, 189
पेद्दा-गंजम, बौद्ध स्तूप, 13
पेनामागा, गुफा-मंदिर, 62, 80
पेंट छतें, 183, 185, 186, 187, 188, 189
पेनुकोंडा (शहर), 167, 171
छेद वाली स्क्रीन वाली दीवारें, 156; -खिड़कियाँ, **146**
पेरियापुराणाम, 146
Perumanam, मंदिर, 187, 188
पेरुम्बिदुगु मुत्तरैयार (मुखिया), 58
पेरुंचोरू, 15
फलक (अबेकस), 47, 92, 93, 141, 152, 153, 163, 195
***Pida-deul*, 175, 195**
पीदारी, 100
पीढ़ी रथ (नॉर्थ), 100, 101
पिडारी रथ (दक्षिण), 100, 102
Pillalamarri, मंदिर, 160, 163
पिल्लैयारपट्टी (गुफा-मंदिर), 53, 55
पिरानमलाई (गुफा-मंदिर), 56
पिरावटनेसवारा, टेंपल, 120
पिथा, 94, 124, 135, 195;
-रॉक-कट/मोनोलिथिक, 61, 66, 69, 72, 77, 114
पिथलकोरा (गुफाएँ), 28
पोदी-मनराम, 8, 20
पोदियिल, 16
पोर्ट्रेट, 171; स्कल्पचर, 57, 95, 124
पोतिका (कॉर्बेल), 40, 47, 52, 68, 92, 95, 141, 195; चित्र-प., 149, 167, 172; -पुष्प-प., 92, 149, 167, 172
प्रदक्षिणा, 10न, 12, 27, 28, 77, 171; -मंडप, 75; -पथ, 32
प्रज्ञापारमिता, 32
मामले, 85, 86, 107, 112, 114, 117, 122, 124, 126, 132, 134, 143, 147, 148, 151, 155, 156, 158, 167-70, 179, 180, 183, 186, 187
प्राकृत, 19
लिंक्स, 121, 123, 134, 142, 183, 195
प्रसाद (उत्तर भारत के मंदिर), 70, 85, 94, 105, 126, 128, 151, 165, 177, 192, 195, 196
प्रसाद, 70, 85, 94, 105, 126, 128, 151, **165, 177**
प्राचीन, 47, 87, 90, 91, 93, 98, 99, 101-05, 105एन, 116, 120, 128, 130, 131, 132, 135-37, 139, 140, 142, 153, 155, 159, 160, 164, 178, 182, 185, 187
प्रतापरुद्र (काकतीय किंग), 159
प्रति, 93
प्रतिहारस (डायनेस्टी), 105न
प्रतिष्ठा, 84
पुडुमंडपम (मदुरई), 172
पुलकेशिन द्वितीय (राजा), 61
**Pullamangai, Temple at, 124**
पंजाबी मंदिर 124 पर
हैव-ऑन, 16
पूर्ण-घटा, 149, 196, -कुंभ, 196
पुष्पलता, 42
पुष्पभद्र (सी पुष्पभद्रस्वामी)
पुष्पभद्रस्वामी टेंपल, 22, 23
पुष्पा-पोलिकाई (सी अंडर पोतिका)
Putla-gudem, मंदिर, 24
पुवलाईक्कुडी, गुफा मंदिर, 58

क्विलोन (कोल्लम), 51, 58

रचामल्ला (गंगा किंग), 125.
राजगोपुरम (रायगोपुरम), 96
राजराज प्रथम (चोल राजा), 138, 142, 144
राजराजा द्वितीय (चोल राजा), 145, 146
राजराजेश्वर टेंपल अत बिक्वावलु, 137; अत तंजावुर, 138 (बृहदेश्वर) अत दरअसुरम, 145
राजराजा नरेंद्र (ए. चालुक्य किंग), 137

राजसिंह (पल्लव किंग), 43, 44, 50, **55, 97, 111, 112, 115, 117, 122, 147**
राजसिंह टेम्पल्स, 113, 114, 116
राजसिंहेश्वर मंदिर, 112, 115, 117
राजस्थानी शैली, 179
राजेंद्र प्रथम (चोल राजा), 144-46, 148
राम, 185, 187, 188, 189
रामलिंगेसवारा टेंपल, 180

रामानुज, 19
रामानुज मंडपम (गुफा-मंदिर), 48, 49, 98, 101, 106
राम मंदिर, 162, 170, 187-89
रामतीर्थम (बुद्धिस्ट साइट), 14
रामायण, 158, 168, 170
रामेश्वर (गुफा 21, एलोरा), 21, 64, 67, 70,-72
रामेश्वर टेंपल, केलादी, 173
रामेश्वरम (रामनाथस्वामी टेंपल), 171

रंग मंडप, 22, 30, 195
रंगनाथ (विष्णु), 59
सुगावरम में रंगनाथ
गुफा-मंदिर, 43, 45
और नमक्कल, 57, 59
रंगनाथ टेंपल, श्रीरंगम, 171
रंगशाला, 150, 183
रंगास्वामी पीक, 16
राष्ट्रकूट (राजवंश), 29, 34, 38, 61-63, 65, 70, 72, 73, 77, 107, 135, 138, 150, 152; गुफा-मंदिर या खुदाई, 72, 73, 78; -लिंगपीठ, 79
रथ (एकाश्म विमान), 4, 26, 46, 84, 91, 97, 100, 101, 105, 178
रावलगुडी (रावलपुडी) गुफा-मंदिर, ऐहोल, 69, 79
रावण-टू-काई (गुफा 14, एलोरा), 71
रायगोपुरम्स, 168
रायवरम, गुफा मंदिर के पास, 54
रेड्डीगुडी, मंदिर, 163
रेखा, 174, 195; -देउल, 195; -नगर, 192; -प्रसाद, 177, 179, 180; रिज-रूफ, 183, 188, 189
नदी देवी, 169
रॉक-(कट)-आर्किटेक्चर; 2, 26, 63, 67, 70, 72, 83, 109, 111; -गुफाएं और गुफा-मंदिर, 26, 39, 56, 69, 95, 121; -गुफा-सेल, 60; -नक्काशी, 50; -चैल्य, 27; -गांव, 70; -लिंग, 61, 69, 73, 75; -मंडप टाइप मंदिर, 99; -स्तूप, 29
रॉक-फोर्ट मंदिर (तिरुचिरापल्ली), 172
छत वाला मंदिर (हाइपेथ्रल के सामने), 17
रुद्राचार्य, 57
रुद्रवालीसवाराम केव-टेंपल, 38, 40, 41

रुद्रेश्वर मंदिर परिसर (हनम-कोंडा), 162
रुक्का-चैत्य (वृक्ष चैत्य), 9

सभा, 20, 88, 184; -मंडप, 94, 144, **149, 150**
सदूराम, 42, 45, 195
शैलगृह (पत्थर का घर), 29
शैव, 37, 56, 67; -पंथ, 37; -पंथ, 20; -हैगियोलॉजिस्ट, 19; आइकनोग्राफी, 117; -संत (नयनमार देखें), 70, 71; -मूर्तियां, 137; -मंदिर, 78, 148, 150
सखास, 65, 143, 164
धीरे-धीरे, 37, 56
शक्ति, 78
सालास (-कोष्ठा), 20, 21, 47, 89, 91, 101-05, 108, 109, 113-19, 125, 128, 129, 130, 132-36, 146, 153, 179, 184, 185, 192, 193; -शिखर, 96, 103, 105न, 107, 115, 122, 144, 147, 148, 169, 185, 195; -विमान, 88, 169
सलीखूंदम (बुद्धिस्ट साइट), 14, 21
साल्सेट, कोंडावले, गुफा, 27, 96
सलुवनकुप्पम, गुफा-मंदिर, 43, **44, 50**
समाचतुरसरा, 193
संप्रदाय, 38
सांची, 12, 20, 92
संधारा, 64, 71-73, 75, 77, 90, 103, 118, 123, 130, 134, 139, 142, 145, 152, 173, 178-80, 182, 184, 188, 194, 195; -आदितला, 125, 131, 132, 133, 138; -रेखाप्रसाद, 180; -विमान, 129, 130, 173
बलुआ पत्थर (चट्टान), 35, 35एन, 62, 63, 67, 83, 105, 111, 112, 118, 120, 129, 136, 150, 152, 160, 163; लाल, 160; ट्रैक्टेबल, 97
सैंडस्टोन-ट्रैप रॉक परंपरा, 150

संगम, 7, 17, 18, 19, 59; -कविता, कवि, **18, 19**
रक्तस्राव, 4
संगमेश्वर टेंपल
पट्टडकल के, 131, 132
महाकुटेश्वर में, 176, 179
शंखनिधि, 69
संकरा, शंकराचार्य, 4, 31, 56, 170, 185
संकर्म (बुद्धिस्ट साइट), 14, 27, 83
संस्कृत, 19; -एपिग्राफ्स, 143
सप्तमत्रिका, 55, 64, 69, 78, 79, 117, **122, 185**
सप्तरथ, 91
सारंगपानी मंदिर, 149
सरस्वती, 78, 79, 151
सर्वतोभद्र, 64, 125, 140
सस्ता, 183, 186, 189
सती पत्थर, 15
शत्रुमल्ला (पल्लव महेंद्र I की उपाधि), 39; शत्रुमल्लेश्वर, गुफा-मंदिर, 41
सत्य (विष्णु का रूप), 121
सत्यगिरीश्वर गुफा-मंदिर, 54, 57, 58
सत्यपुत्स, 15
सत्यावॉलू (सातवेल) टेम्पल्स, 106, 180
सौर (सूर्य पंथ), 37, 56
सायना 118
शिस्ट (चट्टान), 62, 81, 136
सेम्बियन महादेवी (चोल रानी), 138
सेविलिप्पट्टी, गुफा-मंदिर, 55
सेयोन (भगवान), 18, 19
षडंग षड्वर्ग (विमान), 87
पांचवां, 4, 37, 56,
षणमाता-स्थापनाचार्य, 56
षणमुख, 172
शीट मेटल की छत, 181
शोर टेंपल (महाबलीपुरम), 50, 111, 112, 119, 132, 133
श्राइन-सेल्स, 52, 54, 61, 64, 106; -फॉर्म्स, 89; -मॉडल्स, 106; -मोटिफ्स, 168, 185
सिद्धनाकोला मंदिर, ऐहोल के पास, 178
साइड-मंदिर, 132; -विमान, 159
टी.एस.आई. 15
शिखर, 24, 25, 84, 87, 88, 94, 98, 99, 101-04, 105, 108, 109, 112-16, 118-20, 122-25, 129-33, 135-37, 142, 151-53,
वाईएसएस वाईएसडी [illegible]
**195, 197**
शिखर-मंदिर (मंडप मंदिर के सामने, 70
शिल्पादिकरम, 8
अधिशेष, 1, 2, 5, 11, 25, 84, 85, 88, 94, 125, **138**
सिंहाचलम मंदिर, 149
आमने-सामने, 153
सिंह विष्णु (पल्लव किंग), 39, 49
सिंगप्पेरुमलकोइल (गुफा-मंदिर), 43, **44**
सिंगावरम केव-टेंपल, 43-45
सीतामढ़ी की गुफाएँ, 20, 36
सीतारामपुरम, केव-टेंपल, 62, 80
सित्तन्नवसल (गुफा-मंदिर), 53, 58, **141**
शिव, 19, 22, 35, 38-40, 42-44, 46, 49, 53, 54, 56, 57, 60, 69, 71, 75-78, 81, 99, 103, 110, 112, 114, 116, 123, 129, 141, 157, 159, 161, 184, 185, 186; लकुलिस, 79; -लिंग, 77; नटराज, 123; पार्वती कथा, 79; -तांडव, 79; -मंदिर, 113, 122, 123, 142, 187-89; -योगी, 79
सियामंगलम, गुफा मंदिर, 39-43
स्कंद, 44, 56
स्नेपना, 94, 195; -मंडप, 94, 150, 195
सोपस्टोन (सॉफ्ट रॉक), 136
सॉफ्ट रॉक्स, 36, 38, 62, 80; स्टोन, 111, 126, 150, 166, 169; -स्टोन ट्रेडिशन, 37, 111
सोमा, 143
सोमनाथ (होयसल सेनापति), 158
सोमनाथपुर, मंदिर, 155, 158
सोमस्कंद, 44, 56, 103, 113-18
सोमेश्वर मंदिर, पिल्लालमरी, 160; चेब्रोलू में, 180
सोने भंडार, केव्स अत, 20

रामानुज, 19
रामानुज मंडपम (गुफा-मंदिर), 48, 49, 98, 101, 106
राम मंदिर, 162, 170, 187-89
रामतीर्थम (बुद्धिस्ट साइट), 14
रामायण, 158, 168, 170
रामेश्वर (गुफा 21, एलोरा), 21, 64, 67, 70, 72
रामेश्वर टेंपल, केलादी, 173
रामेश्वरम(रामनाथस्वामी टेंपल), 171

रंग मंडप, 22, 30, 195
रंगनाथ (विष्णु), 59
रंगनाथ गुफा-मंदिर
सुगावरम में, 43, 45
नमक्कल में, 57, 59
रंगनाथ टेंपल, श्रीरंगम, 171
रंगशाला, 150, 183
रंगास्वामी पीक, 16
राष्ट्रकूट (राजवंश), 29, 34, 38, 61-63, 65, 70, 72, 73, 77, 107, 135, 138, 150, 152; गुफा-मंदिर या खुदाई, 72, 73, 78; -लिंगपीठ, 79
रथ (एकाश्म विमान), 4, 26, 46, 84, 91, 97, 100, 101, 105, 178
रावलगुडी (रावलपुडी) गुफा-मंदिर, ऐहोल, 69, 79
रावण-टू-काई (गुफा 14, एलोरा), 71
रायगोपुरम्स, 168
रायवरम, गुफा मंदिर के पास, 54
रेड्डीगुडी, मंदिर, 163
रेखा, 174, 195; -देउल, 195; -नगर, 192; -प्रसाद, 177, 179, 180; रिज-रूफ, 183, 188, 189
नदी देवी, 169
रॉक-(कट)-आर्किटेक्चर; 2, 26, 63, 67, 70, 72, 83, 109, 111; -गुफाएं और गुफा-मंदिर, 26, 39, 56, 69, 95, 121; -गुफा-सेल, 60; -नक्काशी, 50; -चैत्य, 27; -गांव, 70; -लिंग, 61, 69, 73, 75; -मंडप टाइप मंदिर, 99; -स्तूप, 29
रॉक-फोर्ट मंदिर (तिरुचिरापल्ली), 172
छत वाला मंदिर (हाइपेथ्रल के सामने), 17

रुद्राचार्य, 57
रुद्रवालीसवाराम केव-टेंपल, 38, 40, 41
रुद्रेश्वर मंदिर परिसर (हनम-कोंडा), 162
रुक्का-चैत्य (वृक्ष चैत्य), 9

सभा, 20, 88, 184; -मंडप, 94, 144, 149, 150
सदूराम, 42, 45, 195
शैलगृह (पत्थर का घर), 29
शैव, 37, 56, 67; -पंथ, 37; -पंथ, 20; -हैगियोलॉजिस्ट, 19; आइकनोग्राफी, 117; -संत (नयनमार देखें), 70, 71; -मूर्तियां, 137; -मंदिर, 78, 148, 150
सखास, 65, 143, 164
धीरे-धीरे, 37, 56
शक्ति, 78
सालास (-कोष्ठा), 20, 21, 47, 89, 91, 101-05, 108, 109, 113-19, 125, 128, 129, 130, 132-36, 146, 153, 179, 184, 185, 192, 193; -शिखर, 96, 103, 105न, 107, 115, 122, 144, 147, 148, 169, 185, 195; -विमान, 88, 169
सलीखूदम (बुद्धिस्ट साइट), 14, 21
साल्सेट, कोंडावले, गुफा, 27, 96
सलुवनकुप्पम, गुफा-मंदिर, 43, 44, 50
समाचतुरसरा, 193
संप्रदाय, 38
साँची, 12, 20, 92
संधारा, 64, 71-73, 75, 77, 90, 103, 118, 123, 130, 134, 139, 142, 145, 152, 173, 178-80, 182, 184, 188, 194, 195; -आदितला, 125, 131, 132, 133, 138; -रेखाप्रसाद, 180; -विमान, 129, 130, 173
बलुआ पत्थर (चट्टान), 35, 35एन, 62, 63, 67, 83, 105, 111, 112, 118, 120, 129, 136, 150, 152, 160, 163; लाल, 160; ट्रैक्टेबल, 97
सैंडस्टोन-ट्रैप रॉक परंपरा, 150

संगम, 7, 17, 18, 19, 59; -कविता, कवि, **18, 19**
रक्तस्राव, 4
संगमेश्वर टेंपल
  और पट्टडकल, 131, 132
  महाकूटेश्वर में, 176, 179
शंखनिधि, 69
संकरा, शंकराचार्य, 4, 31, 56, 170, 185

संकर्म (बुद्धिस्ट साइट), 14, 27, 83
संस्कृत, 19; -एपिग्राफ्स, 143
सप्तमात्रिका, 55, 64, 69, 78, 79, 117, **122, 185**
सप्तरथ, 91
सारंगपानी मंदिर, 149
सरस्वती, 78, 79, 151
सर्वतोभद्र, 64, 125, 140
सस्ता, 183, 186, 189
सती पत्थर, 15
शत्रुमल्ला (पल्लव महेंद्र I की उपाधि), 39; शत्रुमल्लेश्वर, गुफा-मंदिर, 41

सत्य (विष्णु का रूप), 121
सत्यगिरीश्वर गुफा-मंदिर, 54, 57, 58
सत्यपुत्स, 15
सत्यावॉलू (सातवेल) टेम्पल्स, 106, 180
सौर (सूर्य पंथ), 37, 56
सायना 118
शिस्ट (चट्टान), 62, 81, 136
सेम्बियन महादेवी (चोल रानी), 138
सेविलिप्पट्टी, गुफा-मंदिर, 55
  सिय्योन (ईश्वर), 18, 19
षडंग षड्वर्ग (विमान), 87
पांचवां, 4, 37, 56,
षणमाता-स्थापनाचार्य, 56
षणमुख, 172
शीट मेटल की छत, 181
शोर टेंपल (महाबलीपुरम), 50, 111, 112, 119, 132, 133
श्राइन-सेल्स, 52, 54, 61, 64, 106; -फॉर्म्स, 89; -मॉडल्स, 106; -मोटिफ्स, 168, 185
सिद्धनाकोला मंदिर, ऐहोल के पास, 178
साइड-मंदिर, 132; -विमान, 159

शिखर, 24, 25, 84, 87, 88, 94, 98, 99, 101-04, 105, 108, 109, 112-16, 118-20, 122-25, 129-33, 135-37, 142, 151-53, 155, 159, 160, 162, 165, 172, 173, 175, 177, 178-82, 185, 188, 189, 191-93, 195, 197
शिखर-मंदिर (मंडप मंदिरों के विपरीत), **70**
शिल्पादिकरम, 8
अधिशेष, 1, 2, 5, 11, 25, 84, 85, 88, 94, 125, **138**
सिंहाचलम मंदिर, 149
आमने-सामने, 153
सिंह विष्णु (पल्लव किंग), 39, 49
सिंगप्पेरुमलकोइल (गुफा-मंदिर), 43, **44**
सिंगावरम केव-टेंपल, 43-45
सीतामढ़ी की गुफाएँ, 20, 36
सीतारामपुरम, केव-टेंपल, 62, 80
सित्तन्नवसल (गुफा-मंदिर), 53, 58, 141

शिव, 19, 22, 35, 38-40, 42-44, 46, 49, 53, 54, 56, 57, 60, 69, 71, 75-78, 81, 99, 103, 110, 112, 114, 116, 123, 129, 141, 157, 159, 161, 184, 185, 186; लकुलीश, 79; -लिंग, 77; नटराज, 123; पार्वती कथा, 79; -तांडव, 79; -मंदिर, 113, 122, 123, 142, 187-89; -योगी, 79
सियामंगलम, गुफा मंदिर, 39-43
स्कंद, 44, 56
स्नेपना, 94, 195; -मंडप, 94, 150, 195
सोपस्टोन (सॉफ्ट रॉक), 136
सॉफ्ट रॉक्स, 36, 38, 62, 80; -स्टोन, 111, 126, 150, 166, 169; -स्टोन ट्रेडिशन, **37, 111**
सोमा, 143
सोमनाथ (होयसल सेनापति), 158
सोमनाथपुर, मंदिर, 155, 158
सोमस्कंद, 44, 56, 103, 113-18
सोमेश्वर मंदिर, पिल्लालमरी, 160; चेब्रोलू में, 180
सोने भंडार, केव्स अत, 20

दक्षिणी मंदिर परिसर, 107
दक्षिणी/दक्षिणी प्रकार या
शैली-मोनो-लिथिक विमान, 105; -मंदिर
या विमान, या टियर वाले विमान,
4, 5, 86-88, 91, 94, 96, 97, 98, 114, 123, 128, 134, 149, 151, 159, 174-77, 179, 180, 181
श्रद्धा, 35
श्रवण बेलागोला, 4, 125
श्री, 19, 122; -देवी, 122
श्री कोयल, 181-84, 188, 189, 190
त्रिचूर में श्री मूलनाथ मंदिर, 184
श्रृंगेरी मठ, 170
श्रीनिवासनल्लूर, मंदिर, 124
श्रीरंगम (मंदिर), 86, 97, 171
श्री वल्लभ पांड्या (राजा), 54
श्रीविल्लिपुथुर, मंदिर-गोपुरम, 171
ताराकार/तारकीय/ताराकार (योजना मंदिर), 154, 156, 157, 158
स्तंभ, 194, 196
स्तंभ-तोड़ना, 92, 185, 186
स्थापति, 1, 63, 172
स्थल, 11; -वृक्ष, 11
स्थानक, 118
पत्थर और ईंट, मंदिर, 95
पत्थर से बने, 162, 186; जंजीरें, 168; निर्माण, 7; मंदिर, 124; विमान, 181
प्लास्टर, 17, 44, 66, 84, 171, 181
स्तूप, 3, 11-15, 17, 20, 21, 27, 28, 32, 83 (हाइपेथ्रल)
भट्टिप्रोलु, जग्गय्यापेट्टा, गारी-कपाडू, 13
अमरावती, 13, 14
सलीखूंदम, रामतीर्थम, संका-राम, 14
स्तूप-चैत्य, 21, 22; -मंदिर, 21
हाइव्स (अंतिम), 84, 85, 87, 88, 96-98, 101, 103, 104, 108, 112, 113, 115, 119, 142, 153, 155, 176, 177, 182, 184, 185, **187-89, 196**
स्तूप (-स्तूपी), 196
सुभद्रा, 79
सुब्रह्मण्य-कार्तिकेय, 53, 55, 56, 57, 60, 123, 144, 172; -गुफा मंदिर, 53, 56; -तंजावुर में मंदिर, 144, 172; पय्यानूर में, 189
उप-मंदिर, 124
सुचिन्द्रम मंदिर, 190 पर
सुदामा केव्स, 26, 27
सुद्धम्मा-देवसभा, 26, 28
सुकपुरम, मंदिर, 187
सुख-नासा (नासिका), 29, 93, 108, 131, 133, 136, 151, 153, 155, 160, 162, 164, 169, 170, 173, 175, 177, 178, 180, 182, 192, 193, 194, 196
सुला-देव, 104
सुंदरमूर्ति नयनर, 141
सुंदर वरदा पेरुमल मंदिर, 118, 120
सुंदरेश्वर मंदिर, तिरुक्कट्टलाई, 122
सुंदरेश्वर-मीनाक्षी, 148
सूर्य मंदिर, कोणार्क, 149
सूर्य, 19, 56, 57, 77-80, 159, 162; -नारायण, 78
स्वस्तिक, 12
स्वयंभू मंदिर (वारंगल), 162
इससे पहले, 47, 92, 193, 196
ताड़पत्री, मंदिर, 169
तला, 86, 87, 88, 91, 93, 101-04, 108, 109, 113-20, 123, 125, 129-33, 136, 137, 139, 141, 142, 145, 146, 148, 151-53, 155, 176, 177, 182, 191, 196, 197; -हर, 146, 172; -हर्निया, 90; -परास-तारा, 136, 140
तलच्चंदा, 86, 93, 96, 101
तलगिरीश्वर मंदिर (पनामालाई), 111, **114**
टैल्क (सॉफ्ट-रॉक), 154
तली टेंपल (नियर कोझीकोड), 187
तालीनाथ टेंपल, तिरुप्पथुर, 123, 133
तलीपारम्भा टेंपल, 187
तालिकोट्टा, 171

तलकाड (गंगा राजधानी), 59, 121, 124 तमिलगम (तमिलनाडु), 7
तमिलियन, 148; -आर्किटेक्चर, 139; -किंगडम्स, 15
तमिलनाडु-क्षेत्र, देश, भूमि, राज्य, क्षेत्र, भूभाग, 4, 15, 17, 18, 20, 37, 44, 51, 58, 62, 123, 124, 138, 145, 148, 166, 170, 171, 181, 185, 186, 190
तमिल-भजन-गीतकार, 37; -शिलालेख-शिलालेख, 11, 18, 143; -भाषा, 18; -साहित्य, 51, -संगम, 17
तांडव, 60, 81; आनंद (शिव नट-राज का, सबसे प्रारंभिक प्रतिनिधित्व), 123; -मूर्ति (पूर्व रूप), 43, 79
तांत्रिक अनुष्ठान, 4
बनो (नदी), 61
तरकब्रह्मा टेंपल (आलमपुर), 179
तरंगा, 39, 47, 52, 54, 55, 194, 196; -पोटिका, 92, 195, 196
तारप्पागुडी मंदिर (ऐहोल), 178
तवा, तवा गुफा (उदयगिरी), 83
तैयारसनिधि (विष्णु टेम्पल्स), 148
तेलुगु, 37
तेलुगु-चोड़स (राजवंश), 38, 81
मंदिर कार, 169
टेंपल सिटीज-चिदंबरम, मदुरई, श्रीरंगम, एंड तिरुवन्नामलाई, 86
मंदिर परिसर, 86, 93, 96, 97, 105n, 132, 148, 171, 172, 186
मंदिर इकाई, 145
तेनकैलासम मंदिर, 184
टेर (एप्सिडल मंदिर), 21, 24, 25, 135
टेराला, मंदिर, 176
टेरी, 16
छप्पर की छत, 17
थाईलैंड, 18
तंजावुर (तंजौर), 5, 38, 51, 86, 87, 97, 121, 123, 138, 145, 148, 153, 163
तंजावुर आर्ट गैलरी (दारासुरम मूर्तियां), 147
हज़ार स्तंभों वाला हॉल, 96
हज़ार खंभों वाला मंदिर (हनम-कोंडा), 159
तीन मंजिला (त्रितला), 81, 102, 112, 120, 125, 136, 143, 150, 188
त्रिकोटिठनम टेंपल, 189
'बाघ-गुफा' (यलिमंडपम) और सला-वनकुपम, 50
टाइलें, 181, 184, 187, 188
तिलई (पूजा का पेड़), 11
टिम्बर, 181; -वर्क 186; और मेटल शीट छत, 183
टिन-ताल (गुफा 12, एलोरा), 33, 73, 81
टीपू सुल्तान, 187
तीर्थ, 11
तीर्थंकर, 54, 74, 125
तिरुचिरापल्ली, 11, 120; -गुफा मंदिर, 39, 41, 51, 52, 55, 57; -स्ट्रक्चरल मंदिर, 172
तिरुगोकर्णम, गुफा-मंदिर, 55, 57
तिरुक्कलक्कुडी (गुफा-मंदिर), 55
तिरुक-कालुक-कुनराम, गुफा-मंदिर, 43 तिरुक्कमकोट्टम (अम्माना देवी तीर्थस्थल), 148
तिरुक्कट्टलाई मंदिर, 122
तिरुमलाई, गुफा-मंदिर, 56
तिरुमलाई नायक (किंग), 171
तिरुमलापरम, गुफा-मंदिर, 54, 55, 58
तिरुमयम, गुफा-मंदिर, 54, 57, 58
तिरुनन्दिक-करा केव-टेंपल, 58, 60, 61
तिरुनावे मंदिर, 187, 188
तिरूप-परंकुनराम, केव-टेंपल, 42, **52, 53, 54, 55, 56, 57**
तिरुप्पत्तूर (तिरुपतुर रामनाथ-पुरम डीटी.) टेंपल, 123, 133
तिरुप्पत्तूर (तिरुचिनापल्ली Dt. मंदिर, 120, 133
तिरुप्रांगोडे मंदिर, 187, 189
तिरुप्रयार मंदिर, 189
तिरुप्पुर मंदिर, 122
तिरुत्तंगल, गुफा-मंदिर, 57, 59
तिरुत्तनी, विराटनेश्वर मंदिर, 121, 122
तिरुवादी, 16

तिरुवडीगाई टेंपल, 121
तिरुवलीश्वरम मंदिर, 123
तिरुवल्लम टेंपल, 190
तिरुवनची-क-कलम टेंपल, 187
तिरुवंगड मंदिर, 188
तिरुवन्नामलाई (अरुणाचलेश्वर),
-मंदिर शहर, 86; -परिसर, 96;
-गोपुरा, 148, 168
तिरुवन्नूर मंदिर, 189
तिरुवरुर (तिरुवल्लूर) टेंपल, 149
तिरुवेल्लारई, गुफा-मंदिर, 52, 55, 58
तिरुवेलुच्चियूर (-सलुवंकुप्पम), 50
थिरुविल्वमलाई मंदिर, 188
तिरुवोरियूर मंदिर, 145
तोंडईमंडलम (पल्लव देश),
39, 46, 53, 55, 62, 106, 111, 136, 145
बेहोशी, 12, 27, 81, 92, 93, 99, 101,
106, 132, 134, 143, 144, 153, 159, 162,
164, 169, 182, 187, 192, 194, 196, 197;
-चित्रा बेहोशी, 93; मुखपट्टी, 98;
-स्तंभ, 197
तीन, 15
ट्रैप (चट्टान) आउटक्रॉप, 76; -रिज, 70
पेड़-मंदिर, 9; मंदिर, 20; पूजा 11

'ट्रेंचिंग तकनीक', 109
त्रिभंग (मुद्रा), 49
त्रिभुवनम मंदिर, 145
त्रिचंबरम मंदिर, 187, 188
त्रिचूर (तिरुचूर), 54, 183, 184, 189
त्रिरुक्कंदीयूर टेंपल, 187
त्रिकुर, गुफा-मंदिर, 54, 58, 60
त्रिकुटा, 64, 69, 125, 158, 159, 162, 176, 197

त्रिकुटाचल (-त्रिकुटा), 154,
त्रिमूर्ति (ट्रिनिटी), 56, 77, 78, 99, 115
त्रिमूर्ति गुफा-मंदिर, 38, 78, 97, 98
त्रिपत्ता, 93
त्रिकोशीय शिव गुफा-मंदिर, 49
तीन मंदिरों वाला मंदिर, 161, 163
त्रिपुरान्तक (सिवा), 80, 141
त्रिपुरान्तकेश्वर टेंपल, 120
त्रि-रथा, 91, 178-80; -शिखर, 178-80-
त्रि-तल, 120, 123, 131, 136;
-कुटवी-मान, 108; -विमान, 109, 190
त्रितला मंदिर, 187
त्रिविक्रम (विष्णु), 48, 59, 79
त्रिविक्रम मंदिर, 24
तुलजा गुफा (लीना) जुन्नार में, 27, 28
तुंगभद्रा (रिवर), 175
तुवरंगडु गुफा-मंदिर, 60
दो मंजिला, 74, 84, 99, 104, 107, 114,
115, 120, 143, 185, 187, 188, 189

उदयगिरी (विदिसा के पास), 35एन, 83
उदयगिरि (उड़ीसा), 27 पर गुफाएँ
उद्गम, 32, 134, 136, 179, 192, 197
एक, 43, 44, 116
उमय्यंदर गुफा-मंदिर, 54, 56
उमाशहीतामूर्ति, 56
उंडावल्ली, गुफाओं की खुदाई, 33, 62,
**80, 81, 106**
एकात्मक प्रकार का मंदिर, 94
चौड़ाई, 85, 93, 197
पपीता, 85, 98, 100, 108, 120, 133, 134,
139, 142, 145, 154, 156-58, 160, 161,
163, 173, 197
'ऊपर-शिवालय' (बादामी), 137
उरुवेला, 9
उष्णीषा, 196
उत्सव मंडप, 94, 150, 197
उत्सव मूर्तियाँ, 150, 193
उत्तरंगा, 65, 70
उत्तरकैलासा टेंपल, 145
उत्तिरा (बीम) 92, 195
उत्तिरामेरुर मंदिर, 118, 120

वडक्कुनाथन मंदिर, 183, 184, 185,
**189**
वागीश्वरम गुफा-मंदिर, 58, 59
सफलता, 87, 88, 132, 133, 146
वैखनसा अगम, 121
बच्चे, मंदिर, 189
वैकुंठनाथ (विष्णु), 79

वैकुंठ पेरुमल मंदिर, कांची में, 118; उत्तिरामेरुर में, 120
वैशाली, 10
वैष्णव, 37, 49, 56, 68, 69; -धर्मगुरु, 19; -संत (अलवर देखें); -मंदिर, 148
वैष्णव, 71, 119; नक्काशी, 78; -पंथ, 20; -आइकनोग्राफी, 117; -किंवदंतियां, 79; -मंदिर परिसर, 105n
वैताल मंदिर (केरी-गोवा), 128
वजन, 195
वज्र, 19; -असना, 9
बच्चे (नदी), 8
वाकाटक (राजवंश), 28
वल्लभी, 195
वलैयानकुट्टई रथ, 100, 101
वालिश्वर मंदिर (कांची), 120
वालिया-उदयादिच्चापरम मंदिर, 190

वालियों (गोद), 18, 19
वल्लम, गुफा मंदिर, 39, 40, 42, 46
वन्नी (पूजा में प्रयुक्त वृक्ष), 8
वरदराज मंदिर (कांची), 168, 171
वराह (विष्णु), 49, 79, 121
वराहमंडपम केव-टेंपल, 47, 48
हम कर सकते हैं, 9
वाराणसी, 9, 143, 148
वसंतेश्वरम केव-टेंपल, 39, 40, 41, 46

वास्तु, 2, 5; -शास्त्र, 83
वासुदेव (विष्णु) मंदिर, 162
वातपत्रसायिन मंदिर, 171
वातापी (बादामी देखें)
गुंबद जैसी या गुंबददार छत, 88
वायु, 143
देखें, 64, 67, 70, 160, 162, 163
वैदिक, 1, 37; -हिंदू, 18; -परंपरा, 37
वेदिका, 197
वेल्ली (पूजा में वृक्ष), 8
वेल्लोर (शहर), मंदिर, 161, 171, 172
वेम्बू (पूजा में वृक्ष), 8, 10n, 11
वेनाडु (क्षेत्र), 58
Vendau (भगवान), 18, 19

वेंगई (पूजा में वृक्ष), 8
वेंगी (राजधानी शहर), 34, 61, 62, 80, 136, 174

वेंकटेश मंदिर (वारंगल), 162
वेसर (विमान शैली), 29, 32, 88, 98, 99, 104, 120, 125, 131, 146
वेट्टुवनकोइल (अखंड विमान), 109, 121

विचित्रचित्त (पल्लव महेंद्र की उपाधि), 36
58 साल के मुत्तरैयार से आमना-सामना
विदिशा, 35एन, 83
विद्याधरपुरम (बुद्धिस्ट साइट), 21
विद्याधर तोरण, 93
विद्यारण्य, 170
विद्या-परिवादिनी, 57
विहार, 2, 22, 27-29, 63; अजंता में (नंबर 8, 12, 13, 30), 28 (नंबर 3, 5, 14, 23, 24, 28, 29), 29, (नंबर 16), 29.
विहार-चैत्य, 29, 63
विजयादित्य (चालुक्य किंग), 131, 134, 180; -गुनगा, 136
विजयालयचोलिस्वरम टेंपल, 123
विजयनगर (राजवंश), 164, 167, 170, 171, 173, 176, 190; -साम्राज्य, 36, 165, 166, 177; -गोपुर, 170; -खंभे, 173; -संरचना, 171; -शैली, 168; -समय, 149; -वायसराय, 171; -विमान, 170
विजयनारायण टेंपल (बेलूर), 155
विजयस्तम्भ, 128
विजयवाड़ा, बौद्ध स्थल/गुफा-मंदिर, 21, 62, 80, 81, 106
विक्रमादित्य (चालुक्य राजा), 131; -II, 134
विलप्पकम गुफा मंदिर, 39, 141
विलिनम (विझिनम) गुफा-मंदिर, 54, 60
विमान, 4, 5, 11, 23, 32, 46, 47, 70, 83, 85, 89-91, 93, 94, 96, 97-99, 101, 102, 104-09, 113-16, 119-23, 125, 126, 129-34, 136, 139-50, 153-65, 167-70, 172-74, 177-79, 182, 183, 190-93, 195, **196**
विमाना-अदीतला, 130, 147, 149, 156

-अंतराल, 156
-वास्तुकला, 83
-अष्टांग, 87, 101
-चतुर्मुख, 108
-कॉम्प्लेक्स, 107
-चालुक्य 131
-द्वितला, 99, 101, 115, 117
-द्वितलगजपृष्ठ, 104
-द्वितला-कुटा, 118
*—dvitala sala*, **117**
-एकताल, 99, 123, 124
*—ekatala-alpa*, **87, 88**
-द्रविड़, 98
-देश, 106
-वेसरा, 98
-चार मंजिला, 118, 132, 133
-सागौन 87
-कोष्ठादेवतास, 122
-दीवारें, 117
-कर्णकुता, 129
-जैसे मंदिर, 87
-मोनोलिथिक, 70, 80, 83, 89, 106, 107, **109**
-बहुमंजिला, 85, 89
-निरंधार; 129
-पल्लव, 120
-पंचातला, 87
-एकल, 85, 121
-डॉलर, 191
-तीन मंजिला या त्रितला, 90, 109, 150
-दो मंजिला, 87, 115
-मंदिर, 83, 85
-प्रकार शिखर, 177
-प्रकार तीर्थस्थल, 70
-वेसर, 99
विनाधर (शिव), 124
वीरभद्र टेंपल-वारंगल, 162
173 आता है
विरलूर टेंपल, 123
विरासीखमणि, केव-टेंपल, 55, 58
विराटनेश्वर मंदिर, 121, 122
विरिन्दुपुरम मंदिर, 172
विरुपाक्ष मंदिर-पट्टडकल, 131, 132, 133; -हम्पी, 170
विशालाक्षी मंदिर, काशी-वाराणसी, 148
विसालुर मंदिर, 122
विष्णु, 4, 10n, 18, 19, 22, 35, 36, 40, 42, **44-46, 49, 52, 53, 56-58, 60, 67, 69, 71, 77-82, 98, 99, 103, 110, 112, 115-18, 121, 122, 130, 155, 158, 159, 162, 169**
विष्णु-गुफा-मंदिर, 40, 43, 57, 58, 59;
- शयन, 57, 103, 120
-तिरुमयम में, 57; -मलाइयाडिपट्टी, 57; -नमखल, 57
तिरुत्तंगल, 57
आसन, 118, 120
तिरुप्परनकुनराम में, 57
खड़े (स्थानक), 57, 99, 118, 120
गरुड़ के साथ, 60
मंडप, 113
मंदिर, 81, 89, 118, 162
विष्णुकुंडिन (राजवंश), 33
विष्णुवर्धन (होयसल किंग), 125, **155, 156**
विशिष्टाद्वैत, 19
विश्वकर्मा (गुफा 14, चैत्य एलोरा), **25, 32**
विश्वेश्वर मंदिर, काशी-वाराणसी, 148
विट्ठल टेंपल, हम्पी, 167-69
विझिनम (विलिनम देखें)
मन्नत, 106
वृद्धाचलम मंदिर, गोपुर, 148, 149

वृषभांतिकामूर्ति (सिवा), 43
वृत्त, 93, 190, 193
वृक्ष, 11; -चैत्य, 8, 9, 10
व्याकरणमंडपा, 150
विजला (एली), 50, 92, 102, 104, 105, **114-17, 119, 160, 162, 168, 182, 183**
व्यालामला, 197; व्यालावरी, 197

वारंगल (ओरंगल्लू), 158, 159, 162
वैगन टॉप जैसी छत (साला), 20, 88, 103
पश्चिमी चालुक्य (राजवंश), 106, 150, **153, 159**

पश्चिमी चालुक्य-राष्ट्रकूट श्रृंखला, 81
वेस्टर्न बार्गेन्स (टॉकड), 59, 62, 121, 124
लकड़ी की नक्काशी, 44, 188, 189
भगवान की पूजा, 8; पहाड़, 8; नदियाँ, 8; आत्माएँ, 8; पेड़, 8

यागा मंडप, 150
यक्ष, 8, 9
यक्ष शाक्य वर्धन, 8
याली मंडपम, गुफा, सालुवंकुप्पम, 50
यम, 143
यमपुरी मंडपम (-महिषमर-दिनी मंडपम) केव-टेंपल, 47
यमुना (नदी, देवी), 65 येलेश्वरम, छोटे मंदिर, 180
योग-दक्षिणामूर्ति (सिवा), 60
योग नंदीश्वर मंदिर, नंदी हिल्स, 126
योगनिद्रा, 49

***** समाप्त *****